CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पुस्तकालय आ विद्यालय खातिर बिहार सरकार से मंजूर

गाँवघर

भोजपुरी पखवारा

२०

सम्पादक

आरा

२

भुवनेश्वर प्रसाद श्रीवास्तव 'भानु'   १ जनवरी, १९८०

रा भेख बदलिके सुघर गाँवघर आई, हित-अनहित के बात बता के गँवई के चमकाई।

कहवाँ से अँगना में मोर आगइल ई

डा० रामनाथ पाठक 'प्रणयी'

जिनिगी में कइसन अँजोर आ गइल ई।
भागल अन्हरिया डगरिया धधाइल,
जागल किरिनाँ, नगरिया रँगाइल,
जिनिगी में कइसन अँजोर आगइल ई।
कहवाँ से अँगना में मोर आगइल ई।
फुदकल गरवइया छपरिया के ऊपर,
उचरेला कउआ अगवनी ले केकर,
कइसन जवानी में भोर आगइल ई।
जिनिगी में कइसन अँजोर आगइल ई।
सेनुर से धरती के मँगिया भराइल,
तुलसी चउतरा प दियरा धराइल,
हियरा में चुपुके हिलोर आगइल ई।
जिनिगी में कइसन अँजोर आगइल ई।

देववाणी शोध-मंदिर
(मिश्रटोला, आरा)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एकरा भीतर पढ़ीं

विषय	पन्ना
१—चुनाव (संपादकीय	४
२ श्रीमती (कहानी) श्रीमती राधिका देवी श्रीवास्तव	५
३—घरघूमन दादा के चिट्ठा (व्यंगलेख) श्री घरघूमन दादा	६
४—पुरुवा के दिन बेईमान (कविता) भुवनेश्वर प्रसाद श्रीवास्तव 'भानु'	७
५—गीत (कविता)-श्रीमती जनक दुलारी पांडेय	७
६—नई किरिनिया (कविता)-श्री विश्वनाथ प्रसाद 'शैदा'	८
७—स्व० डा नेमिचन्द्र शास्त्री (ससमरण) डा० रामनाथ पाठक 'प्रणयी'	९
राँची मानसिक आरोग्यशाला-भुवनेश्वर प्रसाद श्रीवास्तव भानु'	
९—चुनाव के तैयारी—(समाचार)	११

गाँवघरके नियम

गाँवघर हर महीना के पहिली आ सोरह तारीख के निकलेला। लेखक आ कवि लोगन का आपन रचना छपे का तारीख से दस दिन पहिले सादा कागज पर हासिया छोड़के एक तरफ लिखल आ आयेके चाहीं नाहीं त अगिला अंक में ना छप सकी।

सुन्दर छपाई खातिर
लक्ष्मी प्रिंटिंग प्रेस, आरा
महाजन टोली न० २, आरा

चन्दा के दर

साल भर के चन्दा	—१०-०० (
डाकसे भेजे वालाके	—११-०० (ग्या
छव महीना के	— ६-०० (छ
एक अंक के	— ०-५० (
बिदेश खातिर चन्दा	—२५-०० (प

बिज्ञापन के

कवर २रा आ ३रा पेज	—५
आधा पेज	—
चौथाई पेज	— १५
साधारण पेज	—४००-
आधा पेज	—२५०-०० पचास
चौथाई पेज	—१५०-०० पचा

(सरकारी बिज्ञापन सैकड़े ५० रोपेय

चिट्ठी-पत्री के पता—
गाँवघर कार्यालय
लक्ष्मी प्रिंटिंग प्रेस
महाजन टोली न०-२
पो०-आरा (भोजपुर)
फोन न०, आर

गाँवघर में
बिज्ञापन देके
लाभ उठाईं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महात्मा गांधी एवं लोकनायक जयप्रकाश के सपने
को पूरा करने के लिए
हरिजनों, गरीबों के मसीहा एवं कुशलतम प्रशासक
श्री जगजीवन राम को प्रधानमंत्री बनाने के लिए
आरा संसदीय क्षेत्र से
जनता पार्टी के लोकप्रिय उम्मीदवार

श्री इस्मामुल हई खान को

अपनी मुहर
लगाकर

भारी मतों से विजयी बनायें
देश को तानाशाह और उसके चमचों से बचायें

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

★ गाँवघर ★

सम्पादकीय

चुनाव—

देस आजाद भइल तब से छव बार चुनाव हो चुकल । ई सातवां बार हो रहल बा । हर बार पाटी आ उम्मीदवार लोग जनता के इहे समुझावेला आ जोर देके कहेला कि हमार पाटी जीती त देसके भाग खुल जाई । उदोग-धधाके जाल बिछा देब । केहू बेकार ना रह जाई । खेती कभी मारा ना परे ऐह खातिर भरपूर पानी के इन्तजाम हो जाई । महंगी हटावे के उपाय कइल जाई । चोरी चमारी बन्द कके लोगन के सुख चैन से जीन्दगी बसर करे के मोका देल जाई । बाकी त जीत के गइला पर ई सभ बात भुला जाला । पद के लड़ाई में ऐह सब बातन के कौनो मोका ना रहि जा । आ अबकिओ बार ओही सभ बातन के दोहरावल जाता । बाकी त जनता के दिल ओह सभ पर टिकट नइखे काहे से कि बार-बार सुनत-सुनत कान भोथरा गइल बा आ आँख पथरा गइल बा । जनता असमंजस में पर गइल बिया कि का कइल जाऊ ।

देसमें लोक तंत्र लागू बा । चुनाव होखबे करी आ जवन पाटी जीती आपन सरकार बनइबे करी । ऐह से जनता मजबूर होके ऐह बार के चुनाव में वोट देबे प तैयार भइली हा नाहीं त ऐह बार त बहिस्कारे करेके तैयारी होत रहे ।

अइसे त देस के हालत जसइन बा अइसना में चुनाव होखहीं के ना चाहत रहे । गरीब देस पर चुनाव के खरच के बोझा कइसे सहाई ? बाकी त इहो जरूरिये बा कि जब कौनो पाटी टीकाऊ सरकार ना बना सकी त ई तमासा लगले रही । ऐही से अबकी पारी का चुनाव में जनता का चाहीं कि जात-पाँत भाइ-भतीजा वाद का पचरा से हटके ओही पाटी के जीतावो जवना पर ई बिसवास होखे कि ऊ टीकाऊ सरकार बना सकी । नाहीं त ऐह बार-बार के बेओजहके चुनाव से देसके बिकास रुकले भर ना रही देस बिकाइयो जाई । जनता का ऐकर धेयान रखके मतदान करे के बा नात चूक गइला पर कपार ठोके के पर जाई ।

गाँवघरके पाठक लोगसे

गाँवघर कुछदिनसे रउआलोग का लगे ना जा सकल हा, ऐहसे कि ई कुछ अइसन कठिनाई में पर गइल रहे जवना के टारेमें काफी समय लाग गइल हा । रवा लोग का गाँवघर से भेंट ना भइला से ऐकर जानकारी ना हो सकल होई । गाँवघर का ना देखलासे हो सकेला कि रउआलोग आपन धेयान ऐकरा ओर से हटा लेले होखबि बाकिर त गाँवघर बराबर रउआ लोग का लगे जाये खातिर छटपट ला रहत रहल हा ।

उमेद बा कि रवा लोग गाँवघर के सेवा के भुलाइल ना होखबि देखला के बाद फेर रवा लोग पहिले ही अइसन गाँवघरके अपनाइबि आ आदर मान करे लागबि अइसन भरोसा बा । कहलो बा कि "देखइत माया परनगत छोह अब देखीं तब लागे मोह" ।

गाँवघर रवा लोग का सेवा से मुंह ना मोरी अइसन अब ऐकर अइसन विचार हो गइल बा । ऐकरा के दुलारल सँवारल रवे लोग का सहयोग प निरभर बा । सं०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहानी–

–:श्रीमती जी:–

(श्रीमती राधिका देवी श्रीवास्तव)

श्यामसुन्दर बाबू रामपुर हाई स्कूल में हेड मास्टर रहन। बड़ा सजन आदमी रहन सभे उनकर इजत करत रहे। लड़िको सब बड़ा आदर-मान करत रहन स। घरे बुढ़ बाप-मतारी आ एगो छोट भाई रहे। बाप-मतारी का बुढ़ारी में उपालम्ब ना होखे ऐह से अपना मेहरारुके ओह लोग के सेवा करे खातिर घरही रहे देत रहन। अपना सगे ना राखत रहन, अपने एगो नोकर राखि के आपन काम चलावत रहन। ऊ एगो बिलाई पोसले रहन जवना के नांव दोस्त लोग श्रीमती जी रख देले रहे। ऐह से उनको ओकरा के श्रीमती जी कहें के आदत पर गइल रहे।

उनकर स्कूल सरकारी स्कूल रहे। हरतरह के परीछन के केन्द्र ओह स्कूल में रहे। बराबर कौनो ना कौना परीछा होते रहत रहे। एहसे छुटिया-छपाटी में घरे जायेके सौंवस ना लागत रहे। ऐह साल के बड़ा दिन के छुट्टी में कौनो वाफ ना लउकत रहे। घरे लिख देले कि बड़ा दिनका छुट्टी में जरूर घरे आइबि। बाकी त आपन सोंचल आदमी के ना होखें भगवान ज करेले ऊहे होला। ऊ घरे जाये का तेयारी में रहन तबले कलटर के चिट्ठी आ गइल कि राजुर चुनाव में जरूरत पड़ गइल बा। स्कूल बन्द होते चल आईं आ बाके आपन जिम्मेदारी संभारीं।

मास्टर साहेब फेरमें पर गइले। का करसु सरकारी भइर आ ऊहो चुनाव के, मजबूर होके मान ही के परल। नोकरो के छुट्टी दे देले रहन ऊ अपना घरे चल गइल रहे। घरे चिट्ठी लिख देले कि सरकारी काम के झंझट आ गइला से फेर में पर गइल बानी। एह छुट्टी में हम घरे ना आ सकीं। नोकरो घरे चल गइल बा, कौनो तरे काम चला रहल बानी। मन नइखे लागत बाकिर त का करीं। सहारा इहे बा कि श्रीमती जी का दूगो जँउव बचा हो गइल बा। ऊ आजकाल साथ ही रहतारी। उनुके में मन लागल दिन कट रहल बा।

घरे उनुकर मेहरारू सातवाँ तक पढ़ल रही। चिट्ठी आइल त उनकर बाबू जी उनुका मेहरारू के पढ़े के देदेले। अपने त अंगुठा के ठापा देवे वाला पलटनिहा जमदार रहन जे पीनसीन लेके घरे आ गइल रहन। चिट्ठी पढ़ते उनकर मेहरारू छान-पगहा तुरावे लगली आ सासु से कहली कि अम्माजी हम ना मानबि हम जइबे करबि। ऊ कवनि ह जवना के ऊ रखले बाड़े। हम ओकरा के घर में ना रहे देबि। ऐही से नं बार बार लिखियो के ना आवसु? हरदम कुछ ना कुछ बहाना बनाके कनी कटा लेलें। हम बड़ा विसवास करत रहीं। हम का जानत रहीं कि ई चक्कड़वा बा? एको करम बाकी ना छोड़बि। हम घरमें रहिके सवलान होत रहीं आ ऊ अकेला में छकेला मारसु! ठीके कहल बा कि मरद जात के बिसवास ना करे चाही।

सासुओ घबड़ाइले रही कहली कि ससुर के फालतु पीनसीन मिल जाता त जइह उ के देख आव, गइलो जरुरियेबा। मेहरारू नीमनों मरद के बिगाड़ देली स। अइसे त हमार बचवा अइसन ना रहले हा।

हो बिहान, हो बिहान करत सबेरा भइल। ऊ साते बजे देवर के साथ लेके चल देली। मास्टर साहब ऐह लोगके देखते घबड़ा गइले कि का बात ह कि एक ब एक आ गइलो। उनकर मेहरारू त

(बाकी ८ वां पन्ना पर)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

घर घूमन दादा के चिट्ठा

जय हो संपादक जो महाराज !

फेर राउर गाँवघर निकाले लगली ई जान के मन में गुदगुदी बुजबुजी छोड़े लागल। बाढ़ जब बढ़े के होला त पहिले बुजबुजी छोड़ के आवे के सूचना देला। त गाँवघर के आवे के सूचना हमरा बादू के मंतर अइसन मिल गइल रहे। त गाँवघर बराबर निकले के चाहीं। बीच में गुमसुम होके केने लुकाइल रहे ई शोध के विषय बा। भानु आर्थिक घटाटोप में लुकाइल रहन आ अचानक घटाटोप से बाहर निकल के आपन किरिन चारो ओर छिटकावे लगलन ईजान के मन मतंग होखे लागल। दादा के चिट्ठा त जानते बानी कि कतना लंबा आ घुरचीदार होला कि केहू के अगर हुलिया खोजे के होखे त दादा के चिट्ठा उघार के देख सकीला।

त गाँवघर के सँवारे आ सजावे खातिर संसद के चुनाव हो रहल बा। घोसना त सब पार्टी के इहे बा कि हम गाँवघर के माँग के चमका देब। बाकिर दादा के चिट्ठा में दूगो लाइन फरिस्ता नं० २ हाले में जोड़ले बाड़न कि–

गाँवघर के माँग खातिर ढोलक पिटलन स।
भाई पेट पूजा करे के तमाशा रचलन स॥

संपादक जी, ई त शोध कइला के बाद पता चल सकेला कि फरिस्ता नं० २ के लिख के का मतलब बा। बाकिर अतिना त बुझाते बा कि गद्दी पर बईठ के मूंछ पर ताव देवे के ई सब हंगामा ह नाहीं त जल्दी जल्दी चुनाव करावे के जरुरते का रहे। गरीब देस भारत आ ओह पर अतिना बोझ भला कइसे सही? जब से ई आजाद भइल तबहीं से एकर भाग अंझुराइले बा। गुलामी में घीव आ दूध आसानी से मिलत रहे आ आजाद भइला पर एको ठोप के नसिब नईखे। इहे आजादी के फल ह। मुट्ठी भर लोग पेट के बोरा बना के फसले बाता। ऊलोग अपना के बड़ आ मातवर समुझेला जेकरा दू नंबर के पईसा बा उ चाँदी काटता, अंगुरी में घीव लगा के मोंछ के अईठ के नोकए बनावता आ ओहिजे से एलान करता चीजन के भाव बट्टा आ खरीदारन के समुझावता माल नं० १,२,३,४,-बढ़िया माल, घटिया माल,। ऊ थोक व्यापारी कहाता देस के नकेल पर एगो ओकरे हाथ बा आ देस के नकेल पर द सरका हाथ बा देस के नेता लोग के। उ लोग देसके गद्दी पर बइठे खातिर रुप चंद के बड़का नाव बनाके जनता रूपी शिथिल जल पर दूनो हाथे डाँड़ के मांजता आ राग-रागिनी बा चकोह में जनता के नचावता, इहे ह नेता लोग जे अपना मजबूत हाथ से देस के किसमत के बाग होर थमले बा। त भगवान से मनाईं कि ई लोगन कें रबड़ के जिन्दगी मिले आ पेंग मारे खातिर पेंचदार [illegible] मिले।

जय व्यापारी ! जय नेता !! जय भारत !!!

राउर घरघूमन दादा
घर घूमन पुर

अरज

गाँवघर अब निकले लागल। लेखक आ कवि लोगन से अरज बा कि आपन रचना भेजेंके किरिपा करीं। सं०—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पुसवा के दिन बेईमान

—भुवनेश्वर प्रसाद श्रीवास्तव 'भानु'

काम ना करेला पूरा लेइ ममदूरी लेला
पुसवा के दिन वेईमान।
आके, फुरसेनी, उड़िजाला ना परेला तनी
आइल गइल ऐकर जान।

तनवा में नरखीना लुगरी भइल चले
बन्हले गमछिया से कान।
कोहिंया कऊड़या ना छोड़ बइठल रहे
छोड़िछाड़ि खेत खरिहान।

खरखर देहिया बाजेले खजुअवला प
जाले अंगरेजिया लिखाय।
पांवे ना पनहिया टूटल गिरगिटिया
टभटभ टिसेले बेवाय।

मुकुर मुकुर मुकुरावेला तीलवा
मेथिया से करे जलपान।
थरिया भ सात्तू ले बड़ावे दुपहरिया में
रतिया मकुनिये के मान।

पांच बजे जाला सुति बड़की रजइया में
उठेमना बजले बिनु सात।
उठते उठते लेला चाहावा के चुसुकी
तब करे बोंड़िया से बात।

जोते दुनों ओरिया से बढ़ि खेत दिनवा के
काटि काटि रतिया डँड़ार।
आइगइल माघावा हटाई अतिकरमन
भरि जाई दिन के भँड़ार।

सम्पादक—गाँवघर
बाबू बाजार, आरा

नया साल

गाँवघर के लेखक कवि आ पाठकन खातिर
नया साल सुखमय होखे।

गीत

श्रीमती जनक दुलारी पाण्डेय

बीतल पूसोमास रे।
छोट रहल दिन, रतिया बड़हन,
बीत गइल असहीं सखि अगहन,
शीत लहर लेके भिनसहरा
डोलत चले बतास रे
बीतल पूसो मास रे।

कटनी लागल धान कटाइल
बोझा खरिहानी में आइल.
अन से भरी बखार, रहीना—
केह दुखी उदास रे
बीतल पूसो मास रे।

मुंह में दाना, कपड़ा तन पर,
नाच उठी हरियाली मन पर,
अबहीं बगिअन में लुक छिपके--
झाँक रहल मधुमास रे
बीतल पूसो मास रे।

द्वारा—डॉ० 'प्रणयी'
मिश्रटोला, आरा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जागलि देश में नयी किरिनियां

श्री बिश्वनाथ प्रसाद "शदा"

जगल देस में नई किरिनिया,
अस नवका भिनसान के।
टुकुर-टुकुर धनिप सभ लोगवा,
तिकवतबा सनसार के ।।
बिहँसि रहलिबा कहीं बधरिया,
पहिरि छींट के सबुज चुनरिया,
मस्त भइल गिरिहत देखि के,
सोभा खेत-बधार के।
जगल देस में नई किरिनियां,
अस नवका भिनसार के ।।
कहीं चना से मटर टिहुकि के,
हरिव रजाई में छिपि-लुकि के,
पूस-माघ के घाम लेत बा,
दिनभर पलक उघार के।
जगल देस में नई किनिया,
अस नवका भिनसार के ।।
बीसी— तीसी—मकर— पचीसी,
गिनि गिनि आजु विहँसली तीसी,
कवन जौहरी लुटा गइल रे,
नीलम लाख - हजार के।
टुकुर-टुकुर एनिप सभ लोगवा,
तिकवत बा सनसार के ।।
उमड़-उमड़ नहरीं के पानी,
चलल उपज में भरे जवानी,
कहीं खेत में बोरिंग के जल
बा लहरात सुतार के।
टुकुर-टुकुर एनिप सभ लोगवा,
तिकवत बा सनसार ।

बदल गइल जुग अउर जमाना,
ऊसरो में उपजी अब धाना,
महंगी के दिन गिनल-गुथल बा,
जब जोन्ही भिनसार टुकुर के।
टुकुर-टुकुर एनिप सभ लोगवा,
तिकवतबा सनसार के ।।
पियर—पियर सरिसो के फुलवा,
छवि के बान्हि रहल बा पुलवा,
कवन परी नापता भइलि रे,
चुनरी पियर पसार के।
टुकुर-कुकुर एनिप सभ लोगवा,
तिकवत बा सनसार के ।।

डुमराँव (भोजपुर)

(५वाँ पन्ना के बाकी)

सोचिये के घरसे चलल रही कि जाते पहिले ओह श्रीमती जी के झोंटा धइके लसारबि ओकरा बाद मास्टरो साहेब के खबर लेबि।

मास्टर साहेब देखते पूछले कि का बात ह, घरे सभ ठीक बा नूं ? त नाक मुंह फुला के कहली कि घरे ठीक होखो आ ना, रउआ त अकेला में मजा मारतानी नूं ? बताईं कि ऊ कवनि ह जवना के रखले बानी, साँच साँच बोलीं ना त रउरे रहबि कि हम हीं।

मास्टर साहेब का चिट्ठी के बात इयाद पर गइल, ठठाके हँसले आ कहले कि जाके देख ल। मस्टराइन भीतर जाके देखतारी कि बड़कीगो बिलाई अपना बचवन का साथे सुतल बीया। इनिकाके देखके में — आँव — में — आँव करे लगलि मस्टराइन लजा के पानी-पानी हो गइली।

समाज कल्याण आयोजिका
प्रखंड डिहरी (रोहतास)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अभिनव हेमचन्द्र

स्व० डॉ० नेमिचन्द्र शास्त्री

(डॉ० रामनाथ पाठक प्रणयी)

ग्यारहवीं शताब्दी के जैन विद्वान् आचार्य हेमचन्द्र जइसे संस्कृत-प्राकृतवाङ्मय के सभ विधान प आपन कलम चलवलेरहुन, तसहीं एह शताब्दी के जैन विद्वान स्व० डा० नेमिचन्द्रशास्त्री से संस्कृत-प्राकृत-वाङ्मय के कवनो विधा छूट नइखे पावल।

शास्त्री जी सर्वतोमुखी प्रतिभा के वरदान पवले रहीं। वैदिक साहित्य से लेके लौकिक साहित्य तक उहाँ के ज्ञान से शोभा पवले रहे। शास्त्री जी प्रथम श्रेणी के चिन्तक आ शोधकर्त्ता विद्वान् रहीं। उहाँ के देखरेख में कतने शोधार्थी शोध कइलन। आरा के ई बहुत बड़ सोहाग रहल कि उहाँ के राजस्थान के धौलपुर में जनम लेलीं आ आरा के आपन कर्म क्षेत्र बनवलीं। उहाँ के जिनगी के सुनहला दिन आरा के महाजन टोली नं० एक के भोला भवन में बीतल जहाँ से उहाँ के ना जाने कतने लोगन के सास्वत प्रकाश देलीं। उहाँ के महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ के रचना एही महाजन टोली के मकान में भइल। उहाँ के अन्तिम ग्रन्थ जे छपचुकल बा, तीर्थ कर महावीर और उनकी आचार्य परम्परा के रचना एहिये भइल जवताय जैन साहित्य आ हिन्दियोलॉजि के गर्बवा।

शास्त्री जी ज्योति विचानों के अखिल भारतीय प्रसिद्धि के बिद्वान रहीं। उहाँ के ज्योतिष विषयक फला देश के संस्मरण लिखल जाय त अलगे एगो लमहर ग्रन्थ तइयार हो जाई। उहाँ के मृत्यु डा० हीरा लाल जी कुछ ए पहिले जैन के निधिन के समाचार मिलल। शास्त्रीजी हमरा से उनकर श्रद्धांजलि लिखे के कहली। हम उहाँ के आदेश क पालन कके ले गइलीं त उहाँ क पढ़ि के बड़ा प्रसन्न भइलीं। बाकिर उहाँ के मुह से एगो बात निकसल जवना के सुनिके उहाँ के पत्नी के हमनी दूनो के आंखियाँ में लोर छलक आइल उहाँ कै संस्कृत के श्रद्धाजलि सुनते कह कोध्ठलीं प्रणयी जी हमरो मृत्यु रउआ आसही लिखबन हम काजानत रहीं कि उहाँ के अपना मृत्यु निश्चित जानकारी रहे, जे एह तरह से उहाँ के वाणी के रूप में ओह दिन फूट पड़ल एक बात ई जरूर रहे कि उहाँ के अब तब चरचा करत रहीं कि हमरा बहुत दिन जिए क नइख, बाकिर एकरा के हमनी का उहाँ के भावुकता मान के पीछे छोड़ देत रहीं।

शास्त्री जी आज हमनी के बीच नइखीं बाकिर उहाँ केसारस्वत की निमान हमनी के सामने बा। आ उहाँ के योग्य लइका बाड़न नलिन शास्त्री हमनी के साथ, जेकरा के देखि-देखि के हमनी उहाँ के बियोग के व्यथा कुछ कम कर पाईला।

मांवकृष्ण द्वितीय शास्त्री जी के निधन-दिवस। ओह दिन हमनी के चाहीं कि उहाँ के पावन स्मृति में एगो गोष्ठी के आयोजन करि के उहाँ के व्यक्तित्व आ कृतित्व के चिन्तन मनन से अगला पीढ़ी के युवकन के लाभ पहुँचावे के कोशिश करीं।

एक बात आउर ई कि शास्त्री जी मृत्यु-शटयाप पड़ली पड़ल हरप्रसाद दास जैन कॉलेज मे प्राकृत के पोटग्रेजुयेट बिभाग खोलवावे के बेचैनी में डूबत-उतरात रहीं। आरा के नागरिक के आ जैन कालेज परिवार के उनका खातिर समर्पित कहल ई सभ से बड़ श्रद्धांजलि होई, यदि एह दिशा में सफल प्रयास भइल। हम एही शब्दन के साथ शास्त्री जी के प्रति अपना हृदय के सम्पूर्ण श्रद्धा में भेंट कर रहल बानी। जय नेमिचन्द्र जय संस्कृत प्राकृत।

जैन कालेज, आरा संस्कृत प्राकृत-विभाग,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राँची मानसिक आरोग्यशाला के केन्द्रीय मानसिक आरोग्यशाला में विलयन काहे ?

भुवनेश्वर प्रसाद श्रीवास्तव 'भानु' पत्रकार

राँची मानसिक आरोग्य शाला बिहार सरकार के अनुदान से डाक्टर प्रतिष्ठान के देख रेख में चलेला। एह आरोग्यशाला में १५०० रोगीन के रहेके सीट बा, जवना में ८५५ बिहार आ उड़िसा-बंगाल खातिर सुरक्षित बा।

ई आरोग्यशाला निःशुल्क ह। ऐहमें रोगीन के मुफ्त चिकित्सा कइल जाला। केहू-केहू अपना खुसी से कुछ अनुदान के रुप में दे देला। केन्द्रीय आरोग्य शाला में पईसा लागेला। पहिला दूसरा तीसरा दर्जा बा। तीसरो दर्जा में भर्ती करवला पर ४५० रु० महीना देवे के परेला। आ इहो बात बा कि दू महीना से कम खातिर भर्ती ना कइल जा। राँची आरोग्यशाला एके महीना में रोगी के अच्छा क देला जवना में केन्द्रीय आरोग्यशाला का दू महीना लागेला।

एह अस्पताल के केन्द्रीय अस्पताल में मिला देला से बिहार के अतना ढ़ेर, जतना देर के ऐह अस्पताल से सुविधा मिल रहल बा, ऊ ना मिली। हर प्रान्त के कोटा तय हो जाई। गरीब लोग के त दवा होइये ना सकी। जेकरा पईसा होई, ओकरे दवा होई।

ऐह अस्पताल का केन्द्रीय अस्पताल में मिला देला से खास करके आदिवासी लोगन के ऐह में सुविधा बा, उ ना रह जाई। सभके नियुक्ति दिल्ली से होखे लागी। नोकरी क खयाल से सबसे अधिक घाटा नोकरी में पिछड़ल आदिवासी लोग के होई। आदिवासी क्षेत्र में रहला से ऐह अस्पताल में आदिवासी लोग के ढ़ेर नोकरी मिल जात रहल हा। डाक्टर लोग भी जे पहिला बिहार के रहेला आ पहिला के रोगीन से सचहूँ के हमदर्दी राखेला, ई बात ना रह जाई। डाक्टर लोग भी जहां वहां के भर्ती होके आवे लागी।

ई बात जे कहल जाता कि केन्द्रीय अस्पताल में मिला देला से बंगलोर के अईसन पढ़ाई के सुविधा होई, त पढ़ाइयो त ऐह में होइबे करेला। हर साल बगाल उड़िसा आ आऊर-आऊर जहन के पढ़ेवाला लोग के दल आके मानसिक रोग के जानकारी हासिल करेला।

बिहार सरकार ऐकर विरोध करेके चाहीं। साथही बिहार आ बगाल-उड़िसा के लोगन का भी ऐकर जबर्दस्त विरोध करेके चाहीं। विरोध पर ना रुके त ऐह खातिर आन्दोलन पर उतर आवे के चाहीं।

बिहार के मुख्य मंत्री का भी ऐकर विरोध करे के अस्पताल का हाथ से निकल गइला पर पाछे पछतावे के पर जाई। ऐह काम के करहूँ के जल्दीय बा। देर भइला पर काम बिगड़ जाई। बिहार सरकार जो तैयार हो जाई त ऐकर केन्द्रीय अस्पताल में मिलल जरूर रूक जाई। जनता का साथ साथ सरकारो पर ऐकर जिम्मेवारी बा। एह अस्पताल से बिहार सरकार के प्रतिष्ठा बा। अइसन अस्पताल दोसर बनावल आसान काम नइखे। बनल बनावल चीज हाथ से निकल जा रहल बा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चुनाव के तईयारी

(अपना संवाददाता से)

आरा, ३ जनवरी भोजपुर के कलक्टर श्री अशोक कुमार एगो प्रेस सम्मेलन बोलाके बतवलीं कि चुनाव के सभ तेयारी पूरा कर लेल गइल बा। उहांका बतवलीं कि ऐह जिला में दूगो संसदीय क्षेत्र बा, आरा आ बक्सर। आरा क्षेत्र में भोजपुर जिला के चारगो बिधान सभा क्षेत्र बा आरा, बड़हरा, सन्देश, आ सहार। ऐह क्षेत्र में पटना जिला के भी दूगो क्षेत्र बा, पाली आ मनेर। बक्सर क्षेत्र में छवगो विधान सभा क्षेत्र बा, बक्सर, डुमरांव, राजपुर, शाहपुर, ब्रह्मपुर अउर जगदीश पुर। ऐह जिला के ऐगो पीरो विधान सभा क्षेत्र कटके रोहतास जिला के बिक्रमगंज क्षेत्र में चल गइल बा।

कलक्टर साहेब बतवलीं कि आरा क्षेत्र में कुल ८ लाख २५ हजार ४५० गो वोटर बाड़े जवना में ४ लाख ४६ हजार ८९६ मरद ३ लाख ७४ हजार ५५५ औरत लोग बा। एकरा अलावे ४ हजार ६६ गो वोटर बाहर नोकरी में बाड़े। बक्सर क्षेत्र में कुल ७ लाख ६२ हजार ७०६ मतदाता लोग बा जेह में ४ लाख १८ हजार ४३२ मरद आ ३ लाख ६६ हजार २८३ औरत आ ४ हजार ९६४ गो नोकरी पर बाहर बाड़े।

श्री कुमार जी बतवलीं कि आरा क्षेत्र के मनेर आ पाली गंज विधान सभा क्षेत्र के मतदान के वेवस्था पटना जिला के कलक्टर का करे के बा आ मतदान हो गइला के बाद मत पेटी आरा भेज देवे के बा। सबके गिनती आरा में ही होई। एही तरे विधान सभा क्षेत्र पीरो जवना में १ लाख ३६ हजार ८७ गो वोटर बाड़े आ १८४ गो बूथ बा, ओकरा चुनाव के वेवस्था भोजपुर जिला का करे के बा आ मतदान करा के मत पेटीन के सासाराम भेज देवे के बा। ओह सबके गिनती सासाराम में होई।

कलक्टर साहेब बतवलीं कि पिछला चुनाव से ऐह चुनाव में सैकड़े ११ मतदाता बढ़ गइल बाड़े ओहि मोताबिक बूथ के संख्या भी बढ़ गइल बा। चुनाव निष्पक्ष आ शान्ती पूर्वक होखे, ऐह खातिर कड़ा इन्तजाम कइल गइल बा। ४४१ गो नक्सली आ झंझट के बुथन पर राईफल धारी पुलिस के तैनाती कइल गइल बा। कुछ बूथ पर लाठीधारी पुलिस के भी वेवस्था कइल गइल बा ऐकरा अलावे हर बूथ पर दूगो ग्राम रक्षा दल के जवान आ एगो चौकीदार रहिहें। पेटरोलिंग पार्टी बराबर घुमत रही। हर सवडिविजन में रिजर्व पार्टी रही जेह में २ मजिस्ट्रेट आ हथियार आ लाठी धारी पुलिस दल रही। ऐकरा अलावे हर थाना में भी जोनल पार्टी रही जवना में एक मजिस्ट्रेट उच्च दर्जा के, आर्मस आ लाठीधारी दल का साथ रहिहें। बाहर से कौनो सवारी ना आवे ऐह खातिर छवगो चेक पोस्ट बनावल गइल बा। एकरा ऊपर पर्यवेक्षक लोग भी नियुक्त कइल बाड़े। मतदान ६ जनवरी के ८ बजे सवेरे से ४ बजे सांझ तक होई। नोकरी वाला लोगके आपन वोट डाक से भेजे के वेवस्था कर देल गइल बा। वोट के गिनती आरा क्षेत्र के ७ जनवरी आ बक्सर क्षेत्र के ८ जनवरी से आरा के बाजार समिति के प्रांगण में होई।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आपका सहयोग : हमारी सेवा
शहर की सुन्दरता की गारंटी है

सीमित साधनों के बल पर नगर को स्वच्छ और सुन्दर बनाने का हमारा विनम्र प्रयास जारी है। नयी नालियों और सार्वजनिक पथों के निर्माण, पुरानी नालियों की मरम्मत और सफाई, प्रत्येक वार्ड में प्रकाश और जल की समुचित व्यवस्था, सार्वजनिक स्थलों में शौचालयो के निर्माण में आपकी नगर-पालिका ने उल्लेखनीय प्रगति की है।

आपका सहयोग इस प्रगति को गति प्रदान कर सकता है।

- कृपया, नगरपालिका के बकाया करों की अदायगी में शीघ्रता करें। करदाताओं पर पालिका के ३० लाख रुपये से ज्यादा की कर राशि बकाया पड़ी है। जिससे विकास की हमारी कई महत्व पूर्ण योजनाएं रुकी पड़ी हैं। समय पर कर चुकानेका मतलब है और सुविधाएं हासिल करना। चूकिए मत ?
- नालियों में मलमूत्र, कूड़ा-कर्कट या कीचड़ मत फेंकिए, ये गंदी आदते हैं और इनसे बीमारी भी फैलती है।
- नलों को व्यर्थ खुला मत रखें। यह शक्ति का अपव्यय है और इससे गंदगी बढ़ती है।
- अपने क्षेत्र में नगरपालिका के संसाधनों की रक्षा करें। वे सार्वजनिक सम्पति हैं तथा उनके अभाव में आपकी कठिनाई बढ़ती है।

अश्विनी कुमार सिन्हा
अध्यक्ष

जे० एन० पी० सिन्हा
कार्यपालक पदाधिकारी

श्री भुवनेश्वर प्रसाद श्रीवास्तव 'भानु' के जरिये लक्ष्मी प्रिंटिंग प्रेस, आरा से छपवा के गाँव घर परकासन, आरा खातिर परकासित।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पुस्तकालय आ विद्यालय खातिर बिहार सरकार से मंजूर

गाँवघर

भोजपुरी पखवारा — गणतंत्र विशेषांक

वरिस—२०

अंक—६

सम्पादक: भुवनेश्वर प्रसाद श्रीवास्तव 'भानु'

आरा, २६ जनवरी, १९८०

हर पखवारा भेख बदलिके सुघर गाँवघर आई, हित-अनहित के बात बता के गँवई के चमकाई।

> या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता
> नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।
>
> जे देवी सब परानियन में मतारी के रूपमें रहेली उनका के प्रणाम, उनका के प्रणाम, उनका के प्रणाम!

★ गणतंत्र ★

ई गणतंत्र हमार!
साँस-साँस में रहल समाइल जेकर प्यार दुलार
ई गणतंत्र हमार!

जे गंगा अइसन बा पावन
जे जमुना अइसन मनभावन,
'गांधी' अउर 'जवाहर' जेकर करगइलन शृंगार!
ई गणतंत्र हमार!

सबके भला मनावेला ई,
सब के गीत सुनावेला ई,
सबके दुख-सुखके 'सरगम' पर झनके जेकर तार!
ई गणतंत्र हमार!

जे अन्हार के दूर भगावे,
जे प्रकाश के किरिन जगावे,
कोटि-कोटि भारत वासी के जे मंगल आधार!
ई गणतंत्र हमार!

सत्य, अहिंसा, दया, प्रेम नित,
जेकर बा आदर्श विश्वहित,
कण-कण में छा रहल सुहावन जेकर मंत्रोचार!
ई गणतंत्र हमार!

डा० रामनाथ पाठक 'प्रणयी'
देववाणी शोध मंदिर, मिश्रटोला,
आरा (भोजपुर)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एकरा भीतर पढ़ीं

विषय	लेखक	पन्ना
१ – जिलाधिकारी के सन्देस—	जिलाधिकारी	३
२—२६ जनवरी—संपादकीय		४
३—का सुनाईं (कविता)	डा० बनारसी प्रसाद 'भोजपुरी'	५
४—सिसिर रितु (कविता)	श्रीमती राधिका देवी श्रीवास्तव	६
५—गांव नगरिया (कविता)	देव सुन्दर पांडेय 'ब्याकुल'	६
६—घर घूमन दादा के चिट्ठा—	घर घूमन दादा	७
७—अमर शहीद कवि कैलाश (जीवनी)	'भानु'	८
८—भोजपुरी कहाउत (संग्रह)	'भानु'	१०
९—जिनिगी के डहरि (कविता)	श्री चन्द्रदेश्वर	११
१०—भलाई के बदला बुराई (कहानी)	श्रीमती जनक दुलारी पांडेय	१२
११—नागरिकन के नाम (सन्देस)	श्री अश्विनी कुमार सिन्हा, अध्यक्ष नगर पालिका	१३
१२—सुन्दर गांव हमार (कविता)	उमाकांत तिवारी	१३

एकरा अलावे समाचार, शुभ कामना वगैरह।

गाँव घर के नियम

गाँवघर हर महीना के पहिली आ सोरह तारीख के निकलेला। लेखक आ कवि लोगन का आपन रचना छपे का तारीख से दस दिन पहिले सादा कागज पर हासिया छोड़के एक तरफ लिखल आ जायके चाहीं नाहीं त अगिला अंक में ना छप सकी।

चन्दा के दर

साल भर के चन्दा — १०-०० (दस रोपेया)
डाकसे भेजे वालाके —११-०० (ग्यारह रोपेया)
छव महीना के — ६-०० (छव रोपेया)
विदेश खातिर चन्दा—२५-०० (पचीस रोपेया)

विज्ञापन के दर

कवर ४ था पेज— ५००-०० (पांच सौ रोपेया)
आधा पेज — २७५-०० (दू सौ पचहत्तर रोपेया)
चौथाई पेज —१५०-०० (एक सौ पचास रोपेया)

साधारण पेज —४००-०० (चार सौ रोपेया)
आधा पेज — २५०-०० दू सौ पचास रोपेया)
चौथाई पेज —१५०-०० (एकसौपचास रोपेया)

(सरकारी विज्ञापन सैकड़े ५० रोपेया अधिक)

चिट्ठी-पत्री के पता—

गाँवघर कार्यालय

लक्ष्मी प्रिंटिंग प्रेस
महाजन टोली न० २
पो०— आरा (भोजपुर)
फोन न०, आरा-६८६

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गणतंत्र दिवस

पर

भोजपुर जिला के जनता के नाम

जिला पदाधिकारी के संदेस

गाँवघर भोजपुरी पखवारा के गणतंत्र दिवस विशेषांक के माध्यम से हम रवाँ लोगन के अभिनन्दन करतानी आउर एह पुनीत अवसर पर विकास के कामन में रवाँ लोगन के सहयोग के अपेक्षा करतानी। आशा बा कि रउआ लोग प्रशासन के सहयोग देके राष्ट्र निर्माण अउर समाज के उत्थान में असहीं हाथ बटावत रहबि सभे।

अशोक कुमार

जिला पदाधिकारी

भोजपुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गाँवघर

सम्पादकीय

२६ जनवरी

गणतंत्र दिवसके जनम १९४८ के २६ जनवरी के भइल । आजादी मिलल १५ अगस्त १९४७ के आ देसमें गणतंत्र लागू भइल २६ जनवरी १५ अगस्त के गणतंत्र लागू ना भइल ऊ स्वतंत्रता दिवस हो के रहि गइल। गणतंत्र लागू क सबसे पवित्र आ महान दिन २६ जनवरी एहसे चुनल गइल कि १९२९ से २६ जनवरी राष्ट्रीय तेवहार बन गइल रहे । १९२९ के २६ जनवरी के लाहौर कॉंग्रेस में जवनाके सभापति राष्ट्रपति पंडित जवाहर लाल नेहरू रहीं पहिले पहल पूरन आजादी लेवेके प्रस्ताव पास भइल रहे ओह घरी जे कँग्रेसके सभापति चुनात रहे ऊ राष्ट्रपति कहलात रहे। १९२८ के कलकत्ता कांग्रेसमें जवनाके सभापति पंडित मोती लाल जी नेहरू रहीं जवाहर लाल जी पूरन आजादी के प्रस्ताव पेश कइलीं प्रस्ताव पर पूरा दिन भर महात्मा गाँधी आ जवाहर लाल जीमें बहस चलल। महात्माजी आ मोती लाल जी पूरन आजादी के पच्छमें ना रहीं। उहां सभेके कहनाम रहे कि अभी देस पूरन आजादी के आन्दोलन लायक तईयार नइखे हो सकल एकरा खातिर बहुत बड़ आन्दोलन करेके जरूरत पड़ जाई जवन बिना पूरा तईयारीके दब जाई उहां सभे उपनिवेशिक सुराज का पच्छमें रहीं जवना खातिर अंग्रेजो संकेत देले रहन स । बहसमें जवाहर लाल जी महात्मा जी के प्रभावित क देलीं तबहूँ महात्मा जी दबाव डालके पूरन आजादीके प्रस्ताव जवाहर लाल जीसे वापस लिअवा देलीं जवनाके १९२९ का लाहौर कॉंग्रेसमें जवहर लाल जी अपना सभापतित्वमें पास करा लेलीं ।

तबसे हर सालके २६ जनवरी परब बन गइल रहे। हर २६ जनवरी के पूर्ण स्वतन्त्रा के संकल्प लेल जात रहे आ प्रस्तावके दोहरियावल जात रहे। उहे २६ जनवरी १९४८ से गणतंत्र के रूप ले लेलस आ महान राष्ट्रीय परब बन गइल । कुछ बरिसन तक गणतंत्र दिवस पर जनतामें पूरा उतसाह रहत रहे । बाकि त गणतन्त्रमें देश आ जनता का जवन सुविधा आ लाभ मिलेके चाहीं ऊ ना मिलल, गणतंत्रके उदेस पूरा करे तक शासन पहुंचे में सफल ना होत देखके जनता उदासीन होखे लागल । फल ई भइल कि कांग्रेसके शासन पलट गइल जनता गणतंत्र के बचावे आ ओकरा उदेसके पूरा करहीं का आशासे जनता शासन कायम करवलस बाकी त जनता पार्टी का शासनमें गणतंत्र के अउर मखौल उड़ावल गइल जवनेके दोहाई देके शासन का गद्दी प विराजमान भइल रहे । पद आ बदलाका फेर में पड़िके गणतन्त्रके उदेस तक ना पहुँच सकल

अबकी बार फेर कॉंग्रेस आ इन्दिरा जी के सरकार बनल बा । एह सालके गणतंत्र दिवस पर आसा लोग करत बाकि अबकी बार इन्दिरा जी आ उनकर सरकार गणतंत्र के उदेसके पूरा करी, जेहसे कि सरकारमें जनता के आस्था बढ़ो आ निरासा के हटाके खुशहाली देखो, तब हीं गणतंत्र दिवस मनावल सफल कहाई ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सरस्वती पूजा

पुरातन कालसे माघ सुदी पंचमीके खाली बसंतके परब मनावल जात रहल हा। महाबीरजीके पूजा होत रहल हा आ महाबीरी जुलूस निकालल जात रहल हा। बसंतके फगुआके ताल ठोकात रहल हा आ हाबूस खाइल जात रहल हा। पुआपूड़ी देवीजीके चढ़ावल जात रहल हा। एकराके छोटकर फगुआ कहल जात रहल हा। सरस्वतीजीके पूजा खाली स्कूलनमें होत रहल हा। जबन अब गाँवे-गाँवे महल्ले—महल्ले, घरे—घरे होखे लागल बा। सरस्वती पूजाका आगे बसंत मनावल फीका पड़ गइल बा।

एही दिन पहिले पहिल सिरिस्टी बाचाल भइल रहे वाणीके देवता सरस्वतीजी हई एहसे एह दिनके सरस्वती जीके पूजा होला। सरस्वती पूजा के रेवाज खूब बढ़ गइल बा। जवनाके देखके ई जरूर कहल जा सकता कि विद्याके प्रगति में अनुराग लोगन के बढ़गइल बा। ई महान खुशीके बात बा, बाकी त साथ ही इहो जरूर कहल जा सकेला कि एहसे लड़िकन के पढ़ाई-लिखाईमें काफी बाधा पहुँच रहल बा। एक महीना अगने होसे लड़िका सब पढ़ाई—लिखाई छोड़िके ढ बा लेले चन्दा मागत चलतारे। बस ट्रक रोक—रोकके जबर्दस्ती चन्दा असूल करता लोग जवनासे झगड़ा आ मारामारी हो जाता। त अइसन पूजा कइलासे का फायदा ?। एक महीना के पढ़ाई-लिखाई के घाटा पूजा कइलासे पुरा ना होई। विद्यार्थी लोगके पूजा पढ़ले लिखल ह। खाली सरस्वती जीके पूजे कइलासे केहू बिदवान ना हो सके।

का सुनाईं: का बताईं

डा० बनारसी प्रसाद 'भोजपुरी'

का सुनाईं का बताईं लागल बा अन्हरिया
गोड़ में फंदा लागल बा, सूझे ना डगरिया
कहूं मीत ना कहूं हीत ना
कहूं प्रेम ना कहूं प्रीत ना
कहीं हार बा कहीं जीत बा
कहीं रीत बा कहीं नीत बा
लहरन में अझुराइल बानी मिले ना कगरिया
का सुनाईं का बताईं लागल बा अन्हरिया
झूठ तनिक ना साँच बात बा
बात-बात में बहुत घात बा
भठचारिन के लगल पांत बा
फरजी से बदसाह मात बा
धकमधुकी लागल बड़ुए बचिहें ना पगड़िया
का सुनाईं का बताईं लागल बा अन्हरिया
घबराइल मन बहुत सोर से
बोल रहल कंकाल जोर से
लुका लगाईं का दो भाई
महल जराईं का दो भाई
कंगालन के लुकवारी में लहरता लहरिया
का सुनाईं का बताईं लागल बा अन्हरिया

—नेहरु नगर
आरा

गाँवघर के

अगिला १ मार्च के अंक
होली विशेषांक
होई, ओकरा खातिर अबहिंये से सामग्री भेजीं सभे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-सिसिर रितु-

श्रीमती राधिका देवी श्रीवास्तव

सिसिर के दिनवा उमंग लागे मनवा ना
तनवामें तनिको हुलास ए।
पलवाके भलवा छेदेला तन रहि-रहि
बहे बानिह हउआ हहास ए।
ठारसे पियर होइ झरली पतइया
बगिया में नाचे पतझार ए।
निरजन बने ठाढ़ि झुरवे बीरी छिया
निहसेला तनवा बघार ए।
कुदि-कुदि पतवा बहारेले कनुनिया
कनुआ का घरवा सुतार ए।

केहूके उजार होला केहू के सुतार होला
इहे बा जगत बेवहार ए।
सोंचि-सोंचि मनवा मे बान्हेले सबुरवा
अइहें बसंत ले बहार ए।
भूसन-बसन लेइ धानी रंग सरिया
साजि दीहें सोरहो सिंगार ए।
रतियेका कोखिया से जनमेला दिनवा
दुखवेसे सुख पहचान ए।
एक अस सब दिन रहे ना समैया
इहेबडुवे विधिके विधान ए।

गाँव-नगरिया

(देवसुन्दर पाण्डेय 'ब्याकुल')

पाके प्यार-दुलार किरिन के
बिहँसल गांव-नगरिया
खेत-खेत में, आर-आर पर
उमड़ल बनिहारिन के टोली
लेके चलल कहाँर कान्ह पर
नयकी दुलहिनियां के डोली,
बिनियाँ परल, झरल दानासे
भरि-भरि गइल बखरिया।
पाके प्यार-दुलार किरिन के
बिहँसल गाँव-नगरिया।

बूंट, मटर, मसुरी, जौ, गेहूँ,
उपजल कहूँ खूब खेंसारी,
बढ़ा रहल शोभा हंसि हंसि के
कहूँ खड़ा तीसी के धरी,
देखि ढेर लागल अनाज के
झमकत चलल गुजरिया।
पाके प्यार-दुलार किरिनिया के
बिहंसल गाँव-नगरिया।
लवटल सुख-सुहाग जिनिगी के,
मन-परान कतना अगराइल,

डाल-डाल पर पंछी चहकल,
आसा के अंगिया लहराइल,
सोना-चानी के झालर से
चकमक भइल चुनरिया।
पाके प्यार-दुलार किरिन के
बिहंसल गाँव-नगरिया।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

घर घूमन दादा के चिट्ठा

जय हो संपादक जी महाराज,

आखिर देखलीं नूं राजनीतिक घूमा-चौकड़ी ! कइसन-कइसन बहादुर लोग हरवा-हथियार लेके कुरुक्षेत्र बनवले रहे। कुरुक्षेत्र में हथियार बान रहे; आ एह कुरुक्षेत्र में रंग-बिरंग के हथियार रहन स । केहू हर कंधा पर लेले रहे, त केहूं थप्पड़ देखावत रहे, त केहू झंडे पर हंसुआ आ हथौड़ा पिजावत रहे। खूब घूमा चौकड़ी भइल। एक से एक मोंछ आ बे मोंछ वाला मरद रहन; आ ओसहीं काछा भिरले मेहरारुओ लोग रहे। आखिर में जीत मेहरारुए के भइल। ऊ आपन थप्पड़ तान के मरद लोग के पीठ मरम्मत करे लागल। केहू एने गिरल केहू ओने। सब लोग भहरागइल केहू-केहू लुका-छिपा के आपन जान बचावल, आ कोना में लुका के मुलुर-मुलुर ताकत रहल। त हो गइल नू मरद मेहरारू के लड़ाई संपादक जी ! मरद हारल मेहरारू जीतल। मेहरारू के राज भइल। त दादा के पतरा में एगो बात उचरल बा। ऊ ह एगो जोरल-जारल फरिस्ता न० ३ के फतवा कि -

हुकुम भइल बा जगत पति के; मरद झुकावस मूंड़ी
औरत के अब राज भइल बा जनखा पहिनस चूड़ी

संपादकजी, कहल बा-पहिले सीता तब राम; पहिले राधा तब कृष्ण। ओसहीं पहिले मेहरारू तब मरद। मेहरारू के ताकत बहुत होला। ऊ खुद सृष्टि ह। एहसे दादा औरत के सामने बराबर कलम झुकवले रहेले। औरत के कईगो रूप बा जैसे मतारी मेहरारू बहिन वगैरह। दिल मोलायम भी ह आ कड़ा भी। एही से कबहीं ऊ दूध पिआवेले आ कबहीं मुंड के माला बनावेले। त ई दूनों रूप एह घड़ी सामने बा। मासूम बच्चन खातिर ऊ छाती खोल देले आ असुर के छाती में जरूरत पड़ला पर, छेद भी कर देले। त संपादक जी, देस में असुर के संख्या बेजोड़ बढ़ रहल बा त एही घड़ी दुर्गा के जरूरत बा। त बोलीं जय दुर्गा जय काली !! जय असुर संघारिनी !!!

संपादक जी आ गइल बसंत पंचमी ऋतु बसंत के स्वागत करे के ऊ दिन ह। बसंत कतिना आनन्द दायक होला ई मने जान सकेला जबान कह ना सके। औरत भी बसंत के रूप ह। औरत के राज बसंत के बहार लाई, एह में सन्देह नइखे बुझात। लोगन के मन के पुरान पत्ता झर गइल बाड़न स। अब ओकरा में नया कोमल पत्ता निकली, ई बिश्वास बा। त आईं हमनी के ऋतु बसंत आ बसंत रूप-धारिणी देवी के स्वागत करीं। जय बसंत ! जय बसंत रूप धारिणी !!

राउर,

घरघूमन दादा

गाँवघर के

अगिला १ मार्च के अंक

होली विशेषांक

होई, ओकरा खातिर अबहिंये से सामग्री भेजीं सभे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अमरशहीद कविकैलाश

भुवनेश्वर प्रसाद श्रीवास्तव 'भानु'

कवि कैलाशके जन्म तब के शाहाबाद आ अब के भोजपुर जिलाके आरा मोफसिल थानाके छोड़ादेई गाँवमें भइल रहे। अइसे त उनकर पूरा नांव रहे कैलाशपति सिंह बाकी त लोग उनकाके कवि कैलासेका नांव से जानत रहे, एहसे कि हर बातके ऊ कवते में बोलत रहन।

ऊ पढ़ल-लिखल ना रहन। ओह समय देहातमें केहू पढ़ल-लिखल ना रहे। काहेसे कि पढ़े-लिखेके कौनो साधन ना रहे। देहातमें कहीं कौनो स्कूल ना रहे। शहरनमें एकाध गो स्कूल रहन स, जवनामें थोर-ढ़ेर धनीमानी लोगनेके लइका पढ़-लिख लेत रहन। कवि जी जवान भइला तक गाँवे में रहिके खेती-बधारी का काममें लागल रहत रहन।

मघके महिना रहे. आसमानमें बदरी लागल रहे आ टीप टीप पानियो परत रहे। ऊ घास गढ़िके बधारीसे अइले पूरा जड़हि गइल रहन। घासके बोझा दुआर प धके अंगना गइले आ अपना भउजाइसे कहले कि ए भउजी तनी पानी गरम क देतु त हम देह-हाथ पोंछ लेतीं। बड़ा जड़जड़ी बुझाता, सँउसे देह काँप रहल बा। त उनकर भउजाई ठोना मरली कि बड़ा तिलंगा बनिके आइल बाड़े कि हम इनका खातीर पानी गरम क दीं।

कवि जीका तिलंगाके मानी ना मालूम रहे। ओह दिनसे ऊ तिलंगाके मानी जाने खातिर बेअगर रहे लगले। जे भेंटा ओकरेसे पूछसु बाकी त केहू तिलंगाके मानी उनुकाके ना बता सकल। जेठ-बईसाख के माँह दुपहरिया में एक दिन ऊ बगैचामें बइठल रहन। एगो पलटन के सिपाही छुट्टीमें घरे जात रहे। ऊ बड़ा पियासल रहे। ओकरा के आपन लोटा-डोर देलन। ऊ पानी पीके सुसताये लागल त ओकरा से पूछले कि ए भइआ तिलंगाके मानी जानेल? त ऊ कहलसि कि हँ, पलटनके सिपाहीक तिलंगा कहल जाला। एहसे कि पलटनका सिपाहीके खाये-पीये रहे-सहे के कौनो अथिर ठेकाना ना रहे। ऊ लोग तिलंगी अइसन जहें-तहें उड़ल चलेला। एहसे तिलंगा कहाला।

कविजी जे खोजत रहन ऊ मिल गइल। ओही दिनसे तिलंगा बनेका फेरमें लाग गइले। १९१४ के लड़ाई लागल रहे, गाँवे-गाँवे एजेन्ट लोग नाप के लइका लेले सिपाही के भरती करत चलत रहे। इहो भरती होके लड़ाई में चल गइले। जब लड़ाई शान्त हो गइल त इनकर पलटन देस-बिदेसघे होके पंजाब में आके ठहरल रहे। कौनो काम रहे ना त ई पढ़ेके सुरुम कइले आ गुरुमुखीके अच्छर चिन्हलाका ब द ग्रंथ साहब के आदिसे अन्त तक पूरा घोखि घलले। ऊ मेरि बनो दिमाग प परल जोर! दिमाग गड़ल गइल बाई। आ वही से उनकर पेंसीन हो गइल।

गाँव प अइले त देखले कि सुराजके अन्दोलन सगरो चल रहल बा। इहो ओहमें आँख मुंदिके कूद गइले। कई बेर जेलके सजाई मिलल। जेलमें विदवान लोगन से सघत भइल त इनिको पढ़ेके सवख जागल। हिन्दी के अच्छर सीखले आ रमायनके अध्ययन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुरु कइले। रमायन इनिका मुंहखड़ी हो गइल। हर बखत मैं ऊ रमायन के चौपाइये के परतुख देसु भोजपुरी के बोल चालके सब्दनके तूक मिलाके कवितो करे लगले। फेर त इनका अइसन अभेयास हो गइल कि केहू से बोलसु त कवितेमें बोलसु आ कैलाश पति सिंह ना रहिके खाली कवि जी आ कविकैलाश बनि गइले। एक बात इनिका जिनिगीमें बड़ा मारके के बा कि जब पेंसोन लेके लवटले त घरे आयते अपना भउजाई के गोड़ छूके परनाम कइले आ कहले कि भउजी तोरे परसाद से हम तिलंगा बनलीं। ना ते तिलंगा कहितिस, ना हम तिलंगा बनितीं।

कवि कैलाश से हमरा १९३२में पटना कैंप जेलमें पहिले पहिले भेंट भइल त उहाँके बारे में हमरा जानेके मोका मिलल। हम गया जिलाके कार्यकर्त्ता रहीं। जहानाबादमें गिरफ्तार करके गया सेंट्रल जेल आ उहाँसे पटना कैंप जेल भेजल गइल रहीं। कवि कैलाशजी जेलमें हमरा के खोजिके जान-पहचान कइलीं आ आपन जीवनी सुनवलीं।

जेलसेछुटलाका बाद जब हम गाँव पर आके रहे लगलीं त कविजी बराबर हमरा गाँव पर आके भेंट करीं। हमरा गाँवसे दूरी एक माइल बा। गाँव प रहिके उहाँका कांग्रेसके काम करते दूगो बगईचा लगवलीं जवनामें १०८ तरह के आम बाड़न स। ओह सभके नांवनके कविता में उहाँका हमरा गाँवके जवाहर कवि से मदत लेलीं आ कुछ हमरो से लेलीं। पौधन का बारे में उहांके ज्ञान अलौकिक रहे। उहांका कलकत्ता के ग्लोब नरसरी में भी जाके रहलीं आ देखलीं। ओहिजाके पौधनके जानिवकार लोग के कहनाम रहे कि कवि जीके ज्ञान ओह लोगसे जादा रहे जवन उहांका अनुभवसे प्राप्त कइले रहीं।

कांग्रेसी भइलासे ढ़ेरसा कांग्रेसी आ बगवानी का जानकारी खातिर लोगनके मजमा बराबर उहां लगे लागले रहत रहे। घरके लोग ऊबियाके इनिको के घरे खियावल पियावल बन्द क देल त इहां का गाँव-जवारसे मांग-चाहिके खाये आ खिलावे लगलीं एक दिन हमराके एक घरसे मोरचा मांगिके पानी पियवलीं। एकर तनिको अमनख ना मनलीं आ घरसे बराबर ओसहो सनेह रखलीं।

कवि जी गुरुमुखी आ हिन्दी का अलावे बंगला उर्दू आ दोसरो-दोसरो भाषा के बोले -लिखे के मोहावरा क लेले रहीं। एक दिन जेठ का दुपहरियामें उहांका हमरा लगे अइलीं त हम कहलीं कि बड़ा घाममें चललीं हाँ त उहां का कहलीं कि— देखे लागबि घाम त ना चली हमार काम। पहिजासे चल जाइबि नावा नगर आ उहांसे ध लेबि डगर आ ध लेबि डगर त चल जाइबि सदर। हम उहांके पहुँचावे जात रहीं त एगो उजाल घरके देखिके उहांका कहलीं कि—जइसे औरत ना सोभे बिना कपड़ाके ओइसे घर ना सोभे बिना खपड़ाके। मतलब कि कवितेमें उहां का बोलते रहीं।

कवि जी भाई भउजाई के आग्याकारी रहीं। ओह लोग के बात कभी टारत ना रहीं। एक बेर उहां के भाई लड़की का सादी का बारे में एक ठहीं भेजलीं गरमी के खराइल खरचरिया में उहां का पहुँचलीं आ पहुँचते भइया के समाद सुनवली कि परसों तिलक आई। लोग कहल पहिले पानी बोनी पीहीं त बात चीत होई। उहांका कहलीं कि भइया हमराके खाली इहे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहिक भेजले बाड़े कि जाके कहि आव कि परसों तिलक जाई, पानी-धोती पीयेका बारे में कुछ नइखन कहले। त लोग कहल कि अाछा बईठीं त बातचीत होई। त उहां का कहलीं कि बात चीत करे भा बईठे-उठेका बारेमें भी भइया कुछ नइखन कहले। त लोग कहल कि कुछ तय-तापर भइबे ना कइल त तिलक कइसे आई ? आ त ई किछु हम ना जानी, हम त धावन हईं, समाद पहुँचा देलीं। आ खडेखड़ी चल देले।

ऊ सचहूंके धावन रहन। ४२ का आन्दोलन में रातारातीं सगरे बुलेटिन बांट आवत रहन आ जुटान के खबर पहुँचा आवत रहन। धोती के धोघी ओढ़के, कोपीन पेन्हले, उघारे देही, लंगे पावे रात-दिन रउंदले चलत रहन। साँचके सदेह मूरत रहन, झूठ के त नांवो ना जानत रहन। साँचे बोलला के फल ह कि ऊ अपना मउअत के दिन जान गइल रहन। २८ सितम्बर १९४२ के, जब लोग गोरन का डरसे बाहर ना निकलत रहे, कविजी पोट्री के विरोध करे खातिर कान्ह प तिरंगा लेके भारत माता आ महात्मा गाँधी के जय बोलत चढ़ि गइले आरा कलट्री पर। चलेका बेरा कहले छि-हो गइल बा खाँसी, अब पर जायेके बा फाँसी। इहे उनकर अन्तिम कविता रहल।

आरा कलट्री पर गोरा उनका के ऊपर फेंकि-फेंकि आ संगीन का नोख पर लोक्ि-लोकि के मार डलन स। कवि. कैलाश का मुंह से आह-ओह ना निकलल। भारत माता के जय, महात्मा गाँधी के जय, बोलत देसका आजादी खातिर शहीद हो गइले।

आजादी के एह ३२ वाँ गणतंत्र दिवस पर अमर शहीद कवि कैलाश के एगो स्थायी स्मारक बनावे के परतिग्या करे के बा आ एह परतिग्या के पूरा करावे खातिर सरकार पर दबाव डाले के बा, जेहसे कि अगिला पीढ़ी के लोगन का एह अमर शहीद का जीवन से प्रेरणा मिलत रहो।

बाबू बाजार, आरा

—ःभोजपुरी कहाउतः—

संग्रहकर्त्ता–'भानु'

अकुताइल कोंहार दाँत से कोड़े माटी।
अगहन हाँड़ी में अदहन।
अजगर करे ना चाकरी पंछी करे ना काम,
दास मलूका कह गये सबके दाता राम।
अंटकर पीछे डेढ़ सेर।
अंडा कहे बच्चा से कि चें-चें करु।
अधजल गगरी छलकत जाय।
अनका धनपर बिक्रम राजा।
अनकर खाईं गाइ-बजाई, आपन खाईं टाटी लगाइ।
अन्हरा का आगे रोईं आपन दीदा खोईं।
अबकी हमारी पारी तबकी तुम्हारी पारी,
देख भाई पारा पारी।
अबर देवी जब्बर बकरा।
अबराके मेहरारु गाँव भर क भउजाई।
अबर के सभे डांटेला।
अरकी के बिआह कनपटी में सेनुर।
अरुआइल मिठा पितरन के।
आँखके अंधा नांव नैनसुख।
आगत खेती आगे-आगें, पाछत खेती भागे जोगे।
आजे बनिया काल्हे सेठ।
आमके आम गुठलीके दाम।
आम खइला से काम कि फेंड़ गिनला से!।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जिनिगी के डहरि

जिनिगी के डहरिया रे लप-झप पातरि
करे नाहीं सभ केहू पार।

डेगे-डेग पर लात खिछिलेला
छने छन पर बात बदलेला
सोरहों घरी नजरि बिचिलेला
रहेला खतरवा सवार
करे नाहीं सभ केहू पार॥

तोर-मोर करि ढ़ेर जिनिगी बिगारेलें
आँख मुँदि-मुँदि के डहरिया प धावलें
लात बिछिलाई एकर धेयान नाहीं धरेलें
करेलें ना तनिको बिचार
करे नाहीं सभ केहू पार॥

बार बे कइल ऊ बड़कवा कहाइल
सगरे धरतिया प नउवां गवाइल
रोज-रोज के नया इतिहासवा लिखाइल
मचल बा जग में गोहार।
करे नाहीं सभ केहूं पार॥

बुद्ध गान्ही बाबा एही धरती प अइलें
सत्य आ अहिंसा के सँनेस फइलवलें
घरे-घरे घुमि-घुमि सोखिया जगवलें
लेख बाटे नाव संसार।
करे नाहीं सभ केहू पार॥

जिनिगी मिलल कुछु नांव त कमाईं जा
अंजुरी बटोरि के अँजोर फैलाईं जा
करिया समुन्दर के अँजोर से सुखाईं जा
होखे घर-घर में बिहार
करे नाहीं सभ केहू पार॥

चन्द्रेश्वर

नयका जमाना के तराना

नयका जमाना के तराना गाव भाई।
कभी कभी छांट क पुराना गाव भाई
नयका जमाना के तराना गाव भाई
आगा के सोच भाई बीतल जे बात गइल
सुरुज इंगुरी भइल अंधियारी रात गइल
चिड़ई के संगे चहचहाना गाव भाई
नयका जमाना के तराना गाव भाई
नाजान जे कहिया ले बाजी एकतारा

जिनगी के नाव कबो पहुंचीकिनारा
देख, किनारे कहीं आवे ना रोआई
नयका जमाना के तराना गाव भाई
वेली अस गमक, चमेली अस झूम
पूजल अटारी के झोपड़ियो के चूम
दुखिया से ममता, गरीबी से लड़ाई
नयका जमाना के तराना गाव भाई

—चितरंजन सिंह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भलाई के बदला बुराई

—श्रीमती जनक दुलारी पाण्डेय—

ओह दिन थोरहीं रात गइला बगल में ऊपर से केहू के गिरला के जोरदार धमाका सुनिके करेजा धक से हो गइल। तनिके में पता चले से बाकी ना रहल कि पड़ोस के एगो अधेड़ मेहरारू निनइला में करवट बदलते अपना दुमंजिला से नीचे आ गइल रहीं। उनकर कंहरल सुनिके अड़ोस-पड़ोस के ढेर लोग जुटि गइल। बाकिर सभ लोग मुंहतकवे रहन। केहू से ई ना पार लागल कि उनका के उठा-पठा के अस्पताल पहुँचाईं आ दवा-दारू के इन्तजाम करीं।

बात अइसन रहे कि उनकर गरीबी देखि के लोग इहे सोचत होइहें कि जे उनका के अस्पताल ले जाई ओकरे देही नेहीं आ रुपयो पइसो से लागे के परी

एही बीच अंजु के बाबुओजी पहुँचले। पहिले त ऊ कुछ धकबकइले बाकिर पाछे ऊ उनका के टांग-टुंग के एगो रेक्सा प बइठाके अस्पताल ले गइले।

जादे दिन ना लागल। छव सात दिन में ठीक होके ऊ घरे आ गइली। एह बीच में अंजु के बाबूजी उनका सेवा भगत में अपना के एह तरह से लगवले रहन, जइसे उनका घरहीं के केहू आपने देहज-नेहज होखस।

अंजु के बाबूजी असपताल से उनका लवटने अपना काम प चल गइले। बाकिर हम अबहीं माइए के भिरी आरहीं किराए के मकान में रह गइलीं। पड़ोसिया होखे के चलते आ आमने सामने घर के दुआर रहला से दिन में दू चारबे, बिना मनो के, उनका से देखा-देखी आ बात चीत होइए जात रहे। हमहुँ उनका देह-नेह के बारे में दू-चार टपा पुछिए लेत रहीं आ ऊहो हमरा मन लागे के बारे में पूछ लेस। असहीं एक महीना निकल गइल।

अंजु हमार एकलौती बेटी ह। पढ़े में ड़ा तेज। ऊ अपना बाबुजी का साथे गये रहेली आ ओहिजे के एगो कन्या पाठशाला में पढ़ेली। ओकरा पढ़ाई के हरजा होखे के चलते गया से बाहर अधिका दिनले कतहूं रहल हमारा खातिर बड़ा कठिन हो जाला। एह से अब जादा दिन ले आरा में रहल ना जा सकत रहे। हम एके महीना आरा रहके गया चल अइलीं। बाकिर हमरा आजले एह बात के पता ना चलल कि जवना मेहरारू के हमार पतिदेव अतना भलाई कइलन। रुपया-पइसा से देह-नेह ले ओकरा खातिर ना गदनले ऊ पड़ोस के एगो मेहरारू के साथ हमरा के लगा बझा के महाभारत रचावेके नवबत काहे ला देलख ढेर दिनले बाबुजी का एकर पता ना चलल एकदिन उहां केहमरा के एकदम उदास देखिके पूछि बइठलां आ सभ बात जनला प मन मरले कहलीं कि जाय द, आज कालभलाई के बदला मेंबुराइए मिलेला।

द्वारा—डा० 'प्रणयी'
मिश्रटोला, आरा

गाव घर में
विज्ञापन देके लाभ उठाईं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

गणतंत्र दिवस पर आरा के नागरिकन, के नाम नगर पालिकाध्यक्षके संदेस

भारतके एह ३२ वां गणतंत्र दिवस पर हम आराके नागरिकनके अभिनन्दन करतानी जइ लोगका सहयोगसे नगरपालिका एक सालमें नगरके अ-ना विकास करेमें समर्थ हो सकल हा'ज ना आजा.ी मिलला का बाद ३१ बरिसन में भी ना हो सकल रहल हा ।

नगरपालिकाके शहरी भागके बड़का नालनके सफाई कर दीहल गइल । नाली सबके भी मरमत कर दियाइल। सभ गलियन के पक्की बना देल गइल। शहरके नुक्कड़न पर ५० गो वेपर लाईट लगाके रोशनी के स्थायी वेवस्था कर देल गइल । एकरा अलावे १५० गो मरकरी मंगावल गइल बा। जवनाके एक हफ्तामें जगह जगह फीट कर देल जाई । पेय जल जरूरत का मोताकि लोगन का मिले एह खातिर शहरमें ३ गो पंपिंग सेट जवना में ८० पावरके मोटर लगिहन स टंकी बनावे में काम लाग गइल बा । शहरके बाहर वाला नगरपालिकाके गाँवन के सड़कनके भी मरम्मत करे खातिर ठीका के टेंडर दे दियाइल बा । एक महीना में सभ सड़कनके मरम्मतके काम पूरा कर दियाई ।

नागरिक लोगसे अपील बा कि ऊ लोग अपना शहर के विकास का कामनमें दिन-दिन प्रगति होत चले, एह खातिर अपना बकाया कर जे करीब ३० लाखके बाकी बा ओकराके देवे में जल्दी करी। अगर नागरिक लोगके सहयोग पूरा-पूरा मिलत रहल, त हमरा विश्वास बा कि आरा शहर गुलजार चमन बन जाई। जय गणतंत्र दिवस। जय नागरिक !!

अश्विनी कुमार सिन्हा

अध्यक्ष

सुन्दर गाँव हमार

उमाकांत तिवारी

दूर शहर के कोलाहल से
बसल सदा उजियार
सुन्दर गाँव हमार।
जेकर घर-घर, आँगन-आँगन,
लागे हरदम सुघर सुहावन
तुलसी के चऊतरा जहां बा,
जहां पवित्र बिचार।
सुन्दर गाँव हमार।
धजा महाबीरी फहराला,
शस्त्र जहाँ के गोजी भाला,
हर बैलन के जोड़ी धन बा,
जिमिगी के आधार।
सुन्दर गाँव हमार।
जाति-जाति में प्रेम परस्पर,
एक भाव बा भीतर-बाहर
मनसायन कीर्त्तन-गायन से
जहां दुआर-दुआर।
सुन्दर गाँव हमार।

रंगीन एवं कलात्मक छपाई के लिए
लक्ष्मी प्रिंटिंग प्रेस,
गोपाली चौक, आरा

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गणतंत्र दिवस १९८०

फिर आया गणतंत्र दिवस ले राष्ट्र पुरुष की पाती
स्वतंत्रता, समता, प्रगति की हमें जुगानी थाती
रावी तटके निश्चय को दुहराने का दिन आया
बांध कफन सर, आगे कदम बढ़ाने का दिन आया
मत बैठो मन मार, जमाना हम पर आँख लगाये
उन्नत हो यह राष्ट्र, फरहरा कभी न झुकने पाये

—चित्तरंजन

गणतंत्र दिवसके कार्यक्रम

(अपना संवाददाता से)

आरा, २४ जनवरी २६ जनवरी। गणतंत्र दिवस के कार्यक्रम तय करे खातिर भोजपुर के कलक्टर के अध्यक्षता में सरकारी पदाधिकारी आ नागरिक लोगन क एगो संयुक्त बैठक भइल जवना में नीचे लिखल कार्यक्रम करेके सर्व सम्मति से तय भइल ।

तय कार्यक्रम के अनुसार सबेरे ९ बजे रमना के झंडा चौक पर कलक्टर साहेब झंडा फहराइबि आ सलामी लेबि । राजकीय बालिका विद्यालयके छात्रा लोग राष्ट्रीय गीत गाई ।

ओकरा बाद कलक्टर साहेब कलक्ट्री पर झंडा फहराइबि। एस० पी० साहेब पुलिस आफिसमें आ डी० डी० ओ साहेब डिस्ट्रिक बोर्ड कार्यालय में झंडा फहराइबि। एकरा बाद साढ़े नौ बजे नगर पालिकामें अध्यक्ष श्री अश्विनी कुमार बाबू झंडा फहराइबि आ एकरा बाद एस० डी० साहेब बाजार समितिमें झंडत्तोलन करबि ।

झंडा फहरावेके काम हो गइला का बाद २ बजेसे रमनामें घोड़सवार लोगके प्रदर्शन होई आ ३ बजे से रमनाके घेरा वाला खेलके मैदान में फुटबाल मैच होई ।

साँझिके साढ़े छव बजेसे नागरी प्रचारिणी सभा के हालमें सांस्कृतिक कार्यक्रम में कविता शायरी आ नृत्य-संगीतके कार्यक्रम सम्पन्न कइल जाई ।

राशन के चीनी कहां गइल

आरा। पिछला पख में शहर के राशन के दोकानन में पब्लिक के बांटे खातिर सरकार चीनी देले रहे ।

छान बीन से पता चलल हा कि एह चीनी के तीन चौथाई भाग काला बाजार में चल गइल आ पब्लिक टापते रह गइल ।

पता चलल हा कि एस० डी० ओ० एह घपला के छान बीन के ऑडर देले हां ।

किसानन में हाहाकार

(कार्यालय संवाददाता)

आरा। सोन नहर में पानी ना रहला से नहरी इलाका के किसान लोग में हाहाकार मचल बा काहे कि पटवन के बिना गेहूँ के फसल मुरझा रहल बा। पता ना, एकरा खातिर अफसर लोग के कि प्रकृति के दोष दीहल जाए

ओने बिजली ना रहला से नलकूप वाला इलाका सभके भी इहे हाल बा बुझाता कि खरीफे अइसन किसानन के रब्बी से भी हाथ धोए के पड़ी ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भारत के

३२ वां गणतंत्र दिवस पर

लक्ष्मी प्रिंटिंग प्रेस

आ

गांवघर

परिवार अपना पाठक

आ सहयोगी लोगन के

अभिनन्दन करता

आ

देस के खुशीहाली के

कामना करता।

संम्पादक

व्यवस्थापक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आपका सहयोग : हमारी सेवा शहर की सुन्दरता की गारंटी है।

सीमित साधनों के बल पर नगर को स्वच्छ और सुन्दर बनाने का हमारा विनम्र प्रयास जारी है। नयी नालियों और सार्वजनिक पथों के निर्माण, पुरानी नालियों की मरम्मत और सफाई, प्रत्येक वार्ड में प्रकाश और जल की समुचित व्यवस्था, सार्वजनिक स्थलों में शौचालयों के निर्माण में आपकी नगर-पालिका ने उल्लेखनीय प्रगति की है।

आपका सहयोग इस प्रगति को गति प्रदान कर सकता है।

- कृपया, नगरपालिका के बकाया करों की अदायगी में शीघ्रता करें। करदाताओं पर पालिका के ३० लाख रूपये से ज्यादा की कर राशि बकाया पड़ी है। जिससे विकास की हमारी कई महत्वपूर्ण योजनाएं रूकी पड़ी हैं। समय पर कर चुकाने का मतलब है और सुविधाएं हासिल करना। चूकिए मत।
- नालियों में मलमूत्र कूड़ा-कर्कट या कीचड़ मत फेंकिए, ये गंदी आदतें हैं और इनसे बीमारी भी फैलती है।
- नलों को व्यर्थ खुला मत रखें। यह शक्ति का अपव्यय है और इससे गंदगी बढ़ती है।
- अपने क्षेत्र में नगरपालिका के संसाधनों की रक्षा करें। ये सार्वजनिक सम्पति हैं तथा उनके अभाव में आपकी कठिनाई बढ़ती है।

अश्विनी कुमार सिन्हा
अध्यक्ष

जे० एन० पी सिन्हा
कार्यपालक पदाधिकारी

श्री भुवनेश्वर प्रसाद श्रीवास्तव 'भानु' के जरिये लक्ष्मी प्रिंटिंग प्रेस, आरा से छापा के गाँव घर परकासन, आरा खातिर परकासित।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

माटी के गमक

(भोजपुरी मासिक पत्र)

सम्पादक

विमल कुमार सिंह 'विमलेश'

सहायक सम्पादक

व्रज किशोर दीक्षित 'व्रजेश'

पहिलका बरिस १९७२ जुलाई, अगस्त आ सितम्बर अंक दाम ५० पइसा

प्रकाशक

भोजपुरी सदन, सीवान (बिहार)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सम्पादक मंडल

श्री सन्त कुमार वर्मा, श्री धर्मनाथ प्रसाद वर्मा 'प्रेमी'
श्री अक्षयवर दीक्षित, श्री केदार नाथ पाण्डेय
आउर श्री प्रफुल्ल चन्द्र द्विवेदी

एह अंक में पढ़ीं

			पन्ना
१	माटी के गमक : पाठक लोग के नजर	श्री व्रजेश	१
२	भूलेलें झूलनवां में श्याम	,, दुधनाथ शर्मा 'श्याम'	४
३	किसान गीत	,, प्रफुल्ल चन्द्र द्विवेदी	४
४	लाल किला के कोना ; आजादी के खोज	,, राघव सिंह	५
५	विधना सांच झूठ जग सारा	प्रो० केदार नाथ पाण्डेय	७
६	बीजक : एगो झलक	श्री पारस नाथ तिवारी	१३
७	कोटा आ कोठा	,, गौरी कान्त 'कमल'	१५
८	बिसमाधल दिन	;, छन्दराज	१५
९	खिचड़ी	प्रो० उमा शंकर सिंह 'उपाकर'	१६
१०	सारण जिला साहित्य सम्मेलन	आचार्य महेन्द्र शास्त्री	१८
११	आजी	श्री भगवान गिरि 'नवीन'	१९
१२	सम्पादक के कलम से	विमल कुमार सिंह 'बिमलेश'	२०

प्रश्न

समकालीन साहित्यिक त्रैमासिकी

सम्पादक : निरंजन–लालसालाल तरंग

सम्पर्क —२४३ ग, गढ़हरा

बेगुसराय (बिहार)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

माटी के गमक : पाठक लोग के नजर

भाई विमलेश जी,

राउर नेह हमरा अस एगो छोट कलाकार पर रहेला ई हमार कम भाग नइखे। माटी के गमक के राउर एगो पहिले आ अबकी फेर एगो अंक मिलल। देखके मन हुलस गइल, छाती जुड़ा गइल। नयका जिला के ई नया प्रयास साँचो सराहे लायक बा। बिना आदेश के हम का दीं बस—

ई अषाढ़ के पहिला बादल, पछिम से पछुआ सिसकल
चमचम बिजुरी आसमान में, पायल बान्ह के चमकल
बोरो उगल बा सतरंगी, गोरी के चुनरी खिसकल
टप--टप बुन्द पड़ल धरती पर, माटी अइसन गमकल

—बनियापुरी
बनियापुर, सारण

भाई विमलेश जी,

अपने के भेजल भोजपुरी पत्रिका 'माटी के गमक' मिलल। जइसही पत्रिका हमरा मिलल कि हमरा बुझाइल कि हमार निन्द टूट गइल हवे। साँचो के हमनी के ई माटी के गमक इहाँ पहूँचते गमके लागल आ इहाँ के लोग ओकरा गमक में विभोर हो गइल। एकर वार्षिक चन्दा बतावल जाय कि हम एकर गाहक बन जाईं। भुलाईब मत—

अमला मिश्र
स्टेनो, अवर प्र० शि० पदा०, बेतिया

सम्पादक महोदय,

राउर भेजल 'माटी के गमक' मिलल। पढ़नी आ पढ़ के मन खुब खुश भइल कि भोज--पुरी के विकास खातिर जीव-जान लगा देले बानी सभे। भोजपुरी के विकास आ 'माटी के गमक' के हमार शुभ कामना बा। एह सबका अलावे विचित्र जी के कविता 'हमरा इहे बुझाता' बड़ा मजदार आ लाभप्रद बा। आउर रचना भी संतोषप्रद बा। साथे-साथे माटी के गमक के गहकी बने खातिर हमरा का करे के होई बतावे के कृपा कइल जाई।

विनोद कुमार वर्मा
निजी सहायक
ग्राम्य अभि० संगठन, कम्बाइण्ड बिल्डिंग, मुजफ्फरपुर

बन्धुवर विमलेश जी,

माटी के गमक की पाँच प्रतियाँ मिली। उसमें अपना अभिभाषण भी पढ़ा। इसके लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बहुत-बहुत धन्यवाद ।

—गणेश चौबे
बरास्ता पिपरा कोठी, चंपारन

मान्यवर भाई,

माटी के गमक से घर बाहर एतना भर गइल बा कि सगरो महमह बा। हमार ढेर-ढेर मुबारकबाद। एतना बढ़िया चीज निकाल के अपना जिला के नाम उजागर कइनी. ई राउर 'माटी के गमक' खुब फइलो, आसमान ले चढ़ जाव, हम इहे मनावत बानी।

—विश्वरंजन, एम०ए०
भगवान बाजार, छपरा

भाई विमलेश जी,

रउवा छोह-नेह के हम हर घड़ी दोहराइले. राउर भेजल पत्रिका मिलल मन खुशी से नाच उठल. काम करे के जवन चिन्गारी रउवा में बा उ भोजपुरी के विकास में ज्वाला बनी, एतना विश्वास त जरूरे बा. रउवा के एगो बात के सलाह देत बानी, कविता के भंडार कम नेइखे. अभी पाँच वरिस ले अगर कविता ना लिखाई तबो भोजपुरी क्षेत्रीय भाषा सबसे आगे ही रही. गद के भण्डार भरे के जरूरत बा. पत्रिका में कविता कम दी आ गद अधिका. ई ठीक बा कि गद रचना कम मिलत होई. बाकिर रउवा तनीं भर कोसिस कइले से रचना मिली। हमहू रचना भेजब ... .. अनिरुद्ध जी के कविता बड़ा नीक लागल. अइसने कविता आवे के चाही--

राउर,
वीरेन्द्र
तारा निलम, भगवान बाजार. छपरा

भाई विमलेश जी,

कहीं अपने के माटी के गमक अब मासिक रुप में देखनी। बहुत खुशी भइल। आस बा अपने सब महतारी भाषा 'भोजपुरी' खातीर आउर बहुत कुछ करब।

अपने के--
रामबचन तिवारी
अध्यक्ष, सराय केला अनु० भोजपुरी समाज आदित्यपुर

आदरणीय विमलेश जी,

सप्रेम नमस्ते।

राउर २१-७-७३ के भेजल पाती आ माटी के गमक नामक पत्रिका मिलल पत्रिका नीक बा। रचना चयन भी बढ़िया बा। आचार्य महेंद्र शास्त्री के चउका गीत हास्य-व्यंग बढ़िया स्तर-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लवा। श्री गणेश चौबे जी के भाषण पत्रिका के मूल्य बढ़ावे में सहायक भइलबा। अगर पत्रिका निकलत रह गइल त आगे चल के आसो बा आउर निखार आई। अंक भेजी रचना सहयोग रही।

राउर--

रामबृच्छ राय 'विधुर'

आदरणीय बिमलेश जी,

राउर माटी के गमक पत्रिका मिलल। स्नेह खातिर बहुत-बहुत धन्यबाद आ पत्रिका निकालला खातिर बधाई। भोजपुरी में अबही बहुत काम करे के बा। पत्रिकन के भी निकाले के आ उन्हन के सार भी उच्च करे के बा। पत्रिका पढ़ि गइनीं। आदरणीय चौबे जी के जब आशिरबाद बा तब का पूछे के। लगन चाही। अंक के कवितन के पढ़ली। एमे तनि नयापन चाही। आ अब कबिता से गद्द का उपर अधिक बल देवे के जरुरत बा। रउवा नाटक शुरू कइले बानी। नाटक के त अउरी कमी बा। ई परयास सराहनीय बा। रमेश जी के नया ढग पसद आइल। कविता के कम जगह देईं। कहानी, निबन्ध आ नाटक के प्रश्रय दीं। कुल्ही मिला के राउर परयास सराहनीय बा। जरूर सेवा करब।

राउरे

लक्ष्मी शंकर त्रिवेदी

'साहित्यरत्न' एम० ए०, एल० टी०

पत्रकार

हम हृदय से चाहतानी कि माटी के गमक एगो आदर्श पत्रिका होखे। गमक सीवान से उठल बा जवन भोजपुरी के गढ़ ह। सीवान के माटी धन्य बा।

अनिल कुमार राय 'आंजनेय'

भू० ग्रा० उ० म० वि० बकसर, भोजपुर

माटी के गमक निकाल के अपने भोजपुरी भाषा में नया परान दे देले बानी।

गौरी कान्त 'कमल'

दूबौली

दिघवा दूबौली, सारन

रउवा भोजपुरी रूपी गंगा के अवतरन सिवान के स्वर्गिक प्रांगण में करके भोजपुरी परिवार के एह लहर में गोता लगावे के सुअवसर प्रदान कइले बानी।

—अनिरुद्ध प्रसाद श्रीवास्तव 'द्रोण'

विशेष भू० अर्जन कार्यालय सं०-१

गंडक योजना, मुजफ्फरपुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

झूलेलें झुलनवाँ में श्याम

धरती पर धरम अघाइल सतगुन आइल हो, देवी देवकी दीहली अवतार दनुज मुरुझाइल हो
कमल के कोमल कंवड़िया किरिनि छुई खोलेली हो, ओइसे अपने से खुलली दुआरि दयालु बाहर अइले हो
छुअत चरन जल जमुना के घटि, कटि तर बहें हो बसुदेव माथ पर लिए कृष्ण सुरन जयकार करें हो
घन घुमड़ि घुमड़ि लि रंग मृदंग बजावत हो, नाच करति बिजुरिया बदरिया कि अंगना लोभावती हो
सर में सरोज सुशोभित सरग सजावत हो, मोर-मोरनी के पंखिया तनाइलि अंखिया अघाईलि हो
बदरा झरन लागे झरना चरन के पखारत हो, बन बरनि न जात बिरवना से व्यजन डोलावत हो
झूलेलें झूलनवा में 'श्याम' झुमर झुमि गावति हो, मइया जसुमति वारे ललन पर रतन लुटावती हो

—वृध नाथ शर्मा "श्याम"
अध्यक्ष
भोजपुरी परिषद भाटपाररानी, देवरिया।

किसान गीत (रेडियो से प्रसारित)

किसानवां किसानवाँ किसानवाँ किसानवाँ रे किसानवाँ
तोहार खेतिया में बसेला परानवाँ
केश मुकदमा तेजि द आलस, तबे जाई हलकनवां।
समय के कीमत बुझब तबे, भगिहें दुख शैतानवाँ॥ रे किसानवाँ
अइहें बाढ़ सुखार तूफनवाँ जनि टूटे धेयानवाँ।
आसमान के कवन भरोसा मेहनत सुख के खानवाँ॥ रे किसानवाँ
नया नया हल बैल बीज से खेती के उत्थानवाँ
पम्पिग सेट से होइहें हर दम, गेहूं मकई धानवाँ॥ रे किसानवाँ
खेती बारी ह प्रधान, ई जानेला जहानवाँ।
तहरे बले सीमवाँ पर हँकड़ेले जवानवाँ॥ रे किसानवाँ
गह गह मह--मह बारहो मासे, रुची खेत खरिहानवाँ।
धरती के भगवान ले अइब, भुइयाँ आसमानवाँ॥ रे किसानवाँ

—प्रफुल्ल चन्द्र द्विवेदी उर्फ ददनजी
ग्राम--हरपुर पो०--रघुनाथपुर, सीवान

माटी के गमक रउवा पत्रिका ह एकर ग्राहक बनके भोजपुरी समाज के सेवा करीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लाल किला के कोना : आजादी के खोज

आज २६ बरिस के बाद १५ अगस्त आइल बा। लोग के दिल का दरिआव में खुशी के लहर हिलोर मारत बा। भारत का कोना-कोना में तिरंगा झंडा फहरावल जाई। आज स्वतंत्रता देवि अपना छप्पन कोटि सपूतन के आशिरवाद देवे खातिर दर्शन दिहें। इहे बतिया हम अपना बाथानी में बइठल भोर ही से सोंचत रहनी। घड़ी पर नजर गइल त बुझाइल कि साढ़े छव बजता। शुभ काम में देरी का? मन पंछी पाँख फड़फड़ा के उड़ चलल। सबसे पहिले कलकत्ता महानगरी के धर्मतल्ला वाला मैदान में पहुँचनी। देखनी कि लाखो लोग तिरंगा झंडा का नीचे खड़ा रहे। मुख्य मंत्री जी आपन लामा चौड़ा भाषण झाड़त रहले। लोग के उछाह सावन के घटा अइसन उमड़ल रहे, हमरो खुशी के ठेकान ना रहे। एतने में हमरा दिमाग में बिजली चौंधल। आरे! हम त अपना माता स्वतंत्रता देवि के दर्शन करे नू आइल बानी। चारु ओर घुमे लगनी बाकिर उनकर दर्शन ना भइल। अन्त में मुंह लटकवले पटना कि ओर चल देहनी।

राह में इयाद परल कि बिहार के कुछ हिस्सा में आकाल पड़ल बा। हो सकेला कि स्वतंत्रता देवि भूख पियास से मुरझाइल अपना धिया—पूता के लोर पोछे खातिर वोही इलाका में गइल होखस? ई सोच के नवादा जिला के एगो गाँव में हम घुस गइनी। देखतानी कि चारू ओर पानी खातिर हाहाकार मचल बा, केहु का घर में आनाज नइखे आ बाजार में आनाज के भाव आकाश से बात करता। एगो मड़ई में हम चूपे ढूक गइनी। ओही टूटल मड़ई में ऐगो ४५ बरिस के मेहरारु टूटल खटिया पर बइठल रही। तन के कपड़ा फाटल आ मइल कुचइल रहें। अगल-बगल चार गो लइका उनका के घेर के बइठल रहले। भूख पिआस से रोअत छटपटात रहले सन आ उ बइठ रहली उनका आँख से बहल लोर उनका चेहरा पर आपन नरी बनवले बहत रहे। मड़ई में कतहो एको अन्न के दाना ना रहे। कोना में कनखाही अलमुनिया के तसली ढ़िमिलाइल रहे। ई देख के हमरा बड़ा दुख भइल। आजादी मिलला के २६ बरिस बादो अपना देश के ई हाल? का इहे आजादी ह? मन बहुत दुखित हो गइल रहें। हम पटना कियोर चल देहनी।

पटना—लखनऊ घुमते—घामते हम दिल्ली पहूंचनी। हमरा पुरा विश्वास रहें कि आउर कहीं ना त दिल्ली में स्वतंत्रता देवि के दर्शन जरूर होई। उहाँ देखनी कि तिरंगा झंडा आसमान में चारू ओर लहरत रहे। छोट मकान से लेकर बड़का-बड़का कोठा आमारी पर झंडा लहरत रहे। लाल किला के सामने मेंदान में लाखन लाखन लोग जुटल रहे। आ एगो मेहरारू, जवन उजर लूगा पेन्हले रहली उनकर भाषन सुनत रहें। हमरा बुझाईल कि इहे स्वतंत्रता देवि हई। भीड़ के चीरत हम आगे बढ़नी कि दर्शन करी। मंच का लगे गइनी त बुझाइल कि प्रधान मंत्री श्रीमती इन्द्रा गाँधी अपना बुलन्द आवाजे में कहत रहली "हम गरीबि मिटायेगें, हम सबको रोजी देगें, भारत का नव निर्माण करेगें। ई सुन के हमार देह धनक गइल कि कइसन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भाषन त लगातार २५ बरिस से सुनत सुनत कान पाक गइल बा। उहाँ से लपट के हम सर-सराइले लाल किला में घुस गइनी। लाल किला में चारू ओर खोजत फिरनी। आखिर में देखनी कि लाल किला का कोना में स्वतंत्रता देवि मुहकरिए गिरल चुपचाप सिसकत रहली। हमरो बड़ा आचाम्भा भइल कि जिनका के स्वतंत्र करावे खातिर काना भइल आ जिनका स्वागत में आज हर जगह खुशी मनावल जाता, जयकार के नारा से आसमान गुंज रहल बा ऊहे आज लाल किला का कोना में सिसिक सिसिक के रोअतारी? उनकर रोअल देख के हम आपाना के ना रोक सकनी हमरो मुँह खुल गइल। हमार रोअल सुन के उ हामारा इयोर तकली आ उठ के अपना हाथ से हमार लोर पोछली आ धीरे से कहली "बेटा? तू ध्यान से सुन। तू त कलकत्ता से दिल्ली तक घूम के देख लेहल। हमरा ५६ कोटि सन्तान बा। हमरा खातिर सभे बराबर बा। आज ७५ प्रतिशत लोग भूखे पियासे पड़पता। खाली २५ प्रतिशत लोग जे राज चलावता खुश बा। हम मातारी हई। हमरा ई आच्छा ना लागे। एही से हम हर १५ अगस्त के लाल किला के कोना में अकेले अपना भाग पर रोइले। आज तू ही हमार एगो अइसन बेटा बाड़ कि हमरा के खोजत २ इहाँ तक आइल बाड़। अइल त निमन कइल बाकिर हमार सनेस लेले जा कि सबका खाये के इन्तजाम होखे। सब केहू बैर-भाव, ऊँच-नीच के भेद-भाव हटा के एक होके काम करे आ अगिला १५ अगस्त धूम-धाम से मनावे तबही हमार छाती फूलाई आ सबका के आशिरवाद देहब। उनकर सनेस हम लेके उहा से अइनी आ माटी के गमक में दे देतानी कि ई गमक सब लोका लगे पहूँच जाव।

राघव सिंह, बी० ए०, बी० एड०
गाँधी स्ना० वि० मं० लहेजी (सीवान)

लेखक बन्धु लोगन से निवेदन,

सामयिक सन्दर्भ वाली रचना तिथि से एक महीना पहिले सम्पादक का पास भेजी नात समय पर छापे में कठिनाई होति बा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एकाँकी :--

"बिधना साच झूठ जग सारा"

---:०:---

पात्र परिचय :-

आचार्य मण्डन मिश्र	—	प्रसिद्ध मीमाँसक आचार्य
आचार्य शंकर	—	अद्वैतवाद के प्रवर्तक सन्यासी
देवी भारती	—	आचार्य मण्डन मिश्र के औरत
भद्रसेन	—	आचार्य मण्डन मिश्र के शिष्य

साथ में पाँचगो औरत आ पहरादार।

पहिलका दृश्य

[माहिष्मती नगरी के बाहर नर्मदा नदी के तीर पर जाये वाला रास्ता में पाँच गो औरत लोग सिर पर घडा लेले जात दिखाई पड़ता। सबकर अवस्था बीस बरिस का आस पास बा। चेहरा खिलल आ होंट पर सहज मुस्कान बा। दूर से महिष्मती नगरी के ऊँच—ऊँच अट्टालिका दिखाई पड़तारीं सन। सामने से दगो जवान संन्यासी जेकर सिर आ मूँछ मुड़ाइल बा, गेरुआ पहिरले तथा हाथ में दण्ड लेले आवत दिखाई पड़त बा]

औरत एक—आजु फेर मनसायन के लच्छन लउकत बा।

औरत दो—कइसन मनसायन ?

औरत एक--त तूँ इहवाँ नइखू का ?

औरत तीन--जेकरा घर ही रहे लायक होई, से इहवाँ का करी।

औरत दो—(कुछ लजाइल स्वर में) चल हट, तोहरा त हरदम इहे कुल रहेला।

औरत तीन--त का कवनो झूठ कहतानी। आरे इहे समइया न खेले खाये के ह, फेर त दू चारि गो आगा पीछा हो जइहन स त ... ...।

औरत एक--ठीक कहलु ह जीजी, इनका अइले अबे केतना दिन भईल कि घरे ना रहसु।

औरत दो—आपन बाति कह। छोड़ ई कुल।

औरत एक—आँख मूँदि के चलबू त हम आपन बाति कहि के का करब।

औरत दो--हम आँखि मूँदले बानी ?

औरत एक--मूँदले ना रहितू तोहार त सामने का चीज ना लउकित।

औरत दो--(संन्यासी के संकेत कके) हिनका बारे में कह तारू ?

औरत एक—हँ ए सरकार इनहीं का बारे में।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बुझाता जे इहो आचार्य जी से शास्त्रार्थ करे जातारन।

औरत दो—ई त साच कहलू ह जीजी।

औरत तीन--एकर लीलार बड़ा चमकता रे ई बड़ा गियानी बुझाता।

औरत चार-उमिरो बेचारा के कमे बुझात।

औरत पाँच-ई साधु काहे हो गइल ? (कुछ रुकि के) आ बढ़नी मारो ई साधु भइला के, ना जाने का मिलेला इन्हनी का।

औरत एक—घरे केहु ना होई त का करसु। पेट त पालही के परी।

औरत दो--बाकिर ई पेट पाले वाला साधू नेइखे बुझात। ई असली बुझाता।

औरत एक-इनका नीयर ढेर असली-असली अइलन-गइलन।

माहिष्मती बड़ा उलट फेर देखलस।

औरत तीन-हँसत खेलत मोरे बाबू अइलन।

औरत चार-मुरझाइल गइलन।

औरत पाँच-मुंह चोथाइल गइलन।

(एक साथ सबकर जोरदार हँसी गूँजि जात बा। बड़ा गिरे—गिरे हो जात बा।)

औरत एक-एही से हम कहिला कि तीरे चले के त बसन्तो दीदी का संगे, देख त केतना मजा आ गइल।

औरत दो--मन के बाति छोरि लिहलू मालती दीदी। हमरा त उ ना आवे देत रहुवन बाकिर वसन्तो दीदी के नाम सुनि के हमरा रहि ना गउवे। (कुछ लजातारी।)

औरत तीन--जा तो हरो अभागिए बा। रे गर्मी के दिने न राति ह। आजु ना अइती त का कवनो घीव के घइली ढरकल रहलह। (सब केहू फेर हँसता औरत दो लजा जातारी)

औरत एक-कालिह त बड़ा लीला भईल रहे।

औरत दो-का भइल रहे हो, कहबो करबू कि बुझवले बुझईबू।

औरत एक-अइसही एक जाना कूदत फाँदत अइलन, आ जब शास्त्रार्थ खातिर हाँ-चड़ कूटे लगलन.......

औरत तीन--तब ?

औरत एक-आचार्य जी उनुका से कहलन कि का शास्त्रार्थ करब, बड़े-बड़े ऊँट बहाइल गइलन आ.... ......

औरत तीन--गदहा पूछसु जे केतना पानी।

औरत एक—उ मनबे ना करसु। लगलन छरियाये आ जब शास्त्रार्थ शुरू भइल त एके घंटा में उनुकर हलक सुखे लागल। क गिलास त पानी पीअलन।

औरत तीन--ना जाने का बुझेला ई लोग आचार्य जी के, दउरल जे चलि आवेला लोग।

औरत एक--इनहूं के उहे गति होई।

औरत तीन-बुझात त अइसने बा। पहिले जेतना कूदि लेसु।

औरत चार--आजु ले केहु आचार्य जी के हरावे वाला ना जनम लीहल त इनका में का बा।

औरत पाँच--बेचारा केतना खुश—खुश चलि आवत बा।

[आचार्य शंकर ओ लोग का नीयरा चलि आवत बाड़न। सब केहू एक दूसरा के ताकत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बा। शंकर एगो उड़त नजर डालि के पूछत बाड़न।]

शंकर--माहिष्मती नगरी इहे ह?

औरत एक--हँ ए महाराज। (कुछ रुकि के) रउवाँ आचार्य मन्डन मिश्र का इहाँ जाइबि का?

शंकर--(चिहा के) हँ, उँहें केहे जाये के बा। उहाँ का घरे भेंटाइब न?

औरत एक—उहाँ का कहीं आइल-गइल छोड़ि देले बानी, लोगे आ आ के जात बा।

शंकर--बड़ा खुशी के बाति बा। अच्छा, उहाँ के घर केने बा?

औरत एक--रहाँ के धर त भीतर बा, बाकिर रउवा वे पूछले पा जाइबि।

शंकर--कइसे?

औरत एक--ओकर एगो पहचान बा। जहाँ दुआर पर पिंजड़ा में सुगा आ मैना "स्वतः प्रमाणम् परतः प्रमाणम्" कहत लउकसु, ओही के रउवा मन्डन मिश्र के घर बूझबि।

शंकर—(चिहा के मन ही मन प्रशंसा करत) वाह रे महिष्मती नगरी। इहाँ त औरत संस्कृत के एतना शुद्ध उच्चारण कर तारी सन।

(आगे बढ़ि जातारन)

औरत एक—(शंकर का ओर ताकि के) बेचारा पर हमरा दया आवत बा।

औरत दो—त चली जा उनही का संगे। उनहू के जिनगी सबारथ हो जाई।

(सब केहू जोर से खिलखिला पड़त बा।)

औरत तीन--ई त टटके सधि गइल हो।

[सब हँसत नर्मदा का तीरे बढ़ि जात बा]

दूसरका दृश्य

[आचार्य मन्डन मिश्र के घर! दरवाजा पर पिंजडा में सुग्गा आ मैना संस्कृत मन्त्र के उच्चारण करत बाडन स। आचार्य शंकर के देखि के उन्हनी के चहचहाहट बढ़ि जात बा। शंकर दुआर पर खड़ा पहरादार से पूछत बाड़न]

शंकर— आचार्य मन्डन मिश्र जी बानी?

पहरादार–उहाँ का आजु अपना पिता जी के सालाना सराध करत बानी।

शंकर—उहाँ से कह दीं कि दुआर पर शंकर आइल बानी।

पहरादार-आजु भेंट ना हो सकेला, महराज

शंकर—हमरा भेंट कइल जरूरी बा।

पहरादार-हमरा भीतर जाये के आज्ञा नइखे। हम खबर कइसे दीं।

शंकर---त हमरा खुद खबर देवे के परी।

पहरादार-बाकिर हमरा दूसरो के भीतर जाये देवे के आज्ञा नइखे।

शंकर—हम तोहसे आज्ञा नइखी माँगत।

[शंकर भीतर घुस तारन। पहरादार रोकल चाहत बा बाकिर उनकर तेज देखि के थथम जात बा। शंकर जी भीतर चलि जात बाड़न]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तीसरका दृश्य

[आँगन में आचार्य मन्डन मिश्र पुरोहित लोग के साथे सराध क्रिया करे में बाझल बाड़न। शंकर आवतारन। मन्डन मिश्र एगो साधु के देखि के क्रोधित हो जातारे]

मन्डन मिश्र--सराध का अवसर पर साधु ? (शंकर से) संयम आ अनुशासन ब्रह्मचारी खातिर नइखे बनल का ?

शंकर---जरूर बनल बा। का ब्रम्हचारी एह सराध का पवित्र समे पर आचार्य मन्डन मिश्र का दरवाजा से खाली लवटि आसु ?

मन्डन मिश्र--गलती छमा करी महराज। कहीं का सेवा कइल जाव।

शंकर---हमरा एक ही इच्छा बा--शास्त्रार्थ,

मन्डन मिश्र--मन्डन मिश्र का दरवाजा से शास्त्रार्थ चाहे वाला कबो खाली हाथ नइखे लवटल। (पुकार के) भद्रसेन।

भद्रसेन--(आके) आज्ञा आचार्य जी।

मन्डन मिश्र--ब्रम्हचारी जी के आदर का साथे अतिथिशाला में ठहराव। देख कवनो तकलीफ ना होखे। (शंकर से) महराज, काल्हि सूरज का पहिली किरिन का साथ शास्त्रार्थ शुरू होई। हमके आजु सराध करे के फुरसत दीहल जाउ।

शंकर--हम कृतार्थ भइली, आचार्य ?

[आचार्य--शंकर भद्रसेन का अतिथिशाला में जा तारन। आँगन में पिंजड़ा में के सुगा आ मैना चिल्ला तारन सन-"स्वतः प्रमाणम परतः प्रमाणम"]

चउथका दृश्य

[आचार्य मन्डन मिश्र के सभा भवन। आचार्य मन्डन मिश्र आ आचार्य शंकर आमने-सामने बइठल बा लोग। आचार्य मन्डन मिश्र के औरत देवि भारती बगल में बइठल बाड़ी। बीच में निर्णायक के आसन खाली बा। शास्त्रार्थ देखे--सुने खातिर ढेर लोग घेरले बा]

मन्डन मिश्र—ए शास्त्रार्थ में निर्णायक के रही ?

शंकर--सरस्वती रूपा देवी भारती जहाँ साच्छात हाजिर बाड़ी, उहाँ दूसरा के खोजे के बा।

मन्डन--इहाँ का निर्णायक कइसे रहबि ?

शंकर--काहे, इहाँ का काबिल नइखी का ?

मन्डन--हमरा कहला के ई मतलब ना रहल ह।

शंकर—तब रउवा का कहल चाहत बानी।

मन्डन--इनका निर्णायक बनला पर कहीं सन्देह .. ..

शंकर--कवनो सन्देह नइखे आचार्य जी। विद्वान आदमी के हूं के निजी सम्पति ना ह। ऊ सबकर ह। निर्णायक इहें का रही।

मन्डन--जइसन राउर इच्छा।

शंकर---हम देवी से अनुरोध कर तानी कि इहाँ का निर्णायक के आसन सम्हाली।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देवि भारती निर्णायक का आसन पर बइठ—तारी। देखे वाला लोग चिहात वा। आचार्य शंकर का चेहरा पर पहिलही जइसन गंभीरता बनल रहत वा]

भारती—आचार्य जी आ ब्रम्हचारी जी! दूनो आदमी सुनि लो, दूनो आदमी का गर में एक-एक गो फूल का माला शोभा पावति वा। जेकर माला शास्त्रार्थ में पहिले सुखि जाई, ओकर हार मानल जाई।

दूनो आदमी-हमनी का ई बाति मंजूर बा।

भारती—ब्रम्हचारी जी पहिले आपन पक्ष राखी।

शंकर---संसार भूठ ह। अकेले विधना साँच ह। जीव ब्रम्ह से अलग आपन अस्तित्व ना राखेला। हमार इहे स्थापना बा। अगर हमार बाति साच प्रमाणित होई त रउवा हमार शिष्य बने के परी, ना त हम राउर बनब।

मन्डन---हमरा राउर शर्त मंजूर बा। रउरा आपन बाति प्रमाणित करीं।

शंकर---चारो ओर लउके वाला संसार ब्रम्ह का मर्जी से खतम हो जाला। चारो युगन का अन्त में बारी-बारी से प्रलय होला आ सबका अन्त में एक बेर महाप्रलय होला। ई जवन कुछ जड़ चेतन लउकत बा सब खतम हो जाला। विधना अन्त में अकेले बाचेला। उहे फेर अपना मर्जी से संसार बनावेला। ऊ कबो खतम ना होला? विधना अपना अन्श से जीव के रचना करेला, एही से जीव ओकरा से अलग नइखे। जइसे आग के अन्श चिनगारी अलगा होते हुए भी अलगा ना मानल जाले। एही से कह तानी कि विधना साच भूठ जग सारा।

मन्डन---जवन चीज सामने लउकत बा, ओके भूठ कइसे कहल जाई। संसार साफ लउकत वा, एसे ऊ एकदम साच बा। ब्रम्ह कवनो चीज ना ह। प्रकृति असली तत्व ह। ओही से सब कुछ पैदा होला जीव तत्वन का संयोग से बनेला। वेद प्रमाण वा। ओके मानी के चलला से मनुष्य का सुख मिलेला।

शंकर---ई बाति सही बा कि वेद स्वयं प्रमाण बा। बाकिर आचार्य जी बतलाई कि संसार जीव-जन्तु, पेड़-पौधा, आ ई जवन कुल सामने लउकत बा, एकर नाश ना होला?

मन्डन—होला।

शंकर—त ई संसार साच कइसे भइल? रहि गइल प्रकृति, त ई प्रकृति कइसे पैदा होले? आखिर एकरो के बनावे वाला त केहु होई? ऊ के ह?

मन्डन---प्रकृति पाँचो तत्वन का मेल से खुद बनेला।

शंकर—आ पाँचो तत्वन के के बनावेला? जरुर ओके बनावेवाला ब्रम्ह ह। अब वेद के सवाल बा, त वेद के हम प्रमाण मानत बानी, बाकिर... ... .. ?

मन्डन—बाकिर का?

शंकर---वेद-स्मृति अगर ई कहे कि आगि में गर्मी ना होला, वर्फ में ठंडापन ना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

होला त एके प्रमाण मानल जाई ?

मन्डन---(चुप रहि जात बाड़न)

शंकर--आचार्य जी, वेद में हमरा पूरा श्रद्धा बा ? वोके पूरा प्रमाण मानल जाई, वाकिर ओकर स्थान ब्रम्ह का बाद बा। वेद विधना के रचना ह। कहल बा--'यस्य निश्वसितं वेदाः।'' विधना वेद के रचना ना ह।

[मन्डन मिश्र के गला क माला सूखि जात बा। चेहरा उदास हो जात बा]

भारती—ब्रम्हचारी जी के जीत भइल। आचार्य जी उनुकर शिष्यता मंजूर करी।

शंकर---सब उपस्थित जन समुदाय के विधना क अंश मानि के हम प्रणाम कर तानी। हम के अब छुट्टी होखे, आचार्य जी !

भारती-ठहरी ब्रम्हचारी जी ! अबे रउवा मन्डन मिश्र का आधा अंग के जीतले बानीं। औरत पुरुष के आधा देहि ह। जबले हमरो के ना हराइबि; आचार्य जी राउर शिष्य कइसे बनिहे ?

[शंकर का साथे सब उपस्थित लोग चिहातवा। सबका चेहरा पर खुशी के रेखा दौड़ि जाति बा]

शंकर—हम औरत से शास्त्रार्थ ना करी।

भारती--काहे ब्रम्हचारी जी ?

शंकर--औरत मदिरा के मदहोसी ह। ऊ पुरुष के रास्ता से हटा के नरक में ले जाले। ऊ अज्ञान ह, माया ह, विधना का प्राप्ति में बाधा ह।

भारती—त का राउर सर्वव्यापक ब्रम्ह औरत में ना रहेला ? औरत जीव ना ह ? अगर ना त कइसे रउवा कहली हँ कि जीव विधना के अंश ह ?

शंकर— अच्छा, शास्त्रार्थ शुरु करीं हम तैयार बानी।

भारती—ब्रम्हचारी जी ! काम के कगो कला ह ? इन्हनी के स्थिति का ह ? कृष्णपक्ष आ शुक्ल पक्ष में काम का स्थिति में का अन्तर पड़ेला ? औरत आ पुरुष का भीतर इन्हनी के अलगा-अलगा का प्रतिक्रिया होला ?

शंकर—(नजर नीचे झुका के) हमार कामशास्त्र में गति नइखे। हम आपन हार मानत बानी।

[भारती उठि के शंकर का पैर पर आपन सिर राखत बाड़ी।]

भारती--ब्रम्हचारी जी रउवा हार में राउर जीत बा। ए सवाल के जवाब अगर रउवा देती त राउर संन्यास खतम हो जाइत। रउवा संन्यास क मर्यादा बचा लिहली। (मन्डन मिश्र से) आचार्य जी, आचार्य शंकर के शिष्यता मजूर करीं।

[मन्डन मिश्र शंकर के पैर पर गिरत बाड़न। शंकर जी उनुके उठा लेत बाड़न]

मन्डन---अपराध क्षमा करी महराज ! हमार अज्ञान दूर भइल। हम 'विधना सांच झूठ जग सारा' मानत बानी।

शंकर— आचार्य जी रउवा अद्वैतवाद का प्रचार-प्रसार में हमरा के मदद करी। इहे शिष्यता बा।

मन्डन---जइसन राउर आदेश।

(पर्दा गिरत बा।)

—प्रो० केदार नाथ पाण्डेय
विद्या भवन महाविद्यालय,
सीवान

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बीजक : एगो झलक

बीजक बतावे वित्त के, जे वित्त गुप्ता होय।
शब्द बतावे जीव के, बुझै बिरला कोय ॥

आदमी के असल चाहट ह धन कमाइल बाकिर ओ तरह के धन ना जवना खातिर आपन जिनगी खतमो कइला पर संतोष ना होला। रूपया-पइसा, हीरा-जवाहर सब कुछ से ओकर घर भरल रहलो पर उ हहाइले रहेला, संतोष ना होखे; अइसन बुझाला कि अबहियों कुछ कमी बा। अइसन धन के धन ना कहल जाला जवना से भरपूर रहलो पर मन एकदम खाली रहेला। धन ओकरे के कहल जाला जवना के पा लेहला पर कवनों चीज के कमी ना रहे-कुबेर के खजनो ओकरा बाद माटी के ढेला अइसन लागे। बीजक एही धन के बतावेला। अगर अतनों पर अपने एह वित्त के ना बुझली त कबीर बाबा के नीचे लिखल साखी पर ध्यान दी—

जेहि खोजत कल्पौ गया, घटही माहि सो मूर।
बाढ़े गर्भ गुमान ते, ताते परि गयो दूर ॥

उ ग्रन्थ जवन अइसन गुप्त धन के बतलावे ओकर महत्व मनुष्य खातिर बहुत जरूरी बा-कबीर दास के 'बीजक' उहे ग्रन्थ ह।

संसार के केहु अध्यात्म-प्रेमी खातिर कबीर साहित्य के जियादे महत्व बा। कबीर के जीवन आ साहित्य आजो विद्वान लोग के सोझा संसय के विषय बनल बा—जवना के कारन विद्वान लोगन में खोजवाला भाव के अभाव बा।

एह छोटी चुकी लेख में कबीर साहित्य के एगो झलके हम देखावतानी जवन हमरा कबीर पंथी साधु-समाज के सत्संग से मिलल बा। कबीर का नाँव से बहुत ग्रन्थ छपल बा बाकिर सब के सब प्रमाणिक नइखे। बीजक सबसे प्रमाणिक बा। कबीर साहित्य के जेतना विद्वान लोग बा उ एक मत से मानेला कि कबीर साहेब पढ़ल लिखल ना रहस आ सुरू में उनकर केहु अइसन चेला ना मिलल जे इनको बानी के संग्रह कर सके। जब कबीरदास घरसे लबलेसी छोड़ लेहलें आ समाज सुधार आउर अध्यात्म के प्रचार से नाता जोड़ लेहले वोही सफर में पिठौराबाद (यू०पी०) में भगवान साहब से भेंट भइल। भगवान साहेब निम्बार्काचार्य केशिष्य परम्परा के रहलें आ राधाकृष्ण के उपासना करस। कबीर साहेब आ भगवान साहेब में सत्संग भइल, भगवान साहब हार गइला का बाद उनकर चेला हो गइलेन आ कबीर साहेब का संगे संगे घूमे लगलन आ उनका बानी के संग्रह करे लगले। उहे संग्रह बाद में बीजक कहाइल जवन कबीर सम्प्रदाय के मुख ग्रन्थ ह।

ई दूनो गुरु चेला समूचा उत्तर भारत में घूम घूम के प्रवचन-उपदेश करे लागल लोग। एही घूमकड़ी में भगवान साहेब आपन पहिलका झोपड़ा धनवती (सिवान) में कायम कइले जहाँ पर ई दूनो आदमी बरिसन ले सत्संग कइलन। एह लोगन के संगत मझरिया (चम्पारन) तक चलल। भगवान साहब इहें आपन झोपड़ा बना के रहे लगले आ कबीर साहेब आगे बढ़ले। बाद में इनकर शिष्य-परम्परा धनवती में फलल-फूलल आ इहें से १८वीं सताब्दी में "बीजक" के प्रचार सउसे भारत में भइल बीजक के प्रचार कइसे भइल एगो लमहर कहानी बा जवन इहाँ देहल सम्भव नइखे।

बीजक एक तरे के समन्वयात्मक ग्रन्थ ह जवना में भारतीय ब्रम्हवाद के साथे सूफी सत के भावात्मक रहस्यवाद, ब्राम्हण-शूद्र, हिन्दू मुसलमान, ऊँच-नीच, भक्ति-ज्ञान, लोक-परलोक वगैरह में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समन्वय बा। कबीर का जीवनपर हिन्दू सम्प्रदाय के ज्ञान आउर सूफी सम्प्रदाय के प्रेम के साफ छाप बा। एक शब्द में कबीर के चरित्र में बुद्ध आ शंकराचार्य के चरित्र के समन्वय बा---हृदय आ दिमाग के समन्वय।

दार्शनिक परम्परे अइसन बीजको खंडन आ मंडन दू भाग में बंटल बा। पहिला भाग में तत्कालिन सामाजिक बुराई अन्ध विश्वास के खण्डन कइल गइल बा आ दोसरा भाग में ज्ञान-भक्ति के महिमा बतलावल गइल बा। बीजक के अधिकांश पद उपदेशात्मक बा चाहे उ समाज खातिर होखे चाहे व्यक्ति खातिर। कबीर साहेब बीजक में उहे सब चीज रखले बाड़न जवन अनुभव, ज्ञान आ सत पर खड़ा बा। बीजक के भाषा खिचड़ी बा। भाषा अउर साहित्य के खेयाल से ई ओतना महत्वपूर्ण नइखे जेतना ज्ञान का खेयाल से।

बीजक पर भोजपुरी के बहुत प्रभाव बा। कबीर साहेब के निर्गुन ठेठ भोजपुरी में बा। आजो उनका निर्गुन के लोकप्रियता कम नइखे। उनका निर्गुण के एगो उदाहरण देखीं---

नइहर में दाग लगाई आई चुनरी

उ रंगरेजवा के मरम ना जाने। नाही मिले धोबिया कवन करे उजरी ।। नइहर में ।।
तन के कुड़ी ज्ञान के सौनन। साबुन महँगी बिकाय ओही नगरी ।। नइहर में ।।
पहिरि ओढ़ि के चली ससुररिया। गाँव के लोग कहे बड़ फुहरी ।। नइहर में ।।
कहे कबीर सुनो भाई साधो। बिनु सत् गुरू कबहूं नासुधरी ।। नइहर में ।।

—पारस नाथ तिवारी
धनौती (सीवान)

माटी के गमक में विज्ञापन देके लाभ उठाईं।

विज्ञापन दर

पहिलका पन्ना	५)	प्रति स्क्वायर इंच
अन्दर के पन्ना	३)	,, ,, ,,
अन्तिम पन्ना	४)	,, ,, ,,

—विज्ञापन व्यवस्थापक

माटी के गमक पढ़ीं, आपन विचार दीं। अपने का विचार से एके सजावे-सँवारे में बड़ा मदद मिलि।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कोटा आ कोठा

बनलबा कोठा, बेंच के कोटा- क क के बेइमानी ।
हमनीं वोका बरले बानीं, करीं अपने मन मानी ॥
ले दउरी दोकानीं जाईं; मलता वन के आईं ।
सोचिले हम रात--दिन अब, का पीहीं का खाईं ॥
जी रहल बानीं हमनीं का, पी--पी कर के पानी । बनल बा ॥
चीनी चाची चदरा तानस, देखे के हम तरसीं ।
का जाने इ दुख के बदरी, कहिया तकले बरसी ॥
कहिया तकले काटल करिहें, डीलर बइठल चानी । बनल बा ॥
गहूं से का दूँ गरमी होला, ढेर नाहिं खाये के ।
हमनीं का त सिखले बानीं, खाली मुँह बाये के ॥
नगदे तानत बानीं चदरा, तानल करीं तानी । बनल बा ॥
बेंच के कोटा बनाई कोठा, हमनीं का का बोलीं ।
डरे मुँह बन्न बा हमनीं का, कइसे हमनीं खोलीं ॥
नगदे माजा काटत बानीं, काटी ढीठे चानी । बनल बा ॥

—गौरी कान्त "कमल"
ग्राम--दुबौली, दिघवा दुबौली (सारण)

आज के कविता :--

विसमाधल दिन

दिन विसमाधल छन उदास बा ॥
चुड़इल लेखा धुंआ कै करत
गुजरल रेल रटत लुक्काली
पथराइल देखे अकास सब
थाम याद के काठभुजाली
समय गोहरा पाथे दुख के
गाछ, लता, पथ, बन हतास बा ।
टीसन के टिनही छउजा पर
धूनल रूई पसारे सूरज,
आम गाछ में जामल पीपर
चमकावे तन, लोक लाज तज ।
बादर पांख पसारे सुख के
कटुआइल कन-कन बतास बा ।

—छन्दराज
बेकापुर, मुंगेर

भोजपुरी राउर आपन भाषा ह । एके पढ़ल आ दूसरा के पढ़े के प्रेरणा दीहल राउर पवित्र कर्त्तव्य बा ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"खिचड़ी"

आज हम खिचड़ी नइखीं खइले। रोज-रोज खाये के चीजो ना ह। गहे बिगहे खा लीले। बाकिर आज ऊ हमरा दिमाग में उधम मचा रहल बिया। ओकर कतना परकार बा, ओकरा के बनावे खातिर कतना आँच चाहीं एह सवालन के जबाब खिचड़ी पुरान में देखीं, भोजन शास्त्र के पन्ना उलटीं, आकाश वाणी पटना के पास प्रश्नावली भेज दीं चाहे कवनो फिलमफेयर के सम्पादक किहाँ लिख पठाईं।

ना तऽ अकेले दाले के केहू भोजन मानेला ना अकेले भाते के। दूनू मिलाके भोजन होला। सैकड़न बरिस से फल गाछ से नीचहिं काउर टपकत रहे। केहू के धेयान ए पर ना गइल। काहें अइसन होला, केहु के मन में ई सवाल ना उठल बाकि न्यूटन के मन में ई सवाल बिजली खानि कौंध गइल, उनकर मन मथाये लागल, ऊ उत्तर ढूढ़लें, आकर्षण के सिद्धान्त के प्रतिपादन कइलें। ओही तरी सैकड़न बरिस से दाल--भात चाहे भात-दाल खात-खात कवनो दिन केहूं के मन में आइल होई कि जब चाउर-दाल दूनू अलगे-अलगे पकाके एके में मिलाके घटोरल जाला त तनीं एके साथे रींध (नीढ़) के देखल जाव कि का होता। नीढ़ला के बाद ऊ जीभ पर रखले होई आ ओकरा सवाद पर रीझ गइल होई। बस खिचड़ी के आबिस्कार हो गइल होई।

इ कवन बड़का बात हो गइल कि कवनो दिन चाउर आ दाल के एके साथे नीढ़ देहल गइल आ हो गइल खिचड़ी। बात छोट नइखे भाई साहेब ! तनी रउए डुभका के देखाईं ना कि कहीं चाउर रूस के जाला त कहीं दाल के तलाक दे देला, दूनू के छोड़ के आपन अलगे डफली बजावे लागेला, राग आलापे लागेला। तब रउए कहे लागब कि हमरा से खिचड़ी ना बन सकल। अफसोस मत करीं बहुत लोग से ना बन पावे। रोज-बा-रोज कवि, लेखक, आलोचक, कहानीकार, नाटककार लोग खिचड़ी बनावे में लागल बा। ओह में से कतना जाना बाड़े कि ई खिचड़ी तइयार क पाव तारे ? खाली साहित्य सेवकनन के पीछा हाथ गोर तुड़ के काहे पड़ेब, सरकारे के देखीना कि टू टायर योजना चक्कर में, प्राइवेट आ पब्लिक दूनू के चक्कर में देश के दुर्गती बना रहल बिया। रउए कहीं कि ऊ खिचड़ी बना सकल बिया ? खिचड़ी कहतिया कि तू हमरा बड़ाई के पुल मत बान्ह ना तऽ मधु के गुनगान करे वाला लोग बिगड़ के खड़ा हो जाई। दोसरे छण कहतिया कि कवनो हरज ना जे हमरा सवाद पर रीझ जाई ऊ हमरा में आ मध में कवनो फरक ना मानी। तुलसी दास जी मधु तइयार कइले बानीं ई बतिया जतना उचित बा ओतने इहो कि उहाँ का बढ़ियाँ खिचड़ी तइयार कइले बानीं। गोस्वामी जी कहतानी :--

"नानापुराण निगमागमसम्मतं यद्
रामायणे निगदितं क्वचिदन्यतोऽपि।
स्वान्तः सुखाय तुलसी रघुनाथ गाथा
भाषा निबन्धमञ्जुलमातनोति ।।

[अनेक पुरानन, वेदन आ शास्त्रन से सम्मत आ वाल्मीकि रामायण में जवन वर्णित बा अउर कुछ दोसरा-दोसरा जगह प्राप्त रघुनाथ जी के कथा के तुलसीदास जी अपना अन्तःकरण के सुख खातिर भाषा रचना (अवधी) में विस्तार दे ले बानी]

तुलसीदास के बनावल एह खिचड़ी में मह-मह करे वाला अरवा चाउर के साथे-साथ कई तरह के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दाल बा गीता में ज्ञान भक्ति आ कर्म के मिलाके व्यास जी जवन खिचड़ी तइयार कइले बानी ओकरो जोड़ा नइखे तबे नू शंकराचार्य, तिलक, गाँधी जइसन लोग का एकरा से नेह रहे। तुलसी बाबा के खिचड़ी 'स्वान्तः सुखाय' (अपना अन्तर के सुख खातिर) बा बाकि ओकरा 'बहुजन हिताय' से कवनों विरोध नइखे। पहिले पहिल 'स्वान्तः सुखाय' से, अलग—अलग चाउर-दाल बनावे के रिवाज से कट के जे खिचड़ी बना देलस ओकरो से समाज का कवनो विरोध नइखे। खाली बने भर के देर रहे, जब बन गइल त ई अधिका लोग के प्रिय भोजन हो गइल।

भारतवर्ष में साँच बोलला के बहुत बड़हन महातम बा बाकि सूखल सांच कंठ से जल्दी बाहर ना निकले, निकलबो करेला त दुखदायी होला एही से कहल बा--

सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात्
अप्रियं सत्य मा ब्रूयात्
[साँच बोले के चाहीं बाकी प्रिय
अप्रिय साँच ना बोले के चाहीं]

साँच के प्रिय से प्रियतर बनावे के चक्कर में खिचड़ी तइयार हो गइल ना तऽ भात-दाल तऽ लोग खाते रहे। भात छूँछ साँच ह, ओकरा के अइसही ना खाये के चाहीं, स्वादिष्ट बनाके खाईं, दाल मिला के। दालो मिलाके खइला पर सरके के डर कम ना रहे एही से प्रियतर बनालीं--खिचड़ी।

खिचड़ी मरई से कोठा-अमारी तक के सफर करत रहेले। झोपड़ी में त ऊ रहबे करेले महलन के बजर किवाड़ों ओकरा स्वागत में खुलल रहेला। वाजिद अली शाह के खिचड़ी त इतिहास में प्रसिद्ध बा। उनका खिचड़ी के बखान करे के बेरी, हमरा सहकर्मी प्रो० हरीन्द्र नाथ श्रीवास्तव जी का जीभ से राल (लार) टपके लागेला। खिचड़ी पुरान के जानकार लोग के कहनाम बाटे कि---

"खिचड़ी के चार इयार
दही, पापर, घी, अचार"

चार इयार वाली खिचड़ी त केहूं लछमी पतिये किहाँ मिल सकी। ठीक से सोचला पर ओकरो इहाँ कहाँ? काहे से कि घी आपन मौलिकता छोड़ देले बा, शुद्ध घी मिलत कहाँ बा? खिचड़ी जइसे धनी लोग के भोजन ह ओही तरी से गरीबनों के। भात बनावे में चावल के अधिका खरच बा खिचड़ी में कम। दाल नइखे त कवनो हरज ना, गरीब लोग बिना दाले के खिचडी के अविष्कार कले ले बा जब से राज बा तबो से जेहल, ओकरा पहिले के हालत केह बडका इतिहासकारे बताई। पहिले जेहल में खिचड़ी बनत रहे कि ना ए फेर में के पड़ो? आज के जेहल में त ओकरे तूती बोलता, साधारण श्रेणी के कैदी लोग का त हमेशा खिचडिए देहल जाला। जइसन खिचड़ी रचना चाही बना सकी ले कांग्रेसी, समाजवादी, जनसंघी आ कई गो के मिला के इन्द्रधनुषी (संयुक्त)।

जब से खिचड़ी के अविष्कार भइल बा तब से जनता के बहुत उपकार भइल बा। अपना के गरीब चाहे दीन कहल बहुत बड़का सिद्धि ह, तुलसीए दास कह सकेले---

तू दयालु दीन हौं
तू दानी हौं भिखारी

साधारण आदमी ना। केहू अपना के गरीब नो कहे बाकि जेकरा घरे चाउर घटल शुरू होला, चाहे जलपान खातिर कवनो दोसर उपाय ना सूझे खिचड़ी इयाद आ जाला। एह खिचड़ी आ मकर सक्रांति के दिन के खिचड़ी के एके समझे के भूल मत करीं। ओह दिन त सभे वाजिद अली शाह के मात करे के फेर में रहेला। 'गरीबहा' खिचड़ी से जनता के जहाँ कल्यान बा उहँवे उ दवो के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

काम करेले। जब केहु के पेट खराब होला, हाथ से लोटा ना छुटे दउर दउर लंदन शहर जाये के पड़ेला व खिचड़ी खइले बहुत फायदा होला, पेट बन्हा जाला। गरीब त बचत खातिर खाला बाकि धनी लोग दवा समझ के 'गरीबहा' खिचड़ी खाला।

चाउर के धोवन से द्रोणाचार्य अपना बेटा अश्वत्थामा के चुप करवले रहले। ऊ दूध समझ के खूब छक-छक पीअलस। आज खिचड़ी देख कतना कन्हैया भरमित बाड़े, खिचड़ी के रूप में उनका रावड़ी, मलाई, खोवा सब कुछ मिलल बा बाकि कभी-कभी ऊ बिदक जाले ई सोच के कि ई खोवा नमकीन काहे बा, एह मलाई में मिठास काहे नइखे ?

—डा० उमा शंकर सिंह 'उपाकर'
महाराजगंज

दुपहरिया

श्री कुबेर नाथ मिश्र 'विचित्र' मंत्री, भोजपुरी परिषद, भाटपाररानी, देवरिया का सम्पादन में भोजपुरी पत्रिका दुपहरिया निकले जा रहल बा। लेखक आउर साहित्यकार लोगन से आग्रह बाकि आपन रचना भेज के पत्रिका के आगे बढ़ाव में मदद करी कि दुपहरिया मनोरंजन के साथे भरपूर साहित्य सेवा करो।

कुबेरनाथ मिश्र 'विचित्र'

सारण जिला भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

अगिला २६ आउर ३० अक्टूबर १९७३ के सारण जिला भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, जिला संगीत सम्मेलन, थाना हिन्दी सा० सम्मेलन आउर जिला संस्कृत सम्मेलन बड़ा धूमधाम से उच्च माध्यमिक विद्यालय बसंतपुर का आँगन में होखे जा रहल बा। ई सम्मेलन अपना तरह के पहिलका सम्मेलन होखी। २६-१०-७३ के २ बजे से जि० भो० सा० सम्मेलन, ७ बजे रात से संगीत सम्मेलन आ ३०-१०-७३ के ७ बजे सुबह जि० सं० सम्मेलन, २ बजे दिन से थाना हि० सा० स० आ ७ बजे रात से कवि सम्मेलन के प्रोगाम बनल बा।

एह सम्मेलन के स्वागत मंत्री उहाँ के सी० ओ० साहब आ स्वागताध्यक्ष आचार्य महेन्द्र शास्त्री जी बानी। उपस्वागत मंत्री श्री राज बल्लभ सिंह, उपस्वागताध्यक्ष श्री गोरख सिंह, आ कोषाध्यक्ष श्री चन्द्रेश्वर प्र० जी बानी।

-आचार्य महेन्द्र शास्त्री

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आजी

"ददनवा, ए द द न वा , कारे बोलत काहे नइखीस"? ई शबद हमरा कान में पड़ल। हम बोहघरी दियरा से आवत रहनी। गदबेरवा भइल रहे, तबो आपना से दस डेग के दूरी पर के लोग ना लउकत रहे। बालु के रेत पर जहाँ-जहाँ झूर-झार लागल रहे तवन भूत खानी बुझात रहल। तबो केहु के बोलावल सुनाइल। बोली सुनते हम समुझ गइनी कि ई हमरा गाँव के आजी हई। हमरा से जब भेंट भइल त रोआइन मुँह कके कहली "तनी चलीं ए बाबा हमार रहरिया के बोझवा उठा दीं, हमार लइका अइसन बाड़न सन जे तनी पुछहुँ नइखन सन आवत। हई अनकर लइका नू हटे एकर नेकी हमरा से ना दियाई ओही जा बइठ गइली। उनका अँखिया से छः छः पाती लोर ढरके लागल उनका आँखि के लोर देख के हमरो आँख डब-डबा गइल।

★ ★ ★ ★

बोझा उठा के जब लगनी सन चले त आजी के बेटा बाबू साहेब के दूध लेके पहुंचावे जात रहें। 'कुपातर काहाँ के, हम रो-रो के बोझा ढोवतानी, हमरा गोड़ से चलल नइखे जात आ तू.... अच्छा ....। तु हमार उबार भले मत कर लो, बाकिर हम जब ले जीयब, हाथ गोड़ तूर के आ मर जी के करते करब, आजी अपना बेटा के देख के कहली। तबो उनका बेटा से ना भइल कि माई के बोझवा ले लीहीं। आजी के ई बतिया हमरा दिल में गड़ गइल, आ बराबर खटके लागल। एगो उ जबाना रहे कि बालक सरवन कुमार अपना आन्हर मातारी—बाप के बहंगी पर चढ़ा के सब तीरथ करवलन, आ एगो आज के जमाना में ना जाने कवन बेयार बहता इ कोई के समुझ में नइखे, आ ना केहु एकरा पर सोंच विचार करता।

★ ★ ★ ★

आजी एकदम पुरनिया बाड़ी। अगर सउसे गाँव के घुम जाइल जाव त पुरनिया में पुरान इहे बाड़ी। हमार गाँव के आजी करीब ६०-६५ बरिस के हो गइल बाड़ी, बाकिर अबही तनिको बर खातिर माथा पर से आंचर ना उतरे। आज-काल के औरतन के देखि के हमरा आजी के देह में आगि लाग जाला।

★ ★ ★ ★

हमरा गाँव में केहु किहाँ कवनो जग-परोजन होला ओमे आजी के सबसे पहिले बोलावल जाला। गाँव में शादी-बियाह परला पर आजी के बोलावल जाला, कहीं से झंपोला-झाँपी आवेला त आजी के बोला के जरूर देखावल जाला। आजी जबन अकिल देवेलीं उहे लोग करेला। सांचहु हमरा बुझाला जे दुनिया के अकिल के खजाना हमरा आजींये लगे बा।

★ ★ ★ ★

कभीं-कभीं हमरा अँखिया में लोर हिलोर मारे लागेला। सोंचीले जब हमरा गाँव के आजी एह दुनिया से चल बसिहें त ई अकिल के गेठरिया के खोली।

श्रीभगवान गिरि 'नवीन'
मांझी, सारण.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सम्पादक के कलम से

जीवन का खास घड़ी में आदमी जवन अनुभव पावेला वोही के कागज पर लिखला से साहित्य के जनम होला। बाकिर अइसन खास अनुभव खास आदमी का खास घड़ी में जनमेला जब उ बिना सवारथ आ संकुचित मन का भाव से अलग होके एकदम शान्ति के जगह बसेला। एह तरे के शान्ति एकदम गंभीर से गंभीर उद्वेलन में से आवेले। बालमीकि के "मानिषाद प्रतिष्ठा त्वं" अइसने शान्ति के उपज ह।

अनुभव त सबका होला बाकिर प्रेरणा का स्तर पर पहूँचा के साहित्य के रूप दीहल सबका बूता के बात ना होला। साहित्यकार एगो चमत्कार क देला बाकिर ई चमत्कार रचनाकार से पाठक तक पहुँचे के चाही गो कि साहित्यकार के काम पहूँचावल ना ह बाकिर बढ़िया साहित्य पहूँचिए जाला।

आज कतना विचार दिमाग में उमड़त बाड़न स बाकिर वो में समवेदना कवना के पकड़ी ई वोकरे पर निर्भर बा। ई जरूर बा कि छोट सवालन में अझुरा के बड़ सवाल के छोड़ल उचित नइखे बाकिर आज स्थिति इहे बा।

माटी के गमक के त अबे जनम भइल ह एसे अपना कठिनाई के चर्चा कहाँ तक कइल जाय। जब समाज में खोखलापन बा, स्थिति अराजकता के बा त माटी के गमक आ भोजपुरी दूनों खातिर राहता बड़ा कटइला आ सकरा बा तबहूँओ सम्पादक के दायित्व के निबाहे के कोशिश अपना ओर से बा।

माटी के गमक के जवन आदर पाठक लोग दे रहल बा वोसे मन अगराता, साहस बढ़ता आ विश्वास होखता कि जल्दिए एकर गमक चारो इयोर फइल जाई। ई शुभ लच्छन बा कि आज प्राइमरी शिक्षा के मातृभाषा का माध्यम से देवे के बात चलता। एमे दू राय नइखे कि प्रारम्भिक काल में बालक मातृभाषा से जेतना लाभ पाई दोसरा भाषा से ना पाई सरकार का सदबुद्धि होखे इहे हमार प्रार्थना बा।

—सम्पादक

विजय फैन्सी स्टोर

खानी-विखामी के कापी, नोट-बुक, फाइल, कलम, सियाही, कगजही, इन्स्ट्रूमेन्ट बौक्स आ वाइलजी बोक्स इत्यादि के मशहूर दुकान।

चित्रा सिनेमा के पास, सीवान

बिजली के बढ़िया सामान आ फिटिंग खातिर

फैन्सी इलेक्ट्रिक वर्क्स

श्री कृष्णा टाकीज का लगे सीवान में आईं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जय शंकर हार्डवेयर स्टोर

स्टेशन रोड, सीवान

हमरा इहां पेन्ट, बारनीस, तारपीन, स्प्रीट आ घर बनावेवाला सब सामान ठीक दाम पर मिलेला। एक बेर खरीद के जरूर देखी।

आशा ग्लास स्टोर

एकमा

शीशा के खुदरा आ थोक सामान बिकाला आउर उचित भारा लेके सामान दियाला।

—विनय कुमार राय

जरूर देखी ! जरूर पढ़ी !! जरूर खेली !!!

भोजपुरी के नामी नाटककार

श्री विमलेश के लिखल

(१) मनवां के साध (भोजपुरी नाटक)
(२) आल्हा रूदल ,, ,,
(३) श्री रामलीला नाटक ,, ,,
(४) वीर अमर सिंह राठौर (हिन्दी) ,,
(५) सुबाष चन्द्र बोस ,, ,,
(६) जरनइल सिंह के नया मोर्चा (प्रहसन)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी सदन के कुछ ठोस कदम :–

१ भोजपुरी किताब के प्रकाशन ।

२ भोजपुरी भाषा के प्रचार प्रसार ।

३ नया-नया भोजपुरी लेखक के उत्साह बढ़ावल ।

४ भोजपुरी समाज के संगठन मजबूत कइल ।

५ प्रनामापाती के माध्यम "जय भोजपुरी" बनावल ।

लेखक आ विद्वान लोगन से अरज बा कि आपन लेख आ कविता अगिला अंक खातिर बिहार वाणिज्य प्रशिक्षण केन्द्र स्टेशन रोड, सीवान का पता से भेजों ।

—सम्पादक

छपता ! छपता ! छपता !!!

खिचड़ी भाषा के प्रहसन

जरनइल सिंह के नया मोर्चा

लेखक :–विमल कुमार सिंह "विमलेश"

मुद्रक :- भारत प्रेस, सीवान–१९७३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

माटी के गमक

(भोजपुरी मासिक पत्र)

सम्पादक

विमल कुमार सिंह 'विमलेश'

सहायक सम्पादक

ब्रज किशोर दीक्षित 'ब्रजेश'

पहिलका बरिस १९७३ | अप्रील, मई ओ जून अंक | दाम ५० पइसा

प्रकाशक

भोजपुरी सदन, सीवान (बिहार)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सम्पादक मंडल

श्री सन्त कुमार वर्मा, श्री धर्मनाथ प्रसाद वर्मा 'प्रेमी'
श्री अक्ष्यवर दीक्षित, श्री केदार नाथ पाण्डेय
आउर श्री प्रफुल्लचन्द्र द्विवेदी

एह अंक में पढ़ीं

			पन्ना
१	सीवान जिला के भोजपुरी सा० स० के एगो झलक—	श्री सन्त कुमार वर्मा	१
२	केहु कहता—	श्री चन्द्रदीप पाण्डेय	२
३	अकाल गीत—	श्री योगेन्द्र सिंह 'अकेहरा'	३
४	गांधी सोहर—	श्री पृथ्वीनाथ तिवारी 'धक्का'	४
५	कहिया ले लोर बही—	श्री रामचन्द्र सिंह	५
६	चउका के गीत—	आचार्य महेन्द्र शास्त्री	६
७	बेइलिया बहार गीत—	श्री लालसा लाल तरंग	६
८	पाँव-लगी—	श्री रमेश	७
९	गजल—	श्री अक्ष्यवर दीक्षित	७
१०	लंगड़धीना—	श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंह	८
११	हमार भारत—	श्री अनिरुद्ध प्रसाद	१०
१२	हमरा इहे बुझाता—	श्री कुबेरनाथ मिश्र 'विचित्र'	११
१३	अब ना मुखिया होइबि—	श्री रामजी सिंह मुखिया	१२
१४	समीक्षा (मनवां के साध)	प्रो० केदार नाथ पाण्डेय	१४
१५	भोजपुरी अधिवेशन के समाचार—	पं० रामबचन तिवारी	१५
१६	राशिफल—	पं० सूरज नारायण ज्योतिषी	१६
१७	सम्पादक का कलम से—	श्री विमल कुमार सिंह 'विमलेश'	१८

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सीवान जिला के पहिलका भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के

एगो झलक

सीवान जिला भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के पहिलका अधिवेशन पण्डित चन्द्रदीप पाण्डेय का अध्यक्षता में पचरूखी मील का सजल-सजावल पाण्डाल में २ मार्च के सम्पन्न भइल। एह सम्मेलन के उद्घाटन सर्वश्री गणेश चौबे जी कइनी।

स्वागत गान आ श्री जय सिंह राजपूत का स्वागत भाषण के बाद अधिवेशन के शुभारंभ करत श्री चौबे जी कहनी कि सबसे पहले हम सीवान जिला के एह पावन धरती के प्रणाम करत बानी जवना का कोख में डा० राजेन्द्र प्रसाद अइसन राजर्षि आ भोजपुरी के प्रेमी जनम लिहले। अपने के पहिलका आदमी रहनी जे जन गणना में मातृभाषा का खाना में हिन्दी का साथे-साथे भोजपुरिओ के लिखवावे के सुझाव देहनी। इ उहे धरती ह जहवां भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के पहिलका अधिवेशन डा० बलदेव उपाध्या का अध्यक्षता में भइल आ ओकर प्रधान मंत्री डा० परमेश्वरी लाल गुप्त जी चुनइनी। एह तरह से भोजपुरी आन्दोलन के जनम एही पावन धरती का आँगन में भइल आ आज एकर बोलबाला करीब २ पूरा देश में हो रहल बा। भोजपुरी पहिले एगो बोली रहे बाकिर आज हमनी के ई दावा बा कि ई एगो सशक्त अन्तराष्ट्रीय भाषा ह। भोजपुरी एगो कर्म जाति के भाषा ह जवन पचास हजार वर्गमील के साढ़े ६ करोड़ लोग द्वारा बोलल जाले। भारतीय सभ्यता का प्रचार प्रसार में दू जाति के मुख्य हाथ रहल। बंगाली भाई लो अपना कलम से ई काम कइल आ भोजपुरिहा भाई लोग अपना लाठी से। हमनी का परिस्थिति का अनुसार चलीले आ पूरा भारत के अपना प्रभाव से प्रभावित करे में हमनी समर्थ बानी। भोजपुरी क्षेत्र का बड़-बड़ नेता, कानून दाँ, साहित्यकार आ विचारक लोग के जनम देवे के सौभाग्य मिलल, अब हमनी कलम में भी ओतने मजबूत बानी जेतना लाठी में।

एकरूपता

भोजपुरी भाषा का विषय में आपन विचार प्रकट करत श्री चौबे जी कहनी जे भोजपुरी काव्य का भाषा में त एकरूपता आ गइल बाटे बाकिर गद्य का भाषा में अबही अराजकता बाटे। जेकरा मन में अइसन विचार आ जात बाटे ऊ ओही ढंग से ओकर अभिव्यक्ति कर देत बाटे। ई ठीक बाटे कि कवनो भाषा गढ़ल ना जाले बल्कि ओकर अपने आप विकास होला तबो एकरूपता ना आवे से आगे चलि के कुछ भ्रान्ति पइल सके लोसन, एह से ई उचित बा जे एह सम्बन्ध में कुछ सामान्य सिद्धान्त तै कर लिहल जाय। एकही शब्द के अलग-अलग क्षेत्रम में अलग अलग रूप चलता आ यही-वही ओकरा अर्थ में भेद पावल जाला। जगह जगह क्रियापद आ विभक्ति के भी अलग २ रूप बाटे। कवनो भाषा के पहचान एही दु बात से होला। चूंकि बिहार विश्वविद्यालय एह भाषा के मान्यता दे देहलस आ कुछ पाठ्य ग्रन्थ भी तइयार हो रहल बा त

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इहे समय बा कि गोष्ठी के आयोजन क के एह सम्बन्ध में कुछ सिद्धान्त तय कर लिहल जाव। भोजपुरी साहित्य के चर्चा करत अपने कहनी जे भोजपुरी का आधुनिक साहित्य के निर्माण सन् १८८५ ई० का आसपास से शुरू भइल जवन १९४७ ई० तक छिटफुट रूपसे चलत रहल। एकरा बाद भोजपुरी के विकास बहुत तेजी से हो रहल बाटे आ हर एक विधा पर रचना पावल जात बाड़ी सन। तबो इतिहास. कोष निबन्ध आ समीक्षा के अबही कमी बाटे जवना पर विद्वान लोगन के ध्यान जाये के चाहीं।

'साहित्य अकादमी मान्यता देव'

श्री चौबे जी आगे कहनी जे भोजपुरी का सामने अनेक समस्या बाड़ी सन। जवना में सबसे महत्वपूर्ण समस्या बा कि साहित्य अकादमी से भोजपुरी के मान्यता ना मिलल। एकरा खातिर व्यापक आन्दोलन के जरूरत बाटे। सरकार से हमनी के माँग बाटे कि भोजपुरी के भी क्षेत्रीय भाषा का रूप में ऊ मान्यता देव। भोजपुरी के लेखक आ कवि लोग के भी पुरस्कृत करो। हमनी का हिन्दी के छाया में भोजपुरी के विकास करे के बा। हमनी के ई आन्दोलन शुद्ध साहित्यिक आ सांस्कृतिक आन्दोलन होखे के चाहीं; एकरा राजनीति से कवनो सरोकार ना होखेके चाहीं। एकरा साथ ही हम बिहार सरकार के धन्यवाद देत बानी कि ऊ भोजपुरी भवन खातिर पटना में जमीन देत बिआ। ई शुभ समाचार का साथ ही सरकार से हम इहो अनुरोध करब कि ऊ भोजपुरी भवन-निर्माण आ ओकरा व्यवस्था खातिर एगो ट्रस्ट बना देव।

अध्यक्ष पद से भाषण करत श्री चन्द्रदीप पाण्डेय जी भोजपुरी का उपयोगिता का सम्बन्ध में तरह-तरह के तर्क देत कहनी जे-क्षेत्रीय भाषा में प्राथमिक शिक्षा देवे के चाहीं आ ई खुशी के बात बाटे कि बिहार के मुख्य मंत्री जी एह बात के आवश्यक सम्मत बानी। भाषा के एकरूपता का सम्बन्ध में श्री पाण्डेय जी कहनी जे "एह प्रश्न पर भी विद्वानन के ध्यान जा रहल बाटे। आ एह बात के लेके ऊ लोग चिन्तित देखाई देत बाटे।

अन्त में श्री पाण्डेय जी कहनी जे दिल्ली के केन्द्रीय सरकार या लोक सभा अथवा राज्यसभा में भोज-पुरी क्षेत्र के जे प्रतिनिधि लोग बाटे ओह लोग का खाली "भोजपुरी परिवार" बसा के आ भोजपुरी का कविता के प्रशंसा क के रहि गइल ठीक ना होई। ओह लोग का एह बात के समर्थन करे के चाहीं कि साहित्य अकादमी भोजपुरी के फौरन मान्यता देव। एह प्रश्न पर प्रबल जन-जागरण के नितान्त आवश्यकता बाटे।

आशा बाटे कि सिवान जिला भोजपुरी साहित्य सम्मेलन एह अन्दोलन के अगुआ बनी आ साहित्य अकादमी के बाध्य करी कि ऊ भोजपुरी के मान्यता देव आ बिहार सरकार एकरा के शिक्षा के माध्यम घोषित कके एकरा प्रति उचित न्याय करो।

कवि सम्मेलन

एही मंच पर साँझी खा एगो भोजपुरी कवि सम्मेलन श्री पाण्डेय कपील का अध्यक्षता में भइल जवना के शुभारम्भ आचार्य श्री महेन्द्र शास्त्री जी कइनी। कवि लोगन में सभापति जी का अलावे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सर्व श्री अनुरागी जी, रुद्र जी, श्याम जी, श्रीमन्त जी, योगेन्द्र प्रसाद योगी, अनिरूद्ध जी, प्रदीप जी, राम जी, सिंह 'मुखिया', महेंन्द्र शास्त्री, प्रविहस्त जी, अक्षयवर दीक्षित, 'विमलेश जी', व्रजेश जी, कुमारी कुमकुम, हुस्सेपुरी जी, प्रफुल्ल चन्द्र द्विवेदी, अलमस्त जी, शम्भु जी, हिमांशु जी, राधेश जी, व्यास जी, रघुनाथ चौबे, शारदा नन्द प्रसाद, विचित्र जी, रामवचन तिवारी, मणिराज जी, इत्यादि लोगन के कविता बड़ा सरस आ रोचक भइली सन।

अगिला सत्र के कार्य समिति के गठन

अध्यक्ष-श्री चन्द्रदीप पाण्डेय, उपाध्यक्ष-श्री रामनगिना सिंह 'विकल', उपाध्यक्ष-श्री धर्मराज तिवारी, प्रधान मन्त्री-श्री विमल कुमार सिंह 'विमलेश', अनुमंडलीय मंत्री-श्री राजेन्द्र पाण्डेय 'हुस्सेपुरी', अनुम० मंत्री-श्री व्रजकिशोर दीक्षित 'व्रजेश', प्रबन्ध मंत्री-श्री अक्षयवर दीक्षित, कोषाध्यक्ष-श्री धर्मनाथ प्र० वर्मा 'प्रेमी', सदस्य सर्व श्री संत कुमार वर्मा, लक्ष्मण पाठक प्रदीप, आचार्य महेन्द्र शास्त्री, व्रम्हानन्द मिश्र, शत्रुघ्न तिवारी, प्रफुल्लचन्द्र द्विवेदी, शारदा नन्द प्र०, राम नारायण सिंह, हरिदीप तिवारी राम लक्ष्मण मिश्र, व्रजभूषन तिवारी आ उमाशंकर सिंह 'उषाकर'।

—संत कुमार वर्मा

केहु कहला

तनी उठके खड़ा ना हो जाईं, कवनों बात नइखे
भइया बहिनी जागना जाईं, अब अन्हार नइखे
लोग कहता कि भोर हो गइल रउआ का पतवार
नइखे
आरे अँखिया खोलिके ना देखीं खाली भिनुसार
नइखे
ई त दिन हो गईल ए भाई हम पिछुअइनी
कवनों हिसाब नइखे
बाकिर गाड़ी कसाइले बा जनता के ओघर
अबहीं कवनो खबर नइखे
त चलीं तनी घुम आइल जाव
कवनो फिकिर फिकरात नइखे
हम जानतानी कि ई अब होके रही राजभाषा
भोजपुरी छोजांय नइखे

—चन्द्रदीप पाण्डेय

"अकाल गीत"

कवन हाल सुनाईं तोहे पिया,
अँचरा के दूध सुखि गइले।
दोने गइल बंगाल एने आइल अकाल
मोरे सगरे करम बीति गइले॥ कवन.... ....
कइसे जेवना हम तोहे जेवाईं पिया,
कइसे रोवत ललनवां मनाईं पिया।
मोरे गहना ले सब बिकी गइले॥ कवन.... —
पिया केतनों कइनी मजदुरिया,
मोरा न हीं मेटल मजबुरिया।
सब मनवां के आस टुटि गइले॥ कवन.... ....
अबकि गोदिया में भइले ललनवां,
ऐगो कउड़ी के रहले दुलभवां।
गोदिया के ललन भूकि गइले। कवन.... ....

—योगेन्द्र सिंह 'अकेहरा'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

—* गाँधी-सोहर *—

(गाँधी जन्म शताब्दि के अवसर पर लिखल सोहर)

आजु दिन मिलले मोहन दास पुतली मन हुलसे ला हो।
ललना रामजी के आई गइले राज त मिटले कुराज नु हो,
कर्मचन्द कइले बड़ तपवा पुतली देव पुजेली हो,
ललना आजु जनमले योगीराज भारत उठे सोहर हो।
देशवा के कइले च स्वतन्त्र त प्रेम बढ़ाई देहले हो,
ललना जालिम के खेदले बिदेशवा ले अइले सुराज नु हो।
सुख अवरू शान्ति के स्रोतवा बहवले मोहन दास नु हो।
ललना सत्य के रहिया बतवले त फइलल अंजोर नु हो।
आजु के दिनवां सुदिनवा त भाव हिलोर मारे हो,
ललना हमरो त भइले अंजोर त मिटली अन्हरिया नु हो।
दिनवाँ त आजु के सुहावन सुमिरौ गाँधी नाम नु हो।
ललना करीं हम हरिजन के सेवो त पायीं हम मेवा नु हो।
ऊँच नीच जाति पाति भेदवा त मेटो एहि देशवा से हो,
ललना हिन्दु मुस्लिम सिख इसइया त मिलि सब लोग रहहो।
मेटि जाऊ शोषण समाज से श्रम मरयादित हो,
ललना गौरव बढ़ो एहि देशवा के पुण्य एही ठाम आवे हो,
ईश्वर अल्ला एक नाम त मान मोर बतिया नु हो,
ललना रघुपति राघव राजाराम त हमरो सुहाला नु हो।
गीता ओ कुरान बाईबिल पढ़लो से मेटि सन्ताप नु हो,
ललना जवना से मिली परम पद कुबन्धन कटि जैहे हो।
गाँधी के जन्म शताबदी के मिलि-जुली मनावहु हो,
ललना तरि जइहें सकल जहान त मंगल छइहें नु हो।

—पृथ्वीनाथ तिवारी 'धक्का'

भोजपुरी पढ़ीं, लिखीं आ बोलीं।
माटी के गमक के ग्राहक बनीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहिया ले लोर बही

हँऽ हँऽ ! बाप के नाँव रहे तपेसर आ बेटी के नाँव रहे-लगनी। पीछे से आवाज आइल— 'बाड़ीस रे, तनी पानी दे जइहे,' बाकी एकर उत्तर ना सुनके तपेसर के मुँह बन्द ना भइल आ फेरसे हाँक लगावे लगलन—'सुनाता कि ना रे'? बात जब ना सह इल त लगनी के मुँह से बाप खातिर एगो फूटही निकल गइल, का कारकारा तारऽ? एतना दिन से बेराम भइल बा आजबक ले एगो उधारका गोलियो त ना ले आइल होखबऽ, काँखत लगनी पीआरका लोटा में पानी ले आके देहलस। तपेसर पानी पीके हर चलावे गइले आ लगनी गइल सूते।

आज से करीब १५ बरीस पहिले से तपेसर आ झगरू अलगिया पटीदार रहले। तपेसर के एगो बेटा रहे जवना के लोग ननकुमरा कहे। ननकुमरा के आज १५ बरीस मुअला हो गइल जवना के अवगे पाम्ही आवत रहे। तपेसर का अपना जवानी के सूर में ननकुमरा के मुअल ना बुझाइल। महतारी रोअस बेटा खातिर, बहिन रोअस भाई खातिर, बाकी तपेसर के ऊ रोअ ई ना अ इल जवन रोआई एगो बाप अपना बेटा खातिर रोवेला। माहतारी आ बेटी के रोअला के सुर में कुछ ना बुझाइल आ बिना माहतारी बेटी से पुछले तपेसर अ पन सगरी धन दऊलत झगरू के हाथ में दे देहलन आ अपने मेहरारू बेटी का साथे झगरू किहाँ रहे लगलन। अब झगरू के खुशी के ठेकाना ना रहे। एक ओर माहतारी आ बेटी के ननकुमरा के मुअला के आग बा तऽ दोसरा ओर झगरू का धन मिलला के अपार खुशी बा। अब तपेसर आ झगरू के परिवार एक साथे रहे लागल।

बात सहिए हऽ कि नयाँ बात जबले रहेला तबले लहक-धहक खुब रहेला आ जइसे जइसे पुरान होत जाला ओकर सुधि बिसरल जाला। जवना समय तपेसर के धन झगरू के मिलल ओह समय में तपेसर के परिवार के जान-मान बढ़िया से होखे। कुछ दिन के बाद लगनी आ ओकरा माहतारी के जान-मान झगरू के परिवार में कम होखे लागल। इहाँ तक ले कि जबले तपेसर आपन कागजी अधिकार (रजिस्ट्री) ना देहलन तबले झगरू आपना बरके मालिकाई-- ओलिकाई सब तपेसर के हाथ में दे देहलन। अब बाकिए का रहे? नकली अधिकार लेके तपेसर फूल गइलन, उनका पूरा घमन्ड हो गइल, आ ओह घमण्ड में दुःख के दिन बिचार के भेष बनाके तपेसर का मन में आ गइल। परिणाम ई भइल कि तपेसर आपन सगरी खेत झगरू के नं म से बय घोंस के आपना टांग में टांगी मार लेहलन। तपेसर के दुख के दिन शुरू हो गइल। जब माहतारी बेटी के खायेके ना मिले त हाल तपेसर का लगे आवे बाकिर मालिकांव के घमन्ड में ऊ पतिआस ना।

ऊ कहाऊत साँच हो गइल—विपत्ति अकेले ना आवे। कुछ दिन के ब द तपेसर के मेहरारू मर गइल, उनकर मलिकांव छिना गइल, लगनी दासी आ ऊ हरवाह बन गइले।

साँझ के समय रहे। दिन भर हर चलावला से थाकल मादल तपेसर !! बुढ़ाई समय !!! साँझ ही से भूख के मारे टांय टांय बिलाए लगलन— रे लनी खाये के दे ना बाउन। एकर जबाब ना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मिलल। भूख से घबड़ाईल तपेसर दोसरका हाँक तनी काड़खाई से लगवलन— सुनाता कि ना रे? एकर उत्तर आइल— एतना सवेरे क के धइले बाड़ कि चिला बार ? सांझही ततलऊआ खोजत बाड़ त अपना हाथे बना के खा हमनी से ना बनी। ई बात तपेसर का गोली अइसन सनाक दे लागल। तपेसर जाके चचरा पर सूत गइलन आ ना जाने कब आंख लाग गइल।

घर के दालान में लगनी खटिया पर जिया आ तपेसर पालानी में परल बाड़े। कई दिन लगनी आ तपेसर के बेराम भइले हो गइल बा। पानीओ ले दुलम बा। तपेसर आ लगनी से कुछ पुछला पर खाली लोर बहेला। आ का जाने अबहू कहिया ले लोर बही।

—रामचन्द्र सिंह

चउका के गीत

बबुआ बइठ ना चउका पुराइल बा तहार
बबुआ बइठ ना ओने अकुताइल बा कहांर
बाप का जे लागेला से कर दिहनी हम
बबुओ बइठ ना पलकी बा चढ़े के तयार
पढ़गीत भइल अबहीं लोअरो से नीचे
बबुआ बइठ ना बियहे के हो गइल बहार
लोगवा का भागे मेहर मिलता जवान
बबुआ बइठ ना धुआ खानी लरिका भतार
तहरे बहाने इहाँ भँवरा मड़राई
बबुआ बइठ ना पैदा होई बच्चा बारबार
डूबो भले भार से ई भारत के नाव
बबुआ बइठना हट के बढ़ाव परिवार
तनिको जुअइल कि केहू नाहीं पूछी
बबुआ बइठ ना तूं रमनरोई दत चिआर
बड़ा कमजोर बाड़ पिलुआ समान—
बबुआ बइठ ना मिलतिया कनियां दुधार

—आचार्य महेन्द्र शास्त्री

बेइलिया बहार गीत

फुलवा बेइलिया क महमह महके
चूमे दुअरिया बहार। सजना, चूमे ....
सिहरेला मनवा. झकोरे पवनवाँ
कि मुँहवा से निकसे मल्हार। सजना चूमे
चाकर पतइया सुघर उज्जर फुलवा,
कनवां में झूमे चानी कै कनफुनवा,
हिल डुलि सुनावें टहनियां कहनिया कि-
सेजिया पे करले दुलार। सजना, चूमे....
चुनि चुनि बेइलिया रे माला बनइती,
जुड़वा में गुथतीं सेजरिया सजइतीं,
महकति अटरिया बसवरिया में सुगना-
दिन रतिया करतैं विहार। सजना, चूमे
रहि रहि रतिया में ढुरके खिरिकिया,
हुकिया उठेलं सुनि पपिहा पिहिकिया,
होतैं सजनवां, विहनवां ना होतैं—
लौटि जाति सासू क गुहार। सजना, चूमे

—लालसा लाल तरंग
२३७ ख, गढ़हरा
बेगूसराय (बिहार)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पाँव-लग्गी

टेलिविजन के गदराइल चिकन छाती पर
छा गइल-युग के सबसे सुन्दर तमाशा
जन-मन के सांस के आशा-उत्साह
विश्वास के तमाशा—
कि मन के बिरझल बच्चा मान गइल
जन के झांझाइल छाती जान गइल
देश-दुनियाँ-परलोक के भुखाइल प्राण जान गइल
कि 'कुर्सी के ढोल' पर 'दादी का नारा' में
जिनगी के केतना मधुर तराना बा
बेमिशाल एक्टिंग वा—भाषण बा .
कि रेडियो के ध्वनि-विस्तार झुक चलल
कमजोर पाँख भीषण आँधी वातास में
टूट चलल—
(जैसे नया जमाना में
युग के तर ना में—
राष्ट्रवाद महज बकवास वा
नाच-गान कूद-फाँद संस्कृति के साथ वा
जैसे पूड़ी के पेट सोहारी में ना आघाला
जैसे जवानी के देह का बुढ़ौती ना सोहाला
काहे ना होखो भाई ?
पुरान केंचुर साँपो का ना साहाला)
नया जमाना के नया नारा खातिर
नया क्रान्तिकारी साज चाहीं
नया आवाज चाहीं
'गरीबी हटावे' के शोर चाहीं
'एकता आ समानता' के रोर चाहीं
पद-प्रतिष्ठा आ महत्त्वाकांक्षा के
मजबूत जोर चाहीं
तबे नू—
विश्वास का रेती में
नारा का खेती से
जीवन का त्राण मिलि ?
भूख से किल-बिलाइल देह का
नया जोश-होश प्राण मिलि ?
धन हउऊ टेलिविजनी समाजवाद
लहरा महाभरी-चरनन में
युग के झांझ ईल मरमराइल प्राण के
करोड़न 'पाँव लग्गी'

— श्री रमेश
सरेया (गोपालगंज)

गजल

बिना घनश्याम के उधो ! कह कइसे निभाईं हम ।
लागल बा आगि बिरहा के कह कइसे बुझाईं हम ।।
सुना के तान बंशी के बनवले चेरि बा हमके ।
कठिन ई प्रेम के फसरी कह कइसे छुड़ाईं हम ।।
मरौवत जे रहल हमसे भुलइले श्याम सुन्दर सब ।
मगर जे छाप दिल पर बा कह कइसे उड़ाईं हम ।।
परत ना चैन तनको बा ना अँखिया नींद ईचको बा
करक बा शूल के दिल में कह कइसे मिटाईं हम ।।
अधम ई जीव अइसन बा ना मरतं बा ना जियते बा
तड़पते रात दिन बीते कह कइसे बिताईं हम ।।
बिना श्रीकृष्ण के उधो ! दिलासा के सकेला दे ;
बिरह तन टीस के कहनी कह कइसे सुनाईं हम।

—अक्षयवर दीक्षित

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लंगड़धीना

लंगड़धीना के असली नाम शिवपूजन रहे। उनकर घर हमरे घर वा का बगलें में रहे। उनका देह के गजबे बनाव रहे। छव फूट से तनी जियते लम्बा, नटी पर ले पेट, छाती नापाता आ आम के पुरान गाछ अइसन उनका शरीर के रंग रहे। चलस त बुझाव कि एगो छोट-बड़ ऊँट आवता, बोलस त बुझाव जें केहू राजा महाराजा बोलता। उनका के लड़िका-सेआन सभे रिगावे आ जेने जेने जास, एगो रमना लाग जाव। रिगवनिए के नाव उनकर लंगड़धीना रहे। जब उ गारी देस त बुझाय कि गारी के बड़का आचार्य बाड़न।

एक दिन हमरा इहाँ एगो लईका के छठिआर रहे। पूस के महिना रहे। छठिआर के तेआरी खूब हुलास वाला रहे। लंगड़धीना भी साँझही आके खोंप के बगल में बइठल रहले। देह पर आपन फाटल-चिटल कपड़ा गथले रहले। हमरा काका के नजर परल त उनका के चंहेंटलें बाकिर उ खायें में अस लरिआह रहले कि केहु कतनो फटकार के बोले उनका अवगतवो ना करे। जब सब गोतया-देआद, पर-पटिदार आ हित नात खा-पी लिहल त खोंपवा के लगे एक-ब-एक जोर से ठहाका छुटल, हल्ला हो गइलत हमरा बुझा गइल कि हो ना हो लोग लंगड़धीना के रिगवले वा। हम झट दे उहाँ पहूँचनी आ देखनी कि लंगड़धीना अस्सी का स्पीड में डीजल-गाड़ी अइसन गारी हउकत रहले। हम पूछनी कि शिवपूजन भाई का बात हवे हो,? एह पर उ छुटले मुँहे कहले कि का बबुआ जौ ई सरवा ना जानी कवना जातिके जनमावल हउवन सन कि साँझही से हमार बइठल काल कइले बाड़न सन। एगो अपने हमार प्रान भूखे फक-फक करता दूसरे ई भूँकवा के जान लिहले बाड़न सन। अब तोहरे आसरा वा। खिअइब त खिआव ना त अब शिवपूजन चलत बाड़े। एहपर खुब ठहाका लागल। हम सब केहु के हटा दिहनी, आ उनका के खिआवे खातिर बइठा देहनी।

उनका खाए का बारे में हम पहिले से जानत रहीं। एही से कई गो पत्तल जोर के भान परो साइल। सब कुछ परोसला का बाद जब उ कवर फेके लगले त अइसन बुझाव कि मील का डोंगा में गाड़ी के गाड़ी उब झोंकाता। खात खात जब एक कठवत भात, एक वाल्टी दाल, दू सेर तरकारी आ दू सेर दही खोंच गइले त हम पूछनी कि आउर चाहीं? "हँ बबुआ होखे त तनी आउर भात-कढ़ी ले आई, एउवा घर के कढ़िया बड़ा निमन होला।" लंगड़धीना कहलें। आधा कठरा भात ओकरा अन्दाज से कढ़ी आ तरकारी दिआइल। जब खा-पी के आघा गइले त लगले देवता लोके गोहरावे आ हमरा बाप-दादा के जयकार मनावे लगलें। बड़ाई के पूल बाँध दीहले। कहे लगले इहे नू जग-परोजन ह। बहुत लोग त टिटिका देला। आज साल भर पर हमार पेट भरल बा। तहरा धन-जस के कबो कमी ना होई, काली माई हरदम फूलवले रहिहें।

खइला का बाद हम उनका के बइठा के पूछनी कि ई बताव शिवपूजन भाई कि तू काहे एतना खालऽ। उ कहले कि बबुआ गरीब आदमी पेटहुट्टु नू होला। वोहू में लइकाइये से हमरा सोझ पाँचो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दिन सुभइब अनाज ना भेंटाइल। सात भाई आ पाँच गो बहिन सुअर का छावना अइसन रहनी सन। बाबुजी सोंझिया रहले। हर हफ्ते एक सेर सतुआ पइहें, बोही में पीढ़ि पीढ़ि अँटा के दीहें आ भर लोटा पानी पिया दीहे। हमार माइयो कवनों लूर के ना रहली ह। रात खान सुतला पर आँच बारी खाँड़ा-टुकी खिया के गोहरा अस ओठंगा दी। तिअना वासन के नामों ना जननी सन। बड़ा भइल त नून-मरीचा तेल मिल जाई जवना में धधा के हमनी गट गट घोंट जाइब सन।

सब सुनला पर हम कहनी कि तू एतहन लमहर देह लेके कमईले रहित त तहार पेट काहे ना भरित। लंगड़धीना कहले कि अपने बात ठीक कहनी बाकिर लइकाइये से हमरा काम करेके हूबे ना कइलस। गरीबि का पाँक में अइसन लथरइनी कि ना कबो पेट भरल ना बउसाह भइल। माई बाप अइ- सन रहे लोग कि ना पढ़इबो कइल ना कवनो लूरे सीखावल। वोहू लोग के हम का दोस दी। वोहू लोग का ना कवनों दौवत रहे ना अकिल। एही से हमार संसकार बिगड़ गइल। हमरा भीखे मांगल सबसे बढ़िया काम बुझाइल। लोग के देखा देखी हमहू झोरी उठा लेहनी। आ भीख का रोटी से पेट पोसे लगनी। बिच में उनकर बात काट के हम पूछनी बिआह काहे ना कइल? आरे बबुआ आलमों एगो रोग हवे। हमरा खर्हो टकसावे केमन ना करे। एह तरपट से गुतनी कि बिआह करब त बाल बच्चा होई, भारी अफदरा मे फँसे के परी, ओकनी के गवत जुटावे के परी। अकेला देह बा त माँग चाहि के काम चला लिहिले आजुए त सालभर पर हमार पेट भरल बा। जब कहनी कि भीख माँगल नीच काम ह कमा के खइत त अच्छा होइत, उ झिझक के कहले कि छोड़ी अब हम का काम करब। सउसे जिनगी कट गइल नाव किनारा आ गइल, पाकल आम बानी। हमार का सुधार होई, बूढ़ सुगा कहीं पोस मानेला? हमरा अइसन लाखन लोग अइसन जिनगी बिता रहल बा अगिला समाज के देखी सभन कि केहू नया पर भीख ना माँगो ना बेकार रही ना भूखे रही। जब सब के पेट भरे लागी त देशवा के सुधार होइए जाई हम उनकर उपदेश सुन के चिहा गइनी। उ बेचारे हमरा पूरनिया लोके जय मनावत चल गइले।

असों माघ में अंजोरी दशमी के एक-ब-एक बाजा बाजल सुनाइल। हम छत से नीचे आके काका से पूछनी त बतवले कि लगड़धीना मर गइले। हम दउरल उनका दुआरा गइनी त देखनी कि उन कर बेवान खुब सजावल रहे जवना पर एकरंगा फहरता। लोग उनका भाई-भतिजन के वाह-वाह कहत रहे। हम पूछनी कि आरे कुछ धइले रहले ह कि ना? पता चलल कि कोनिअवा घर में एगो कोठिला में भर कटिया रूपया-पइसा रहल ह। गिनला पर ७२४ रूपया आठ आना भइल। बेवान उठल आ मुरदघटिया तक बाजा बाजत गइल आ सबलोग चह-२ करत गइल। लोग कहे कि खुब मजल सजवले बाड़ेसन। हम मने में कहनी कि मजल काहे ना सजो। सब रूपया मिल गइल काल्ह पता चलल कि उ पानी-पानी रटत रह गइले बाकिर पानी ना मिलल, धोती में पैखाना हो गइल कवनों साफ ना कइले सन। मुअला पर एकरंगा लहरल, अगरवती जरल, बाजा बाजत मुरदा निकल ल। साँचे कहल बा, जिअला पर जुता--लात, मुअला पर बाजा-नाच' एकरे के दुनियाँ कहल जाला।

— राजेन्द्र प्र० सिंह
निखती उच्च विद्यालय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

—:: हमार भारत ::—

नमन हमार भारत चमन हमार भारत
हर फूल-फूल महके मधुबन हमार भारत

बा सन्तरी हिमालय राजा न राज परजा
मसजिद जहाँ शिवालय गुरुद्वार अउर गिरिजा
सब धरम रंग भाषा संगम हमार भारत

मिन मुकुट जड़ल चानी पर सोना के पानी
नभ लहरत हिम-केश वसन वन उपवन धानी
गूँजे बयार बानी बन्दन हमार भारत

हँसि दूध झरे झरना मन प्रान बसे बस्ती
रन खेत झूम--झूम जहाँ गावत बा मस्ती
हम सरिता सब सिन्धु बा मिलन हमार भारत

कश्मीर धवल मुखड़ा हिय हार सजल नदिया
फल-फूल फसल गहना सूरज सुहाग बिन्दिया
नभ झील जड़े नीलम दरपन हमार भारत

हर शिखर किरन बिगुल फूँक भारती जगावति
बा वीरता गेआन प्रेम ज्योति से नेहावति
ई सिर झुके न पग रूके परन हमार भारत

हर जगह जगह तीरथ झंडा आकाश फहरे
गाँधी जनम भगीरथ गंगा सुराज लहरे
हम कोटि-कोटि जिनगी अरपन हमार भारत

किरति प्रताप लछिमी भट कुँवर भगत चमकल
जहवां सुवाष लाल बहादूर सहीद जनमल
तुलसी कबीर मीरा भूषन हमार भारत

भुइयां भरल गरब गुमान राम किसुन गउतम
सब धूर लोट-लोट भइल बा सियान हरदम
भगवान जहाँ जनमें दरशन हमार भारत

सब गाँव-गाँव जागल अब भेद भाव भागल
हँसि के जवान मचले तनमन किसान लागल
सोना जहाँ के माटी चन्नन हमार भारत

—अनिरुद्ध प्रसाद

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

❋ हमरा ईहे बुझाता ❋

हमरा त रहि रहि के ईहें बुझाता कि केहू से केहू के निबही ना नाता।
दूधे पियवला ले माई ह माई। छुटला पर बेटा के कहवाँ ऊ पाई।
रोजो २ चानमामा अँगना बोलौली। बबुआ के भुलुआ में हलुआ खिओली।
बाबू जब बीबी के भइले बलमुआँ। दिल्ली आ बम्बो आ धइलें पलमुआँ।
फैशन के अजबे बा बम्मू तनाइल। दर्जन के दर्जन बेलाउज सिआइल।
बूशट आ टीशट से पेटी भराइल। सूट-बूट, टाई, कलाई बन्हाइल।
चम्पा चमेली सेन्ट केवड़ा किनाता। हफ्ता में होटल के टोटल दियाता।
पेंड़ा के जोड़ा पतइया में पइठल। लड्डू आ बरफी इमिरती आ बइठल।
चमचम रशगुला पियाली में पँवरल। बाबू के जीभि बिस्तुइया अस दवरल।
काफी के संगे उड़ावेलें डोसा। चाय सँगे चटनी से काटे समोसा।
ओन्ने त केरा नारंगी छिलाता। एन्ने ना माई के भाजी भेटाता।
हमरा त रहि रहि के इहे बुझाता कि केहू से केहू के निबही ना नाता ।।१।।

बाबू जी बाबू के कालिज भेजौलें। गोंयड़ा के खेत कतो रेहन फँसौलें।
कॉपी किताब किने कुरता पाजामा। चिन्ता सतौले बा धइले बा दाम्मा।
बाबु हमार जब कब्बो कमाई त करजा चुकाइ आ खेतवा छोड़ाई।
बाबु त करेलन अइसन पढ़ोई कि खोलेला पोथी त आवे जम्हाई।
पढ़ला में एकरा से केहु ना हेली। पावे परीक्षा में सुन्न बटा भेली।
सुरती आ चूना खोसाइल बा हेन्ने। बीड़ी-सलाई बा बोलु बोलु केन्ने।
बाबू जी फीसी के पइसा जब दिहलें। बाबू सिनेमा के टीकट तब लिहलें।
नरगिस सुरइया ना भूले मधुबाला। होला इन्टरभल त कोका लियाला।
सबके सुनावे सिनेमा के गाना। जीने दो जालिम बनाओ न दीवाना।
बइठेला देवे परीक्षा सालाना त कहीं पै निगाहें आ कहीं पै निशाना।
मार दिया जाय कि छोड़ दिया जाय हमरी बाबू के ई ह रामायन आ गीता।
बोल तेरे साथ क्या सलूक किया जाय। इहे गावत लोग कलयुग के रामजीसीता
लागे पियासि माँगे माई से पानी। पियला पर गावेला है है राजा जानी।
बाबू जी रोवें कि बिगड़ल छोटउआ। बने के सुग्गा त बनि गइल कऊआ।
देखीं जमाना ई कवना ओर जाता। बुझो से जानो ना हमरा बुझाता।।
हमरा त रहि रहि के ईहे बुझाता कि केहूँ से केहू के निबही ना नाता ।।२।।

—कुबेर नाथ मिश्र "विचित्र"
भाटपार रानी (देवरिया)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अब ना मुखिया होइबि ।

ना कुछ धम्हा अबरू मिलिहें; केकरो मोटरी ढोइबि ।। अब ना० ।।
मुखिया मुँहवा अइसन चांही, जे मिले से— खाले ।
बे बिवेक के पोसे--पाले, आपन तोन — गोटाले ।
अनकर ऊनुकर लुगा लुटा के, आपन लुगरी धोइबि ।।अब ना०।।
जुटले अनगुतहीं अंगराहित, मुखिया—पाड़ी मँहकालि ।
बुधुआ बोका बोका चाहीं, बोकरो पाठी बहकालि ।
आपन दीदा खोइ खोइ के, अन्हरा आगा रोइबि ।। अब ना० ।।
चीनी खाती चिलटा चाचा, रोज मचावे टांटां ।
किरासन रासन का कोटा में, ले के दउरे डांटा ।
घरहीं घइलन रस सुरुकिह, रूखी खेत में बोइबि ।अबना०।
गाड़ीवान के मुखिया कहले, खीसी भूत हो जाले ।
आ मुखिया मुखिया जी कहला पर मनही मन अगरा ले ।
परगट झटके के ना मिलल, केकरो बगली टोइबि ।अब ना०।
गनना मनना अइसन बइठल, तीनों तीन तिन अक्षर ।
एके रंग में तोनो रंगल, मुखिया-मोहर-मच्छर ।
अइसन पद के बढ़नी मारबि, दोसर पदवी छोइबि ।अब।
भरल सभा में गदहा कहलस, हरबोलवा के नाच ।
सुनते तीतिकी लेखा लागल, बाकी बतियो रहे सांच ।
रामजी, अठई जब झरि जाई, टांग पसारि के सोइबि ।। अब ना० ।।

—रामजी सिंह 'मुखिया'

बिजय फैन्सी स्टोर

खानी-बिखानी के कापी, नोट-बुक, फाइल कलम, सियाही, कगबही, इन्स्ट्रूमेन्ट बौक्स आ वाइलजी बौक्स इत्यादि के मशहूर दुकान ।

चित्रा सिनेमा के पोस, सीवान

बिजली के बढ़िया सोमान आ फिटिंग खातिर

फैन्सी इलेकट्रिक वर्कस

श्री कृष्णा टाकीज का लगे सीवान में आई

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समीक्षा—

'मनवां के साध'

[भोजपुरी नाटक]

जोरू से नाता टूटल बेटा के साँस टंगाइल,
हित कुटुम केहू ना पूछे आजे सभे चिन्हाइल।
अतनो पर छाती धरती के नाही फाट रहल बा,
केतना दिन के मन के सरधा आजे बूत रहल बा।

'मनवा के साध' (लेखक- विमल कुमार सिंह 'विमलेश' प्रकाशक- बिहार वाणिज्य प्रशिक्षण केन्द्र, सीवान) का सन्दर्भ में नाटक क ई छोट वक्तव्य ओकर असली पीठिका बा। चार अंक आ एगारह दृश्य में बाँटल ई नाटक, भारत का गाँवन में जीए वाली करोड़न धनिया आ ज्ञानी के मन के साध के चिथड़ा-चिथड़ा करे वाला एगो प्रामाणिक दस्तावेज बा।

भोर होइहन उगिहे किरिनियाँ,
भागी जइहे अपने अन्हरिया।

का आस में जीए वाला प्रेमचन्द 'होरी' आ 'धनिया' के मन के साध पुरावन-पुरावत 'गोदान' करा दीहलन बाकिर गोबर, सोना आ रूपा के साध वोही तरे तार-तार होत रहि गइल आ वेहु लेखक के कहल ई बाति 'भारतीय किसान कर्ज में जनम लेला आ कर्ज में मरेला, जमाना का स्लेट पर अमिट रेखा बनि गइल।

छब्बीस बरिस का आजादी में घुट-घुट के दम तोड़े वाला भारतीय किसान जे अपना करम का खुलला का आशा में समाजवादी ढग से जीवन जीए खातिर कबो बैलन का जोड़ी पर कबो गाय-बछड़ा पर मुहर मारता आ 'ग्रीन रिवोल्यूशन का चकमा में 'हमहूं हँटि के करब गिरहतिया' के सपना देखता, अंत में इहे कहि के संतोष करता कि "अइसने मिनिहटरन का मिनिहटरई से नु दुनिया में दिन पर दिन आगि लागल जाता।" कोठा-अटारी पिटावे, घोड़ा-टैक्सी खरीदे आ बबुआ के शादी कके मन के सरधा बुतावे के लालसा मन का कोना में साँस तोड़ देति बा। बबुआ बी० ए० पास कके बीबी पास भले हो जावारन बाकिर घर में खेत के ना जरपेशगी के कागज के मालिक बनि सकेलन। नोकरी कके मनीआर्डर भेजे क सपना देखि सकेलन, यथार्थ ना भोगि सकेलन।

'मनवा के साध' क ज्ञानी आ धनिया अइसने भारतीय जीवन (भारत गाँवन में बसेला) क जीवंत शाश्वत पात्र बा लोग, जे अपना दिल में अइसने लालसा छिपवले लछुमन के बी० ए० पास करावता लोग। (देहात में बी० ए० क पढ़ाई बड़की पढ़ाई ह) नोकरी + गृहस्ती का मिलल जुलल आमदनी से हंसी-खुशी बटोरे का इच्छा से आरा, बलिया आ छपरा के लछुमन आ ज्ञानी—

रेलिया ना बैरी, जहजियो ना बैरी, उहे पइसवे बैरी हो।
देसवा-देसवा भरमावे, उहे पइसवे बैरी हो।।

गावत खुशी-खुशी बंगाला (कलकत्ता) का अलकतरा पोताइल सड़क पर 'वकैन्सी क तख्ती उलटत-पुलटत बा लोग। केहू तरे हित-नात जोरि के चटकल में चाहे दरवानी में कामो मिलता त मिनिस्टरन क फोन छन भर में सब कइला-धइला पर पानी फेर देत बा। आ जीवन क कुंठा के शिकार अइसन लछुमन कबो रेलि क पटरी फाँके खातिर मजबूर होतारन त कबो हबड़ा ब्रिज। ई दूसर बात बा कि जिनिगी क लाश ढोये वाला ई लोग कहे खातिर मौत नइखे भोगत आ मृत्युबोध क सर्टिफिकेट वो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोग के नइखे मिलत। नोकरी के आशा में खेत बेचि के आ साहूकार से मँहगा सूद पर रुपया ले के भाई आ बेटा के देवे वाला ज्ञानी जब आपन कपार पीटि ले तारन त धनिया के ई कहल– "रउँवा मरद होके इइसे घबड़ाएबि त कइसे काम चली" उनुका के दू पग अउरी लास ढोए के मजबूर कर देति बा। शिक्षा का अभाव में शुद्ध चेतना दृष्टि का कमी से भगवान पर जोरदार श्रद्धा राखे वाला ई पात्र 'अइसने दू मन वोइसने सइ मन' कहि के सन्तोष क लेत बाड़न बाकिर लछुमन के बिआह खातिर चारि हजार देवे वाला नगीना सिंह क नाम सुनते बिना हइले पीछे लं छोटी माल्ल, देखावे खातिर नोकर राखि लीहल, इनकर आपन वर्गीय चरित्र बा. जेवना से चहलो पर ई उबरि नो सकसु, चाहे साँच का नाम पर केतनो झूठ बोले के परो, धनिया के मंगलसूत्र बेचे के परो. चाहे अपने भाई का संगे अलगा होखे क नाटक खेले के परो। फेरू पंचाइत का घेरा में भीतर से नाखुशी आ बाहर से खुशी क मुखौटा ओढ़े वाला पंच लोग का आगा अपना के फेंकि दिहला का अलावा दूसर रास्ता नइखे बाचत, बाकिर केतना लछुमन कह तारन— 'त अवही दु लाख के दुगो बेटा आ महतारी अइसन भउजाई में हमरा हिस्सा नइखे मिलल।'

एक बेरि फेरू बंगाला क करिया सड़कि इनकरा से अपना के धनि बनावत बा। अन्तर एतने बा कि पहिलका बेर घर का सलाह से उधार लेके आवे वाला लछुमन से, आ दुसरका बेर जिनिगी से हारल-थाकल-कुंठित-टूटल घर से पराइल लछुमन से; जे जिनिगी क सपना बोतल का मदहोसी में देखे खातिर मजबूर बा—

बोतल हमरी लाल रंग के सबुज रंग चोलिया,
ठुमुक ठुमुक के गोरिया नाचे फर-फर उड़े चुनरिया,
कमरिया लच-लच लचकेला।

अइसने लोग के रियाया माने वाली पुलिस राति का अन्हरिया में 'दे शाला हेने' का साथे बीड़ी क घूस लेले, आ अइसने कल्लू-मल्लू क पाकिट टोवेले, ई कवनो नया बाति ना ह। रक्षक क भक्षक होखे वाला ई रिवाज हमनी का अपना अंगरेज मालिक लोग से बखुबी सीखले बानी सन।

'मनवा के साध' क पात्र इहवाँ तक त असलियत के भोगत नजर आवत बाड़न बाकिर आगे असली हिन्दुस्तानी जइसन 'भाग्यं फलति सर्वत्रः क गुलाम बनल लउकत बाड़न। आँखि झपकले भर में धन्ना सेठ क बेटी माला का गाडी तर आइल, उनुका साथे घरे पहुंचल आ बसन्त कुमार के घर जमाई बनल आउर माला से जयमाला पाके उनुकर राम बनि गइल ई कुल नाटक हो जाता। छन भर में घर से खबर मिलल, अटैची में रूपिया भरि के घरे पहुँचल बाकिर गाँव के नास क समाचार सुनि के मिलिटरी में दूनो जाना (लछुमन आ माला) क भरती भइल, साल भर तक बसन्त कुमार से बिना बतवले रहल, लड़ाई में बीरता देखावल आ फेरू घरे लवटल त अपने भाई का कपार पर अटैची रखले, ई कुल फिल्मी जीवन हो जात बा। जासूसी उपन्यास में जइसे जादुई चाभी से छन भर में अगाध धन-सम्पति के दरवाजा खुलि जाला, चाहे भारत सरकार के लाटरी जइसे लदन सुदामा के कुबेर बना देति बा, वोइसही एइजा लउकत बा। ई कुल लेखक का राष्ट्रीय-प्रेम क झलक देखावे का लालच में भइल बुझाता।

सामाजिक नाटक का जोरदार परम्परा आज हिन्दी में बा, बाकिर उत्तरी भारत क किरोडो-किरोड़ लोग जे भोजपुरी में जिअत आ मरत बा, 'मनवां के साध' उनुकरे मन के साध बा। उनुकर भाषा भोजपुरी अपना बाति के 'सम्प्रेषण' बखुबी क सकेले, इहे उनुकर असली साध बा. तिलक बिआह, दहेज, नोकरी ई कुल साध त ऊपर क साधि बाड़ी सन। एह स्तर पर 'मनवा के साध' क महत्व अपनही रेखांकित हो जात बा।

चरित्र चित्रण में लेखक का पूरा-पूरा सफलता मिलल बा। ज्ञानी, धनिया, मुखिया, सरपंच आ लछुमन के चरित्र असली भारत (जवन गाँव में बसेला) क प्रतिनिधित्व करता उहां माला आ बसन्त

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कुमार क चरित्र नागरी संस्कृति से प्रभावित बा। संवाद आ भाषा परिस्थिति का अनुकूल बा आ लेखक ओके जे तरे चहले बा मोरले बा। संवाद न ढेर लमहर बा न बोझिल। चरित्र का निखार में ओसे काफी मदद मिलल बा। भोजपुरी भावना के भाषा ह। एही से ओकरा गंध में पैदा होके बढ़े वाला लेखक जे एगो नीमन अभिनेता आ निर्देशक भी ह, मन का रेशमी भावना के बढ़िया ढंग से उरेहले बा। मंच क जानकारी उनुके बड़ा मदद पहुँचवले बा। ओकरा में सोन्हाईल माटी क गमक बा, त शहर क बनावट भी बा। 'जय जवान' क ललकार बा त 'जय किसान' क अनिवार्यता भी बा। एही से इ नाटक सबका 'मन के साध' हो गइल बा।

नाटक के भरपूर सफलता मिलल बा, एह बारे में 'भोजपुरी जनपद' के सम्पादक राधा मोहन 'राधेश' जी के एगो लाइन कहि के संतोष क लेबि—"एह नाटक के हर जगे मंच पर उतारे में जवन सफलता आ सराहना मिलल, उहे सफलता का कड़ी में नगीना जइसन मोल राखता।"

अंत में हम एतना जरूर कहल चाहबि कि 'मनवा के साध' से लेखक के मन के साध भले पुरा हो गइल होखे बाकिर भोजपुरी जनता के मन के साध तबले ना पुराई जबले भोजपुरी आपन असली स्थान ना पा जाई।

हमरा विमलेश जी से अबो लमहर आशा बा।

प्रो० केदार नाथ पाण्डेय
एम० ए० द्वय, बी० एड०
रिसर्च स्कॉलर
विद्या भवन महाविद्यालय
सीवान

भोजपुरी अधिवेशन के समाचार

पतरातू। दिनांक २८-४--७३ के पतरातू भोजपुरी परिवार के छठवाँ अधिवेशन भइल। एह अधिवेशन में कविवर श्री मुड़दुबर जी (छपरा) के भोजपुरी सेवा खातिर साहित्यिक सम्मान कइल गइल। कवि सम्मेलन में सर्व श्री मुड़दुबर जी, रामजी सिंह मुखिया, निर्मल, दीनेश, अरुण, पं० रामबचन तिवारी, डा० सलिल, शाहाबादी का अलावे स्थानीय कवि लोग भाग लिहल। सम्मेलन बहुत अच्छा रहल।

जमशेदपुर। दिनांक १३--५--७३ के सिंहभूम जिला भोजपुरी समाज के पहिलका सालाना अधिवेशन स्थानीय मिलानी हाल में सम्पन्न भइल। एह अधिवेशन में नेपाल भोजपुरी समाज के अध्यक्ष पं० दीपनारायण मिश्र आ पं० गणेश चौबे (चंपारन) के भोजपुरी सेवा खातिर साहित्यिक सम्मान कइल गइल। अन्त में एगो कवि सम्मेलन भइल जवन काफी जमल।

—पं० रामबचन तिवारी

माटी के गमक में विज्ञापन देके आपन व्यापार बढ़ाईं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राउर १ जून १९७३ से ३१ जुलाई १९७३ तक के

राशिफल

जून

मेष पहिलका हप्ता बहुत अच्छा बा। बाद में भाग्योदय चिन्ता, उलझन, परिवार से मन मोटाव, दुष्ट आ नास्तिकन से बेकार तर्क आ पतिनकष्ट रही। पराक्रम बढ़ी, शत्रु पर विजय होई।

वृष धनागम, लाभ, परिवार सुख आ आय बढ़ी। यश-सम्मान बढ़ी, उन्नति होइ, परिचय आ परिवार व्यस्तता बढ़ी। मेहरारू आ लइकन से खुशी मिली। बहुत दिन के परेशानी खतम होई।

मिथुन रउवा खातिर ई महिना निमन ना रही। झंझट, चंचलता, चिन्ता, दुविधा, रोग, आगभय आ राजभय रही बाकिर प्रभाव ठीक रही।

कर्क महिना अच्छा ना रही। धनहानि, नया समस्या, उलझन, काम में रुकावट, सन्ताप, कलंक, बेकार घुमकड़ी शनि के खराब नजर बा। महावीर जी के पूजा ब्रम्हबाबा के शरबत आ करिया तिल से जल चढ़ाई आ घोड़ा के नाल के अंगुठी पहिरीं।

सिंह नया परिचय, अधिकारी वर्ग से लाभ, हिम्मत, पराक्रम, यश आ परिवार के सुख बढ़ी। सफल होखब, बढ़ियां भोजन आ तरह २ के खुशी मिली। भ्रमण में लाभ लउकता।

कन्या महिना के शुरुआत बढ़ियां बा। यश, प्रतिष्ठा आ धन लाभ होई। १० ता० का बाद सरकारी काम में रोक रही बाकिर काम होई। मन में अशान्ति, मित्र विरोध आ सदमा के जोग बा। २० ता० का बाद लाभ होई।

जुलाई

मेष कार्य सफल होई, संघर्ष रही; गातारी आ जमीन-मकान कष्ट हो सकता। मित्र से धोखा लिखता हिम्मत आ पराक्रम बढ़ी। सवारी, पुत्र सुख आ आवागमन के जोग बा।

वृष महिना का अन्त तक मंगल निमन बाड़े। लाभ, प्राक्रम, स्वास्थय, धनागम, नया वस्त्र मिलल आ दुश्मन पर विजय के जोग बा। मित्र सुख आ जमीन के झंझट निबटे में शक बा। मनमानी आ जल्दबाजी से घटी होई।

मिथुन पहिलका हफ्ता ठीक रही। रउवा ग्रह के मेठ बुध उलटा चल तारे एसे आमद में झंझट खड़ा कके परिवार कष्ट, धन हानि आ चिन्ता के बढ़इहें। आँख कान आ नाक के रोग व्यापार में विघिन परी। अपना आदमी से धोखा आ काम से पछतावा होई।

कर्क इहो महीना खास निमन नइखे। देह-दुख बेकार मामला से मन दुखी होई। १६ ता० का बाद कष्ट से छुटी आ नया परिचय से खुशी होई

सिंह तनी सावधान रहीं। गुप्त रोग चोर, आग. शस्त्र, विश, शत्रु, पेट रोग से परेशानी के जोग बा। १२ ता० से सुख शत्रु दमन आ पारिवारिक शान्ति होई।

कन्या पहिलका हफ्ता ठीक जाई। ७ ता० के बाद उलझन, काम में रुकावट, विरोध आ पत्नि कष्ट रही। १६ ता० का बाद दशा सुधरी, लाभ के राहता लउकी। महिना के अन्त से काम बनी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जून

तुला — रउवा खातिर महिना बढ़िया बा। पराक्रम बढ़ी, भाग जागी, तीर्थ होई, मुराद पूरा होई। ता० १४ का बाद कलंक आ संघर्ष से सावधान रही।

वृश्चिक-नया वाहन से सुख, मित्र मिलिहन बाकिर सवारी दुर्घटना, पत्नि रोग आ पेट रोग के जोग बा। लोहा के अँगूठी पहिनी आ शनि के दान करीं।

धनु — मानसिक उलझन, भय, बन्धन, पत्नि कष्ट, रोजगार में ढीलाई, साझा से घटी आ पेट कमर में कष्ट हो सकता। मातृ रोग छाती के रोग आ मित्र से धोखा के भी जोग बा।

मकर — परेशानी रही, संघर्ष आ चिन्ता बढ़ी। उलझन आ रोग बढ़ी, मान हानि, सन्तान कष्ट आ भय रही।

कुम्भ — महीना के शुरुआत ठीक नइखे। चोट, एक-व-एक दुर्घटना, उलझन, कष्ट आ बन्धन जोग बा। चिन्ता, मेहरारू से बिगाड़ धन नाश आदि हो सकता।

मीन — शुरू में प्रोक्रम बढ़ी। दोसरा हफ्ता में मन बिझियाइ आ चंचल रही। चार ग्रह का मिलन से सुख आ खुशी होई बाकिर सवारी खतरा आ मित्र से धोखा के जोग बा।

जुलाई

ए महिना में लाभ, समाज में धाक, प्रतिष्ठा पिता सुख पत्नि कष्ट से छुटकारा मिली। अतिथि सत्कार खातिर तैयार रही। कवनो नया काम होई।

बुद्धि भ्रष्ट, खराब काम में मन लागी, धन के हानि आ कलंक लिखता। मंगल मंत्रः—ऊँ क्रां क्रीं क्रूं सः भौमाय स्वाहा के १०० जप करी।

एह महिना में संतान पत्नि कष्ट, रोजी में घटी, गुप्त रोग, पेट-कमर रोग चिन्ता बाधा भंग आ प्रतिष्ठा कम मिली। दुर्गा नवार्ण मंत्रः- ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डाये विच्चे" के जाप करी।

नौकरी, सामाजिक प्रतिष्ठा आ रोजी में बरक्कत होई। स्वास्थ्य सुधरी। शत्रु नाश, धन के प्राप्ति होई।

ई महिना कुछ ठीक बा। संघर्ष-परेशानी में कमी व्यस्तता, शत्रु नाश, बौद्धिक विकास यश आ सफलता मिली। दुशमन के दाल ना गली

पूरा महीना मंगल के प्रभाव रही। मन नरम राखीं, व्यस्तता बढ़ी, मित्र से धोखा जमीन झंझट आ मातृ कष्ट रही। ता० १६ से दशा सुधरी।

—पं० सूरज नारायण ज्योतिषी
ज्योतिष केन्द्र
स्टेशन रोड, सीवान

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सम्पादक का कलम से

एने भोजपुरी भाषा के जइसन विकास भइल ह वोइसन कवनो भाषा वे विकास के इतिहास नइखे। साहित्य अकादमी से अतना विनती का बादो मान्यता ना मिलल। अब भोजपुरी के मान्यता भोजपुरिहा भाइयन के रोजी-रोटी के सवाल बन गइल बा। विद्यालय आ महाविद्यालय में जहवां मगही, मैथिली, राजस्थानी, डोगरी आदि क्षेत्र के लइका अपना मातृभाषा के बलपर परीक्षा में बाजी मार लेता उहाँ भोजपुरी क्षेत्र के लइका लोग ताकते रह जाता। नोकरी-चाकरी में इहो लोग बाजी मरतन अगर भोजपुरी का मान्यता मिलल रहित। एह से साहित्य अकादमी भोजपुरी क्षेत्र के लोग का पेट पर लात मारता। साहित्य अकादमी का जाने के चाही कि सब दुख सहाला बाकिर पेट के दुख ना सहाला। भोजपुरी साहित्य के मान्यता का राहता में जवन विघिन होखे वोकरा के खतम क के साहित्य अकादमी का मान्यता देवे के चाही।

मान्यता ना मिले में एगो इहो कारन बा कि हमनी का चेते नइखे कि हमनी के मातृभाषा के मान्यता मिलो। गाँव-गाँव आ नगर-नगर में भोजपुरी अभियान के अलख जागे के चाहीं, जवन पत्र पत्रिका निकलता वोकरा जरिए एक होके कवनों कदम उठे के चाही आ खुब प्रचार होखे के चाही। भोजपुरी के पत्र-पत्रिका के चाव आ श्रद्धा से खरीद के पढ़े के चाही। श्री पृथ्वीनाथ तिवारी अइसन हर क्षेत्र में एकहे आदमी का होखे के चाहीं जे गाँव-गाँव तक पत्र-पत्रिका पहुंचावे।

प्रचार खातिर भोजपुरी नाटक खेलल जरुरी बा। नाटक का जरिए कवनों साहित्य के प्रचार तेजी से होला काहे कि नाटक दृश्य-काव्य ह। एह से हम कहब कि खोज-खोज कें भोजपुरी नाटक खेलल जाय।

अन्त में हम भोजपुरी पत्र-पत्रिका के सम्पादक, विद्वान आ बढ़-बूढ़ लोगन से इहे विनती करब कि एक जुट होके भोजपुरी मोर्चा बनो आ वोही का मोताबिक काम होखो। एकरा खातिर कहीं बइठक होके कोम होइत त आउर निमन होइत। जय भोजपुरी।

—सम्पादक

* माटी के गमक *

भोजपुरी मासिक पत्र

सालाना चन्दा ६--००

ग्राहक बन के भोजपुरी साहित्य के सेवा करीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दिनांक २८ फरवरी के नव युवक समिति मखनूपुर द्वारा *श्री विमलेश* के भोजपुरी नाटक मनवां के साध में ज्ञानी सिंह के भूमिका लेके सर्वोत्तम पाट करे वाला *अशोक कुमार* (ग्राम मखनूपुर, सीवान) जेकरा प्रथम पुरस्कार मिलल।

----श्री निजामुद्दीन
एम० ए०, बी० एड०
पचरूखी

जरूर देखीं ! जरूर पढ़ीं !! जरूर खेलीं !!!

भोजपुरी के प्रसिद्ध नाटक कार
श्री विमलेश के लिखल

१ मनवां के साध (भोजपुरी नाटक)

२ आल्हा रूदल ,, ,,

३ वीर अमर सिंह राठौर (हिन्दी नाटक)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी सदन के कुछ ठोस कदमः—

१ भोजपुरी किताब के प्रकाशन।
२ भोजपुरी भाषा के प्रचार प्रसार।
३ नया-नया भोजपुरी लेखक के उत्साह बढ़ावल।
४ भोजपुरी समाज के संगठन मजबूत कइल।
५ प्रनामापाती के माध्यम "जय भोजपुरी" बनावल।

लेखक आ विद्वान लोगन से अरज बा कि आपन लेख आ कविता अगिला अंक खातिर विहार वाणिज्य प्रशिक्षण केन्द्र स्टेशन रोड, सीवान का पता से भेजों।

—सम्पादक

छपता ! छपता !! छपता !!!

खिचड़ी भाषा के प्रहसन

जरनइल सिंह के नया मोर्चा

लेखकः--विमल कुमार सिंह विमलेश

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी जनपद

लोकप्रिय भोजपुरी-मासिक

मई १९७२

भोजपुरी साहित्य मन्दिर

जगतगंज, वाराणसी—२

दाम ५० पइसा

भोजपुरी साहित्य मन्दिर वाराणसी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी जनपद

(लोकप्रिय भोजपुरी–मासिक पत्रिका)

बरिस : ४] मई, १९७२ [अंक : ५

सम्पादक : संचालक
राधा मोहन राधेश

कार्यालय
भोजपुरी जनपद
सी० २७/८९ जगतगंज, वाराणसी–२

एक बरिस : ६ रुपया एक प्रति : ५० पइसा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आपन बात

भोजपुरी-प्रकाशन

● भोजपुरी में प्रकाशन के काम बाड़ा जोर से चल रहल बा। भोजपुरी में सगरी विधा में रचना देखे में आवता। भोजपुरी साहित्य के इतिहास, व्याकरण आ शब्दकोश सभकुछ लिखा-छपा रहल बा। कविता, कहानी एकांकी नाटक, उपन्यास, निबन्ध आ दोसर विषयन पर ढेर रचना दिन पर-दिन निकल रहल बा। एह से केहू भी अंदाज लगा सकेला कि भोजपुरी साहित्य केतना समृद्ध बा। एहमें अब कवनो सन्देह ना रहल कि क्षेत्रीय भाषा का मानी में भोजपुरी साहित्य, समृद्ध साहित्य ना गिनल जाई।

भोजपुरी में साप्ताहिक, पाक्षिक मासिक आ त्रैमासिक पत्र-पत्रिका भी ढेर निकसल तबो एह सगरी बढ़ोतरी का संगे-संगे भोजपुरी का सोझा कुछ अइसन समसेया बा जवना से भोजपुरी के प्रकाशन जे भी हो रहल बा बाकिर खपे में बाड़ा हरानी-परेशानी बा। पत्र-पत्रिकन के प्रकाशन कुछ दिनले होके बन्द हो जाता। पत्र-पत्रिकन के बन्द भइला पर वोकरा प्रकाशक आ सम्पादक का माथा पर बदनामी आवता। बाकिर, पत्र-पत्रिका चली त कइसे। प्रकाशन में उत्साह आओ त कइसे। एक त भोजपुरी के मान्यता साहित्य ऊआदमी से कवनों ना मिलल। ई भोजपुरी साहित्य का बढ़ोतरी में सभसे लमहर रोकावट बनल बा। दोसर भोजपुरी साहित्य खरीद के पढ़ेके का तरफ पातर रूची। तीसर सभसे या सरकार या शिक्षण संस्था में भोजपुरी साहित्य के कवनो स्थान ना भइल। ई ठीक बा कि बिहार विश्व विद्यालय भोजपुरी के अपना पाठ्य-क्रम में ले आइल। बाकिर का पढ़ावल जाता, आगा के का प्रगति बा ई कुछ नइखे लउकत। ई त होखी भोजपुरी का संगे समग्र विचार जोगावला से एह कमी का वोजह से भोजपुरी के .काशक ऊ चाहे किताब के होखस या पत्र-पत्रिकन के कुछ आगा बढ़ला का बाद साहस छोड़के खसक जात बाड़न तब कहल जाता कि ई काम आच्छा नइखे-एहसे भोजपुरी के बदनामी होखता। साख मारल जाता। बाकिर ई चले एहमें काम से सहइता करेवाला बहुत कम बाड़न। लामा-चावड़ा सलाह देवे वाला ढ़ेर लोग बा। एही से काम चले वाला नइखे। कवनो पत्रिका के दु-चार सई गाँहक घुम के बना लेला से ना होखी। भोजपुरी का संगे एगो अउर रोग बा लोग के मुफ्त में पत्र-पत्रिका ले लेवे के चाहट। ई निमन-निमन लोग में पावल जाता। बाकिर अइसन बात मैथिली मगही का संगे नइखे। एह समसेया का संगे-संगे सभसे दुःख आ लाज के बात ई बा कि भोजपुरी क्षेत्र में अइसनों कुछ विद्वान, अध्यापक आ पढ़ुआ-लिखुआ लोग बा जे भोजपुरी के गंवारू बोली कहता आ धोती खूंट के वरोध करता।

अइसन लोग के का कहल जाई जे एहतरह आपना मातृभाषा हिन्दी आ अंगेजी के नेही आपना के कहता त एह में कवनो सवारथ बा। जे आपना मातृभाषा के अनादर करता, मातृभाषा के ध्यान नइखे राखता ऊ हिन्दी के बढ़ोतरी के कवनो काम नइखन करत जे अपना मातृभाषा, आपना माटी का महंक के नइखे पहिचानत वोकर ग्यान एह दिशा में अधकचरा बा।

त भोजपुरी खातिर अइसन समय आ गइल बा कि भोजपुरी साहित्य का प्रति भोजपुरिया लोग में नेह-छोह खाली बाते से ना बलुक तन, मन आ धन से भइल जरूरी बा। जब ले ई ना होखी भोजपुरी साहित्य के बढ़ोतरी का सोझा समस्या बनल रही।

●

राधेश—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के के चली सिवानप

के के चली सिवानप बताव जा
एक ओर नापाक पाक बा
एक ओर से चीन बा
बीरन के भूमी भारत के
देख समझत दीन बा
मौका इहे देखां के बा
बैरी के समझावे के बा
बहत खून से दुसमन के
धरती के प्यास मिटावे के बा
जे जाइल चाहे आगे आवे
जल्दी जल्दी कदम बढ़ावे
के के चली सिवानप बताव जा
राणा के रन भूमी से
गूजँत रहे ललकार बा
बीर बाँकुड़ा कुंअर सिंह के
आत्मा कहत पुकार बा
अबकी मत छोड़ भइया

भारत के नाम महान बा
एह देश के बीर कहानी
जानत सकल जहान बा
चाहे जे बलिदान चढ़ावे आवे
रण के बिगुल बजावत आवे
के के चली सिवानप बताव जा
बीर शिवाजी के गाथा
आजो जग गावेला
पृथ्वीराज के सुनत कहानी
दुसमन मुँह बावेला
झांसी अउरी पदमिनी
के हथियार जगावेला
भूषण, चन्दबरदाई के,
सरहद पर गीत गवावेला
जे रण के गीत सुनावल चाहे
आवे रण भेदी गीत सुनावे
के के चली सिवानप बताव जा

मृगेन्द्र प्रताप 'श्रमिक'

एन २०१६-न्यूकालोनी टेल्को, जमशेदपुर-४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जनपद के सिंहनाद

सतीश्वर सहाय वर्मा 'सतीश'

पहिला दृश्य

[जगदीशपुर के बड़का बंगला । वीर केशरी बाबू कुँअर सिंह अलगे एगो ऊँच स्थान पर बइठल बानी । ई छोटहन दरबार में हाली-मोहाली लोग उनका के घेर के बइठल बा ।]

कुँअर सिंह:: काहो अमर सिंह, कमिशनर के पास पटना केकरा के भेजले रहऽ ?

अमर सिंह:: कमिशनर से भेंट करे हमनी के मुंशी गइल रहले—पूजन !

कुँअर सिंह:: पुजन सिंह ! कमिशनर टेलर के का फरमान बा होऽ ?

पूजन:: सरकार ! उ सब बात हमरा से कहे केमत कहीं । उ सब फरमान ना ह सरकार-उ अगिन बान ह । जे करेजा के भोंकादिही ।

कुँअर:: (रोस में) का कहत बारऽ पूजन ?

पूजन:: ठीक कहत बानी सरकार ! जवना रोब से उ शेखी बघारत रहे, उ सब सुन के करेजा मछल के रह गइल । अपने के हुकुम ना रहे, ना त काँचे चबा घलतीं ओकरा के ।

कुँअर:: हूं ! त उ शेखी बघारत रहे ! बनरघुड़की मारत रहे !]

पूजन:: जी सरकार ! टेलर कहलन कि बाबू साहेब से कह दिह कि कम्पनी बहादुर के खिलाफत करे वालन के साथ मत दिहें । ना त·········(चुप हो जातन)

अमर:: चुप काहे हो गइल पूजन ! कहऽ—सब बात साफ साफ कहऽ । भईया तनी आपन दोस्त के बात सुन लेसु । दोस्त टेलर साहेब के बात ! हूं हूं !

पूजन:: का कहीं बबुआ अमर सिंह ! कहत रहे कि खिलाफत करे वाला केतना जमींदार लोगन-राजा लोगन के गरदन फाँसी के रस्सी में लटका दिहल गइल । कुँअर सिंह अगर अइसन करीहें त उनकरो आवाज गरदने में बन्द कर दिहल जाई । जगदीशपुर के मटियामेंट कर दिहल जाइ !

कुँअर:: (खींस में जोर से) पू·····ज······न ! तूं इ सब सुनके चुप रह गइल ? तोहार त कमीना टेलर के खून चीभ जायेके चाहत रहे । उ हमरा के बूढ़ समझले बा—अस्सी बरस के बूढ़ । हा-हा—हा बाकी उ नइखे समझत कि बढ़ राजपूत के तेरवार के केतना जोर बा, केतना ताकत बा ।

अमर:: भईया ! टेलर के ई मजाल ! हुकुम द ! हुकुम दऽ भईया, हमार तेरवार बहुते पिआसल बा । हम त तोहार दोस्ती के बात सुनके चुप बानी-ओकर पाहिलका फोटो देखके मन मरले बानी । ना त आज हमार घोड़ा के टाप आरे में सुनाईत ।

कुँअर:: (गंभीर होके) दगाबाज ! नमक हराम फिरंगी !! मधुरी बोली बोल के आपन दोस्ती के जाल हमरा पर फेंकत रहे । अमर सिंह ! अब दोस्ती के काँच सूता टूट गइल । टेलर के चालबाजी के पोल खुल गइल अमर सिंह ! ढोल के पोल मालूम हो गइल !!

[नेपथ्य में शोर सुनाइल पड़त ब। —"सरकार रछेआ करी ! हमनी के मदद करीं मालिक !!"]

कुँअर:: हंएं ! इ दुआर पर कइसन हल्ला बा ? अमर सिंह देखऽ त, बहरा के चिचिआत बा ! ।

(अमर सिंह के प्रस्थान)

कुँअर:: पूजन ! अब अंगरेजन के दिन अदिन नजर आवत बा । कम्पनी के नींव के ईंटा खसके चाहत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बा।   (अमर सिंह के प्रवेश)

अमर:: भईया, बहरा दानापुर के विद्रोही लोग खाढ़ बा। बड़ा बेहाल बा लोग !

कुँअर:: दानापुर से लोग आइल बा ! विद्रोही! ! ······ बोलाव, भीतरे बोलाव ओ सभे के।

(पूजन के प्रस्थान)

[अमर सिंह बीहर जाके विद्रोह लोग के बुलावत बारे। सभे आवत बा। एगो आदमी धड़ाम दे कुँअर सिंह के गोड़ पर गिर पड़त बा।]

रामसनेही::रामसनेही, अब त सरकार के गोड़ छनले रही, । जब ले सरकार हमनी के बचन ना देब, हम अपने के गोड़ ना छोड़ब—ना छोड़ब।

कुँअर:: अरे इ का करत बाड़ऽ रामसनेही। उठऽ आपन समाचार कहऽ।

रामसनेही::(उठके) सरकार से बस एगो बचन लेवे के बा। ना त हमनी के रछेआ ना हो सकेला। गोरा पलटन हमनी के देहिमे ले नइखे क्ष्वारत अब त बहीने-बेटी के इजत-लाज लूटे में दुसासन के नाक काट रहल बा।

देवल:: मालिक हमनी के उपर अंगारा बरसावल जात बा। भरल-पूरल खेत-खरिहान में लंकादहन हो रहल बा। सगरो गांव-घर में सिआर के फेंकरल सुनाई पड़त बा।

अमर:: हे भगवान ! अइसन आतेयाचार ! अइसन लूट-मार ? अब इ ना देखल जाई।

रामसनेही::ऐतने ले ना बबुआ ! जवार भर के नवछ-टियन के छाँट छाँट के बन्दूक दाग दिहल जात बा। आज जे लड़िका माई के गोदी में बा, काल्ह ठीक नइखे कि कब उ संगनी के नोखी पर टंगा जाइ। सरकार, अब त अपने के ही आसरा बा।

देवल:: मालिक ! अब नइखे सहात। बलुक इ अच्छा होई कि रउरे अपन तेरुवार से हमनी के गरदन काट घालीं। हमनी के चैन से जान निकल जाई। बाकी फिरंगियन के हाथे मार खाइल—इ हमनी से ना सहाई—अपने हमनी के उबार लिहीं मालिक, उबार लिहीं।

कुँअर:: बस करऽ देवल ! रोअल बन्द करऽ। रोअे ला उजे कमजोर होला। हम तोहरा लोगिन के आँखि में लोर नइखीं देखल चाहत। तोहार लोगिन के आँखि में आग देखे के चाहत बानी—आग। अमर सिंह आजु ले हमरा आँखि पर पट्टी बँधाइल रहे। अब उ पट्टी खुल गइल। दुसमन से दोसती कइके हम बड़ा गलती कइनीं। बड़ा गलती कइनी ऐतना समय के नुकसान कइके। एसे का। अब समय आगइल बा। जगाऽ द ऽभोजपुर के। बिटोर दऽ गोहार। कुँअर सिंह अब जाग उठल बा। अब ओकर तेरुआर मेआन में ना सुतल रही। फिरंगियन के गरदने ले नइखे काटे के—तोप के नालो ले काटे के बा। टेलर अइसन दगाबाजन के देखादऽ भोजपुरिया पानी के। भोजपुर के जवानी के॥

[सभे कुँअर सिंह के जयकार मनावत बा आ परदा गिरत बा]

दूसरा दृश्य

[अंग्रेजी पलटन के एगो खेमा। डगलस बेचैन होके घूमत बा। नेपथ्य से बाबू कुँअर सिंह के वीर जवानन के सिंह नाद सुनाई परत बा। जवानन के बोली बाः—

"रुद्र देवता जै जै काली।"
"हर हर बम बम।"
"वीर कुँअर सिंह जिन्दाबाद।"

इ सबक नारा के सुन के डगलस के लिलार पर चिन्ता के रेखा उभर आवत बा आउर उ तेजी के साथ टहले लागत बा।]

डगलसः —कुँअर सिंह एक पेटी लैन्ड लोर्ड होकर सरकार को बरबाद करीना माँगटा! अइसा कभी नहीं होने सकटा हमरा टोप पल्टन सब को भूंज डेगा। कम्पनी बहादुर से टकराया और जीटना आसान नहीं हाय। (जोर जोर से चूटफूंकेलागत बा) अरे कोई हाय ? सिपाये ! सिपाये !!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सिपाही:—(सैलूट करता) हाजिर बानी सार।

डगलस:—सर का बच्चा ! जाव जली मिल मैन साहब को खबर करो ! क्या देखटा है डैम सुअर जल्दी जाव क्यूक। (सिपाही चल जाता)।

डगलस:—मिलमैन ने हमारी ताकत को एस्पोयाई कर दिया कायर्ड डरपोक कहींका !

मिलमैन:—(प्रवेश कके) हलो मिस्टर डगलस ! क्या मुझको बुलाया ?

डगलस:—हलो ! बट यू आर ए कावर्ड ! तुम से तो अच्छा भोजपुर का जनाना लोग है जो हम इंगलिस पीपुल से लड़ने को तैयार हाय।

मिलमैन:—एक्सक्यूज मी सर ! वह तो एक धोखा था, जो कुँअर सिंह ने हमलोग को दिया। जिससे हमें बुलोक धार्ट आई मीन बैलगाड़ी से भागना पड़ा।

डगलस:—और इस तरह टुमने हमारा लोग झंडा निचा कर दिया। वो पुलिस आदमी हम टुमको नहीं डेखना मांगटा। यू गेट आउट ! (मिलमैन सर-झूका कर चला जाता है।

आर्थर:—(भीतर आके) गुड इमनिंग सर ! हीयर इज गुड न्यूज फार यू वाडी अच्छा खबर लाया हूं। हीयर मी। (आर्थर डगलस को सभे कुछ कहत बा)

डगलस:—(ठहाका मार के हँसके) सचमूच अच्छी खबर है आर्थर क्या कुँअर सिंह का मैनेजर हरे कृष्ण हम लोगों का जासूस बनेगा ? तबतो कुँअर सिंह को बरबाद हम कर देगा- हमारा फउज उस बुढ़े को कुचल देगा।

आर्थर:—आफकोर्स ! हरेक किसान हमारा मदद करेगा बा थोड़ ओ लालची ह हाय, ग्रीडी आई मीन ग्रीडी पीपुल।

डगलस:—हा हा हा तो क्या हुआ जगदीशपुर उसे देदेगा, कुत्ते के सामने हड्डी फेक देगा। अच्छा हम उससे मुलाकात करना चाहता।

आर्थर:—ही इज हीयर, हम बुलाता हाय ! (नेपथ्य झोंक कर) वहादुर हरे किशन सिंह वो हरे किशन सिंह, इदर आये साहब टुमे देखना मांगटा। (हरे कृष्ण सिंह प्रवेश करत बारन)

हरेकृष्ण सिंह:—सलाम हजूर के।

डगलस:—वोऽऽ तो टूम हरे किशन सिंह हाय कुँअर सिंह का मैनेजर।

हो:— हुँऽ सरकार, मनेजर ना कुँअर सिंह के दुश्मन हई दुश्मन ! उस सरकार वहादुर से गद्दारी कइले बारन।

डगलस:—ठीक कहता है हरे किशन ! वो गद्दार नहीं गद्दार आफ इन्डिया है।

आर्थर:—कुँअर सिंह समझटा हाय कि अंग्रेजों के फउज को कुचल डेगा, ऐसा अब कभी नहीं होगा अब टो हम को हरे किशन जैसा वहादूर जवान मिल जाटा है।

हो:—हाँ सरकार, कम्पनी वहादूर के जहाँ पर सेना गिरी उहां हरे किशन के खून गिरी, बाकी ……

डगलस:—घबराव नही घबराव नहीं हरे किशन टुमको जगदीशपुर मिल जायगा, कुँअर सिंह के लाश पर तुम्हारा किला खरा होगा।

आर्थर:—बिलकुल ठीक ! तुम राजा बनेगा हरे किशन।

डगलस:—मिस्टर आर्थर फौज को तैयार करो, कुँअर सिंह के साथ हम लोगों का आखिरीमुकाबला होगा हम उसको जीते बिना आराम नहीं करेगा।

आर्थर: —आई एम रेडी सर, चलो हरे किशन (हरे कृष्ण आउर आर्थर के प्रस्थान)

डगलस:—गोड सेभ दी किंग। कहो कुँअर सिंह अब टुम नहीं बचेगा। हमारा कम्पनी तुमको वरबाद करेगा। हमारे ताकत से मत टकराव हमारा सूरज दुनिया में कहीं नहीं डूबता हम टुम्हे डुबा डेगा, वरवाद करेगा। हा……त। …ह……

(डगलस जोर से जोर से हँसत वा आ पर्दा गिरत वा)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तीसरा दृश्य :

[एगो पड़ाव—जहवाँ बाबू कुँअर सिंह घवाहिल होके बइठल बाड़े। एगो बांहि जेमें गोरन के गोली लागल रहे ऊ तेरुवार से कीटि के गंगा मइया के दे दिआइल। ऊ घाव बाबू साहेब के मन आ शरीर में बड़ले बा उटके टहलत बाड़े।]

कुँअर सिंह:— बाँह में गोली मारके, समझ लेल कि कुँअर के खतमें कर दिहनी। बाकी कुँअर अभिले जीयते बा। कुँअर सिंह जीअते रहिहें—जनम जनम ले जीअते रहिहें। जब ले गोरन के भोजपुर के धरती से खदेड़ ना दिहें—कुँअर सिंह चैन से ना सुतिहें। भोजपुरिया जवान तेगा ना उठावे—वाकी जब एक बेरा तेरवार हाथ के मुट्ठी में आ जाइ—बिजुरी लेख लपलपात रही—दुसमन के गरदन के छप छप काटत रही। चुप ना बइठी। (चुप हो जात बारे फेरू आवाज बदले बोलत बारे) ऐ गंगा माई, आपन भोजपुर के रछेया खातिर तोहार जललेके हम किरिया खइले रहीं। एहि से नू गोरन के गोली से अपवितर भइल बांह तोहर के काटि के दे दिहनीं। बाकि आजु ले हम उ किरिया भूलाइल नइखी महतारी के किरिया केहू भूलाला। कहिओ ना भूलाए। त हम चुपचाप इहवाँ काहे बइठल बानी। जुझारं सिंह गहें अरे ए जुझन सिंह!

जुझन:: (प्रवेश करके) का हुकुभ बा अपने के?

कुँअर:: हम दुलउर जाय के चाहत बानी। तू जलदी से तइयारी करऽ। ना, जानें, उहवाँ का होत होई।

जुझार:: ई कइसे होइ सरकार। बबुआ अमर सिंह के किरिया धरावल अपने असहीं भूला देहब।

कुँअर:: ओह! हो! अमर सिंह त हमार गोड़ में बेड़ी डाल देले बारन। लड़ाई के मैदान में छोट भाई लड़ी आ बड़ भाई इहवें लुकाइल रही?

सैनिक:: जय हो बाबू साहेब के, दुलउर में लड़ाई जोर पकड़ लिहले बा। हरे किशन सिंह अंग्रेजन के ओर से बाड़े। (सैनिक समाचार देवे चल जात बा)

कुँअर:: हरे किशुन! निमकहराम!! जे पत्तल में खईलस उहे में छेद कर रहल बा। जुझार सिंह, इ लड़ाई में सबके सबक सिखावे के बा। डगलस, आर्थर, हरेकिशुन—सब के। इ विभीषण आ जयचंद के औलाद के मूड़ी काट के गेंदा जइसन लतिआवे के बा। अकेले अमर सिंह का कारहें? ना-ना—ना हमारा जाये के चहवे करीं! हम जइबे करब। दुलउर के लड़ाई—हमार आखिरी लड़ाई ह। जीत चाहे हार। जुझार सिंह, जलदी करऽ भाई, हाथी पर हउदा कसवा द। ओपर हमार तकिया रखवा दऽ। जा देर मत करऽ।

(जुझर सिंह जात बारन)

[शेष पृष्ठ ६ पर]

कुँअर:: आज भारत के कोना कोना में ज्वालामुखी के लावा फूट पड़ल बा। झांसी के महारानी, पेशवा नाना जइसन केतने लोग जनम भूमि खातिर जान दे दे ला तइयार बा। मसाल जल रहल बा। ऊ मसाल में हजारन देस भाईयन के खून तेल लेखा जर रहल बा। ई कइसे होइ कि ऊ मसाल भोजपुर में बुता जाइ। ऊ जरत रही—जुग जुग ले जरत रही। कुँअर सिंह के देह के गाढ़ खून से ऊ मसाल हरदम जरत रही अमर सिंह ......अमर सिंह हम आवते वानी—हम आवते बानी मईयो।

(प्रस्थान करेके तइयार बाड़े कि घायल अमर सिंह आउर सिपहियन के साथे आवत बारें)

अमर सिंह:: (प्रवेश करके) तेगा बहादुर कुँअर सिंह के जय! भोजपुर के जय!! भारत माता की जय!!! मइया-मइया- तोहरा आसीरवाद से दुलउर के लड़ाई हमनी जीत गइनी। अब तोहरा कतहू जाये के जरुरत नइखे। कबहूँ ना।

कुँअर:: (खुसी में जोर से) अमर सिंह! शावस बहादुर!! आज ते भोजपुर के ना समूचे देस के मुँह के लाली राख लिहले मइयो। अब तनी हमार करेजा से लाग जोऽ।

(अमर सिंह के अंकवारी में लेत वारन)

आज—आज हमार करेजा जुड़ा गइल। अइसन मालूम होत बा कि हम धरती पर ना स्वर्ग में बानी। आ तू अमर सिंह एगो स्वर्ग के देवता

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बदली कइसे

चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह ★

"आज के रात हमरा जिनगी में हमेसा महकत रही। ई चमकत चान के चेहरा। ई केहू के बिहंसत ओठ के छितराइल अंजोरिया।"

आवाज कवनो लइकी के रहे। पैर रुक गइलन स। आफिस में देर हो गइल रहे। लपकत चल जात रहीं। आफिस आ हमरा डेरा के बीच मैदान, खेत, खरिहान, बगिया, तालाब सम पड़त रहे। तालाब के हद पार कर के बढ़ल रहीं कि आवाज सुनाई पड़ल। हमरा आगे दाहिने तरफ धान के पुआर के गाला रहे। आवाज गाला के दोसरा तरफ से आइल रहे। अब तक घर जाये के जल्दिबाजी में रही जब से देस में औरत के प्रधानी मिलल तनिको देर भइला पर आफत हो जाला। अपना चारो तरफ के वातावरण पर धेयान ना देले रहीं। लइकिया के बात सुन के चारो तरफ देखनी तब आंख टंगाइले रह गइल। आसमान मेचान बुझात रहे कि कवनो चानी के नाँव नील रंग के सांत पानी पर चलल जात होखे। जहाँ-तहाँ रूआ के फाहा अस बादर छितराइल रहन स। मन गीत गावे के करे लागल। ठठाके हंसे के भी मन करत रहे। अंजोरिया रात में पुआर के गाला बहुते नीक लागत रहे।

"कविता के भाषा हमरा खूब अच्छा लागत रहे बाकिर जब से तोहरा के देखनीं तब से ओकर आकर्षण एक दम खतम हो गइल। एक दम।" युवक के आवाज रहे। धीरे धीरे रुक रुक के बोलत रहे। सायद सोच सोच के बोलत रहे। ओकरा सदन से खुसामद के महक आवत रहे।

"खुसी के समय कतना जल्दी बीत जाला। दुख के समय कटलो से ना कटे।" लइकी के आवाज रहे। बुझात रहे कि किताब में पढ़ल बात बोलत होखे। बड़ बुढ़ के गम्भीरता रहे।

जबले आपन मुंह बंद करीं, करीं तब ले हमरा गर्दन से खों खों के आवाज निकल के हवा में पवरे लागल। जतने रोके के कोसिस कइनी ओतने खोंखी बढ़त गइल। लाचार बइठ के खोंखे लगनी।

दोसर तरफ पुआर खरखराइला के आवाज आइ[illegible] दूनो उठत रहन स। कुछ देर बाद दुनो के आर पर आ[illegible] आगे पीछे जात देखनी। दुनो चुपचाप जात रहन स। [illegible] के हाथ में किताब रहीस। ऊ जाये के पहिले छिपले [illegible] से धुम घुम के देख लेले रहनस। हम जात देखत रह[illegible] गला के सुरसुरी रुके के नाँव ना लेत रहे। आँख में [illegible] आ गइल-खोंखत खोंखत।

× × × ×

रेडियो से सामाचार होखत रहे। हमार दिमाग [illegible] दिन पीछे के बात में अझुराइल रहे। ओह दिन आफि[illegible] से अंवे में देर हो गइल रहे। अंजोरिया रात में चल[illegible] आवत रहीं। तालाब से आगे बढ़ल रहीं। पुआर के गा[illegible] के पास पहुंचल रहीं गाला के बगल से निकल के [illegible] आर पर आके चले लागल रहन स। ना जाने काहे [illegible] एगो (लड़की रहे।) फिर के हमरा आगे से आवत र[illegible] देह में सुरसुरी दउड़े लागल मन में पाप समा गइ[illegible] चारो तरफ सनाटा रहे। जान-बुझ के राह ना छोड़नी औरतिया (लइकिया) आर पर से उतर के खाड़ [illegible] गइल रहे। आर छोड़े के बहाना से हमहूं आर से उत[illegible] के ओकरा आगा चल गइल रहीं। ओकरा पीछे हटे [illegible] में आपन देह ओकरा देह से छूआ देले रहीं। मन में ब[illegible] कुछ रहे बाकिर जब ऊ आर पर चढ़ के चल देले रहे त[illegible] कुछ बोले के साहस ना भइल रहे।

बहुत दिन तक मन डेराइल रहत रहे। डेरा में अके[illegible] रहत रहीं दुआर पर कवनो खटका होखे तब बुझाय [illegible] केहू ओरहने लेके आवत होखे।

समाचार खतम भइल। रेडियो के तरफ स्टेसन बद[illegible] खातिर हाथ बढ़वनी। खुलल दरवाजा से बुझाइल [illegible] आइल होखे। हाथ बढ़ले रहल। गरदन घुमा के देखीं त[illegible] एगो औरत। पहचानत देर ना लागल। ई उहे औरत [illegible]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जवना से जान बुझ के ऊपर के घटना में टकराइल रहीं। अंतर अतने रहे ओह दिन में आ आज में कि एकर माँग बिना कवनो फोटो के सुन देवाल अस आंम लेखा लागत रहे। बिजली के झटका लगला अस झट से अपना जगह से उठ गइनी आ एगो कुर्सी बढ़ावत बइठे के इसारा कइनी।

बइठला पर बईठ गइनी बाकिर दिमाग चक्कर काटत रहे। एकरा आवे के कवनो मतलब ना बुझात रहे। ओह रात में छुअइला के कवनो जान-पहचान ना रहे।

मन करत रहे कि भाग जाईं। जरुर कुछ कही भीतर से लोग आ गइल रही। पहिलहीं से छान-पगहा अइठत रहेली। आवते गुरुना-गुरुना के देखे लागल रही। नजर से खोद खोद के जान खात रही। अगर ओह रात के बात उठाई तब त खैर नइखे।

"अवगे समाचार होत रहे नू? कवनो खास बात।"

जान मैं जान पड़ल। एक मुठी के मन सइ मुठी के हो गइल। साथे साथे रेडियो रखला के महत्व भी समझ में आइल।

"आज के समाचार में इहे एगो खास बात बा कि हिन्दुस्तान-पाकिस्तान में तासकंद में समझौता भइल ह।"

"का अब दुनो देसन में युद्ध ना होई? बहुत नीक भइल। भगवान अयुब के भला करस। अब आगे से केहू के हमरा अस माँग ना नूधोवाई।"

नजर ओकरा माँग पर गइल। ओकर कारन समझ में आइल। हमरा माथा खुदे ओकरा तरफ झुक गइल। धन्यबिया, ई औरत जे देस खातिर पति के दान देके भी ऋषि-मुनी के संतान अस बात करत बिया। दोसरा के भलाई के कामना करत बिया।

"ई युद्ध बंदीं के संधी ना ह। एह संधी के सर्त ई बा कि दुनो देस जीतल जगहन के लौटा दिहेंस। दुनो देस एक दूसरा बंदी के विरोध में प्रचार ना करिहन स।"

"आ दूर तेरी के! ई कवनो संधीह। ना! ना!! ई लाल बहादुर शास्त्री ना कइले होइहें। जरूर उनकरा से जोर-जुलुम से सकरावल गइल होई। हमार मन नइखे गवाही देत कि ऊ अपना मन से मनले होइहें। अगर मन से मनले होखस तब इहे कहब कि हमरा पति के धोखा देके हत्या करवावल गइल ह। ऊ देस खातिर सहीद नइखन भइल। देम में का केहू के दिमाग काम नइखे करत? रउवे कहीं! जेकर गोद सुन हो गइल। जेकर मांग धोवा गइल। जेकरा बुढ़ापा के सहारा छिना गइल। ऊ कवना मुँह से पाकिस्तानी के आसीर्वाद दी? चाहे प्रलय हो जाय, फाँसी चढ़ा देव जाय, तोप से उड़ा देल जाय ना किर ऊ त रात दिन पानी पी पी के अयुब के सरापी। देस के लोग भी धोखा देस, सहीदन के भुला देस, बदल जास बाकिर हम कइसे बदलीं?

ओकरो आँख आँसू से भर गइल रहे। आँख पोंछत बोलल—हाँ! बदली कइसे?"

[पृष्ठ ४ के शेष]

लेखा लागत बारऽ। आ, गेंदा सिंह कहवां बारे। ओकर तेरूवार के पानी त आउर जोर पकड़ले होई। कारे साँच बात बानू।

अमर:: गेंदा सिंह! गेंदा सिंह लड़ाई में वीर गति पवले भ‍इया।

कुँअर:: (फीका हँसी हँसके) गेंदा सिंह! तू हमारा से पहिले बाजी मार लिहलऽ। हमनी के त साथे साथे चले के किरिया खइले रहनी कवनो बात ना कवनो बात ना। एगो गेंदा सिंह ना, हजारों गेंदा सिंह के भोजपुर देवेला तइयार बा। अमर सिंह, चारो ओर खबर भेज द जीत के खुसी में खाली जगदीशपुर ना—सगरो आज दीवाली मनावल जाई। सरग में गइल हमार हजारन वीर बहादुरन के नाम पर गाँव-गाँव, गली-गली में आज रोशनी होखे की चाहीं। आज के दीवली इतिहास खातिर अजवे दिवाली होई। लोग आजु ले दीआ में तेल जरावत रहे—कबि ई दीवाली में बहादुर भाईयन के खून जरत रही। लाल लाल लहू के लाल से भारत के आजादी के राह जगमगात रही—ऊ राह पर आवेवाला जमाना के लाखन-करोड़न गेंदा सिंह, कुँअर सिंह, अमर सिंह चलत रही हैं चलत रहीहें जबले ई खून से सींचल झंडा ई धरती पर ना गाड़ दिहल जाई। अमर सिंह, हम आज बहुते खुश बानी भोजपुर आपन पानी दिखा दिहलस। आज हमनी आपन तीनो महतारी के लाज बचा लिहलीं। जय भोजपुर! जय भारत!

! [अमर सिंह के साथे सभे नारा लगावत बा पर्दा धीरे धीरे गिरत बा।]

नवीगंज, छपरा (सारन)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बंस–पुरान

अनिल कुमार राय 'आंजनेय'

★

बाँस ले पहिले पहिल हमार चिन्हकारी कब भइल, ई त हमारा ठीक-ठीक इयादि नइखे। बाकिर एतना सूध-बूध जरूर बा कि जब हमार लइकाई तनि गोटाइल, हमरा अरबरात गोड़ में पाँख लागल आ हम घर के देहरी लाँघि के माकत धाँगत घर बाहर एक करत, बहरघांसू होके बहरा चुनौती देबे लायक भइलीं त अपना पुरुषारथ, बल आ कूअत के कईन ले नपलीं। जानत रहलीं जे हम बाँस मतिन कड़ेर, कठेठ आ खूंटा ठोंक भलहन नइखीं भइल, त का भइल? कोंपड़ नियर कोअरों त नइखीं। बलुक हमरा कोंअराई में कांच कईन के लप-लप आ लच-लन भाव बा। काचे कईन लेखा लचि जाइब, बाकिर टूटबि ना। एही बूते-भरोसे अपना गोइयाँ लोगन के ललकरलीं, सीटलीं। 'काँच कइनियाँ लचालची, कवन बीर मोर गटा धरी।' हमार गाटा लइकिनी के नरम कलाई तहना जे धरते आल्हर कमल नाल नियर चटकि जाई। ई ओ बच-कस मरद के गट्टा ह जवन काँच कईनि नियर लपि जाई, बाकिर तनिको जुमुस ना खाई।

गँवें गँवें एह बहुरुपिया बाँस के कई रुप में हम लखलीं-जनलीं। कबो बाबा का छड़ी के, कबो बेनी कँहार का ठेंगा के त कबो कामा काका का लउरि के हम घोड़ा बनाके दुलकी आ सरपट एनी ओनी धावत फिरलीं, घोड़-दउल करत फिरलीं।

एतने ले ना, कले-कले एह बाँस के अजगुत रूप के हमरा अस टोना लागल कि कल ना परे- बस हम लोमा के अठान-बिठान डाल दीहलीं। एह रुप का लोभ का लासा में अस लपटइनीं–लसरइलीं कि बस आठो घरी एके सूध, खाइल-पिअल कुल्हि भुलाग इलीं। एही बाँस के अपना औकात भरके मेंटाहू थून्ही गाड़ीके घूरी बनवलीं। बाँस का दूसरका बोगड़ा के बीचो–बीच खोलिहा के एह घूरी में पहिरा दीहलीं। अइसे बुझा जइसे बाँह देवे खातिर दूनों बगली बाँस आपन बाँह बढ़ा देले होखे। तरजुई का डाँड़ी नियर एह बाँस के बढ़ल बाँह के गहुआ में क... के भा ओसे लटकत जेंवर का टँगना पर टँगा के अप... सँघतियन सहित घुमरी परउवा खेललीं। एह चों... करत चोंचा पर कठधोड़वा के मजा मरलीं। (हमरा... बुझात बा जे बाँस के ई घुमरी-परउवा घूमत-खान चें... चों बोलेला एही से ई चोंचा कहाला।)

गते-गते, रसे-रसे हमार पहचान बेईलि नियर पस... गइल। अब बाँस के एगो सरकस रूप लऊर आ ला... पर हमार ढीठ-डीठ लपकल। बाँस के एह चँडंता रूप... के नइखे घाही भइल? एकरा ले के बाचल बा जे बचतीं... भोजपुरिया लऊर-लाठी आ एकरा लग-सग के लोहा... सँवसे संसार मनले बा। 'जेकर लाठी ओकर भईस, ई... नियाव बा।' मिर्जापुरी लाठी के ताड़ केकरा से अड़ाई... एकरा वार के के अँगेज सकल? आ एकरा ले के पा... पावल? लउर भोजपुरिया जवान—किसान लगावेलन... ई मोछ राखेवाली, बरदानगी आ इज्जत—आबरू... चीजु ह। मोका पर बरीस-बरीस का दिने हरदी-तेे... अवटल-पोसल, दूध का गाजे गजगम्म आब रियार कई... घर्रा मारल आ धुअँठल जवन धाऊँ लऊर निकासल जा... ऊ समहुताह भा समहुतियाह लऊर कहाले। एह लऊर... लेके निकसल सभका भागे-जोगे ना रहेला। एके सोभन... आ सनियल मरद लेके निकसेलन। एही लऊर खाति... गवाला, 'लाले लउरि चितकाबर हो, सोनवे मढ़ा... जिनकर मूठ। से लउरि लेलन कवन बाबा हो, बादी मा... लनि हियरा फार।' हम जब गोधना का मोका पर... मंगल गीत के सुनीं आ एह लऊर का साथे हमरा पुर... से लेके बाबा, बाबू, काका आ भइया सभकर नाँव इज्ज... का साथे ले लीहल जाव त हम हिरोहे लागीं। छटप... उठीं कि हे गोधन बाबा मेहरारून का निगाह में हमके... इज्जत कब देब? हम ई देखीं जे हमार बाबा आ बा... हाथे बँकुड़ी लेलन बाकिर इज्जत आ मरदानगी के स...

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ई लोग सेंत-मेत के भूंटिहे पा जात बा। त ई मेहरारूवा हमरे वेरी साँच बोले के काहें किरिया खा घलले वाड़ीसन। मेहरारून के ई अनवाधि देखि के हम ओघरी बड़ा अनसाईं। बाकिर आजु त हमरा नीक लागेला, मन गुदगुदाला। आजुओ हम लऊर भा लाठी ना कन्हियाइलीं। बाकिर मेहरारून जब गोधना का दिने, 'लाले लउरि चितकाबर हो, सोनवे मढ़ावल जिनकर मूठ। से लउरि लेलन……' का साथे हमार नाँव बढ़ावेलीसन त हमरा ई भूठ-फुर बड़ा सोहावन लागेला। सुनिके हम अगरा उठीलीं आ मरदानगी का गुमान से भरि के रहि-रहि के साँढ़ नियर ठनके लागीलीं। साँढ़ मरदानगी के पौरुष के प्रतीक न ह?

लाठी टीकासन मरके भा ओसे तनि बीस आ लऊरले अनइस होले। लऊर पोरसायन होले आ गोजी तनि अउरी गँवगर, गोटगर आ सरकस। लउर तनि अउरी लमहराह आ लहाहूँ रहेले त ई गोजी के काम करेले। लऊर का लहान में जेवन ना आवेला तेवन गोजी का आँवक में त आइए जाला।

लऊर लेबे वाला लऊरिहा आ लाठी लेवे वाला लठिधर, लठधर भा लट्ठधर कहालन। एही मरदाना लट्ठधर के आजु के सींकिया जवान 'लंठ' कहिके एकर हीनाई करेलन आ अपना चुचुरखी देहि के सभ्यता के जोरा-जामा पहिरा के अपना गलानी के तोपे-ढ़ाँकेलन।

गोजी, लऊर मा लाठी का पलई केबर हाथ रहेला। ई जब कन्हियावल जाई त एकर पलई बँहियावल रही मा गट्टा आ तलहत्थी से दबोचल रही। एह हालत में एकर मोटका हूर आसमान के ओड़ के अपन अकड़ आ परताप बतावत रही। जब ई धरती पर वराई तब त एकर मोटका हूर धरती के धऊँसत आ हूरियावत रही।

गोजी ले गोजल, गोजिग्रावल भा गोजवसन जाला। लऊर ले लऊरठल भा लऊर हठल जाला। एकर धाक त ईह जे एके देखते केतना जाना कपस आ हहर जालन। डटे-ठटे के हियाव ई लोय कहाँ ले करों? 'लऊर कपारे मेंट ना बाप-बाप गोहरावे' के धुकधुकी एह लोग का अमा जाला। लऊर के पट्टीदार पटकन ह। पट्ठा चटकनियावेलन ना, पठकनियावेलन। चटकन चलावे के चलान चाईं आ चोर चिनार केहें ह। जेकर वसूल ह, 'खा के पर रहीं, मार के टर रहीं।' बाकिर पट्ठा टरके के हाल ना जानसु। ऊ त अड़ीयल होलन, पटकन लेके पहेटे-चहेटे के हाल जानेलन। जब पट्ठा पटकन पटापट पटपटावे लागेलन त एक ले एक अछोप के पटकनिया पर पटकनिया देके पलरा—पसरा देलन। लठैत लाग पर आग होके जब लाठी लेके लहेरु लेलन त एक ले एक बाँकुड़ा लोग के लहान पर लथार देलन। ई लठ्ठधर जब एकें लेके तड़ दे तड़ तड़ाने लागेलन त एकले एक मनसोख लोग के मामर हेठ क देलन। लाठी से लठवंसल जाला घाते बेघाते (गोजी, लऊर, लाठी भा सोटा ले जना के जब सर गँव आ लह मेंठा) हूरन हूर के गतरी गतरी के गत बना दीहल जाला। "सइ पुराचरन ना एगो हूरचरन' के प्रताप के नइखे जानत? 'को नहिं जानत है जग में— — —।'

नाक भर के जवन गढ़ल—सँवारल बाँस हाथे लियाला ओके सोटा कहल जाला। नीमन लगला आ चिकनवला के सोटेला, कहाला। ई तेलिया के नीकहन के सोटल रहेला आ हाथे सोटेला, एसे एकर नाँव सोटा ह। सोटा के मोटका अलँग मूठ के काम करेला। एकरा के एह रूप में कहल जा सकेला कि बाँस के जरिये सोटा के माथ बन जालले। एकर हूर पातर होला। एके गोजौ, लऊर भा लाठी नियर कन्हिया के ना धरती पर धरत, अलम लेत चलल जाला। हूर खियाव मत एकरा एहतियातन नीचे लोहा भा पीतर के गोमा लगवा लीहल जाला। ढ़ेर सोखीन माथे (मूटे) पीतर, तामा भा चानी के टोपी चढ़वा लेलन आ गाँठे गाँठे मुनरी भा फुलिया मढवा लेलन। सोटा ले सोटवसल भा सोटहारल जाला। बहुत जब्बर आ बब्बर मुद्दई ना रहेलन त सोटवासल काफी होला। एकर ई मतलब ना कि सोटा सुकुआर आ मीअ ह। सोहट के सोटहार देला पर केतने सरहूँग के ई सूता देला, सहकल मुलवा देता आ सोझ क देला।

कान्हीं भर के जवना बाँस ले ठेंगत चलल जाला ओंके ठेंगा कहल जाला। एकरे ठेक देके कँहार कान्ह बदलेलन। एके ढेर जोगवे के ना परे ई सोटा ले हलुक, खनहन आ हराठ होला। एसे अबर—दूबर के बूद ठेल के, गरीब—गुरबा के ई बहुत बड़ अलम ह। ठेंगा ले ठेंगवसले जिन अपना के बहुत बड़ चलगिधर आ गोइयाँ लगावेलन ऊहो पटुआ जालन। सरिया के सजगर ठेंगवस

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देला पर त पँजरी-पँजरी थसका दीही, पोर पोर के पीर उसका दीही।

ठेंगा ले छोट बाकिर सुघर, चनमुनियाँ आ छरहर जवना बाँस के घूमे फिरे खातिर हाथे लीहल जाला ओके छड़ी कहल जाला। छड़ी उतार-चढाव के आ सुभेख होले। एसेई सुन्नराई प्रतीक हो गईल बा। सुघर-सलोना देही-धाजा के छड़ी नियर देहि कहले जाला। एके हथ-वासे के केकर मन ना करे?

एक छड़ी के दूगो भेव ह। एगो छरहर, सोझ। एकर मूठ बाँस के मठल जरहोले। दूसर भेव ई ह जे जवान छड़ी के पकड़न भा मूठ घुमावदार रही। त ऊ बँकुड़ी कहाई। एकर पकड़न बंकिम बंक यानी टेंढ रहेंला एसे ई बंकुड़ी कहाला। छड़ी लेके रईस पढ़ल-लिखल बाबू हवाखोरी करेलन। अनस भइला पर एही छड़ी से छड़ीवठ भा छड़ीवस के छठी के दूध इयादि परा देलन आ खुनसइला पर एही बँकुड़ी से बँकुड़िआइ भा बँकुड़वस के बोखार उतार देलन, बलाय भगा देलन।

दू हाथ का करीब के जवन मोट डंटा रहेला ऊ लबीदा भा लबदा कहाला। ई दू काम में आवेला। एके लेके मजूर अनाज के डाँट पीटेलन, बाल आ बलुरी ले लबीदिया के बरियाइन अनाज अलगावेलन। दूजे ई झटहार—फेंक —के मारे का कामों में आवेला। ओह हालत में ई झटहरा भा झटहा कहाला। झटहा लबदा लेखा लढ़ड़ ना होला ई फरहर, फलगर, लपकना, लमकना आ झटपटा होला। झटहा झटाक दे झटहरला पर एकले एक फ़ुरगुद्दी आ उड़ंछू उलटत पलटत कई ढ़मनियाँ खात, खुन ढँकरत ठंढा जालन। ई मनचाहा फलदेवे वाला ह। मसल मसहूर ह, 'आई आम ना त जाई लबेदा।', ई लबेदा (झटहरा) लखेद के आ लपक के न लकड़ियावेला? फर देखाए के त चाही फिर फेर कवना बात के बा? भपतला आ जहुअइला के दरकार नइखे। कवने बहुत मँहग सौदात नइखे। लामे लाम त लउकत बा। जोखिम के अंदेसा बहुत कम ब। बाँव त्रिचिल गईल, निशाना खलिहर गईल, दाँव चुक गईल आ भाग साथना दीहलस त झटहा गँवावल जाई। आ जो भाग जाँड़ परल, निशाना जम गईल त धवद धाही होके घहराई, आम झटके, झोरियावे के मिली। ए ओर झटहरा अँटके के अँदेसा, दूसरा ओर गाद गद के अमृत रस छके के लोभ। लोभ गाढ़ात जात आ अँदेसा रूई का फाहा नियर उधियात जात बा।

लबदा भा झटहरा का परमान के जवन डंटा हा में लेलहीं मरम पर चोट करेके होला ओके बोंग कह जाला। बोंग थम्हाऊ आ जमाऊँ होला, आ जर के पोरे पोरे गरहूआत आ गँठात जाला। ई साँप निय होला, पोंछ कवर पातर आ मुँह कवर माहुर भ मजिगर मोट। बोंग ले जब बोंगवसल जाला त विषधर नियर बिषे उगिले ला बोंग क नाँव आ हमरा आँखी का सोझा आगा क सूदखोर रूप ठाढ़ जाला। जनाला जे मूर के फइलावे आ सूद का रूप गरीबन के सहोंटे सहोथे में बोंग क बहुत बड़ हा बा। ई पूँजीपति पइसार आ साहु का लहना लइसंस ह।

बोंग ले वेंवतगर, खनहन आ सरोतर हाथ डेढ हाथ डंटा होला मुट्ठी का समाई भर का एह डंडा भा डं ले डंटवसल जाला। ई जहाँ टन दे लागल कि दिमा झनझना जाई। भोजपुरी तप्पा के गुल्ली डँटा त सरना ह। ई डंटा जेकरा लागेला ऊ गुल्लीं लेखा नाचे लागे। भोजपुरिहा बीर कुअर सिंह अपना संकल्प के ए डंटा ले टाँठ होके सनद्द फिरंगी लोगन पर जब अज अजमा के टाँड़ पर टाँड़ मारे लगलन त लेखा नाचे लागल। इतिहास गवाह बा कि जब ब मोका आइल तब-तब भोजपुरी खित्ता देश का दुस लोगन का गरूर का गुल्ली के अपना डापुट आ पो स्वाभिमान का डंटा ले चाँप पर चाँप चढ़ा के चहेटान चहेठलस, अस छकान छकावलस कि 'चाल चूली चलब चाल' चलत-चकत ओ लोग के थहरा डो गइल, वेदम लोग हो गईल। आ फेरू काहें जे मैदान डटे के ओ लोग के हियाव होखे।

डंटो ले पातर छाकुन होला आ छाकुनो ले छ छिकुन या सिटकुन होले। हमरा आजुओ अपना ल काईं वाली पहिली पढ़ाई के वड़का पण्डी जी (प्रा मिक शाला के प्रधानाध्यापक) विसनाथ दूबे के छ ले छकुनठल आ छिकुतले छिकुनठल इयादि परेला

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बंस-पुरान

अनिल कुमार राय 'अंजनेय'

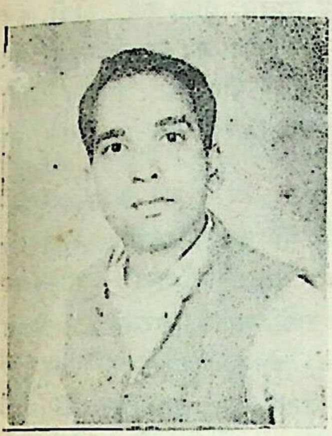

★ लिखनिहार ★

हम छन-छना उठीलाँ। बुझाला जे बड़का पण्डी जी बेमोह-छोह के सटसटा रहल बानी। सुरसुरी चढ़े लागेले माथा सनसनाए लागेला आ हम सिहर उठीलाँ।

बड़का पण्डी जी जब डंड लेके चलसु त ऊ हमनी लेखे छछाते जमराज बन जासु। हाड़ तोरे वाला ओह डण्डा के देखते हमनी का गनगना उठीं जा, डाँड़ ढ़ील हो जा। ओह जम्ह डण्ड ले ऊ हे बाचे जे अपना पुन्न-परताप से पण्डी जी के हुंक्कीं में पानी फेरे आ चिलम भरे के भाग-जोग पवले रहे। छाकुन आ सिटकुन के नाँव लेते आजु हमरा आँखि में अपना बचपना के ऊ दिन उतरि आईल बा त हमरा ई हे बुझात बा जे लउको पर सीतुही नियर छिकुनिओ अबरा पर जबरा बन जाले।

दूबे जी क छकुनठल देहिं पनछुँकी का कटला नियर पनपना आ मनमना उठे। स्कूल में हमनी का पिंजड़ा का पंछी नियर क्षपकल रहीं। जा छुट्टी होते झोरा-झक्कर, अटरी-पटरी ले-ले देले दूनों गोड़ मूड़ी पर धइले मागीं जा आ चहक उठीं जा, "छुट्टी बनारस के लूटी।" ई छुट्टी का रहे जइसे जम-जातन ले पिंड छूट गईल होखे। आ बनारस के रस छाने के, मौज-मस्ती लूटे के मौका मिल गईल होखे। मौज आ मस्ती त बनारसे के न ह? अपना बसहा पर चढ़ल, भाँगे के गोला गटक के धुत्त बनल बमभोला भोज में आके एही नगरी में डमर-डमर डमरू बजावत होइहन। मौज-मस्ती त फक्कड़ी आ अल्हड़ का नगरी में न रही? लइका फक्कड़-अल्हड़ त बमभोलो फक्कड़े-अल्तड़। "जहाँ लइकन के संग तहाँ बाजे मृदंग, जहाँ बुढ़वन के संग तहाँ खरची के तंग।" ई बाजे मृदंग वाली नगरी ह। सुतरला पर लइका एहिजे के गहगड्डु मौज-मस्ती छकीहन। (खरची के तंगवाली नगरी कलकत्ता, बम्बई, कानपुर के लइका नाँव लेवे काँहें जासु?)

साफ-सुथरा, माई के चूमल-चामल, डिठौना लगाके सहेजल, चहकत बरत मुँह ले ले पण्डी जी केहें जाईं जा आ सूपेली अस मुँह ले ले आ जाईं जा। डहल देहिं उघार के देखला के जरूरत ना रहे। डण्डा के डाढ़ा त हमनी का मुँह ले लेसले रहे। एसे पीठ फोरिया, गतरी-गतरी के गोहिया पँजरी-रँजरी के पीर मुँहें पर लखा जा। दूधिया आ कजरी में सउनाइल आ धूरठल मुँह पर लोर घड़ारी पार देले रहे। घर के निकलुआ नियर ई लोर हिरदया का दरद के उकसा के घ दे।

पण्डी जी का डण्डा ले जे तरे हमनी का बेमोह-छोहे के ठेठावल जाईं जा ओही नरे सोखा हरवाह हमरा घर गइया सोकना आ धवरा के अपना पैना ले पैनिया के पोकिया लेसु। पैना डण्टा ले बीस आ सरोतर होला। ई डेढ़ दू हाथ का जरीवठ बाँस का बोटा के सेल्हल-साल्हल, मुट्ठी का समाई भर के फाठा ह। एह चापट फाठा का मुँह केवर पाँच-छव हाथ के चामे के छरकी कसल रहेले। ई छरहह छरकी बीचो-बीच मोरि के (दोहरिया के) एह तरे कसाले कि एकर दूनों छोर फाठा ले चाभुक नियर डेढ़-दू हाथ आगे निकसल रहेला। जब चामे के ई जोड़ुवा चाभुक बैल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पर चलावल जाला त एकर दूनों छोर छरक (छलक) के छितरा जाला। छरक गईला से एके छरकी कहल जाला। ई छरकी जहाँ लागेला चाम ओदार ले ला, छनछनाए लागेला। एकरा लागते एक ले एक गदम्मड़ आ गरियार गोरू छनक उठेलन आ छरके लागलन। हरवाहे का हाथे रहेवाला एह बाँस का चभुक के पैना कहल जाला। संस्कृत 'पैण' ले पैना शब्द के ध्युत्पित्ति भइल बा। मारे में ई बड़ा चोख, धरगर आ परपरा देवे वाला होला एसे ई पैना कहाला।

बाँस के बम्मड़ई कहले पार ना लागी। के अइसन बीर बा जे बाँस ले बैर बेसही। बाँस का बरियाई के डंका आजुए ले नइखे बाजल कवनो जुग–जमाना आई बाँस का डफली पर बाँसे के राग चलत रही। एकरा ले रगरा क के केहूं पार ना पवल। सदईं ले एकर शान–गुमान अइसहीं बा। पुरान के साखी बा कि पार्वती जी जब विनाश-लीला बन क देवे के शिव जी से हरतुज करे लगली त भवानी के कहल ओढरावनी मान गइलन। तिरीन बढ़ि के महातृण–बाँस–होगईल भोला के समाधि लगावे भर मसान के मुईं छोड़ि के सगरे धरती बाँस से अँड़सि–सँड़सि गईल। सऊँसे सृष्टि सहित जगदम्बा बाँसे का गलईं अकासे टँगा गइली। भंगला हर के हेरत नीचे मुलुकषु त बाँसे का अँतरा बइठल बमभोला मसान समाधि मे लगवले ह:वन। बाँस के तूती अइसन लोलत रहे कि पार्वती के शिवजी का जवरे कवनो पइसार ना रहे। बाँस का परताप के शिवजी आ पार्वती जी दूनों परानी का मान जाए के परल। शिवजी के बाँस का बरियाई का आगे कवनो बश ना चलल त पार्वती जी का निहोरा पर अ लचार होके उनुका अर्द्धनारीश्वर–आधा देहिं मेहरारू के आ आधा देहिं मरद के–बने के परल। बाँस बमभोले के बम बोला दहिलस आ उनुका बामा के त अस बेवकड़ई कइलस कि एकर हाल बमभोला खातिर खखनत उनुकर जियरे जनले होंई। महादेव के जब बाँस का आगे कवनो जुगुत आ बेंपत ना चलल त हमनी के का बिसात बा?

कामा काका जब केहूं पर आँत ले विगड़ेलन त ऊ अपना जीभ पर बाँस के बसीकरन जाप-जपत, बाँसे के बल पर सात पुहुत ले हीक भर गरियावेलन। उलट पईची में जेकर पलरा तनि दब परेला, ऊ बाँस के डालम लेते-कबे बेछीलल-छालल बाँव, कबे गोजी, कबे लऊर, कबे लाठी त कबे सोटा का दूर के नहला पर दहला देत-वाजी मार जाला, बीस पड़ जाला। धोती खोल के अनना के उधार करेके कवनो जरूरत ना परेला।

एह विज्ञान युग के भी लाठी ललकार रहलवा। आजुओ पी०ए०सी० आ पुलिस के जवान (शान्ति के अफतरा परला पर) लाठी चारज करेलन। लाठी से लहेठ के लथार देलन, भूभुन भुरकुस क के खून से नहवा देलन। एतने लेना, हम त ई कहब जे बा बनूक ले लेके आजु के उन्नत से आ विकसित प्रक्षेपणास्त्र तक ई कुल्हि बाँसे के लर-जव मा भएवदी ह। वाकि एकर ई मतलब ना जे बाँस-बस बरियाईप आ हुड़दंग के प्रतिक ह। ई खाली हिंसा ना जगावेला आ ना खालो मरखाये ह। ई शान्ति रक्षा आ सेवो सहायता का काम में पुरहर आंट रहल बा। शान्ति आ सेवा के रूप बनल स्वयं सेबक आ बालचर का हाथे बाँस के लाठीए सोहेला। एही बाँस के चोम देके ओ लोग के रावटी आ तमू तनाला। बाँस में हिंसे के वांस नइखे एहमे अहिंसा के अहिवातो वा एकरा खातिर खाली हिंसके ना हुमगेलन, अहिंसको के अगाध अनुराग षवले वा अहिंसा के उपासक गाँधीओ एही के माथे लें आपन राह नापत, डगर-डगर प्रेम लुटावत फिरलन। एकर मान-मरजाद खाली गृहस्थे केहे नइखे। विरागी सन्यासिओ लोग के ममता ई पबले बा। त्रिदंडी सन्यासी लोगन का हाथे वांसे के त्रिदंड सोहेला। करूणा के मूरत भगवान बुद्ध के भी बांस खूब भावे, ऊ हो एक मान रखलन। वनुवन (बँसवार में उनुकर उदास मन जे तरे रमल, ऊ ऐह बात के गवाह बा।

हम त ई कहब जे बांस उजारने ना ह, बसावनो ह बांस के गुन गवले ना ओराई। एकर गुन शेषनाग हजार जीभि पाइयो के ना गवा सकेला। एके गनेश ना गुन सकेलन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जिनिगीः एगो नाटक

रामवृक्ष राय 'विधुर'

जब मुंसी जी चार बजे साँझि खूनी लइकन के छुट्टी दे के घरे आवँसुत सइ मुट्टी के एक मुट्टी हो जासु। घर का काँव-कीच से मन उदास हो जा। घर में पइठे के मन ना करे। जना जे काटे दउरत वा। मेहरारू लइका केहू मने ना भावे। कहसु-केहू के दोस ना, हमरा करम में इहे लिखल बा।

ई दुनिया के नियम ह कि जब आदमी दुख में रहेला त अपना सँगी-साथी के सुखी देखि के डाह हो जाला। अपना परोसिया लखन के सुखी देखि के कहँसु-'का सुख के जिनिगी बा भइया लखन के। न हाउं-हाउँ, न पट-पट। कबो केहू का सामने हाथ नइखे पसारे के, मेहरारू एक लाख के पवले बाड़न। सुखिया दिन भर उनहीं का सेवा में रहेले। आ एगो हमार भागि बा। हरिघरी उनुकर मुंह टेढ़े भइल रहेला। लइकनों से ना पटेला। जइसे जनाला जे हरिघरी कुकुर के माँसु खइले। दुनुवाँ के त फुटहियो आंखी नाहीं देखलि चाहेले।

एही कुल्हि चिन्ता में मुंसी जी गलत जात रहलन। आखिर तूं का चाहति बाड़? का हम घर छोड़ि के कहीं चलि जाईं आ के जहर खा लेईं? न स्कूल में चैन, न घर में सुख। स्कूल में लइकन का काँव-कीच से मन अउंजा जात बा। आ घरे अइला पह तूं कपार पर चढ़ि बइठति बाड़। तोरा नून-तेल आ लकड़ी के मुँह मरलसि। रोज खरची घटली हहेले। जब आइबि लइका रोवत मिलिहे स। काहें। का तूं इन्हनी के सम्हारि नइखू सकति।' मुंसी जी खीसिया के कहलन।

जोन्हिया के आंखि सलोर हो गइली स। 'हमरा नाँ रउवे का जाने का होगइल बा। घर-दुआर के कुछ समुझते नइखीं। हमहूं आजीज आगइल बानीं। लइकन का देहि पर सुविधान बहुतर नइखे। ओकर फिकिर अलगे बाजे दू पइसा देले बा ऊ हरिघरी कपार पर चढ़ल रहत बा। आ रउवाँ......। मन करत बा जे फाँसी लगा लीं। बाकिर लइकन के मुँह देखत बानी। रउवें ना, बहुत आदमी नोकरी करत बा। पइसो कमात बा आ आपन खेतियो बारी सम्हारत बा, सभका लोग-लइका बाटे बाकिर रउवां नीयर हम केहू के नइखी देखत। हमरा के जहर दे दीं। राउर पसार हो जाई। जेवन चाहबि। केहूं कुछ कहे वाला ना रही।'

जोन्हिया के बाति सुनि के मुंसी जी पारा गरम हो गइल—'वाह! तोहार मजाल जे हमार बाति दो लाख मुंसी जी जोन्हिया का फूल नीयर मुलायम गाल पर दू थपरा जड़ि के कहलन, 'आपन घर-दुआर कपार पर बन्हले रह।'

मुंसी जी छड़ी भाँजत स्कूल का ओर चलि दिहलन। स्कूल से......लवटि के अइलन त तीन-चारि घरी राति चलि गइलि रहे। जोन्हिया दुआरी पर बइठलि बिना खइले उनुके जोहति रहे। बाकीर मुंसी जी भरि मुँह बोलवो ना कइलन।'

ई घटना कवनों नयी ना रहे। रोज के इहे धन्धा रहे। घर का रहनि से मुंसी जी के मन अँउंजा गइल रहे। चाहत रहलन जे जल्दी ई झगरा खतम हो जाइत। बाकिर काहे के। दिन में एक हाला रोज हूं-टू हो जा। मुंसीं जी से ना सहाइल। एक दिन अँउंजा के कहलन 'तूं अपना नइहर चलि जो। खरच-बरच जेवन लागी भेजि दिहल करबि।'

'ठिक बा।' जोन्हिया आँखि में आँसू भर के कहलसि, हमार पेट पहार हो गइल बा, हँ नूँ!

मुसी जी चुप हो गइलन। लइकन से उनुका चिढ़ हो गइलि रहे। काहे कि उन्हनिये का कारन उनुकर जिनगी नरक लेखा हो गइलि रहे। एक दिन घुनिया के पइसा मंगला खातिर बिना मोह छोह के उठा के चउकठ पर पटकि दिहलन। जोन्हिया सेना सहाइल। आँखि में लोर भरि के कहलसि, 'गड़ांसी उठा के काटि दी। ई राउर का बिगरले बाड़न स। हमार जेतना सासति कइल सँपरे कइलीं। बाकिर लइकन के......।' जोन्हिया का गाल पर आँसू के दू बून चगइल...टप...टप।'

राति के दूसरा पहर। चारू ओर सून-सान। चिरई अपना अपना खोंता में सूतलि रहली स। बाकिर जोन्हिया का ओंघाई ना लागलि। अपना के बहुत रोकलसि, बाकिर मन ना मानल। मुंसी जी का लगे अई के बइठि गइलि। आँखि सावन-भादों का बदरी नीयर बरिसत रहली स। कहलसि, हमरा पर काहें। मनराज बानी कहीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'आँखि का सोझा से हटि जा। कपार मति खा।' दूसरा दिने साँझि खनी लवटलन त उनुका दिमाग के पारा कुछ अउरी गरम हो गइल रहे। जोन्हिया घरे ना रहे। लइका घर में काँव-कीच कइले रहलन स। उनुकर करह ना परल कि घर में जाईं। पड़ोमी सुख देव का दुआर पर चलि गइलन। तीन-चरि घरी राति चलि गइलि रहे। अरे, भाई, एतनी राति खनी कहाँ ले।' सुखदेव अभीनों से पूछलन।

मुंसी जी सुखदेव से हाथ मिलवलन आ गीता का ओर देखि के कहलन, गोड़ लागत बानीं भउजी!, कई दिन ले आवे के सोचत रहली हं।'

मुंसी जी खटिया पर बइठि के किताब पढ़े लगलन। गीता हँसी के कहली, जब देखीं, तब रउवा कुछ पढ़ते रहीं ला।' बुझाला जे लोग लरिका के कतनो फिकिरे नइखे। मरिसक जोन्हिया अनराज रहेले।

गीता आ सुखदेव दूनो आदमी घर में चलि गइनल।

'खाये के का बनीं।' गीता पुछली। 'खाना बढ़िया बने के चाहीं! सुखदेव फुरमवलन। गीता झनकि के अँगना में आगइली। खाना बढ़िया बने के चाहीं। केकर ना मन करेला जे बढ़ियाँ खाना खइतीं। मुंह से कहि दिहलन, हो गइल। ई फिकिर नइखे जे घर में काबा आ का नइखे। एह राति खूंनी बेकरा घरे जाईं। एको दिन बाँव नइखे जात। रोजे एक-दू आदमी अइले रहत बा। जनाला जे मये आदमी इनिकर संगिए 'इनिका रहनि का मारे त नाकि में दम आ गइल बा।

गीता के बाति सुखदेव का तनिको नीक ना लागलि। ओठ चबा के कहलन, 'तू हमरा घर में से निकलि जो! तोरा नीयर मेहरारू रहलिया ना।'

गीता घर में बइठलि सुसुकत रहली। मुनिया उनुका लगी बइठलि ठुनुकति रहे– 'ए माई, खाइबि-हूं-हूं-हूं......।'

इन्हन लोंग का पेट में जनात बा जे दल्ली पइठल रहत बा। हरिघरी खाइबि-खाइबि' हमरे खा घाल जा।'

एतना कहि के गीता मुनिया का गाल का जो थपरा धइ दिहली। मुनिया लोटि के रोवे लागि मुंइयाँ आँगन में खबर दार! जों केनु हाथ छोड़लू ठीक ना परी।' बरबरात सुखदेव दुआर पर आ गइनल। मुंसी जी डिबिया का अंजोरा किताब पढ़ रहलन। काजी मुंसी जी, ओंघाई नइखे लागित।

का कहीं, भाई, हम जेवना काँव कीच से उबि के अइलीं,–जेवन एहूं जे लागल बा अबहीं कइ घरी राति बा! दुनिया नरक बा। कहीं सुख नइखे। चार ओर मारि झगरा, हो हल्ला–मन अऊंजाजात बा।

मुंसी जी के बाति सुनि के सुखदेव कुछ गम्भीर हो गइलन। कुछ घरी रुकि के कइलन, जीनगी के इहे सुख ह। जेके रउवाँ दुख समुझि ले ले बानीं उहे दुनिया के असली सुख ह। जिनिगी से उबि के जे दुनिया से भागल चाहेला–ऊ काथर ह। बीड़ी के धुवाँ आकास का ओर फेंकि के सुखदेव कहलन, ,रउवाँ जानत नइखीं, मुंसी जी। जिनिगी एगो अइसन नाटक ह जेकर छन-छन में परदा बदलत रहेला। जेवना आँखि में जोति होले ओही में लोरभी होला जहाँ अंजोर होला ओहीं जे अन्हारो होला। इहे जिनिगीह! इहे दुनिया ह......।'

सुखदेव के बाति अबहीं खतम ना भइलि रहे कि गीता लोटा में पानी लेके आगइली। 'चली सभे, भोजन कइलीं। गीता का ओठ पर चान-सुरूज के हँसी खेलति रहे।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कृष्ण कान्त मिशीर
एम० ए० असहनी सारन

कसउटी खातिर पोथी आ पत्र-पत्रिकन के दुगो प्रति भेजल जरुरी रोखी

किताब के नांव गांव की ओर रचयिता-श्री रामवचन द्विवेदी। अरविन्द प्रकाशन संस्था--सुलभ साहित्य सदन, पटना१ मूल्य-सुलभ संस्करणी-२-००, सजिल्द संसकरण २-५०,।

"गांव के ओर" ई एक नमर के उभरी किताब बाटे। एह में भोजपुरी के खानी-बिखानी के कवितन के ठाट लागल बाटे। बहुत-बहुत विसय पर बहुत-बहुत राग-रागनी रंग-ठंग कविता के रचना भईल बाटे। किताब में राष्ट्रीय भावना से भरल कविता क साथे-साथे सामाजिक, पोराणिक, आध्यात्मिक अऊर प्रकृति से भी सम्बन्ध रखेवाला कविनन के खजाना भरल बाटे।

एत किताब के शिर्षक कुछ एह तरह के बाटे जे-'लड़ाई के ओर' तड़-तड़ तोप करत बा' 'खेत खलिहान' शादींह की बरबादी। 'गांव के ओर' 'भोजपुर' इत्यादि।

पूरा पुस्तक के विशेषता कइसे कहाँ तक बखानल जाय। भोजपुर। शीर्षक कविता में कविजी के भोजपूर के वर्णन बाटे ऊत एकबेर पाठक के मन में जोश पयदा कर देत बाटे। एकेओ नमूना काफी रही-जइसे-इहे भोजपुर हऽ जहँवा ऊ लऊर रहे, ललकार रहे इहे भोजपुर हऽ चमकत चमचम जहँवा तलवार रहे।

छपाई, सफाई, अउर हर तरह के खूबी से खुबसुरत ई किताब हरेक भोजपुरी प्रेमी के रखे के चाहीं। किताब के नांवःझुरुकी बहेना रचयिता, रामवृच्छ राय "विधुर" प्रकाशक अंतरग्रामीय भोजपुरी जनपद] सुहृद साहित्य-गोष्टी (गाजीपुर-बलिया) मूल्य सई नया पइसा।

"झुरुकि बहे ना" एह किताब के जइसन नांव बाटे ओइसने ओकर गुन भी बाटे। जइसे देहात में हवा झुरुक-झुरुक बहेला आ कड़ा से कड़ा मेहनत करेवाला किसान लोग के शरीर में जान डाल देला ओही तरे एह किताब के कविता भी आदमी में जान डाल देवे के ताकत राखत वाड़ी रतन। एह किताब के कविता में रस बाटे। रंग बाटे और एगो खास तरह के लहर बाटे। एह कवितन में दुनिया के भलाई करेके भावना भरल बाटे, अउर देहात के धरती के सच्चा बोल बाटे। एह कवितन में लय बाटे, स्वर बाटे, अउर उमंग बाटे। सोहर, बिरहा, गीत गवला वगैरह सब तरह के कविता के भंडार एह में भरल बाटे।

'फागुन के बहार' शीर्षक कविता के नमूना से किताब के बारीकी के अन्दाज लग सकेला-जइसे।

कइके सोरहो सिंगार
झाँके गोरिया दुआरि

कहिया अइहें परदेसिया हमार, सजनी
आइलि फागुन के अइसन बहार, सजनी

एह किताब में प्रकृति के वर्णन बड़ाही सुन्दर बाटे। अलंकार आदि के छटा भी कम नइखे। अंजोरिया के जहाँ गोरिया बनवल बाटे ओहू कविता में गोरिया के सम लच्छन अंजोरिया में खींच देले बाड़ेकजी पावस पहुन हो गइल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाड़े और उषा सोरहो सिंगार करके पाँव रखत बाड़ी।

किताब के छपाई, सफाई, कागज वगरह बहुत फीट (सुन्दर) बाटे। रखे लायक किताब बाटे।

किताब के नांव- बुरबक बनलीं (भोजपुरी एकांकी नाटक) लेखक श्री रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक" प्रकाशक जमशेद पुर भोजपुरी साहित्य परिषद १ गोलमुरी बाजार, जमशेद पुर-३ (विहार) दाम- रुपिआ।

एह किताब में खेले लायक सात गो एकाकी नाटक के संग्रह बा। एकाकी सब अतना अच्छा बाड़े सन कि ओकनी से कहीये कहीये ज्यादा नात अईसे एके गो दृश्य बाटे। दृश्यन के ज्यादा झमेला नईखे। चरित्र चिलजी अउर कथानक के विकास में लेखक कमाल क दीहले बाड़े। गांव अउर शहर दूनू जगह खेले लायक सब एकांकी बाड़े सन।

एह किताब ई तीन गो बुरबक बनलीं सार राखि (२) बुरबक बनलीं नोकर राखि के खून सिंह एकांकी न हास्यरस से भरल बाटे। हास्यरस के मोताबिक चरित्र चित्रण बाटे, अउर ओकर मोताबिक पालन के एकदम करेवाला आपसी बातचीत भी बाटे। एकरा अलावें चार गो अउर एह में व्यअय करने वाला एकाकी बाड़ेसन जैसे (२) बुरबक बनलीं लेखक के (२)लइकन के बिकरी (३)देसी मुरगी बिलायती बोल (४) जीवन के कला।

एह चारुन में कौनों में जीवन संघर्ष कौवनों में तिलक दहेज प्रथा अउर नवका अजर पुलका पीढ़ी के दृष्टि पर व्यङन्य कवनों में रूढ़िवाद अजर नोकरी चाकरी पावे खातिर पोछ हिसावे वाला लोगन के मजाक उड़ावल गइल वा।

सब के सब नाटक बहुत अच्छा बाड़े सन भोजपुरी समाज अउर भोजपुरी साहित्य खातिर ई संग्रह एमो खजने बाटे। हर भोजपुरी साहित्य के रसिया लोग के रखे के योग बाटे ई संग्रह।

छप रहल बा

भोजपुरी साहित्य के अनमोल ग्रंथ

थरुहट के लोकगीत

(भोजपुरी में एह विषय पर अकेला ग्रंथ) सिपाही सिंह श्रीमंत

एह वातिन धरती

(भोजपुरी के प्रतिनिधि कहानियन के अनमोल संग्रह) राधा मोहन राधेश

भोजपुरी का काव्य देवता

(भोजपुरी संत-कवि के जीवन परिचय आ प्रतिनिधि रचना) राधा मोहन राधेश

आधुनिक भोजपुरीं कविता

(आधुनिक भोजपुरी कवि-परिचय आ उनुकर प्रतिनिधि कविता) राधा मोहन राधेश

भोजपुरी साहित्य का बृहत् इतिहास

सम्पादकः- राधा मोहन राधेश

भोजपुरी शब्द कोश

मूल सम्पादकः- राधा मोहन राधेश

प्रकाशक

भोजपुरी साहित्य मन्दिर

जगतगंज, वाराणसी-२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

केंचूल

कन्हैया सिंह 'सदय'

★

असही दादी सजे परिवार के नांकन दम करे खातिर काकी रहली हा, बाकिर अब त दू दिन से उनका मलेरिया बोखार आवे लागल बा। 'एक त गौरा अपने गोर दुसरे लेहली कमरी ओढ़, दिन भर उनका मुँह से फुटत पटाखन के आवाज से केहूं घर में चैन से नइखे। सरिता अबगे रोवत आइल रहल हिया, "दादी···दादी हमरा के मरली हा··· ।"

"काहें मरली हा हमरा रानी बिटिया के···चुप हो जा हम चल के पूछत बानी।" हम गोदी में उठाके ओकरा के कसहूं चुप करवनी हां। बाकिर ऊ बोलते गइल हिया—

हम राधा के साथ आँगन में खेलत रहनी हां, तले बहारा से दादी कोंहरत अन्दर अइलीं हा। एतने में राधा कह देली हा, ए सरीता! तहरा दादी के पीट प ओखर अइसन कुबर बा।' हमरा से हँसीं ना रोकाइल हा। दूनू आदमी हंसे लगनी हां सन। दादी मुस्कियात गते से हमरा के बोलवली हा···हम जननी हां जे कवनों काम बा···फेर ऊ हमरा के धके तीन चटकन गाले प मारत कहली हा—'वन्तचर तें अपना सास-ससुर के देख के भी असहीं खिल्ली उड़इबे। आज आवे दे गनेस के त तोर च म छोड़वा लेत बानी···।' फेर ऊसुसुके लगली हा, ई हमार दासा गनेसे नू करवावत बड़े, ना त हे छोकड़ी के कासा जाल रहल हो जे हमार कुबर निहारो···।"

"अच्छा बेटी जाये द, तोहरा के बाजार से निमन निमन कपड़ा ले आवे के बा। बिहने चलल जाई नू! ···आ देख, अपना से बड़का मुँह ना चिढ़ावे के चाली, ई गंदी लड़िकन के आदत ह। जा पढ़ ग······।" कह के भेजनी हा।

इहे जो जाके पूछा दी त तील के ताड़ बनावे लगिहे भला एमे कवन अइसन बात हो गइल बा, जवाना का वोजे से एगो मासुम के गालन प अँगुरी के निशानन से भर दे वे के जरूरत पर गइल हा। खैर, के जाव मुँह मार करे, उनका डंटा-मार करे में भी सरम न आवे। जब हमरा के मार बइठें में उनका देरिये ना त आउर लोग कवना खेत के मुरई ह। जहाँ उनकर वक्र मुँह देखके हँसी घुटेला, ओहीं जा, सेषनाग अइसन बीख उगिलत उनका बातन से आत्महत्या करके सुझे लागेला।

उनका लगे बइठल ए गों योग साधना वा आ पास ना बइटल घर के सान्ति के वे मौत मुआवल। गारीं-गलोज केहू उनका से सिखो। अपना जीवन के सबसे कटु अनुभव उनका एहीं विषय पर वा, हरदम नया आसोध कइल गारिन के सुनतें लोग दाँते अगुरी काट ले ला। गारिन के सोधकर्त्ता लोग भी उनकर जवाब ना दे पावे।

जब कवों कहीं से झगड़ा भइल वा, दादी हार नइखी मनले। ऊ हरदम मरद लो के चीरिकी आ मेहरारू लो के झोंटा किओर नजर राखेली। बिजुली अस चमकके ऊ अइसन के हु पर फुर्ती से वार करेली कि बुझाला दुनियाँ के सगरीं शक्ति उनका देह में समा गइल बड़ीसन दाँते काटे के आदत इं अपना नइहरे से ले के आइल रहलीं। खंडहर ३ भारत के बुलंदी बतलावेले। उनकर आगे वाला सगरी दांत टूट गइल वा। मान लेहनी उनका कवनों बाल-बच्चा नइखे बाकिर एकर मतलब ईतना भइल जे सबका घरे सुखल संख बाजे।

दादा दु भाई जवना में एक जना के संतान चालक हम अभी भी जिन्दा बानी। दोसरका खूँट अभी हमरा नश्वर दादी के जिम्मे वा। उनका कवनों प्राकृतिक रोग ना होखे, बाकिर जो कहीं कुछ हो गइलत संसार तबाहीं में पर जाला। राई अइसन रोग के रूप पर्वताकार देखे में ल ऊकेला। डाक्टर के माथा से बाहर के बात हो जाला आ ऊ हार मान के कर जोर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दे भो लें सती जचत बानी, मराज के दू उनका डरे कहीं दोसरा आदमी के ना उठा ले गइल होखसन।

सुनिले, इहंवे सरग आ नरक के सुख-दुख बा। अगर अइसन बात साँच होई त जरूरे हमरा पापन के फल देबे खातिर, जमदूत दादी हमरा सीरे पेठावल बाड़ी। उनकर सबधन जाजाद उनका मुअला के बाद मिली, एकरा पहिले हमरा अपना जियला में संदेह बा।

एह तरी त हम अपने उनका पास जायेके ना चाही, बाकिर दिन भर में पचिसों बार ऊ हमरा के बोलवाला से बाज ना आवस। रीना तेल-मालिस कके जवना खातिर उनका देह में सगमरमरी पालिस कइले बिया, ऊ हमरा एके गुनाह से धूरि में ना मिल जाव, एही वोजे से हमरो एके टाँग पर खड़ा रहे के परेला।

बात-बात कहे लागेली, "तोहनी के घमंड हो गइल बा। ना हमरा खाये के इन्तजान बा ना नहाये के...सुते खातिर एक जुग के पुरान गंद्दा...साड़ी फाट चलल...अइसन त कुकुरो के जिनिगी नइखे... आरे हमार त करम फूट गइल...आज दूध के कुल्ला नू करितीं।...बाकिर अब ना सहाई...अब सजे भाई भतिजन के नांवे लिख देव।...तोहनी के साथे अब हमार गुजर ना चली।"

अजीब हाल बा, मन करेला जे कह दीं, "दादी तू आदमी ना राक्षसी हऊ।" बाकिर भीतरे भीतरे ओके माहुर अस घोंटत आ उनकर लोहा अस गोड़न के दावत दया के भीख मांगिले। फेर उनका क्षति पूर्ति के वादा कके लुटाइल बनिया अस बाहर आइले।

रीना से कय बेर कहनी, "कुछ रुपया पैसा दादी से गह वेगह हाथ लगा लिहल कर जे बर्पतमान परिस्थितिन से जुझे में सहुलियत होखो।" ऊ कोसिस भी कइली, बाकिर पथ्रो दिल दादी टोखरो देबे से इनकर क देले बाड़ी।

माई आ बाबूजी के देहान्त थोरही दिन के आग-पाछ भइल। ओह घरी हम बी० ए० के छात्र रहनी। पिताजी दादी के बहुत सेवा करस। ओह घरी घर के मालकिन दादी ये रहली। उनका मालिकाना में माई पर का गुजरत होई, रीना के हालत से कुछ अंदाज लगावत बानी। दादी, ओ घरी ना जाने काहें हमरा के बड़ी मानस, हम समुझी जे दादी दिल के बड़ी साफ हई, तनी लड़िका फड़िका ना रहला से चिड़ चिड़ाह भइल रहली।

मरे के समे, बाबूजी हमरा के अकेला में कहले, "बबुआ, दादी घर के लक्ष्मी हई। उनकर आज्ञा-पालन जरूर करिह लोगिन...।" कुछुवे दिन बाद हमार सादी भइल आ दादी आपन मलकियाव रीना के सीरे चढ़ा देहली।

रीना आधुनिक जुग के हवा में पलल, पढ़ल लिखल, जब हमरा घरे अईली, त कुछुवे दिन के बाद दादी के रोब आ डाँट-डपट से अगुता कहली–"सुन तानी जी, हम अब नइहर जाये चाहत बानी। इहंवा के गारी-गलौज आ मार-पीट से हमरा नाकन दम आ गइल बा। हमरा केसहूं पहूँचाई, ना त हम भाग जाइब। बाबूजी हमरा के रउवा हाथे बेंचले नइखन रउवा पास एतना भी जांगर नइखे जे दादी के लोभ छोड़ के सान्ति से आधा रोटी खा खिया सकीं...।"

हम पहिलहीं से आहत रहनी, का जबाब दीं फेर कुछ सोच विचार के बाबूजी के कहल बातन के दोहरवनी। भगवान के दया से कि धर्म पत्नी के धर्म से, ऊ हमार बात ना टलली। बाकिर हम जानत बानी उनका स्त्री-सुलभ इच्छा के प्रति हम केतना अन्याय कइनी। का हम ओह अतृप्त भावन के पति रूप में पूरा क सकनी! ओह दिन से जवानी बुढ़ापा में बदल गइल। दादी अस खटत...भिखारिन अस कपड़ा पहिरले...बुढ़ियन अस बात करत, जब कबो देखिले त हमरा बुझाला, हम एगो जवान औरत के खूनी हई।

रीना कबो दादी के सिकायत ना करे, जवन ओकरा से हमार सिकायत बा। कबो भागवस जब एक साथे बइठे के मिलेल, हम दादी के सिकायत बतियावे के चहिले, बाकिर ऊ अइसन बात कहे लागेले कि हम भीतरे धधक उठिले। रीना ओह बेरा हमरा दादी से भी खराब बुझाले।

आज चार दिन से घर के सजे तोसक, रजाई दादी के पलंग पर रखल बा। रीना के त एको डंड के फुरसत नइखे कि कवनों काम क सके। कबो उनका ठंडा लागत बा न कबो भयंकर गरमी एही द्विविधा में ऊ हर दम चिल्लात रहत बाड़ी। अब

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पियवा के पाँती पियरिया के नाव

वैदेही शरण "बनियापुरी"

हमार टंजीस्टर

तीन महीना का बाद कसहुं मसहुं तोहरा हाथ के लिखल अमरीत घोरल पीयार के पाँनी भारती सींमा पर के डाक के मोहर लागल मीलल । चिट्ठी पढ़ के हमरा अइसन बुझाइल कि तू चिट्ठी पढ़त पढ़त होसियार भइल जात बाड़ू । तहार चिट्ठी में ग्यान गगरी भभकत बाटे । तू लिखले बाटू कि आदमी बाहर में नजर बान्ह के रहेला -त नजर का बन्हाव । डीजाइन ऐह जबाना के थोड़े नजर बान्हे देता बाकीर ऐह देश सारा डिजाइन पापी याहिया के फउज ले लेंहलस लखन गो लइकिन के लंगा क के पापी सड़क पर बेइज्जत गोदी में के खेलत लइका मतारी से छीन के सड़क पर पटट के बूट से कचाड़ के चल देहलस । जाने भर में छोड़लस ना । जे लूका गइल घर छोड़ के पहाड़ जंगल ध लेंहनस ओकर जान बाच गइल । हमनी का घर ना छोड़ के भगतीं त परान ना बाची । लेकिन धनबीआ हमरा भारत के रानी इन्दिरा महरानी विकटोरियोले एकर नांव दूनिया में फइल गइल । अब १६ तारीख से बंगला देश आजाद हो गइल । अब ऐजा के सासन बदलल । हमार साहेब कहत बाटे कि अब तूम भी अपना मेंम हमार देश में लाना । हम इहनी किनाही दादा जवना देश में घर का मेहरी के मान नइखे उ देश में केहू के इज्जत ना रही उहा महरानी विक्टोरिया राज बाटे केहू का कवनो बात का तकलीफ़ नइखे । तनकी भरत बंगाल में खटका भइल त लागल लोग के गोली से भूजवावे अब जाके ना बंगाल के देखी । आज हिन्दुस्तान के ना शासन देखी । ऐह घड़ी ऐजाना कवनो जाति ना कवनो पाटी पउवा । एगो जाति वा हिन्दुस्तानी आ एगो धरम बा मातृ भूमि का एक इंच भूमि पर बच्चा के परान कुरवान करे वाला अब पापी याहिया के अपना पाप से अपने लंका धह धह धनके लागी आ सारी दूनिया देखी । अब सुनतानी वोकरोले जबर-दस्त निशाचर भूट्टो वोजा के राजा बनल हवे जे जूनागढ़के नवाब के रखेलीन के जामल डगरुआ बेटा हवे । उ अपना गुरदुअरा गइल बाटे । देखी वोकर गुरू मकसी झोकाये के राय देतारें कि गरीबवन के घर में आग लगा के घूर तापे के ।

आ हो तहरा चिट्ठिआ में इ बात लिखल रहे कि हमरा बिना तहार बिछवना जरहीं के काट हो गइल बाटे..... । कतना गहीर बात इ लिख देहलू इ बतिआ ता कालींदास बाबा भी यक्ष का जनाना से मेघदूत में ना कहवा सकले उनका खाली यक्ष के विरह के ज्वाला में दिन काटत रह गइले ...हमार मेम अब हिन्दी पढ़ गइल बीआ ऊ जब तहार चिट्ठी पढ़लस त हंसत हंसत लोट पोट हो गइल । जनाना का जनाता के विरह वाली बात जादे बुझा ला अगिला महीना में २५ तारीख के घरे जाये के उ धुही देदेले बीआ । अब उचरावड ना कउवा अपना अंगना में अब तुलसी चउरा पर बार ऽ ना रोज दिया अपना साजन का घरे आवे खातिर अब जटही के कांट के काट बहार के घर में से गांव का चवमोहानी पर फेंक दीह ऽअबकी फगुआ घर ही कटी... । फगुआ के दिन इयाद क के देह सिहर जाता । बताव ऽ गांव में कतना उमंग आ कतना भाईचारा से घूम घूम के सबका से गले मिल के फगुआ में धुरा मांटी आ रंग अबीर उड़ाइलेंसन ऐजा शहर में त फगुआ बुझइबे ना करे । हमार साहेवा कहता कि हमहू फगुआ में देहात चलेगा अपनामेंम का साथे हो इ ससुरा यदि गांव में आपन फोटू लेके उतड़ जाय त गांवके लइकन का जोकरना खोजे के पड़ी ..इ जाव चाहे मत जाव मेमी निआ त न मानी ...इ कहीं वोजा उतइल त लइका उजरकी भउजी कहत कहत इनका के मुआ दीहे सन आ लोग का बुझाई कि इ एगो आउर मेहर पुरुष से बझा के ले आइल । हम जतना तहरा डरे नइखी डेरात वोतना बदनामी के जयमाल से डेरात बानी देहात के लोग पहिलही से कहेला कि पुरुष के नजर खराब हवे । टोना लाग जाला । पहिले त माड़ा भाखात रहल ऽ पति का घरे लवटल । खातिर जइसे तहरा हमरा चिट्ठी क रकटना पर माड़ा भरवाइल रहल हवे । हमरा में ऐजा के कवनो बेमारी नइखे ढुकल । डीजाइन त मन के सचाई हवे जे ऐजा से लोग मनमानी खरीद

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लै जाला । बोली चाली, पेन्हाव वोढ़ाव, चालढाल ऐहूं सभी में डिजाइन आ गइलवा । आजजतने डिजाइन आ गइल बा वोतने लोग का गजब हो रहल बा बाप रे अब त थोड़े कम आँखीतर लडकता नात बंगाल के डीजाइन त कपाड़ दुखा देत रहल ऽ हवे । अब कि फागुआ में पेन्हे के तहरा ऐहीं जा से चूनरी रंगवा के ले आयेब आ चूनरी पेन्न के जब तू पानी भरे चलबु बस देखनीहार के रजा थाम्ह के तहरा डिजाइन पर मर जाई । अब त जवान के मुआबे खातिर तहरा लोगिन का तेरूवार के काम नइखे डींजइने पर लोग मू जाता । बंगला देश में जवान जवान छोकड़ीं बाप पकिस्तनिआ सी' आई. डी. बना के भेजलस । आपन देह नोटिस लेखा बाँटत सिपाहीअन से जाके सट जाई आ एजा से पूल के नकसा, छावनी में जवानन के हड्डा के नक्शा, रेडियो टीशन आ हवाई टीशन के उतार के भेजदेत रहलीहस मरदन में तबीज लेखा चाकर का इ चले नाँव ह मशीन पेन्हले रहत रहली स आ चट दे अपना मतार से वोही मसीनिआ से जवान सलाई लेखा रहत रहलऽ बतीआ लीहे सन । एक जानी जबखूब बनख सींगार क के उतरली ह ना हमरा हिन्दुस्तानी का गोल में कि एगो पाँजा में जात लेहलस । बापरे दोसर हिन्दुस्तानी जनाना रहीत त अपना इज्जत खातीर जान दे दीत मगर एकनी का इज्जत के त मूंजा मूजावत फिरत बाड़ी स वे भाड़े के । रात भर सिपाहीअन का गारदन में एह कोना से वोह कोना लुकात फिरलआ जब आधा रात के वहीं वाइरलेश से बतीआवत रहे तले हवलदार ध के जेल में बंद के देहलस तलाशी लिआइल त वोकर पाले से उ अवजार आ पुल के नकशा कलकता पर बम गिरवावे के निकलल । ऐकनी के जकात सुनत बानी कि गाँव गाँव में घूमत बाटे । ऐकनी से होसिआर रहे के चाही । घर घर से मोना अन्न आ उन के कपड़ा उगाह के जवानन का मदद के सिवाना पर भेजे के चाही जे ऐह ठंढ़ा में सीमा पर सीना तनले जवान अपना देश के पानी आ नेता जी, गांधि आ जवाहीर लाल के नाँव बचावत बाटे । हम त आपन खून भाई आधा सेर दान कइलीं ह । इ खून एक बून्द भी वोह भाई का कामे आ जाई त हमार जिनगी सवारथ हो जाई । बलीहारी बा भारत देश के वोजा के जवानन के, वोजा के किसानन के जे अपना नेता का एक अवाज पर सारा मुलुक में एक आवाज एक घोषणा जय जवान-जय किसान के चालू क देहलस । बेटी बाप ले एक डेग आगे इ इन्दिरा महरानी हो गइलीं । आज मोती लाल जवाहीर लाल के नाव विदेश का कोना कोना में इनका एकबाल से अमर हो गइल । हिन्दुस्तान देश के एगो नारी के लोग कथा सुनत रहल ह नाव जपत रहल ह रानी लक्ष्मी, दुर्गावती । के मगर ई इन्दिरा माई ठीक दूर्गा के अवतार होके पापी याहिया के फउज के मकसी झोंकवा देहलस आज कतना खुशी-खुशी अपना बिछुड़ल बाप से बेटीं मिलत बाड़ी बाबूजी से मतारी आ जे जहे भेंटाता इहे कहत बा कि जूग-जूग जीयस इन्दिरा महरानी''' । छोट-छोट लइका जे बांचल खूचल हिन्दुस्तान में घरे लउकत बाड़ अपना देश के माटी जे वलीदानी भाई का खुन से सेना के लाल हो गइल बा दूध के प्रणाम करतारे । उनका मुँह पर नव महीना का बाद मुस्कान लउकत बाटे । आ जहे देखीं उहे सुनाता—जय इन्दिरा जय मुजीब''' ।

बस अब अइबे करब—खत ना देब'''तू' विश्वास राख फगुआ का तीन दिन पहिलही हम घरे आ जायेब आ जायेब त फेरू ऐह देश की ओर लउटब ना । तहार कलपल हमरा से सहात नइखे । अब ठीक लिखले बाड़ कि दू गो लमरी के मोह तहरा पति के तहरा से दूर क देले बाटे । अब हम वोही माटी के सेवा करब । मिलजूल के आदर्श खेती क के इन्दिरा महरानी के हाथ मजबूत कईल जाई । अच्छा'''हमार इन्तजार करीह ।

तोहार अलबेला साजन''' ।

(छपा २० का बाकी)

रोज के खायेक बनावला, खियावला, सरिता के स्कूल भेजला आ बाहर के काम काज देखला से मुअहूँ के फुरसत नइखे । अब एह जिनिगी से ऊब चुकल बानी दादी के गारि से दिमाग में दियका लाग चुकल बाड़े सन । का करी कुछ समुझ में नइखे आवत । एह केंचूल के कइसे छोड़ी''' ।

भविष्य क सुख के आसा में वर्तमान सुख के गला घोंटे वाला, मरण शील मानव से बढ़के दुनियाँ में आउर के मूर्ख हो सकेला । अब त इहे जीव करत बा कि सीधे जाके कह दीं—''''कृपा कके आप सगरी धन-दौलत अपना भाई-भतिजन के नाँवें लिख द । अगर तू ना लिखबू त हम लिख के दे देब जे तहरा जमीन- जाजाद वगैरह से, तहरा मुअला पर भी हमरा कवनों वास्ता ना रहीं । हमरा जेतना बा, ओतने में संतोष बा । अइसन धन से का मतलब जवना के पावे खातिर अपना सगरी भावना के खून करेके परे''' ,"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

केकर, कांहां–का बा

★ ए ह अं क में प ढ़ीं ★

● कविता ★

मृगेन्द्र प्रताप श्रमिक

१–भोजपुरी ऐकाँकी ३

सतीशवर सहाय सतीश ४

२–बदली कईसे ८

चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह

३–बँस पुरान १०

अनिल कुमार राय अंजनेय

४–जिनगी : ऐगो नाटक १५

रामवृक्ष राय विधुर

५–पियवा के पाँती पिअरीया के नाँव १७

वैदेही शरण "बनियापुरी"

६–केंचुल १६

कन्हैया सिंह सदय

७–किताब कसउटी पर १७

कृष्णकान्त मिशीर एम० ए०

८–विज्ञापन २४

● आपन बात

९–सूची २३

१०–सम्पादकीय राधेश ... ... ★

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रवि पाकेट बुक्स की नई सेट

अनोखी अदा

रमाशंकर आजाद २.००

अनोखी अदा में पढ़िये दो दिलो का दर्दभरा अफसाना ।

सनम तुम झूठे हो

राज दीवाना २.००

सनम तुम झूठे हो, रोमान्टिक उपन्यास में जवानी की बेसुमारी और उसका खुमार पाठक के दिल में किस प्रकार की धड़कन पैदा कर देता है । पढ़ें ।

झनकता पायल पिघलता पत्थर

दयानन्द २.००

झनकता पायल किस प्रकार लोगों के दिलों को पिघलाकर अपना बनालेता है तथा दोस्त दोस्त से बिछुड़ा देता है । किस प्रकार व्यक्ति समाज से पिछड़कर दर-दर की ठोकरें खाता है, इसमें पढ़ें ।

सच्ची दास्तान

रवीश नन्दा २.००

सच्ची दास्तान में रवीश नन्दा की कलम का जादू और उसकी दर्द भरी दास्तान को पढ़कर पाठक चौक उठेंगें, अवश्य पढ़े ।

बदनाम राही

अजनबी २.००

एक सच्ची मुहव्वत करने वाला इन्सान किस प्रकार समाज के बुरे लोगों द्वारा बदनाम किया जाता है और समाज की निगाहों में गिर जाता है यदि आप भी मुहब्बत करते हो तो पढ़े ।

चेतना पॉकेट बुक्स और रवि पॉकेट बुक्स

पुस्तकों के लिए 'सुधीर बुक डिपो' थोक बिक्रेता से सम्पर्क जल्द से जल्द स्थापित करें ।

पता...... ....

सुधीर बुक डिपो

सूचना सी. २७८६ जगतगंज, वाराणसी—२

चेतना पाकेट बुक्स, रवि पाकेट बुक्स को अच्छे एजेन्टों की आवश्यकता है । नियम यह है ३००) सिक्योरिटी जमा करना होगा । एक बैग, एक आर्डरबुक, हर पुस्तक की पांच सेट के साथ, आर्डर लेने के लिए जल्द पधारें ।

पता यह है—

चेतना पाकेट बुक्स

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection ... नई जगतगंज, वाराणसी २

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant 2

चेतना पॉकेट बुक्स की नई सेट

जूठी शराब टूटा पैमाना

....

के० वी० एस० काश्यप

रोमांचपूर्ण, रोमांटिक और सनसनी खेजपूर्ण घटनाओं से भरा सरस उपन्यास।

दाग

....

राज दिवाना

यह जिन्दगी ही संघर्ष की दास्तान है। राज दीवाना के इस उपन्यास में आप जिन्दगी के चढ़ाव-उतार में हृ
दहला देने वाली घटनाओं पर कमाल की लेखनी-दाग में पढ़ें।

फरियाद

....

रमाशंकर प्रसाद आजाद

हम सभी फरियादी है। लेकिन अन्तर यही है कि हम सबों के फरियाद अलग-अलग, भिन्न-भिन्न प्रश्नों के रूप होते है। इन फरियादों में कोई प्रेम का फ़रियादी होता है। कोई सुनाहो होगा और किसी के फरियाद में सं
एवं विद्रोह होता है यह उपन्यास भी ऐसी ही घटना चक्रों से भरा पड़ा है—'फरियाद'

सैलाब

....

एस० मासूम राही

हाँ, यह ठीक है जब सैलाब आता है तो कोई ठीक नहीं—सबको अपने साथ बहा ले जाएगा या कुछ को छो जाएगा। यह प्रकृति की गोद से निकला 'सैलाब' प्रकृति के लिए ही बड़ा भयानक होता है। इसका परिणाम द और करुणा से भरी कहानी बन जाती है। जब सैलाब शांत पड़ जाता है तब दर्द और करुणा की आँखें गिली जाती है। आप सैलाब' में सैलाब की दर्द एवं करुणा भरी ऐसी ही कहानी पढ़ेंगे।

कुछ दिन पहले

....

चन्द्र बंसी

बात कुछ दिन पहले की है आज का नई नहीं। मुहब्बत की बाजी लगा देने वालों की दर्द भरी दास्तान। का यह भी दीवानापन है। कैसे कहा जाय ये दोनों एक दूसरे की जिन्दगी के लिए जिते है या मुहब्बत के लिए मगर इनके और दूसरों के जीवन के आनन्द पाने के तौर तरीकों में अन्तर होता है।

सम्पादक 'छनवइया आ, छापेवाला—राधा मोहन राधेश अध्यक्ष भोजपुरी साहित्य मन्दिर जगतगंज
वाराणसी खातिर उनके आरद गंगा प्रेस
RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अनियतकालिक भोजपुरी साहित्य

कलश

प्रधान सम्पादक
डॉ० रामनाथ पाठक 'प्रणयी'

सम्पादक
श्री कालूराम 'अखिलेश'

संवत् २०३५, अगहन

दिसम्बर १९७८
१/१०-१२

एगो के दाम—डेढ़ रुपया
सालभर के—६-००

किसान

कतना मगन वा किसान रे !
वरसेला सोना किरिनियाँ से छन-छन,
अगहन के आइल विहान रे !
कतना मगन वा किसान रे।
खेतन में चारो भर कटनी वा लागल,
खेतन में जिनगी के सपना वा जागल,
कतहूं पथारी वा, कतहूं वा वोझा,
कतहूं ढोवात वा धान रे !
कतना मगन वा किसान रे।
साजल-सजल गाँज लागेला सोहावन,
कतना भोरावेला दँवरी लोभावन,
बैलन के घाँटी के टुन-टुन धुन सुन-सुन,
केकर ना हुलसल परान रे !
कतना मगन वा किसान रे।
गाँवन के घर-आँगन, गाँवन के दुअरा,
ओढ़ना-बिछौना पर छितराइल पुअरा.
पँवटा-पेटाढ़ी से खरिहान ठकचल,
बिहँसत वा सगरे वथान रे !
कतना मगन वा किसान रे।

—आनन्दवर्धन

कार्यालय :—
देववाणी-शोध-मन्दिर
मिश्रटोला, आरा
भोजपुर (बिहार)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आपन बात

एह साल देश के कोना-कोना बाढ़ के भयंकर चेंगुरा में आ गइल रहे। गंगा आ सोन के किनारे बसल भोजपुर के अधिकांश इलाका बाढ़ के पानी से पानी-पानी हो चलल। एह मोका प कलश के सम्पादक कविवर कालूराम जी 'अखिलेश' डुमराँव, डुमराँव में बनावल गइल बाढ़ सहायता समिति के अध्यक्ष भइलीं, प्रखण्ड विकास-पदाधिकारी, डुमराँव मंत्री बनलीं आ डुमराँव नगरपालिका के चेयरमैन श्री शिवकुमार खेमानी के साथ-साथ आउर कई गो लोग सदस्य के रूप में चुनल गइलन।

एह समिति के द्वारा सभसे पहिले २२ अगस्त' ७८ के ब्रह्मपुर के बाढ़-पीड़ित क्षेत्र में कपड़ा, सलाई आ मोमवत्ती बाँटल गइल। बाद में बड़का-छोटका नैनीजोर में 'अखिलेशजी' खुदे जा के ओहिजा के बाढ़-पीड़ितन में जिनिगी के निवाहे के सामान कपड़ा वगैरह बँटली। बक्सर के नौजवान अनुमंडलाधिकारी श्री अजय कुमार जी के प्रेरणा से डुमराँव से तेरह हजार रुपया एकाठा भइल आ बँटाइल। नीचे के चित्र में बायाँ ओर बाढ़-पीड़ित में श्री अजय कुमार जी कपड़ा बाँट रहल बानी आ उहाँ के बगल में अध्यक्ष कविवर अखिलेश जी खड़ा बानी।

एह जन-कल्याणकारी काम खातिर कलश-परिवार के ओर से हम समिति के अनेक-अनेक धन्यवाद दे रहल बानीं।

रामनाथ पाठक 'प्रणयी'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राष्ट्रीय भावना के विकास

डॉ० जनार्दन उपाध्याय

हिन्दी के काव्य-धारा में राष्ट्रीय भावना के विकास वीरगाथे काल से हो जाता। तब से ले के आज ले अनेक युगन के राजनीतिक आ सामाजिक वातावरण के संग में ई भावना बढ़त चलल आवतिया। प्रवाहित राष्ट्रीय भावना के एह परम्परा के तीन दृष्टियन से विचार कइल जा सकेला।

१ - राष्ट्रीय भावना के परम्परा के प्रत्येक युग के कवि अनिवार्य रूप से पालन करेला।

२—पर ई परम्परा जइसे के तइसे निर्जीव रूप में ना ग्रहण हो ला। ओकरा में परिवर्तन परिवर्द्धन आ संशोधन होत रहे के चाहीं।

३—आउर ई परिवर्तन परिवर्द्धन युगीन चेतना के अनुसारे होला!

हिन्दी-साहित्य के राष्ट्रीय भावना के समझे खातिर वेद, पुराण, महाभारत आदि में वर्णित राष्ट्रीय भावना के देखल जरूरी बा। वैदिक युग में पृथ्वी के माता आ अपनन के लोग पुत्र मानत रहलन "मातृभूमिपुत्रोऽहम् पृथिव्याम्"।

ई स्थिति वैदिक काल के ह। रामायण-काल में पृथ्वी माता के कल्पना खातिर नया रूप अपनावल गइल। जन्मभूमि आ जननी स्वर्गो से बढ़कर मान लीहल गइल—"जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।" महाभारतो के समय में पाण्डव-दिग्विजय-गाथा आउर चक्रवर्तित्व के भावना द्वारा अखण्ड भारत आ अनन्त देश-प्रेम के पालन भइल। पुराणन में त पृथ्वी के स्वर्ग से प्रिय ना कहि के, स्वर्गे के पृथ्वी प झुका दिहल गइल। देवतागण भारत भूमि प जन्म लेबे बदे लालायित होखे लगलन। कालिदास त कुछ आउर कल्पना क लिहलन। उनका इहाँ पृथ्वी के माता पुत्र कल्पना के जगह वसुन्धरा के भोग के वस्तु वना दिहल गइल "वीर-भोग्या वसुन्धरा।"

ई पहिले कह दिहल बा कि कइसे रामायण महाभारत-काल में अखण्ड राष्ट्र के कल्पना रहे बाकिर धीरे-धीरे जब भूमि प अनेक हिन्दू-गण-राज्यन के स्थापना हो गइल, तब स्वभावतः राष्ट्र के स्वरूप में सिकुड़न भइल आउर "राष्ट्र" 'राज्य' के पर्यायवाची बन गइल। परिणामतः राजा लोग अपने राज्य के प्रति आस्थावान रहे लगलन। एह प्रकार से राष्ट्र के भावना अपने जन्म भूमि, अपने गाँव अउर अपने राज्य तक सिमट के रह गइल। हिन्दी-काव्य के आदि काल में देश-भक्ति के ईहे विरल भावना पल्लवित भइल। राजा लोगन के अपने राज-खण्डन खातिर आस्था गाँव, पुर, नगर आ प्रान्ते के जन्म-भूमि माने के बाध्य क दिहलस। देश एगो इकाई ना होके अब राज एगो इकाई हो गइल। एगो महत्त्वपूर्ण बात ई रहल कि एह काल के राष्ट्रीय भावना में हिन्दू-भावना के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रवलता रहल। राजा के राष्ट्र आ प्रजा दूनों क्रान्तीक मान लिहल गइल। अंग्रेजी राष्ट्रीयता के प्रारम्भिक रूप अइसने रहल।

हिन्दी के भक्ति-काल में राष्ट्रीयता के एगो दोसर रूप दिखाई दिहलस। सचहूं भक्ति-काल के कुल आन्दोलन एक प्रकार से राष्ट्रीय एकता के आन्दोलन रहल। बाकिर एह काल में राष्ट्रीयता के रूप धार्मिक आ सांस्कृतिक रहल। मुसलमान भारतीय जनता में घुलमिल ना सकलन। एसे दूगो परस्पर विरोधी समाज, हिन्दू-मुसलमान कायम हो गइल।

ई दूगो समाज आपस में कलह करत रहल। एहसे समाज में सुख, शान्ति, व्यवस्था खातिर धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एकता जरूरी रहल। एही से एह युग के राष्ट्रीय भावना में गम्भीरता आइल। एकरा में सामाजिक आ सांस्कृतिक पक्ष उभर के आइल। एह प्रकार से एह युग के राष्ट्रीय भावना में सामाजिक आ जनवादी प्रवृति के निखार भइल। भले एह काल में जनवादी भावना रहल; बाकिर एकरा में हिन्दू भावना जादा प्रवल रहल।

रीतिकाल में राष्ट्रीय भावना संकुचित हो गइल। सामन्तवादी आ हिन्दू भावना के रंग राष्ट्रीयता प ढेर चढ़ गइल। हिन्दू संस्कृति, हिन्दू जनता आ हिन्दू राज्ये प विशेष बल दिहल गइल।

भारतेन्दु-द्विवेदी युग में राष्ट्रीयता के भावना के नया मोड़ मिलल। एहमें राजनीतिक एकता के सुर उठल। बाकिर एकर माने ई ना कि एह युग में सांस्कृतिक पक्ष रहबे ना कइल। राजा राम मोहन राय आ दयानन्द के विचार-धारा के कारण हिन्दू भावना से पूरा आर्य-संस्कृति के बोध होखे लागल। फेरु आर्य-संस्कृति में दोसरा लोग के समेट लेबे के भावना ना जागल। अबही ले अमिश्रित आर्य-संस्कृति प्रधान रहल। पूर्वकालिक हिन्दू भावना में सामन्तवादी दृष्टि रहल आ एह काल में ऊ संस्कृति अधिका सामाजिको हो गइल।

राष्ट्रीय कांग्रेस के स्थापना आ स्वतंत्रता के घोषणा से राष्ट्रीय भावना में फेरु विकास भइल आ ऊ प्रादेशिकता, प्रान्तीयता से ऊपर उठि के हिन्दुस्तान के एगो सुसंगठित इकाई के रूप में विकास हो गइल। छायावाद में रागात्मक तत्त्व अधिक जुट गइल। एह से एह युग में अतीत गौरव, उद्बोधनगीत, प्रयाण गीत आदि लिखल गइल! प्रगतिवाद में राष्ट्रीयता के अन्ताराष्ट्रीय रूप मिलल। एह में, विश्व-बन्धुत्व आ विश्व-नागरिक के भावना जागल। राष्ट्रीय भावना के एह परम्परा के देखला से साफ लउकल कि एकरा स्वस्थ परम्परा के विकास युगानुरूप होके आज ले अपना विकसित रूप में दिखाई दे रहलि बा।

—:०:—

जवानी - जवानी में गोड़ तलमलाला, जवानी में आँख मुदा जाला।
जवानी में के ना बउराइल ? जवानी ह प्यार के मधुशाला। —आनन्द वर्धन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निशान्ते

प्रो० रामेश्वरनाथ तिवारी

रात खतम हो रहल वा—निशान्त वेला सामने वा। हवा में सिहरन बा। हमरा एह घरी अपना विस्तरा में घुमड़िया के सुते के चाहत रहल हा, बाकिर हम वानीं कि हमरा आँखि में नींदे नइखे आवत।

साच पूछीं त निशान्त में नींद आवही के ना चाहीं। हमार पुरान ऋषि लोग एह वेला के ब्राह्मवेला कहत रहल हा लोग। ई समय सूते के ना ह, ज्ञान के ज्योति जगावे के ह। सोचतानीं कि एह वेला के ब्राह्मवेला काहे कहल जाला। दिन के भा रात के दोसरा कवनो पहर के ब्राह्मवेला काहे ना कहल जाला। रात के आखिरिए हिस्सा के ब्राह्ममुहूर्त्त—ब्रह्म के पावे वाला काहे कहल जाला? रात के एह आखिरी दू घड़ी के ओर हमार ऋषि-मनीषो लोग कुछु पक्षपात के भाव त ना राखत रहल हा लोग, ई शंका हमरा मन में खुदबुदात वा।

वाकिर हम सोचतानीं कि ना, ऋषि लोग एह कालखंड के प्रति कवनो पक्षपात ना कइले रहे लोग। उहन लोग त निशा के अन्त में आपन — एक तरह से कहे के चाहीं, पूरा मानव-जाति के — एगो सपना पूरा होखत देखल लोग। रात जब खतम होखे लागेले तब पूरबी आसमान के परदा के भीतर से सफेद रोशनी के तीर छूटे लागेलेस। रोशनी के उहे तीर वाद में प्रभात वन जाला—ज्योति के पुंज वन जाला। हमरा ऋषियन के एके सपना रहे—तमसो मा ज्योतिर्गमय; हमरा के अंधकार में से प्रकाश के ओर ले चल। त निशान्त ऊ वेला ह, जे आदमी के अंधकार से ज्योति के ओर ले जाला, रात से प्रभात के ओर ले जाला, आ सुप्ति से जागरण के ओर ले जाला स्वार्थ के जमीन से ब्रह्म यानी तत्त्वज्ञान के ओर ले जाला।

निशान्त सर्जन-वेला ह। सर्जन के क्षेत्र में एकरा के अमर बनावे के श्रेय आदि कवि वाल्मीकि के वा। वाल्मीकि के आश्रम तमसा नदी के तट प कहीं रहे। एक दिन उहाँ का ब्राह्ममुहूर्त में जब नदी तट प गइलीं, उहाँ का देखलीं कि वन में क्रौंच पक्षियन के एगो जोड़ा विहार करता। ओही घरी एगो व्याधा कहीं से आके तीर चला दिहलस आ नरपक्षी जमीन प गिरि तड़फड़ाये लागल। पति के हतेया देखि के मादा पक्षी वड़ा करुण स्वर में रोवे लागलि। क्रौंची के विलाप आ क्रौंच के रक्त से लथपथ मरल शरीर देखि के ऋषि वाल्मीकि के वड़ा क्रोध आइल आ उहाँ का व्याध के एगो भयानक शाप दे दिहलीं—

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।
यत् क्रौञ्चमिथुनादेकमवधीः काममोहितम्॥

ए निषाद तहरा एह जिनिगी में कबो शांति नु मिले। तू हमेसा तड़पत रह। काहे कि के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लि-विलास में लागल क्रौंच पक्षियन के जोड़ा में से एक के, जे काम-मोहित रहे, तू हतेया कइ दिहल।

ऋषि के मुँह से निकलल ई वानी श्लोक के रूप में फूटल रहे। अब तक श्लोक के प्रयोग उच्च कोटि के दार्शनिक विचार के अभिव्यक्ति खातिर होत रहे; वाल्मीकि पहिला रचनाकार हईं जे एकर उपयोग मनुष्य के हृदय के सहज लौकिक भाव के प्रकाशन में लगवलीं। एही श्लोक में उहाँका संसार का पहिलका काव्य—रामायण—लिखलीं आ ठीके आदि कवि कहइलीं।

एह बहुत परिचित प्रसंग के फेनु से पेश करे के पीछे हमार इरादा ई बा कि निशांते के चलते आदमी के काव्य रचे के प्रेरणा मिलल। निशांत में ऋषि के मन बिलकुल शांत आ स्वच्छ रहे आ एही शान्त आ स्वच्छ घड़ी में सृजन के स्फूर्ति होले। ब्रह्मा सृजन के देवता मानल गइल बाड़े। ब्राह्म वेला ब्रह्मा के वेला—सृजन वेला होई, ई बहुत स्वाभाविक बात बा। जब आदमी के वृत्ति सात्त्विक रहे ले, तबे जे शब्द ओकरा कंठ से फूटेला, ऊ निर्मल साहित्य होला। चापलूसी, खुशामद आ स्वार्थ के तमस से जब बुद्धि ढँकल रहेला, तब जवन साहित्य सामने आवेला, ऊ साहित्य ना होके साहित्याभासे भर होला।

एह क्रौंच-वध के घटना के पीछे एगो बहुत भारी सत्य छिपल बा, जेकरा ओर हमार ध्यान अब आइल हा। वाल्मीकि एगो ऋषि-साहित्यकार रहलीं। उहाँ का साहित्यकार के धर्म खूब निबहलीं। उहाँ का निहत्था रहलीं। हाथ में कमण्डल के सिवा और कुछ ना रहे। दोसरा ओर निषाद रहे—ब्याधा रहे, जेकरा हाथ में धनुही आ तीर रहे। ऊ हिंसा के प्रतीक रहे। ओकरा के डाँटल आसान काम ना रहे। ओकरा के डाँटे-फटकारे में एगो बड़ खतरा रहे। ब्याधा अगर बिगड़ि जाइत त ऊ वाल्मीकि प तीर चला के एके छन में उन्हुकर काम तमाम कर दिहित। बाकिर जब आदमी सचहूं के साहित्यकार हो जाला, तब ओकरा में विचार-स्वातन्त्र्य आ जाला। ई आजादी अइला प साहित्यकार निडर हो जाला। ऊ संगीन के छाहाँ आ फाँसी के तख्तो प साचे बात कहेला। बाकिर जे नकली साहित्यकार होला ऊ सत्ता आ हिंसा के सामने झुकि जाला। ऊ सत्ता के चापलूस हो जाला आ हिंसा के देवता के पूजा करे लागेला। वाल्मीकि से कमजोर कवनो साहित्यकार तमसा नदी के तट प रहित त ऊ ब्याधा के डर से कहित वाह-वाह, कतना कमाल के निसान चलवला हा। तू बड़ा सानदार सिकारी बाड़।

एह चापलूसी से व्याधा ओह कवि के अभय-दान दिहित आ अगर ऊ कहीं कवनो राजा रहित आ एमे कवनो अचरज के बात नइखे, काहें कि ओही जुग का, हर जुग के राजा सिकार खेले में त ओस्तादे रहत रहल हा लोग त हो सकत रहल हा कि प्रसंसा के श्लोक सुनिके ऊ राजा ओह कवि के कवनो बड़ जागीर बख्श दिहित। बाकिर वाल्मीकि नियर सच्चा साहित्यकार नु त सत्ता से अभय चाहे ना जागीर—ना पद्मविभूषण के पदवी चाहे ना कवनो तरह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के धन के पुरस्कार ना मासिक वजीफा चाहे नु विदेस जाए खातिर कवनो लालच भरल प्रस्ताव। असली साहित्यकार क्रौंची के साथ देला, ब्याधा के ना। क्रौंची पीडित मानवता के प्रतीक बा, ब्याधा हिंसक सत्ता के। एह से वाल्मीकि क्रौंची के साथ दिहलीं - शोषित-पीडित मानवता के साथ दिहलीं, खूनी सत्ता के ना। उन्हुकर ई निर्भयता हर साहित्यकार खातिर आजो अमर दीप बनल वा। विचार के स्वतन्त्रता त भारतीय संस्कृति के मूल मंत्र ह आ भारतीय साहित्य के प्राण-वायु ह।

विचारे स्वातंत्र्य ना कर्म-स्वातंत्र्यो भारतीय संस्कृति के बुनियादी खासियत ह। भगवान् श्रीकृष्ण अर्जुन के कर्मयोग के राह गीता में देखवलीं, बाकिर आपन राय उहाँका अर्जुन के ऊपर थोपलीं ना। समूचा उपदेश दिहला का वाद उहाँ का श्रोता अर्जुन से ई ना कहलीं कि तहरा उहे करे के वा जे हम कहतानीं। उहाँका ओकरा वदला में कहलीं कि इयरवा, हमरा जे कहे के रहे से कहि दिहलीं, बाकिर एकरा प अमल करव कि ना, ई तहरा मरजी प वा। कवनो जोर-जबरदस्ती नइखे – 'यथेच्छसि तथा कुरु'– तहरा जे मन में आवे से कर।

हमरा बुझाता कि गीता लोकतंत्र के सबसे बड़ ग्रन्थ वा आ भगवान् कृष्ण सबसे बड़ लोकतान्त्रिक नेता। विचार आ कर्म के आजादी के जवन संदेश कृष्ण गीता में दिहलीं, ऊ समूचा मानवता के अनमोल थाती वा। आज के भा हर जुग के साहित्यकारन के ई जिम्मेदारी वा कि ऊ एह थाती के रखवालो करसु आ अपना आजादी के कवनो कीमत प बेचस मत।

निशांत में हमरा सामने तुलसीदास के वानी गूंज रहल बा—कीन्हें प्राकृत जन गुन-गाना, सिर धुनि गिरा लगति पछिताना। हमरा सामने सूरदास-अकवर-संवादो आ जाता। अकवर सूरदास के गायन पर मुग्ध होके कहले—महाराज सूरदास, कुछु हमरो प कलम चलाईं। सूरदास कहले कि हमरा मन प त कवनो साँवलिया छा गइल वा, अब ओकरा में जगह कहाँ बा—नाहिन रह्यौ मन में ठौर। त आजु के साहित्यकारो अगर अपना मन में मानवता के मनोहर छवि के बैठा दी त ओह में कवनो सामन्त, सत्ताधारी आ पूंजीपति के आवे के गुंजाइस तनिको ना रहि जाई आ ओकरा वानी में न चापलूसी रहि जाई, नु भय के कँपकँपी।

— :o: —

दीपावली

अण्ण वि हु होन्ति छणा ण उणो दीआलिआसरिच्छा,
जत्थ जहिच्छं गम्मइ पिअवसही दीवअमिसेण।

उत्सव वहुते होला, वाकिर सुखदिअरी अइसन कवनो ना होखे। एह समय विना रोक-टोक के कतहूं जाइल जा सकेला आ दीआ जरावे के वहाने अपना प्रिय के घर में पहुँचल जा सकेला।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बहँगी लचकत जाय

डॉ० रामनाथ पाठक 'प्रणयी'

वेदन में संस्कृति, धर्म आ सभ्यता के खूब बरनन भइल बा। एह बड़का ग्रन्थन में जवना देवन के गुन गावल गइल बा, ऊ लोग बड़ा ताकतवर बाड़न। इन्द्र, वरुण, अग्नि, वायु, सूर्य वगैरह अइसने देवता हवन, जिनका से वैदिक आर्य लोग परिचित रहन। आर्य लोग उनका से डरतो रहन आ दैव दुख से बचे खातिर उनकर पूजो करत रहन।

शतपथ ब्राह्मण में बारह गो आदित्यन के जिकिर आइल बा। संहितन में सूर्य सात घोड़न के रथ प सवार बतावल गइल बाड़न। ऊ सात गो घोड़ा इन्द्र लोक, ब्रह्म लोक चन्द्र लोक, सूर्य लोक, गन्धर्व लोक, वरुण लोक आ भूलोक के धेयान दियावेलन।

सूर्य के महिमा धर्म आ विज्ञान दूनो तरह से पट-उपट बा। सूर्य के ताप आ प्रखर किरिन से हर छन ऊर्जा प्रवाहित होले, जवना के धरती के परत सोखेले, धरती से छनि-छनिके ऊर्जा के जे अंश वायुमंडल में जाला ओकरे आधार प मौसम बदलेला। सोवियत रूस के वैज्ञानिक डॉ॰ जी॰ए॰ उशाकोव लिखले बाड़न कि जिनिगो के आधार प्राण-वायु आक्सीजन धरती के आपन उपज भा धन ना ह। ऊ सूर्य से प्राण रूप में प्रवाहित होत चलत जाला आ धरती के वातावरण में ओहिजा के तात्त्विक प्रक्रिया के साथ मिलके आक्सीजन बन जाला।

आपन देश भारतवर्ष त पुरानें जमाना से देवी-देवता लोगिन में अपार सरधा-विसवास राखत आ रहल बा। एहिजा के अधिका से अधिका लोगिन के सोचावट ह कि एके परमेश्वर अनेक रूप में दुनिया में दिखाई देलन— "त्वया ततं विश्वमनन्तरूप।" अतने ना, गीता में भगवान श्रीकृष्ण जी खुदे कहले बानी कि जे सब भूतन के उत्पत्ति के कारण ह ऊ हो हम्हीं हईं, काहे कि ऊ चर-अचर केहू अइसन नइखे, जे हमरा से अलग होखे—

यच्चापि सर्वभूतानां बीजं तदहमर्जुन,
न तदस्ति विना यत्स्यान्मया भूत चराचरम्।

जब सब में ऊहें के बानी तब उहाँ के कहल ठीके बा कि 'ज्योतिषां रविरंशुमान्' जोतियन में हम सूर्य हईं।

पौराणिक जमाना में सूर्योपासना खूब चलल रहे। भविष्योत्तर-पुराण के जनमेजय वैशम्पायन-संवाद में रविषष्ठी व्रत-कथा कहाइल बा जवना में कहल गइल बा कि रविषष्ठी व्रत छठ के प्रभाव से च्यवन महाराज के गइल आँख फेरु लवटि आइल रहे—

तस्य व्रत-प्रभावेण च्यवनस्याक्षिणी तदा,
अभूतां निरुजे देह-सुखानि विविधानि च।

भविष्य पुराणके आधार प कातिक महीना के अँजोरा के षष्ठी तिथि के छठ व्रत करे के चाहीं। पंचमी के नियम से व्रत कके सांझ के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खीर से भोजन करे आ भुइएँ सूते। फेर षष्ठी तिथि के चार रंगन से सजावल मंडप में सूर्य नारायण के पूजा करि के रात में जगरम करे। अनेक प्रकार के पकवान आ फल-नैवेद्य चढ़ा के सूर्य नारायण के खुश करे खातिर गाना वजाना से उत्सव करे आ सूर्योदय तक वरत रहे। सप्तमी के सबेरे सूर्य नारायण के दरसन करे आ अरघ दे। सुनीं --

कार्तिकस्य सिते पक्षे षष्ठी वै सप्तमी युता,
तस्य व्रतं प्रकुर्वीत सर्वकामार्थ-सिद्धये।
पचम्यां नियमं कृत्वा व्रतं कृत्वा विधानत',
एकाहारं हविष्यस्य भूमौ शय्यां प्रकल्पयेत्।
मण्डपच चतुर्वर्णं पूजयेद्दिननायकम्,
नानाफलैः सनैवेद्यैः पक्वान्नाद्यैः प्रपूजयेत्।
उत्सवं गीतवाद्यादि कर्त्तव्यं सूर्य-प्रीतमे।
तावदुपोषणं कृत्वा यावत् सूर्यस्य दर्शनम्,
सप्तम्यामुदितं सूर्यं दद्यादर्घ्यं विधानतः।

आजो सूर्योपासना हमनी के साँस-साँस में रमल वा। कातिक अँजोरा के षष्ठी व्रत सूर्योपासना के एगो लमहर रूप ह। कोणार्क आ विहार राज्य के देवमूँगा के प्रसिद्ध सूर्य-मन्दिर, औलार के टुटला फुटला से वाँचल सूर्य के मूरत आ काशी के भदैनी के लोलार्क कुन्ड अपना देशमें पसरल सूर्योपासना के जीअत-जागत सबूत वा।

सूर्योपासना के प्रधान केन्द्र विहार राज्य ह। महाराष्ट्र में जे स्थान गणश-पूजा के, उड़ीसा में रथ-यात्रा के, बंगाल में दुर्गा-पूजा के मैसूर में दशहरा के, राजस्थान में गणगौर के, पंजाब में वैशाखी के आ अलग-अलग राज्यन में दीपावली के ह, उहे स्थान विहार में सूर्योपासना छठ के ह।

भोजपुरी इलाका में कातिक अंजोरा षष्ठी के ई सूर्योपासना षष्ठी-व्रत आ छठ-व्रत के नाँव से पुकारल जाला। एकर सभसे जादे करेजा के छूए वाला, वात्सल्य रस से तर नाँव ह 'छठी माई के बरत', गोधन के दोसरे दिन से, घरे-घर, अंगना-अंगना में छठी माई के चरन चमके लागेला। चउथ के त छठी-माई के गोहार से पूरा भोजपुरी इलाका गह-गह करे लागेला। ओही दिन वरत के वरवना के विधान ह। ओहि दिन से बरत करे वाला लोग सात्विक आहार प उतर आवेलन। पचमी के वरत के लेवहड़ कहल जाला। लेवहड़ के वरती लोग दिन में उपास रहि के खाली साँझे के एके बे भोजन करेलन। षष्ठी वरत के अन्तिम दिन ह। ओह दिन सूर्य के साँझी के अरघ दियाला आ सतिमी के सबेरे। सतिमी वरत के पूरनाहुत ह।

सूर्य षष्ठी बरत के नाधे के पहिलके दिन से भोजपुरी नारियन के कंठ में छठी-माई के गीत के जे गंगा लहरा उठेली ऊ भोजपुरी लोक-साहित्य के परम रमणीय सांस्कृतिक निधि ह, खजाना ह। छठ के भोजपुरी गीतन में आदमियन के मन के हरख-विखाद के वड़ा स्वाभाविक रूप उरेहल गइल वा। छठ के गीतन में एक ओर शान्त रस हिलोरा लेता त दोसरा ओर अशान्त हृदय के मार्मिक सुर भरपूर उभरल वा।

छठ के दिन भोजपुरी इलाका के नदियन, तलावन के आ दोसर-दोसर जलाशयन के तट-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पनघट दीअन के जगमगाहट आ गीतन के गुंजार से सोहावन हो उठेला। ओह दिन सूर्यास्त से कुछ पहिलहीं अर्घ्य के वस्तुअन से सजल 'दउरा' घर के कवनो सवाँग के माथा प ध के आगे क के खुद पाछे-पाछें छठ के घाट के ओर चलल जा रहल बहुअन के, गजगति के साथ, कंठ से निकसल गीत—'वहँगी लचकत जाय' केकरा मन-परान के ना भोरा ली।

सूर्य अइसन लोक-लोचन प्रत्यक्ष देवता के उपासना खातिर गाँव-नगर के गली-गली, डगर-डगर के गुंजावत जा रहल बहुअन से अगर केहू बटोही पूछे कि ई सभ अरघ-पूजा के सामान केकरा खातिर जा रहल वा त ओकरा के 'आन्हर' कहल कवनो अचरज के बात नइखे। बहू लोगिन गावत बाड़ी -

काँच ही बाँस के बहंगिया, बहँगी लचकत जाय,
होख ना कवन देवा कहँरिया बहँगी घाटे पहुंचाव,
बाट जे पूछेला बटोहिया ई सभ केकर जाय,
तू त आन्हर हव ए बटोहिया ई आदितमल के
जाय।

भोजपुरी के एगो दोसरा गीत में छठी माता के बरती एगो दम्पती के - मरद-मेहरारू के बात्सल्य के बड़ा रसगर प्रसंग आइल वा। घाट प जा रहल, माथा प दउरा रखले, पियरी पहिरले पति आ गोदी में विहँसत बालक के लेले पियरी पहिरले पत्नी के चित्र, दउरा के चमक के साथ, निहचये वातावरण के—अड़ोस-पड़ोस के चमका रहल वा। गीत सुनीं—

कवन देवा के माथे दउरवा पियरी धोतिया,
कवन देई के गोदे बलकवा पियरी चुनरी
चमकत जाले दउरवा पियरी धोतिया
बिहँसत जाले बलकवा हो सुरुज बाबा के घर
हो आदित बाबा के घर।

एगो भोजपुरी छठ-गीत में एगो धोबिन बिटिया के बड़ा करुन कहानी कहल गइल वा। यमुना किनारे सूर्योपासना में लागल ओह अभागिन के बारह बरिस बीत गइल बाकिर ओकर 'बाँझिन' नाँव ना छूटल—

बारह बरिस सूरुज बाबा लिपलीं दरबार
तइयो ना छोड़वलीं सुरुज बाबा
बँझिनियाँ केरा नाँव

सूरुज बाबा ओकरा के अनधन सभ कुछ देलन, बाकिर ओकर गोद ना भरल। एगो लइका खातिर ओकरा चारो ओर अन्हरिया छवले रहल। ओकर परान छछनत रहल।

'एकरे पुतर बिना सगरे अन्हार' अतने ना, एह लरिका के ना होखे के चलते ओकर सउँसे जिनिगी जहरीला आ भकसावन बनि गइल। ओकर सास ओकरा प गाभी मारत बीया— 'सासु मारे हुदुका मारे ए साहब।' आ ओकर ननद ओकर गाल फारत बीया - 'ननदिया चीरे गाल' आ ओकरा गोतिनो के ताना त ओकरा असह हो गइल वा। गोतिनी 'ओलखनवाँ' ए साहेब सहलो ना जाय' सब त सब, ओकर मरदो ओकरा के बिरहबान से बेध रहल वा—'घर के पुरुखवा सुरुज बाबा बोले बिरही बोल'

बाकिर भगवान के दरबार में देर होला अन्हेर ना होखे। आखिर ओकरा गदाधर अइसन बेटा भइल। फेर त, ओही घर में ओही धोबिन बिटिया के से मान भइल कि सास खाट बिछावे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लागल आ अपना पति के ऊ प्रियतमा—दुलहई
बन गइल—
छोटी मुटी धोबिन बिटिया मूठी एक डाँड़,
धोतिया के धोवलू ए धोबिन जमुनवाँ दह तीर
धोतिया धोइय ए धोबिन बिगलू असमान
धोतिया परिअ हो गइले सुरुज बाबू के हाथ
धोतिया पहिरि सुरुज बाबू बइठे जेवनार
रोवते कनइते ए धोबिन चलली दरवार
बारह बरिस सुरुज बाबा लिपलीं दरबार
तइओ ना छोड़वलीं सुरुज बाबा बँझिनियाँ
केरा नाँव
धनधन देलीं ए साहेब लछिमी बहुत
करे पुतर रे विना सगरे अन्हार
सासु आरे हुदुका मारे ए साहेब ननदिया
चीरे गाल
गोतिनी ओलखनवाँ ए साहेब सहलो ना जाय
घर के पुरुखवा सुरुज बाबा बोले विरही बोल
खोंइछा भरि देबवँ ए बाँझिन गदाधर अइसन पूत
राहे-बाटे खइह ए बाँझिन मीठी ए मधुर
घरे जाके खेलइह ए बाँझिन गदाधर अइसन पूत
सासु डासे खटिया ए साहेब ननदिआ पटिहाट,
हुनि प्रभु कहिहें ए साहेब तू बबुआ खेलाव।

एह तरह से भोजपुरी लोक-गीतन में छठी माता के आराधना के मुखरित पावन सुर मानव-हृदय के तिरपित करे वाला कातिक में रस के सावन बन गइल बा।

—:०:—

हम कवनो किरिया थोड़हीं खइले रहीं

—पाण्डेय कपिल

कवनो किरिया थोड़हीं खइले रहीं
तरहत्थी पर सूरुज उगाइब ?
कवनो प्रतिज्ञा थोड़हीं कइले रहीं
आम के इमली बनाइब ?
भोर सोना के कलसा देखावेला
हमार कुल-परिवार
परा से उमेद करे लागेला
हम ओह सोना के कलसा के
ना घरे उठा ले आईं !
का सोचीं रउए
एह बुड़बकई के कवन जवाब बा !
ा बुझत नइखे
ई त बस सोना के ख्वाब बा !
हमरा घर का छान्हीं पर
जे चानी अइसन भतुआ चमकेला
ऊ ओह सोना के कलसा से कवन कम बा
जवन सोना के कलसा दिन चढ़ते उजरा जाला
आ दुपहर होत-होत धरती के झुलसा देला !
हमरा खातिर त चानी जस चमकत ऊ भतुए नीक
जे हमरा छान्हीं के सोभा बढ़ावेला
आ टुटियो गइला पर
मोरब्बा के मिठास
हलक का भीतर उतारेला !
कइसे समझाईं
कि अनका सोना से
आपन चानी नीक !
आ सपना का दूध से
अपना असलियत के पानी नीक !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पलकन के छाँह में

पंडित बनारसी दास चतुर्वेदी

—श्री विश्वनाथ 'श्रीकृष्ण'—

जेठ महीना के ऊ तलफत दुपहरिया कटले ना कटात रहे। हवा गुम हो गइल रहे। देह से हर-हर पसेना चुअत रहे। मन बझावे खातिर हम पुरान चिट्ठिअन के फाइल उलटे लगलीं। बरिसन पुरान बात सभ आँखि का सोझा आवे-जाये लागल। एगो पुरान चिट्ठी प जाइ के हमार आँखि ठहर गइल आ हम अपना तीस-चालिस बरिस पुरान जिनगी में लवटल अइलीं। हम सपना में भरमें लगलीं। पुरान बात सभ इयाद आवे लागल।

असहयोग आन्दोलन के रणभेरी बाज चुकल रहे। हम अपना गाँवें के हाई स्कूल के सतवाँ भा अठवाँ किलासमें पढ़त रहलीं। अंग्रेजी राज के अतियाचार से सउँसे देश नकिया गइल रहे। केहु तरे अंग्रेजी राजके हटाके अपना देश में आपन राज कायम करे के सपना लइका, बूढ़ आ जवान सभे देखे लागल रहे! देश खातिर फाँसी प चढ़े, जेहल जाये खातिर लोगन में होड़ लागल रहे। मरदई के जमाना रहे ऊ!

हमहूं अपना के एह सभ हलचल से फरका ना राखि सकलीं। बाकी हम जेहल ना गइलीं। लाठी ना खइलीं। शराब के दोकान प ना कवो पिकेटिंग कइलीं आ ना कवो गोरन के घोड़न के टाप से आपन देह जाँगर रँउदववलीं। देश खातिर कुछ करें के इच्छा त हमरो मन में जागल—वाकी साध्य तक पहुँचे खातिर हम साहित्य के साधन बनवलीं। ई विचार हमरा मन में केने से आइल—ना वता सकीं। इयाद नइखे परत। वोह बाल उमिरिया में हम कवि-ताई करत रहलीं। गते-गते हमार रचना (कविता, कहानी आ लेख सामयिक अखवारन में उजागर होखे लागल रहे।

वोही समइया के आसपास के वात ह ई। हमरा दुआर प एगो छोट-मोट फुलवारी रहल। फुलवारीके वीचमें पानके आकार के एगो लमहर चउतरा रहे। फुलवारी का अगवासा वेली के फूल के कतार रहल। गर्मी के दिन में राति खां अँजोरिया रात में हमनी चउतरा प सुतल रहलीं। वेली रानी उमंग में भर के जव आपन सुगंध लुटावे लागस त मन-परान जुड़ा जाय।

एक दिन राति खा हमार कवि सुगबुगाइल आ रात भर रतजगा कइला प विहान भइला देखलीं कि हमरा कॉपी प 'यह बेली की सुकुमार कली' कविता उभर आइल विया। वोह जमाना में कलकत्ता के 'विशाल भारत' हिन्दी पत्रन के मुकुट मणि मानल जात रहे। मन में आइल कि ई कविता जदि 'विशाल भारत' में छपि जाइत त वड़ नीक होइत। बाकी कविता भेजत डरो लागल—ई सोच के कि विशाल भारत हिन्दी के मानक पत्र ह। ओकरा में हिन्दी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के रससिद्ध कवियन के कविता उजागर होखेला, हमरा लेखा नवसिखुआ तुकड़ कवि खातिर 'विशाल भारत' में जगहा कहाँ बा ? मन छव पाँच में परल रहल। बाकी एक दिन डेरात-डेरात हम ऊ कविता 'विशाल भारत' के संपादक सम्पादकाचार्य पं० बनारसी दास चतुर्वेदी के नाँव से 'विशाल भारत' में छापे खातिर भेज दिहलीं। मन में हुकहुकी लागल रहे। रोज डाक घर जाईं—मुन्शी जी कहस—राउर त कुछुओ नइखे। मन मेहरा जाय। एक हप्ता बितला प हम समुझ गइलीं कि हमार कविता सम्पादक जी के रद्दी के टोकरी में ठाट से आराम कर रहल बिआ।

लगभग एक पखवारा बितला प हिन्दी के धुरंधर लेखक आ जनपदीप आंदोलन के अग्रदूत पं० बनारसी दास चतुर्वेदी जी के चिट्ठी मिलल। लिखले रहलीं—"कलकत्ता के सफर करत आजु राउर चिट्ठी टीकमगढ़ आइल। 'विशाल भारत' से हम अलग होइ गइलीं आ अब टीकमगढ़ से 'मधुकर' के सम्पादन कर रहल बानी। बुन्देल खंड के साहित्यिक अउरी सांस्कृतिक जीवन के उजागर कइल 'मधुकर' के मंसा बा। राउर कविता हम 'विशाल भारत' के कविता-सम्पादक पं० श्याम सुन्दर खत्री (२४ धोबी पाड़ा स्ट्रीट, कलकत्ता) के भेज रहल बानी। हमार ऊ कविता 'यह बेली की सुकुमार कली' विशाल भारत के नवम्बर (सन् १९४०) में उजागर भइल—

यह बेली की सुकुमार कली !
किशलय की कोमल शय्या पर लगती आँखों
को बड़ी भली
यह बेली की सुकुमार कली
ऊपर है नीला आसमान नीचे दूबों की हरियाली—
उस लता दोलपर झूम रही पी यौवन मदिरा
की प्याली
उन्मत्त आज मधुपों का दल गोरे गालों को
चूम चूम
वह लुटा रही अपना सौरभ-भाण्डार खुशी में
झूम झूम
चन्द्रिका हँसी नाचा समीर गा उठी विहंगों
की अवली
यह बेली की सुकुमार कली
यह हँसती है गन्धामोदित होती उपवन की
गली गली
यह बेली की सुकुमार कली
हँस लो दो क्षण के जीवन में गा लो इस नश्वर
उपवन में
यह चपल हास होगा परिणत पल भर में
नीरव क्रन्दन में
झुरमुट से तुम को झाँक रहा कल आने वाला
काल बली !
ओ बेली की सुकुमार कली !

हुलास में हम नाचे लगलीं आ ऊहाँ के हिरदय के गहराई में, हम बबना अदिमी, हेरा गइलीं। तबसे अड़तीस बरिस बीतलो प गुरु-तुल्य चतुर्वेदी जी के इयादि बराबर आवत रहेला। दर्शन करे के मन त करेला बाकी आजु ले सुजती ना जुटल त अब जब हम साठ के गोदी में खेल रहल बानी आ गांव गँवई में बइठल बानी—एकर कवन आस राखीं ? वोह बाल उमिरिया में ऊहाँ के जे प्रोत्साहन दिहलीं ई ओकरे फल ह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कि आजु हम हिन्दी आ भोजपुरी में क—ट करत वानी ! नजीक से दरस परस के मौका त कवो ना मिलल बाकी ऊहाँ के लिखल कितावन आ लेखन के पठन-पाठन के माध्यम से ऊहाँ के समुझे-बुझे में बहुते मदति मिलल। एक जगहा ऊहाँ के लिखत वानी कि अनगुत खानी—अनगुत खानी घंटा डेढ़ घंटा स्वाध्याय करीला। कबहुँ इमर्सन त कवो थोरो कवो क्रोपाटकिन त कवो एडवर्ड कारपेन्टर। कवहूं गुरुदेव त कवो गाँधी जी, कवहूं रोम्या रोला त कवो स्टीफीन ज्विंग। एह महान लोगन के सतसंग से हमरा समाधान मिलेला। घंटा डेढ़ घंटा के एह पठन-पाठन से उदासी के खदेरे में हमरा मदत मिलेला। ईहे अध्ययन हमरा जिनगी के पूंजी ह। एह कथन में साफे लउकत वा कि साहित्य के साधक के नियमित रूप से स्वाध्याय-यज्ञ में लागल रहे के चाहीं।

ऊहाँ के अपना कलम से अहिंसक क्रांति के पुजारी गाँधीजी गुरुदेव आ दीनबन्धु एन्ड्रूज के वखान कइले वानी त हिंसक क्रान्ति में विश्वास राखे वालन—सरदार भगत सिंह, राज गुरु सुखदेव भगवान दास 'माहौर' अउरी सदा शिव राय जइसन महापुरुषन के गाथा गा के अपना वाणी के सिंगार कइले वानी। एगो उदार साहित्यकार नियन लोक-मंगल के भावना साहित्य में सजा के राखि दिहलीं। हिन्दी के संस्मरण साहित्य ऊहाँ के रीन से उरीन ना हो सके। अपना साहित्य प ऊहाँ के कवनो वाद के लेबुल ना चपकवलीं।

ऊहाँ के अ० भारतीय जनपदीय आन्दोलन के अग्रदूत के रूप में प्रकट भइलीं। आचार्य महेन्द्र शास्त्री के 'भोजपुरी' में भोजपुरी निकाले के प्रेरणा ऊहाँ के दिहलीं। आचार्य शिव पूजन 'अँजोर' के जोड़ा बेराँव पहिरवलीं। महा पंडित राहुल बावा भोजपुरी में मुलुका भर साहित्य रचि के भोजपुरी का ओर लोगन के धेयान खिचलीं। हिन्दी के ई महान लोग जनपदीय भाषन के उत्थान में हिन्दी के पतन ना देखलन। कइसे देखसु ? साहित्य देवता जोड़लन राजनीति के अप्सरा फोड़ेली। ई अप्सरा जेकरे छू देली ऊ भरनस्ट हो जाला। वोकरे कंठ से एक भाषा में उत्थान से दोसरा भाषा के पतन होखी—ई बिरोधी स्वर निकलेला।

श्री चतुर्वेदी जी के इयादि वरोवर आवत रहेला बाकी आजुले ऊहाँ के चरणप माथ नेवावे के सुजनी ना जुटल। साठ़ बरिस पार कर रहल वानी। आजुले सुजनी ना जुटल त अब कवन आस राखीं ?

— :०: —

भोजपुरी

भोजपुरी में आ जिनिगी के संस्कृति आ उल्लास,
भोजपुरी में वा माता के ममता भरल हुलास।

—सीता सुन्दर देवी 'प्रियंवदा'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मेघदूत के कयलास बरनन

आचार्य हवलदार त्रिपाठी 'सहृदय'

(१)

गत्वा चोर्ध्वं दशमुखभुजोच्छ्वासितप्रस्थसन्धेः,
कैलासस्य त्रिदशवनितादर्पणस्यातिथिः स्याः।
शृङ्गोच्छ्रायैः कुमुदविशदैर्यो वितत्य स्थितः खं
राशीभूतः प्रतिदिनमिव त्र्यम्बकस्याट्टहासः॥

कोईं के निअन धपधप ऊँच चोटिअन से नभ में फयलि के जे खाढ़,
रोज-रोज बटोराइ गल्लवा लागल जइसे, शिव के ठहक्कवा के बाढ़।
देविअन के दरपन ह रावना के भुज से हिलल वा जेकर जोड़-जोड़
ओहि कयलसवा के होइहऽ अतिथि चढ़ि उपरे में चढ़ि ओहि ओर॥

(२)

उत्पश्यामि त्वयि तटगते स्निग्धभिन्नाञ्जनाभे
सद्यः कृत्तद्विरददशनच्छेदगौरस्य तस्य।
शोभामद्रेः स्तिमितनयनप्रेक्षणीयां भवित्री—
मंसन्यस्ते सति हलभृतो मेचके वाससीव॥

देखतानीं ताहि के कगार में चिकन छवि, माँजल आँजन अस तोर
टटके काटल गजदँतवा के टुकड़ा निअन परवतवा ऊ गोर।
एकटक नयना से देखे जोग होई जाई रूप ओहि गिरि के तुरन्त,
करिआ चदरिआ के धइ दूनो कन्हिआ प खाढ़ जइसे रेवती के कन्त॥

(३)

हित्वा तस्मिन् भुजगवलयं शम्भुना दत्तहस्ता
क्रीडाशैले यदि च विचरेत् पादचारेण गौरी।
भङ्गी-भक्त्या विरचितवपुः स्तम्भितान्तर्जलौघः
सोपानत्वं कुरु मणितटारोहणायाग्रयायी।

सँपवा के वाला हटवाइ शिव हँथवा के लेइ हँथवा में गउरा माइ,
ओहि रे किरिडवा सएल प अगर पयदल हीं घुमत होइहें जाइ।
भीतरे में जल-भार थाम्हि जाइ अगवा लहरवा सरीखे ऊँच-नीच,
देहिआँ विरचि शृंगतटवा में चढ़ जोग सीढ़िआ के पाँति दीहऽ खींच॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(४)

तत्रावश्यं वलयकुलिशोद्‌घट्टनोद्‌गीर्णतोयं
नेष्यन्ति त्वां सुरयुवतयो यंत्रधारागृहत्वम् ।
ताभ्योमोक्षस्तब यदि सखे धर्मलब्धस्य न स्यात्
क्रीडालोलाः श्रवणपरुषैर्गर्जितै र्भीपयेस्ताः

देव के तिरिअवा कँगनवन के हीरवा से करिहें उहाँ रे खेलवाड़,
तोहि फोरि झरना बनइहनि, लिहनि ऊ फउअरवा के घर के सुतार ।
घाम-पसेनात तोर मित ना अगर होई उन्हुका से छुटे के उपाय,
खेल के चटोरनी जुवतिअन के दीह तव जोर से घहरि डेरवाय ।।

(५)

हेमाम्भोजप्रसवि सलिलं मानसस्याददानः,
कुर्वन् कामं क्षणमुखपटप्रीतिमैरावतस्य ।
धुन्वन् कल्पद्रुम-किसलयान्यंशुकानीव वातैः
नानाचेष्टै र्जलद ललितै र्निर्विशेस्त नगेन्द्रम् ।।

कनक कमल जनमावेवाला मानस के जलवा पिअत सिरिमान
इन्नरऽ के हथिआ के मुँहवा पटोर से पिरितिआ करत मनमान ।
कलप बिरिछवा के पतवा बयरवा से रेशमी निअन फहराइ
सुन्नर सुभेख बहुरूप से झरत जइहऽ ओहि गिरिराज में समाइ ।।

(६)

तस्योत्सङ्गे प्रणयिन इव स्रस्तगङ्गादुकूलां
न त्वं दृष्ट्वा न पुनरलकां ज्ञास्यसे कामचारिन् ।
या वः काले वहति सलिलोद्‌गारमुच्चैर्विमाना
मुक्ताजालग्रथितमलकं कामिनीवाभ्रवृन्दं ।।

ओहि गिरिरजवा पिअरवा के गोदिआ में गोरी अस अलका हमार,
कइसे ना बुझबऽ आवारा देखि अपरूप सड़िआ बहलि गंगधार ।
तोहि पाइ धरे सतमंजिलन-मथवा प मेघझोझ अभुरल फुहार,
केसवन में मोतिआ के जाल गूँथि बइठलि कामिनी निअन रूपझार ।।

—:०:—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आशु कवि शिवनन्दन

श्री महेश्वराचार्य

भोजपुर जिला में मौजमपुर नाँवके छोटहने गाँव बा। सन् १६१० ई० के आस-पास भोजपुरी आशु कवि शिवनंदन सिंह के जनम ओही मौजमपुर गाँव में भइल रहे। शिवनन्दन सिंह के पढ़ाई-लिखाई ना भइल रहे बाकिर गीत-कविता बनावे के प्रतिभा उनुका में लइकाइयें से पावल जात रहे। ऊ बात-बात में कविते बोल देत रहले। जइसे केहू पूछे कि का करेल भा का तहार शगल बा। त ऊ बड़ा शान से कहसु—

दुआर बाटे नीम के गाछी,
पोसले बानी पाड़ा बाछी।

नाच भा नाटक मंडली वाला लोग शिवनन्दन के आदर से राखत रहल हा। कतही लयदार मेहीनी गवनई होई ओहिजो शिवनन्दन के बोलाहट होत रहल हा। शिवनन्दन कवनो समाज, कवनो महफिल के अपना नया गीत से गुलजार कइ देत रहले हा। नया गीत बनावे भा गावे के शिवनन्दन के आपन एगो खास ढंग रहल हा।

शिवनन्दन के एक हाथ में खलिहा लोटा रहत रहल हा आ दोसरा हाथ में डन्टा। ओही लोटा आ डन्टा प ताल दे दे के ऊ गावत रहले हा। सुननिहार लोग खातिर बीच-बीच में ऊ कुछ हँसी के शब्द भा 'दादा हो दादा' कहि के बजा देत रहले हा आ ओतना देर में ऊ अपना गीत के नया लाइन रचि लेत रहले हा। ई रचना शैली व्यास जी के महाभारत के दृष्टिकूट से बहुत कुछ मिलत बा। लोटा डन्टा के आवाज कबीर के डफली के साथे रचाइल पद-पदारथ से मिलत-जुलत बा।

शिवनन्दन के कवनो गीत कागज प ना लिखात रहल हा। ऊ उनुका कंठस्थ रहत रहल हा। जेकरा जब मन आवे शिवनन्दन के सभ पुरान गीत सुनि लेउ भा नये गीत सुनि लेउ। शिवनन्दन ओह से ना भागत रहले हा। शिवनन्दन अनगावल गीत अधिका गावत रहले हा। आग्रह कइला प गवलको गावत रहले हा। आरा जैन कालेज के लड़िका उनुकासे, जो पकड़ा जइहें त, नया-नया गीत सुनिहें स।

एक हाली 'केसरी जी' शिवनन्दन के एगो कवि-सम्मेलन में ले गइल रहले, जहवाँ हरिनाथ जी अपना हाथ से शिवनन्दन के माला पहिरवले रहीं। शिवनन्दन के पकड़ले मुश्किल रहल हा। जहवाँ जइहें उहँवो ऊ लइकन के मारे पहिले लुका जइहें! लुकइहें अइसन जगहा में जहवाँ भुलाइलो केहू के नजरि ना परी। जो जलसा के जगहा प गाछ-विरिछ होईत शिवनन्दन फेंड के उपरकी डाढ़ि प पत्ता के झोंप में लुका जइहें जहवाँ दिअर-दानर भा गंगा के किनारे रही त हिंगुआ भा टोंट में ऊ लुकाइल रहिहें, तब तकले जब तकले जलसा शुरु नइखे हो जात। जलसा शुरु होते ऊ अपने आप परगट हो जइहें जइसे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'भये प्रकट कृपाला।' जइसे मलिक मुहम्मद जायसी अपना रूप प गौरव राखत रहले हा ओसहीं अपना सभ गीत में शिवनन्दन अपना रूप के आभास गर्व के साथे देत रहले हा।

कहे शिवनन्दन कवि, फोटो कउआ के छवि।

समाज में रहे खातिर शिवनन्दन के केहू साथे नफरत ना रहल हा वाकिर उचित गौरव त रहवे कइल हा। एक हाली के बात ह कि शिवनन्दन शाहपुर थ ना के आयोजन में पकड़ा गइले जहवाँ नाच के व्यवस्था रहे। उनुकरा भेष-भूषा से उनुका के केहू चिन्हल जानल ना आ नाचन के संगही उनुका के खिया दीहल लोग एह से उनुका जवन दुख भइल, तवना के ऊ स्टेज प पहिलहीं सुनवले –

पाँती में वइठल नाऊ-धोबी,
आलू में परल बेछिलले कोबी।

शिवनन्दन जइसे लोटा ठन्टा साथे राखत रहले हा ओसहीं अपना खाये भर सातुओ बराबर अपना पासे राखत रहले हा। कुरता आठ महीना ना पहिरत रहले हा, करिया उघार देहि राखत रहले हा। वाकिर दू तीन गज के मोटिया मारकीन गमछा जरूर रखिहें जवनासे सभ काम हो सके। हँ, त सातू ले ले जेठ के दुपहरिया में शिवनन्दन बसरोपन के दुआर प एक हाली खाये के सोचले तले बसरोपन के घर के सवाँग उनुका के खेदे खातिर आपुस में लड़ाई कइ देले स। शिवनन्दन ईहे गीत गावत भयले—

धनि बसरोपन के महिमा वा भारी,
थारी माँगे गइलीं त कइले स मारामारी।
डर के मारे फानि गइलीं कियारी के
कियारी॥ धनि०

एकर माने ई ना भइल कि शिवनन्दन डरपोक रहले हा। शिवनंदन राजपूत रहले हा। भय अइसन चीज उनुका कीहां ना रहल हा। अपना जान के हथेली प रखि के ऊ रात-दिन समान रूप से धरती प विचरत रहले हा। देश खातिर ऊ कई हाली जेल के हवा खा चुकल रहले हा। ई गीत राष्ट्रकवि शिवनन्दन के ह—

जइबे करवि हम जइबे करवि।
देश लागि जेलवा में जइबे करवि।
जिला के नाच नचइबे करवि।
जवाहर के लाट वनइबे करवि।

देश-प्रेमी शिवनन्दन गाँधी जी के वारे में अइसनो सोचि गइले— बुढ़ऊ के शादी के विचार बेलाइत में।' ओही घरी ब्रिटिश सरकार के भागे के तइयारी देखि के शिवनन्दन जनता के अगाह कइले

जानी ताक तनि नजर उठाइ के।
अवकी चलल वाटे पाई छेदवाइ के॥

देश-प्रेमी शिवनन्दन देश के चारो ओर से हिफाज़त चाहत रहले। ऊ नशाखोरियो से वड़ा दुखी रहत रहले। वीड़ो के तारीफ में ऊ लिखले रहले –

भारत के कइलू तूँ उजार, ए मोरि वीड़ी दुश्मन
कहे शिवनन्दन कवि, गोरकउआ के छवि,
मौजमपुर गाँव डाक सिनहा बजार।
ए मोरि वीड़ी दुश्मन।

कलकत्ता के बम वाजी से शिवनन्दन वहुत दुखी रहले। कलकत्ता के ओह वीभत्स दृश्य के देखे खातिर ऊ कलकत्ता गइल रहले आ ओह दृश्य के यथावत वर्णन कइले रहले—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अब कइसे बचिहें कलकत्ता विधाता सुनल।
बड़े-बड़े मारवाड़ी, छोड़िके दोकान बाड़ी,
अपना मुलुक भागल जाता, विधाता सुनल।
उड़िया आ नैपाली छोड़ि के भागे भुजाली
धोवी छोड़े गदहा, डोम काता, विधाता सुनल।

कवि के काव्य-चातुरी इहवाँ ई बा कि ऊ एके क्रिया से दूगो विजातीय कर्म के सम्हाल कइ रहल बा। 'धोवी छोड़े गदहा, डोम काता'

वर्णनात्मक गीतन में शिवनन्दन के दूगो गीत बड़ मशहूर भइला से। एगो आरा-सासाराम छोटी लाइन के गाड़ी के गीत आ दोसरका उनइस सौ बेयालीस ईस्वी के माघ में परल पथल-पानी के गीत। नजीर लीहीं—

छोटी लाइन के गाड़ी के गीत—

चाल चलेलु मस्तानी, ए छोटकी, चाल चलेलू...
आरा से अररा के चललू उदवत नगर उतरानी।
कसाप में तू कसमस कइलू पिअलू गड़हनी के
पानी। ए छोटकी

पथल पानी के गीत—

तोसी कहे कवना खीसी, हमरा के देले पीसी;
रहरी के वहरी निकलले पथलवा।
खपड़ा के कइले चूर, नरिया के कइले धूर;
मँगरा लँगरा बनवले पथलवा।
कहे शिवनन्द ज्ञानी, दया कर पथल पानी;
फेनु मति दरशन दीहे रे पथलवा

शिवनन्दन के हृदय करुणा से भरल रहल हा। जवन कवि हृदय के पहचान ह। तनिको कष्टकारक दृश्य देखि के उनुकर दिल पसीज जात रहल हा। बेयालीस ईस्वी के पथल से बेठेकान जीव मरल रहले आ बेठेकान नुकसान भइल रहल। जइसे ऊ दृश्य देखि के ऊ पसीज गइल रहले ओसही विहिया के पूरब पंजाब मेल के पटरी छोड़ला से ऊ कराह उठल रहले—

पंजाब मेल चलली बंगाला कि गाड़ी गिरल।
विहिया से पूरब भर, कउड़िया के पुल पर,
लाइन में चाका धसि जाला कि गाड़ी गिरल।
आगा से डरइवर चिचिआला कि गाड़ी गिरल।

अब शिवनन्दन के एके प्रवत्स्यत्पतिका के एगो कथन देखल जाउ जवन अपना परदेश खातिर तैयार सौहर से कहत बीआ—

हाली से लवटिह राजा, जाड़वा के रात हो।
साड़ी ले अइह राजा बाँगला के पाढ़ हो।
चोलिया ले अइह राजा, जोवन्द के सिंगार हो।
सेनुरा ले अइह राजा इंगुरा गुलाल हो.
बिंदुली ले अइह राजा चमके लिलार हो। हाली॰

भोजपुरी के हाली शब्द प इहवाँ ख्याल कइल जाउ। अइसन छोट, मधुर, चुलबुला सुन्दर आ हृदय खउलावे वाला शब्द दोसरा कवनो भाषा में साइते मिले। एह शब्द के तारीफ १९४६ ई॰ के जुलाई के सरस्वती में जब हम कइलीं तह मरा पासे ओह घरी के कतने-कतने महारथी विद्वानन के बधाई आइल रहे।

अब देखीं सोहागिन के माँगु के सामान। पुरुब भा कलकतिहा प्रियतम से बँगले के पाढ़ वाला सारी माँगल जा सकेला। बाकिर सारी चोलो से बढ़ के जवन सोहाग के सेनुर आ बिनुली बा ऊहे माँगल तारीफ के लायक बा। ओही सोहागिनि के विरह-वेदना के एक तस्वीर अउरू लीहीं। शिवनन्दन गवले बाड़े —

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सनन-सनन रात करे, वहेला पवनवा हो।
जो सइयाँ रहिते घरवा सुतती अँगनवा हो।
सावन वीतल भादो वीतल वीतल अगहनवा हो।
पुस माघ जाड़ा वीतल पहुँचल फगुनवा हो।

एकरे के विरह-वर्णन के परम्परा वाला वारह मासा कहल जाई। प्रोषित पविका जवन-जवन महीना के नाँव गिना रहल विआ ऊ सभ समुझहीं-बुझे लायक बा। वरसात के बाद जोरदार बा 'मासानां मार्गशीर्षोऽहम्'। आ जाड़ा के वाद जोरदार बा फागुन। वाकिर वीचहुँ वाला महीना विरहिनी खातिर कम खतरनाक नइखे। जइसे 'सावन-भादो' में विरहिनी तादात्म्य स्थापित करेली लोग। पुप माघ के जाड़ा देखिके भिखारी के विरहिनी कहत विआ 'हाड़वा में जाड़वा समाई रे बटोहिया।

गुप्ताजी के उर्मिला कहत वाड़ी जाड़ा से—
सी सी करती हुई पार्श्व में पाकर जव तव मुझको,
अपना उपकारी कहतेथे मेरे प्रियतम तुमको।

फेनु रीति-काल के एगो कवि जी नायिका के एह सीसीआपन उक्ति एह किसिम से सुनावत वाड़े—
ज।के सीसी करने में सुधा सीसी-सी ढरकि जात।

शिवनन्दन के बारे में इहँवा थोरे में परिचयात्मक आभास दे दीहल बा। विशेष विचार हमरा प्रकाशित होखे वाला ग्रन्थ भोजपुरी पंच रत्न में कइल वा।

—:०:—

विहान

वटोही, आइल कनक-विहान
फुदुक-फुदुक के पंछी गावत मगन धूप के गान
लल कपाट पुरुब दुअरा के फयलल ज्योति वितान,
वटोही, आइल कनक-विहान।
वान्ह अन्हरिया के अँचरा में रतिया दूर पराइल,
हाँक तरेगन के ढ़ोरन के चान चलल मुरझाइल,
सजल कुमुद के सपना टूटल, मनवा भइलमलान,
वटोही, आइल कनक विहान।
नया रूप-रग लेके धरती तिमिर-गुफा से निकलल
नया चेतना मधुर प्रेरना जन-मानस में मचलल
कलियन के अधरन पर थिरकल सिंदुरिया मुसुकान,,
वटोही, आइल कनक-विहान।
नया ताल में, नया राग में चिरइन के सहनाई
वाजत नया नसा में, रस में भींज उठल अमराई,
डार-डार के, पात-पात के, मुखरित मधुर परान,
वटोही, आइल कनक-विहान।
ताल-तलइया, लहर-लहर पर लोटत कनक किरिनिया
सरमाइल कलियन के घूँघट खोलत कनक किरिनिया
सुना रहल वा मुरगा आपन परभाती के तान,
वटोही, आइल कनक-विहान।

शुकदेव सिंह 'स्नेही'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लात के करामात

वृन्दावन विहारी

मन्दिर में भगवती पावती के विधिवत पूजा कर के प्रतिमा जब उठली, उनकरा आँख से आँसू के बून्द टपटप गिरत रहे। रंगीली नजर पड़ते ही समझ गइली—ई बेचारी लड़की बड़ दुखिया बुझातीया। बाकिर माँग में सेनुर, शरीर पर स्वर्ण-भूषण आ कीमती साड़ी-ब्लाउज देख ईहो समझत देर ना लागल कि कौनो धनी-मानी रईस के घर में बिआहल बुझातीया। रूपो भगवान आला देले बाड़न। एह लड़की के अब कौन दुःख बा जौना से चेहरा मुरझाइल आ आँख डबडबाइल बा। मन्दिर से निकलते रंगीली प्रतिमा के ओर मुड़ के कहली—"बेटी! बुरा ना मान त तोरा से कुछ बात कहतीं।"

प्रतिमा आँख उठा के देखली—सामने गोर सुन्नर एगो अधेड़ औरत खड़ा रही। ना माँग में सोहाग के सेन्दुर रहे आ ना हाथ में चूड़ी। समझली—कोई दुखिया विधवा हई। एही से दिल में दया बा आ बोली में मिठास। तुरत जबाब देली—"बुरा काहे मानब माता जी। बोलीं—का कहे के बा।"

"जरा बइठबू तब नु बेटी।"

ओहिजे एगो बेल के पेड़ के छहिरा में प्रतिमा आ रंगीली आपन-आपन कुशासन बिछा के बइठ गइली। रंगीली पूछली—

"बेटी, तोहार ससुराल कहाँ बा?"

'सामने जे बड़का कोठी देखत बानीं।"

"बाप रे बाप, शहर के बहुत बड़ रईस गणेश बाबू के कोठी ह।"

"गणेश बाबू राउर के लागीला।"

"उहें के हमार मालिक हईं।"

"राउर धन्य भाग। रउआ लाख में एक बानीं। गणेश बाबू हीरा आदमी हईं। बोलचाल स्वभाव बात अतना अच्छा बा कि दुनिया में ढुंढला प अइसन आदमी ना मिली।"

"राउर कहल बिलकुल साँच बा माता जी। घर बाहर सगरो उनकर तारीफ होला। हमहीं करमहीन बानी। रोज उहाँ के मारीला। मार खात-खात हमार आंजर-पांजर ढील हो गइल बा। एक दिन सिर में तेल लगावे चललीं त अइसन ढकेललन कि मलिया कहीं गिरल आ हम कहीं। फिर आके लात घूसा से हमार देह थूर देलन। एक दिन पैर दबावे बइठलीं त जम के अइसन लात मरलन कि पीठे भरे गिर गइलीं। कइ दिन तक बइठल ना जात रहे। पैर छु के जहाँ प्रणाम कइलीं कि झोंटा नोच-नोच के थपड़े-थपड़े मरिहें। नइखे बुझात माता जी कि का करीं जे हमरा प उहाँ के दया करीं। आज तक नइहर में कोई एक बात तक बोलले ना रहे से इहाँ हमार ई दुर्दशा हो रहल बा।"

"बड़ा अचरज के बात बा बेटी। एह में जरूर कुछ बात बा।"

"सोनिया रंडी के रखले बाड़न।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"हनूँ ! उहे त कहीं !"

"रोज अपना मोटर से ओकरा के कोठी प बोलइहें आ रात भर बइठका में रख के पराते भेज दीहें।"

'अब सब समझ गइलीं। पार्वती जी रोज-रोज के तोहर पूजा से आज खुश भइली ह एही से तोहरा हम भेटा गइलीं हँ। अब चुटकी बजावत देखते-देखते तोहार दुःख भाग जाई।"

"माता जी, हमार दुःख भाग जाई त जिन्दगी भ राउर गुन गाइब।"

'बेटी हम पुरुष वशीकरण जानी ला। कइसनों मरद होखे हम मुट्ठी में कर लेब। सोनिया वास्ते त दुनिया-संसारे बा। गणेश बाबू अइसन ओकरा ढेर रईस मिलिहें। बाकिर तोहरा खातिर त गणेश बाबू बाड़न नू।"

एकरा बाद रंगीली बहुत-बहुत बात समझवली और कहली—

'देवता-पितर के पूजा-पाठ बेकार ना जाय। आज साक्षात् पार्वती जी के तोहरा पर कृपा हो गइल बा। तू दू दिन ढूका लाग के किवाड़ के छेद से देख कि सोनिया कइसे-कइसे का करतीया। तब हमरा बात प तोहरा विश्वास जमी।"

"ठीक बा जे-जे रउआ बताइब हम सब करब। अब हमरा के रउआ अपना बारे में बताईं"

'हमहूं रंडी हईं। सोनिया हमार मौसेरी बहीन हीअ। हमनीं के जानीला—जइसन देवता ओइसन पूजा। जवन काम सोनिया करेले उहे काम हम जिनगी भर कइलीं। बाकिर अब हमार बार पाक गइल। चेहरा प चिकनाई ना रहल। आज मुँ रंडी के घर में जनमल ना रहतो त एह बुढ़ौती में कौनो घर में मलकिनी बन के सुख से जिनगी कटतीं। हम पार्वती जी के पूजा कर के रोज मनाइला कि अब आगे जनम में रउरा पूजा के प्रताप से कौनो बढ़िया कुल में हमार जनम होखे। अच्छा त अब तू जा बेटी। पार्वती जी तोहर प कृपा करस।"

× × ×

एतवार के हफता में एक दिन सोनिया ना बुलावल जात रहे। ओही दिन गणेश अपना मित्र-मंडली के साथ क्लब, सिनेमा तथा खाए-पीए में रहत रहन आ ओही दिन पम के प्रतिमा के मरमति करत रहन। अइसे त एक-आध झांपड़ आ गाली-गलौज से प्रतिमा के पूजा कइल त उनकर रोज के काम रहे।

जब अबकी एतवार आइल प्रतिमा आपन जम के सिंगार कइली। एकदम अप-टू-डेट बन गइली घूँघट हटा देली। जूड़ा में फूल के गजरा मंगा के लपेट लेली। लवेंडर के सउँसे शीशी साड़ी आ पलग प उड़ेल देली। पाउडर से चेहरा चकाचक क लेली। एक बजे रातके शराब के नशा में झूमत गणेश बाबू अपना कमरा में दाखिल भइलन। आवते एक सरसरी निगाह चारों ओर डाल गइलन। प्रतिमा के रोज अइसन सिकुड़ल सिमटल घूँघट कढ़ले कहीं ना देख के बड़ा अचरज कइलन। लवेंडर के गंध से कमरा महँ-महँ करत रहे। एकाएक पलंग पर नजरि पड़ते उनकर नशा फाट गइल। मन में कहलन—अरे ई का देखतानीं। प्रतिमा माथा उघरले लाज-संकोच छोड़ पलंग प पड़ल-पड़ल उनुकरा ओर ताकत बाड़ी। ई का,हमरा प नजर पड़त

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ललकार

भोजपुरी मासिक पत्र

बरीस - ६   अप्रैल-मई. १९७७   अंक ४-५

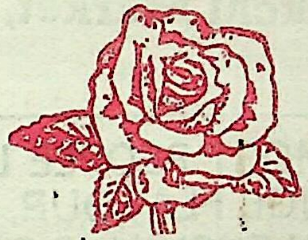

सम्पादक - डा० बच्चन पाठक 'सलिल'

प्रकाशक - विजय कुमार भारद्वाज

अध्यक्ष - राम बचन तिवारी

सरायकेला अनुमंडल भोजपुरी समाज

कार्यालय - १४१ २-२ रोड नं० १३ आदित्यपुर,

जमशेदपुर, सिंहभूम (बिहार)

साल भर के - ८-००   जीवन भर के - १०१-००   एक अंक के एक रुपया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

With Compliments Of

PHONE: 8718 Works
5319 Office

R. K. Industries

Plot No. M-11 & 12 IV Phase
Industrial Area, Adityapur-831013

Manufacfurer Of Quality Castiners Ferrous & Non-Ferrous
Machined & Fabricated Spares
Office - 144, Sakchi Market, Jamshedpur-1

MOST PEOPLE LOVE
ORANGE FLAVOUR.
THAT'S WHY THEY LIKE FANTA.
THE BRIGHT HAPPY TASTE
THAT MAKES EVERYTHING
MORE FUN.

ORANGE
FLAVOURED

FANTA

...TASTES SO GOOD IT'S FUN TO BE THIRSTY!

"Fanta" is a registered trade mark of The Coca-Cola Company

Authorised Bottler: STEEL CITY BEVERAGES PVT. LIMITED, JAMSHEDPUR

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आपन बात

भोजपुरी के दिन प दिन बढ़नती हो रहल बा। ई संतोष के विषय बा। भोजपुरी में हर विषय पर किताबो लिखा रहल बा। लेखक लोगन का मेंहनत से काम करे के चाहीं, काहे कि आज के रचना पर इतिहास लिखाई।

साहित्य अकादमी भोजपुरी के आजतक मान्यता ना देहलम। हमनी केन्द्रीय सरकार से एकबार फिर मांग करत बानी कि एह शुभ काल में देगी मत होखो। बिहार सरकार मैथिली के अकादमी बनवलस ई खुसी के बात बा। बाकिर भोजपुरी अकादमी के शीघ्र मान्यता देहल जननीत के दृष्टि में जरूरी बा। आशा बा बिहार सरकार ई काम जल्दी करी।

पाठक लोगन के आग्रह पर एह अंक से फिलम चर्चा शुरू होत बा। लेखक निर्माता आ कलाकार लोगन से रचना भेजे के हथजोरी बा।

आपनेके:-

रामवचन्न तिवारी

अध्यक्ष

आदित्यपुर

जमशेदपुर--८३१०१३

सरायकेला अनुमंडल भोजपुरी समाज

गुन हेराइल बा

● कमला प्रसाद ओझा 'दिव्य'

ऊ गुन कहाँ बा, जवन माँटी से जोड़ेला।
जीवन के धारा के, धरती पर मोंड़ेला।
कहाँ बा ऊ बोध, जवन जिनिगी तरासेला।
मानव के मानवीय, भाषा में बाँचेला।
लुरिया भुलाइलि, लुरिगरवा कठुआइल बा।
गुन बा हेराइल, गुन-गाँहक हेराइल बा
x x x x x x

भाव, ऊ कहाँ बा जवन श्रोत आपन बाँटेला।
ताव, ऊ कहाँ बा जवन, तीनि डाँड़ि खाँचेला।
सत्य ऊ सेराइल जवन, मरघटो में जाँचेला।
त्याग जवन आपन तन, अपने तेगे काटेला।
विद्या-विधुआइल, विद्यार्थी ना 'अघाइल बा।
गुन बा हेराइल, गुन-गाँहक हेराइल बा।
x v x x x x

केने बा ज्ञान जवन कर्मयोग भाखेला।
मानव-कल्यान खातिर, दिव्य-दृष्टि राखेला।
व्रत, ऊ बिलाइल जवन थूकल ना चाटेला।
दुःख के दंडक-धन में पुन्य-पंथ छाँटेला।
राह अभुराइल, राहगीरो ओंघाइल बा।
गुन बा हेराइल, गुन-गाहक हेराइल बा।
x x x x x z

कहाँ बा ऊ प्रेम जवन, जीति जीति हारेला।
जोति; वात्सल्य जवन, जिनगी में बारेला।
तेज, जवन तम से त्रिलोक के उबारेला।
मद-मत्सर जड़ता के, जरी से उखारेला।
धर्म त्रा ओराइल, धार्मिकता लजाइल बा।
गुन बा हेराइल गुन-गाँहक हेराइल बा।
x x x x x x

५४१/३ आर. टी. एस. कोलनी

. बिलासपुर, मध्यप्रदेश

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भिखारिन

मदन मोहन श्रीवास्तव

गोल-गोल
सुघड़-साघड़
मूहवा के रंग गेहूँ जईसन
ओठवा के रंग
इंगुर जइसन
चान के सुरतिया लिहले
लुगरी देह लुकवले
एगो भिखारिन
हाथ पसरली।

भिखारिन के लाचारी समझ के
कुछ देवे के बदला
कुछ लेबे खातिर
निरदई पापी, व्यविचारी,
बल जोरी खिचत खाचत
अंदर ले गईलस।
कुछ देर का बाद
भिखारिन
अचरा में मुँह लुकवले
आपन जवानी के कारन
समाज के गाली देत
अपना भाग पर
लोर बहावत
कलंकित मूँहवा के
लोरवा से धोई-धोई
रहिया में आवत रहली।

—जनसम्पर्क विभाग
सीमा सुरक्षा बल, नई दिल्ली ११०००१

तीन गो रुबाई

कृष्णा नंद कृष्ण

●
फूटही दरपन के हर चेहरा फूटल,
मरघटी अँगना में हर नाता टूटल
छन भंगुर जिनगी के कवन भरोसाबा
करल तूँ सब काम रहे ना कुछ छूटल।

●●
इहाँ केकरा से के करत प्रीत बा
स्वारथ के गावत सबलोग गीत बा
सोधा के मुँह त कुकुरो चाटेला
साँच के ना भूठे के सब मीत बा।

●●●
उपर से उजर बा भीतर से काला
मुँह उदास लागल हड़ताली ताला
करीह कबहीं बिसवास ना दू पर
मुरूख मिताई अउर खेती खाला।

—लोकस्वास्थ्य, विशिष्ठ अनुसंधान अवर
प्रमंडल, बोरिंग कनाल रोड, पटना

गजल

गोपेश्वर नो निहाल

जनमें से रुठल चाँदनी सुहानी बा,
जिदगी तार के, अभाव के कहानी बा
कहीं त शोर में विभोर महल नाच रहल,
कहीं त लोर में डूबल ई जिदगानी बा।
कहीं त चातकन के प्यास बिके पइसा पर
कहीं त तड़प रहल प्यार बिन जवानी बा॥
बचपन से देखत देखत तन सेयान भइल
कि हमरा संग-संग रो रहल पलानी बा।
मौत के बोलावल आ खेदल बा जुर्म इहाँ
गजब बा जिदगी, गजब खींचातानी बा।
बचपन से पिअत पिअत घूंट आंसू के
रगन में खून नाहीं, आज बहत पानी बा।

—ग्राम-पकड़ियार पो०—लाइन बाजार
जि०—गोपालगंज (बिहार)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देंसिला नेता

डा० मुक्तेश्वर तिवारी बेसुध

चतुरी चाचा

ऊ देंसिला नेता कोरा बा
देख कन्हिया पर झोरा बा
बपवा भलही कं साग पात
पुतवा कें नाम परोरा बा।

गोड़वा में खरपा टूटल बा
चेहरा चिउरा अस कूटल बा
लउकत अन्हेर अइसन जइसे
जहता कें खोरा फूटल बा।

ई दाढ़ी बाल बढ़ा लेला
खादी के कवच चढ़ा लेला
बस झूठ साच का लदनो से
जनता के पाठ पढ़ा देला।

इनिकर किछु अजब कहानी बा
दोसर के दाना पानी।
जनता भरसाई में झोंकाउ
इनिकर त हरदम चानी बा।

ऊ देस बढ़ी कइसे आगे
जेकर अइसन वैसाखी बा।
जो हाल रही इ वहू आगे
कुछ भुगुत गइल किछु बाकी बा।

— चितबड़ा गांव, बलिया

अरक्षित

● भोला नाथ भावुक

मोरा अंगना में रिमझिम सावन झमके।
मोरा अंगना में रिमझिम सावन झमके।

होत भिनुसारवा बदरिया से झाँके,
चन्दवा निगोड़ा खिरिकिया में आके।
बिंदिया पर मोरा बिजुरी कड़के॥
मोरा अंगना में रिमझिम सावन झमके

नूपुरा जो झनके त झिंगुरा चिहाला,
कंगना जो खनके त मोरवा सिहाला।
पुरुआ बेदरदी पवन सिहिके॥
मोरा अंगना में रिमझिम सावन झमकं

आधी आधी रतिया के सूनसान भवनवा,
गरजे बदरिया तऽ बरसे नयनवा।
सिसके जवनियां त जिया डहके॥
मोरा अंगना में रिमिझिम सावन झमकं

धानी चुनरिया के हरियर अंचरिया,
लचि लचि जाला मोर पतरी कमरिया।
पपीहा पिहुती पीऊ पिहिके॥
मोरा अंगना में रिमझिम सावन झमके

चन्दन के पलना में रेशम के डोरी,
सजना नादान जाने सावन ना होरी।
का ई सजनवा उमर भर के॥
मोरा अंगना में रिमझिम सावन झमके

—कसेरा टोली सीवान

❀ ❀ ✶ ❀ ❀

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सम्बन्ध

अतुलमोहन प्रसाद

हम रोज के तरह आजुओ टहलत जात रहीं। अस्पताल के नियरा पहुचला पर खड़ा भीड़ के देखि के गोड़ रुकि गइल। एगो आदमी के रोआई सुनात रहे। आवाज जानल पहचानल लागल। एह से हम अपना के रोक ना पवलीं आ भीड़ में जगह बनावत आगे तक पहुंच गइली। ओहिजा रघुआ मुअल पड़ल रहे आ ओकर बाबू ओकरा के गोदी में चिपटले रोअत रहन। काल्हु तक रघुआ ठीक रहे। एह से हम पूछ देनी- "काहो रघु के बाबू एकरा का भइल रहल हा ?"

'आरे ! का बताई बाबू।' हिचकी लेत कहलन 'आजु दुपहरिया तक त साथे काम कइलस हा संगे भोजन कइलस आ आराम कइलस। आराम कइला के बाद ऊपरी बेरा जागल हा त कहत बा कि पेट में दरद होत बा। हमरा बुझाइल कि गरमी के चलते दरद हो गइल होई बाकिर दरद बढ़ते गइल केहू तरी अस्पताल तक ले अइनी हा बाकिर इहवाँ के डाक्टर साहब कहलहन कि दु सौ रुपिया जमा करब तब लइका के दाखिला होई। ओकरे सेतिहा दवाई होला जे एहिजा के कम्पनी के कर्मचारी बा। हमरा रोअला गवला के कवनो असर ना पड़ल ह आ जवन परिणाम भइल बा तवन त सबका सोझा बा। अतना कहि के रघुआ के बाबू फेनु रोवे लगलन। आ हमरा सोझा रघुआ के ऊ मासूम चेहरा सामने आ गइल जबकि हम ओकरा के रिकी के किताब देत रही।

रघुआ के हम जब से एह शहर में आइल बानी तब से जानत बानी। ओकर बाबू जूता में पालिस करेलन। सुरु-सुरु में रघुआ अपना बाबू के संगे-संगे घूमत रहे। कुछ बड़ भइल त बाबू के काम में हाथ बटावे लागल। हमरा किहाँ हरेक अतवार के दुनो बाप-बेटा जरूर पालिस लगावे चल आवस। एक दिन हम रघुआ के बाबू से पूछ देनी--"रघुआ के पढ़ा काहे नइखी देत अपने सभ के त सरकार के तरफ से भी पढ़े के सहायता मिले ला।"

रघुआ के बाबू आंख में लोर पोछत कहलन, "मालिक। हम जात से हरिजन ना हई करम से हरिजन बानी। रउरा एह सहर में जनता स्कूल बा ओमें ओही लइका के नाम लिखाला जेकर बाबू बी. एस. एल. में काम करेलन आ चाहे ओकरा से सम्बन्धित दफ्तर में। हम जब एह सहर के स्कूल से निरास हो गइनी त इहवाँ से पाँच मील दूर एगो देहात के हरिजन स्कूल में रघुआ के लेके ओकर नाम लिखवावे खातिर गइल रही बाकिर ओहिजा जात से हरिजन रहल जरुरी बा। हारि थाकि के हम रघुआ के अपन काम में लगा देनी। हमनी लेखा गरीब आदमी के एह समाज के व्यवस्था में केनियो जगह नइखे।"

"देख ! घबड़ा मत। एगो काम कर। रघुआ से हम एक दिन पूछले रही ओकर पढ़े के मन बा। ओके घर पर पढ़ाव रिकों के किताब जवन पढ़ि लेले बिया ऊ दे देत बानी। इम्तहान हम प्राइवेट स इन्तजाम करवा के दिअवा देब।" हम कहनी।

अतना सुनला के बाद रघुआ के चेहरा खुशी से झूम गइल। बाकिर आजु रघुआ के हालत देखि के हमरा इहे बुझाइल कि जवन व्यवस्था कइल जा रहल बा ऊ रघुआ जइसन भावी पीढ़ी से आ परिवार से काफी दूर दराज बा ओकर सम्बन्ध अइसन परिवार से कम रेडियो आ अखबार से अधिक बा।

—भारतीय स्टेट बैंक
बोकारो इस्पात नगर
जि०-धनबाद

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तालिका में भोजपुरी फिल्म के इतिहास

प्रो० उमाकांत वर्मा

भोजपुरी फिल्म के जिज्ञासु लोग ला ई तालिका काफी महत्वपूर्ण होखी। ई तालिका बनवावे के संपूर्ण श्रेय रामवचन तिवारी जी के बा। उहँवा के अगर आग्रह ना करती त शायद मनोयोग पूर्वक ई काम ना होखित आ तब भोजपुरी फिल्म वाला इतिहास वाली निवन्धो ना लिखाइत जे अब कुछ दिन में पूरा हो जाई। उहो निबन्ध जिज्ञासु लोग ला काम के होई, काहें कि ओकरा से उ लोग भोजपुरी फिल्म निर्माण कवना परिस्थिति में आ केकरा सहयोग से सुरु भइल, एकर पूरा विवरण के जान पाई।

भोजपुरी फिल्म तालिका के पाँच भाग में बाँटल गइल बा।

[क) १९६४-६५ के करीब बनल उ फिल्म जे पूरा भइल आ चलचित्र गृह में प्रदर्शित भइल।

(ख) १९६४-६५ के करीब घोषित आ अपूर्ण बनल फिल्म जे पत्रन के विज्ञापने आ डब्बा में बन्द रह गइल।

[ग) १९६७ में बनल वृत चित्र जे केन्द्रीय शिक्षा विभाग द्वारा खरीदल गइल आ आज प्रांतीये जन संपर्क विभाग द्वारा गांव–गांव में देखावल जा रहल बा।

(घ १९७४ से प्रारम्भ निर्माणाधीन फिल्म जेकर कुछ शूटिंग आ रेकौडिंग हो गइल बा आ जे पूरा होखे के क्रम में गतिशील बा।

[ङ) १९७७ के घोषित फिल्म।

[च) १९७७ में प्रदर्शित होखे वाला फिल्म जेकर विज्ञापन पत्रे आ रेडियो से हो रहल बा।

(क) १९६४–६५ के करीब बनल फिल्म जे चलचित्र गृह में प्रदर्शित भइल आ कुछ तऽ रजत-जयन्तियो मनवलस जेमे पहिलका फिल्म' ए गंगा मइया तोहे पियरी चढइबो 'फिल्मो रहेः—

१ 'ए गंगा मइया तोहे पियरी चढ़इबो' निर्माता विश्वनाथ शाहाबादी, कथा- नजीर हुसैन, गीत-शैलेन्द्र, संगीत-चित्रगुप्त, निर्देशक-कुन्दन कुमार।

२ 'कब होइहें गवनवा हमार' निर्माता-रामेश्वर नाथ और बच्चा लाल पटेल, कथा रास बिहारी लाल, गीत रामेश्वर सिंह काश्याप मुणीन्द्र शुक्ला और रासबिहारी लाल, पटकथा और निर्देशन पी. एल. संतोषी, संगीत इकबाल कुरेशी।

३ 'लागी नाहीं छुटे राम' निर्माता- तिवारी, कथा-नजीर हुसैन, संगीत-चित्रगुप्त, निर्देशक कुन्दन कुमार।

४ 'हमार संसार', निर्माता कथा और निर्देशक-नजीर हुसैन, संगीत-श्याम शर्मा (अब श्याम सागर)।

५ 'विधना नाच नचावे', निर्माता -जमुना दास जव्हेरी, संगीत दत्ता राम, निर्देशक कं० शुक्ला।

६ 'लोहा सिंह', निर्माता मोहनलाल खेतान, कथा और गीत- रामेश्वर सिंह काश्यप, संगीत एस०एन० त्रिपाठी, निर्देशक कुन्दन कुमार।

[बाकी पन्ना ११ पर देखीं]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हो गइनी। ऊ चेम्बर के भीतर गइल बाकि हम बहरे रह गइनी।

'जी ?' चपरासी के बोले के पहिले ज्ञान बोललन।

'तोहरा के के बोलावल ह ?'

ज्ञान चुपचाप घंटी के तरफ देखत रहन। बुझात रहे कि ऊ जानल चाहत होखस कि के-करा के बोलवनी हां ? हमरे के नू ?

'तू कइसे बुझ गइल हा कि हम तोहरे के बोलवावे खातिर घंटी बजवनी ह ?'

'तब जाई ?'

'ना! रूक!......मंत्रीजी आइल रहीं। जानत बाड़ नू कि हम आई. ए. एस. हईं। ऊ हमार का बिगाड़ लिहें। बाकि जानत बाड़ कि बड़ बेटी मेडिकल कालेज में बिया आ बेटा इंजि—नियरिंग कालेज में बा। लोग पुर्निया के जिला—धीश बना के आजे भेज दी तब दिक्कत होई कि ना ? .... सिवान के कवनो बस के बकाया राइट ऑफ करे के बा। देख के कह कि का पोजिशन बा ?'

'ऊ एह आफिस में नइखे। दण्डवते साहब के पास बा।'

'आरे ह। हमरा इयाद ना रहे। तब अइसन कर कि तू जा। मंत्री जी अभी डेरा ना गइल होइहें। मिल के सब कुछ समझा दीह।

ज्ञान बाहर अइलन। हमरा तरफ देखत मुस्कुरात लिफ्ट पर चढ़ कर के, दरवाजा बंद कर के, बटन दबा देलन।

बुझाइल कि कहत होखस कि लोग आवेला आपन या अपना चमचन के काम करावे खाति आ बहाना करेला कि आफिस के जाँच करत बानी।

कर्र्र.........के आवाज भइल आ ज्ञान अलोत हो गइलन।

भेंट भइल दुपहर में तब पूछनी 'डेरा काहे बदले पड़ल ह ? पहिले से खबर ना रहे ?'

'ना पहिले से कहाँ खबर रहे ?'

'तब का भइल ?'

'ऊ मकान एगो चमार के ह। जब राजा महाराजा के जमाना रहे तब ओकरो बापदादा के इनाम में मिलल रहे। राजा लोग पटना में आवत रहन तब ऊ पटना में रहत रहे। बाकी समय में देहाते के मकान में रहत रहे। एसे बराबर गाँवे पर रहत रहे। लाखो दुख सह के अपना अमिरी के अंतिम चिन्ह के जोगवले रहत रहे। ओकरा के किराया पर ना लगावत रहे। एने देहात में एकके बाद दहार आ सुखार आ सेक्रेट्रियट के किरानी पद पर बहाल अपना गाँव के एगो रजपुत के परिवार के तकलिफ सुन के किराया पर लगा देले रहे।.... केहू-केहू कहेला कि ऊ उनकरा के रहे खातिर देले बा सेतिहे बाकि ई किराया कमात बाड़न जे बात होखे। गाँव के लोगन के जुठन खा-खा के रहत रहे बाकि बेचे के नाँव ना लेत रहे।

बुढ़ारी के समय। दामा के मारे सांस फूल फूल जाले। रात भर झिलंगा भइल खाटी पर ओठंघल खांसत रहत रहे। रात भर नीन ना लागत रहे आ ऊ हरमेस जागल रहत रहे। केहू के आवाज मिली तब पूछ दी-'के जात बा जी ? बिहान हो गइल ? कतना बजत बा ?'

पी.पी. सिंह ओही गाँव के हवन। एक दिन अंहमुंहारे चलल आवत रहन। पटना में नया मंत्री मंडल के चुनाव रहे। उनको से पूछ देले रहे -'के जात बा जी ? बिहान हो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

व्याकरण चर्चा पर विचार

●रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक'

ललकार के अंक ११-१२ में डा० मुक्तेश्वर तिवारी 'बेसुध' जी के व्याकरण चर्चा-१० 'अकारान्त हिन्दी संज्ञअन के क्रिया के भोजपुरी प्रयोग' पर विचार पढ़ली। एह पर हमार मत ई बा:-

(क) अकारान्त भा इकरान्त प्रयोग स्थान भेद आ दूरी के चलते बा। कुछ हिन्दी पढ़ला के प्रभावो से बा। माईजी कीहाँ (बलिया) नादि, नाकि, बाति शुद्ध भोजपुरी स्त्रीलिंग शब्द बा आ हमारा कीहाँ (भोजपुर) नाद, नाक, बात शुद्ध भोजपुरी पुलिंग शब्द बा, जइसे नाद फूट गइल बा। बड़-बड़ बात मत कर। नाक कट गइल बा।

एह संबंध में हमार प्रयोग से सिद्ध कइल सत्य (जेकर चर्चा 'भोजपुरी शब्दानुशासन' के 'आपन कथा में कइल गइल बा।) ई बा कि जवन शब्द अकारान्त- आकारान्त, (ह्रस्व। आ दीर्घ उकारान्त में प्रयोग होई ओकर क्रिया स्वतः भोजपुरी में पुल्लिग होई चाहे उ शब्द हिन्दी के होखे भा दोसर कवनो भासा के। जवन शब्द ह्रस्व आ दीर्घ इकारान्त आ इयान्त होई ओकर क्रिया भोजपुरी में अपने आप स्त्रीलिंग हो जाई। देखीं भो० शब्दानुशासन पृष्ट ६५ से ७५।

(ख) हिन्दी के सभ अकारान्त शब्दन के ह्रस्व इकारान्त कइल ठीक नइखे। बाकी ढ़ेर हिन्दी के अकारान्त शब्द भोजपुरी में ह्रस्व इकारान्त होइये गइल बाड़ेस जइसे माईयेजी के प्रयोग में जामुनि कठवति, बिलारि, आँखि शुद्ध बाड़ेस। इन्हनी के क्रिया स्त्रीलिंग होई। बाकी जब इन्हनी के जामुन, कठवत, बिलार, आँख कइल जाई त क्रिया पुल्लिग हो जाई। एकरा के एह तरह समझल जाउ-
जामुन पाकल बा (पु०) जामुनि पाकलि बाइ/बिया
कठवत भुला गइल (पु)। कठवति भुला गइली (स्त्री)
बिलार बोलता (पु०)। बिलारि बोलतिया (स्त्री०)
आँख दुखाता (पु०)। आँखि दुखातिया (स्त्री०)

(ग) ऊपर के प्रयोग के मोताबिक माईजी के सतुआन निगिचाइल बाइ शुद्ध प्रयोग गलत हो जाई। ऊ शुद्ध-सतुआनि निगिचाइलि बाइ सही होई। जब सतुआन (अकारान्त) रही त क्रिया निगिचाइल बा-सही होई।

(घ) हमरा खोज में अपवादो बा। (जेकर चर्चा भो० शब्दानुशासन में बा।) जेकर सहारा लेके केहू हमरा मत के काटियो सकेला। बाकी हिन्दी, फारसी, अंगरेजी वगैरह शब्दन के भोजपुरी में प्रयोग करत खा भोजपुरी क्रिया के प्रकृति भा सोभाव अइसने बा।

पृष्ट ८ के शेषांक

गइल ? कतना रात बाकि बिया ? "

जानते बाड़ कि नयकी मंत्री मंडल में ऊ नइखन। ओकर टोकल टोकाइल हो गइल। कहल बा, रांवे के मन रहे अखिये खोदा गइल। लौट कर के गांवे गइलन। गाँव घर के बटोर कइलन आ ओकरा के गाँव से बहरा करवा देलन। ....
अतने भर रहीत तब का कहे के रहे।

"मंत्री बन जईती तब लाखो लाख पीढ़ के घर भर दिती बाकि ते सब पर पानी फेर देले। ओकरा भरपाई तोरा से तोर खाल उतरवा लेबे तबो ना होई बाकि जे कुछ तोरा पास बा ऊ देले जो। करबे तं तव भरी दोसर ?"

बकस बिलार मूहगा बांड हो के रहि हे- के भाव चेहरा पर ले के सभा से उठल खा ओकरा के सूना के पी पी. सिंह कहलन आ उनकर आदमी ओकरा के पटक के ओकर ठेपा ले लेलन। ....ओकर बाद का होला ?

"हाईनोट ....मुकदमा ।। ....
बेदखाली....... । मन कुछ देर खाली अड़ गइल रहे बगावत अंकुरे लागल रहे। चारो तरफ देखनी। बुझाइल कि अड़ब, तब अभिन्यू अस घेरा जाइब।

कब तक चुपी रही कबो बोलही के पड़ी। ई बात दोसर भईल कि ज्ञान ना केहू दोसर होखे।

जब तक आदमी पइसा के तरफ देखत रही ओकरा ईसारा पर नाचत रही आदमियत चुप रही। ना त उठा के ब्लास्ट फरनेस मे डाल दी आई जहवाँ से ओकरा लास के सरलो के गंध ना उठी।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दहसत भरल सन्नाटा

● चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह

ज्ञान अभी तक ना आइल रहन। मंत्री जी दसे बजे से आफिस में चक्कर काटत रहीं।

इहवां के केकर साथी ह? सब केहू जानत बा कि अपना अपना फेरा में सब केहू रहेला। अपने बोझ केहू से उठ नइखे पावत, दोसरा के का उठाई?

ज्ञान एम. ए. पास हवन। काम से काम रखेवाला आदमी हवन मक्खन लगावे के हाल ना जानस। पहिले आपूर्ति निरीक्षक रहन। अफिसर से ना पटल, रिजाइन कर देलन। परीक्षा में बइठलन पहिला स्थान पवलन आ आजकाल हमरे सेक्शन में बाड़न।.... आपन बात अपने का कहीं? कहब कि अपने मुँहे मिया मिठू बनत बा। हमहूं अपने लिख लोढ़ा पढ़ पत्थर! अगुठा छाप! सेक्ट्री के स्कूल के हेडमास्टरी छोड़ के आइल बानी।

ज्ञान के आवत देख के अफिस के बाहर गइनी।

'आफिस में मंत्रीजी बानी। अभी मत जा।'

ऊ हमरा के धकिआवत अइलन आ मंत्री जी के आगा जा कर के प्रनाम कर के खाढ़ हो गइलन।

'का नांव ह?'

'ज्ञानेन्द्र।'

'अबगे दस बजल ह?'

हमनी के कलर्क नू हईं। हमनी के हाल रउवा का जानब। सांझे मकान मालिक घर से निकाल देलस तब रात भर समान देखत रह नी -साथी के बरामदा में। भोर बिना खइले कइसे अइतीं?'

'आदाब अर्ज!'

'आदाब। का नवाब साहब? देखत नू बानी?' मंत्रीजी सवालिया नजर से नवाब साहब के देख के ज्ञान के तरफ देखे लगलन। नवाब साहब फाइनास सेक्ट्री हवन।

'हम १५ मान सकिला ५० मिनट ना। रउवे कहीं कि इनकरा के का सजाय देत बानी?'

'ज्ञान। तू तीन दिन देर से अइत

'जी!'

तब एक दिन कवजुवल मिलित

'जा।'

ई कवन दिन ह?

'पहिला।'

'कवनो बात ना। मंत्रीजी धइले बानी। हम छोड़ देब तब कहब कि ई सह दे रहल बाड़न। जा अपना सीट पर बइठ के काम कर। आज कवजुवल ट्रिट होई।

'आई। देखल जाय। रउवा का करत बानी।' कहत मंत्रीजी नवाब साहब के चेम्बर में गइनी तब सब केहू अपना अपना जगह पर बइठ गइल।

घंटी बाजल। काफी के आडर भइल। कप प्लेट खनकल आ ठहाका लागत रहल आ हमार मन ओनहीं टंगाइल रह गइल।

कुछ देर के चुप्पी के बाद जोर से घंटी बाजल। सब केहू के नजर उठ गइल। बाकि ज्ञान के उठ के लपकत जात देखनी तब पीछेपीछे

[बाकी पन्ना ८ पर देखीं]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

७ 'मितवा' निर्माता और निर्देशक जगमोहन भट्ट, गीत- शैलेन्द्र, संगीत- सी०एम० रामचन्द्र।

८ 'नागपंचमी', निर्माता धनुका, गीत-कमला चरण वर्मा कमलेश, संगीत- एस० एन० त्रिपाठी।

९ 'जेकरा चरनवा में लागल परनवाँ', निर्माता और निर्देशक-आदर्श, कथा- माथुर, गीत रमेश पांडेय और बी०एन० मँगल।

१० 'बिदेसिया', निर्माता बच्चुभाई साह, गीत राममूर्ति चतुर्वेदी संगीत और निर्देशक एस.एन. त्रिपाठी।

११ 'संइया से नेहा लगइबे गीत शैलेन्द्र, संगीत गुलाम मोहम्मद, निर्देशक एस. एम. अब्बास।

१२ 'भौजी', निर्माता और निर्देशक- कुन्दन कुमार कथा रंजन बोस, गीत- मजरुह, संगीत चित्र गुप्त।

१३ 'आइल बसन्त बहार', निर्माता और निर्देशक शक्ति सामंत, संगीत-हेमन्त कुमार।

१४ 'नइहर छुटलजाय', निर्देशक देवेन्द्र प्रसाद

१५ 'सीता मइया', निर्माता होमी वाडिया, गीत रमेश पाण्डेय और बी.डी. मिश्रा, संगीत और निर्देशक एस.एन. त्रिपाठी।

१६ 'संइया से भइले मिलनवा', निर्माता माणी-क लाल मेहता और अशु तोष नाग, गीत मुणीन्द्र शुक्ला, संगीत रोबिन चटर्जी, निर्देशक पी.एल संतोषी।

१७ 'बलमा बड़ा नादान', निर्माता राजकुमार कोहिली, कथा बलदेव राजझिगन, गीत कैफी आजमी संगीत हेमन्त कुमार' निर्देशक बलदेव राम झिंगन।

१८ 'सोलहो सिंगार करे दुलहिनिया', निर्माता विश्वनाथ शाहाबादी कथा और गीत मधुकर बिहारी, संगीत बाबु सिंह, निर्देशक रोमनी डे।

१९ 'गंगा' निर्माता कुमकुम ब्रदर्स गीत शैलेन्द्र संगीत चित्रगुप्त, निर्देशक कुन्दन कुमार।

(ख) १९६४–६५ के करीब घोषित आ अपूर्ण फिल्म जेकर कुछ रिल बन के डिब्बा में बन्द होके रह गइल:-

१ 'टिकुलिया तर के बिंदिया', निर्माता मोहनलाल और पी.एस. झा, निर्देशक-सतीश निगाम कथा भागवत शरण सिंह, संगीत गुलाम मोहम्मद, गीत उमाकांत वर्मा विज्ञापन Sunday Searchlight, Aug. 1964, page 45

२ 'गोरी तोरे नयना', निर्माता पी.एल. महंथा, निर्देशक और कथा अमर सौरभ, गीत उमाकान्त वर्मा, संगीत जगदीश विज्ञापन उर्वशी १९-६४, अंक ३५, पृ० ८।

३ 'अंगना भइल बिदेस' निर्देशक पी.एल. संतोषी कथा रामानन्द, गीत राजेन्द्र प्रसाद सिंह, संगीत सी. रामचन्द्र विज्ञापन Sunday Searchlight. Aug., 1964, page 4।

४ 'घुंघट में सिसके गुजरिया' निर्माता लालबहादुर सिंह आहत, निर्देशक पी.एल. संतोषी, कथा और गीत सरोजेश गाजीपुरी संगीत मुणीन्द्र शास्त्र विज्ञापन रसनटराज, १९६४, अंक २३ पृ० ११

५ 'सास, ननद, भउजाई', निर्माता-सी.के. बोथरा और बी एस. वारिय निर्देशक आनन्द संतोष और एल. दिवाकर, कथा-शैलेशचन्द्र उपाध्याय गीत सरोजेश गाजीपुरी, सगीत मुनिन्द्र शुक्ला, विज्ञापन रसनटराज, १९६४, अंक २३, पृ० ११।

६ 'सांवर गोरिया' निर्माता आर.एच. अमरेश, निर्देशक पी.एल. सतोषी, गीत लक्ष्मण शाहाबादी, विज्ञापन रसनटराज १९६४ अक २३ पृ० ११।

७ 'श्याम से नेहा लगइबे' निर्माता असीम कुमार और रितविक घटक, निर्देशक-रितविक घटक कथा-राज कुमार मेहरोत्रा संगीत रविशंकर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विज्ञापन-Sunday Searchlight. Aug. 1964. page 4।

८ 'संततुलसी' (ब्लैक व्हाइट], निर्माता दत्ता कदम, निर्देशक समर चटर्जी, कथा-जी.डी. माडगुलकर, गीत धेनुखधारी प्रसाद, संगीत बसंत देसाई, सूचना देयक- चित्रविहार, इन्टर प्राइजेज. ठाकुर बारी रोड़ पटना।

९ 'अँगना में बाजे शहनाई' निर्माता निर्देशक कथा ए. पारुई, गीत धेनुखधारी प्रसाद, संगीत-इकबाल कुरेशी, सूचना देयक- चित्र विहार इन्टर प्राइजेज, ठाकुर बारी रोड, पटना।

१० 'जोगन' निर्माता- निर्देशक- कथा-डी.एन. द्वेश, गीत बी.एन. मंगल, संगीत-एस.एन त्रिपाठी सूचना देयक-चित्र विहार इन्टर प्राइजेज, ठाकुर बारी रोड, पटना।

(ग) १९६७ में बनल वृत्त चित्र जे केन्द्रीय शिक्षा विभाग द्वारा खरीदल गइले आ देश के जन संपर्क विभाग द्वारा प्रति गाँवे-गाँव देखावल जा रहल बाः-

धरती के पुकार (धरती की पुकार) जेमे ब्लोज के कैमरा मैन जौन फ्रैंकलिन के बिहार के अकाल पर आधारित ५०० स्टिल छाया चित्र बा, तीनगो भोजपुरी गीत उमाकांत वर्मा के संगीत जे.पी. कौशिक के बा. गीत गवले लोग बा भूपेन्द्र आ सुलक्षण पंडित आ निर्देशन देले बाड़न ख्वाजा अहमद अब्बास। विज्ञापन Search light, July 1967।

(घ) १९७४ से प्रारम्भ निर्माणाधीन फिल्म जेकर कुछ शूटिंग आ रेकौडिंग हो गइल बा आ जे पूरा होखे के क्रम में गतिशील बाः-

१ 'सिन्दूर शहनाई' गीत- कथा -पट कथा संवाद -प्रो० उमाकान्त वर्मा, संगीत-प्रसिद्ध शहनाई नवाज विसमिल्ला साहब, निर्देशक एस.एन. त्रिपाठी, निर्माता बच्चा-भाई पटेल।

२ 'तुलसीदास' निर्माता—अक्षयवर दूबे, कथा-संगीत-निर्देशक -एस.एन. त्रिपाठी, गीत-भोलानाथ गहमरी आ बी.डी. मिश्रा, संवाद-अमरनाथ चतुर्वेदी आ धेनुखधारी प्रसाद, विज्ञापन-Trade Guide. Volume XX.NO51. Page No 6, 12 Oct 74

३ 'जहवा बहे गंगा के धार' निर्देशक आ कहानी श्याम कौशल, संवाद और संगीत एस.एन. त्रिपाठी, गीत राम मूर्ति चतुर्वेदी आ बी.डी. मिश्रा, निर्माता – आर. सी. गुलेटिया आ आर.के. देसाई आ एन०सी. दास, विज्ञापन-Trade Guide. Volume XXIII, No, 23rd Oct 1976।

(ङ) १९७६ आ १९७७ के घोषित फिल्मः—

१ 'नौटकी' गीतकार अंजान, निर्माता चांद, निर्माता-सूरज फिल्म्स, विज्ञापन Trade Guide, Valume XXll, NO 51, 16 Oct 1976।

२ 'जागल देश हमार' निर्माता- डी. ठाकुर, निर्देशक नरेन्द्र त्रिवेदी, कथा प्रतिमा सिंह संगीत प्रकाश शर्मा, गीत आ पटकथा-रमेश चन्द्र पाण्डेय,-विज्ञापन- Trade Guide, Valume xxlll, No 2,30th oct 1476

३ 'बलम परदेसिया' निर्माता-निर्देशक नजीर हुसैन, संगीत श्याम सागर विज्ञापन— Film Informatiun, Feb, 1977।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

४ 'सेनुर' भोजपुरी समाचार अक्टूबर 1976।

५ 'गंगा घाट' निर्माता-निर्देशक संगीत-नादिया आ सरवन, विज्ञापन Trade Guide, Volume XXIII, No. 23 rd oct 1976।

(च) १९७७में प्रदर्शित होखेवाला फिल्म जेकर विज्ञापन पत्र आ रेडियी से नियमित हो रहल बा:- 'दंगल' निर्माता-बच्चू भाइ साह, निर्देशक रतिकुमार, संगीत नादिम आ सरवन कथा-संवाद-पटकथा राजपति, मुख्य कल्पकार- सुजितकुमार प्रेमनारायण इत्यादि।

लागता १९७४ से प्रवाहित भोजपुरी फिल्म निर्माण के धारा में अब सुखार ना आई, काहें कि अब रोजे कुछ ना कुछ घोषणा के आसार सुग बुगात नजर आवत बा। पर एगो खराबियों नजर आवत बा। भोजपुरी भाषा के ना जाने वाला लोग के रुचि के उत्पन्न भइल। इहे भइल रहे जेकरा से ६४-६५ के बाद सीधे ६७ में एगो वृत्त चित्र बनल आ फेर ओकरा बाद १९७४ ले चुप्पिये छाइले रहले। भोजपुरी के बहरुवा ऊ लोग के भोजपुरीफिल्मों के निर्माण के क्षेत्रमें जागले रहै के पड़ी। एहतरे इ कहे के हमरा हिचक नइखे कि भोजपुरी फिल्म निर्माण के क्षेत्र काफी उर्वर बा आ एकरो माध्यम से भोजपुरी साहित्य के श्री वृद्धि अवही आउर होखी।

—हाजीपुर; वैशाली

कुक्कुर—युग (हास्य व्यंग)

● लक्ष्मण पाठक 'प्रदीप'

बदल गइल दुनिया के नकशा, नया रुप सब आगे आइल।
हाथी घोड़ा मात भइल, अब कुक्कुर सब के भाग फुलाइल।
बड़का चोरन के पकड़े के भार परल कुक्कुर का ऊपर।
आगे—आगे कुक्कुर चलले, पाछे पुलिस बनल मुँह दुब्बर।
सब पार्टी में कुक्कुर अगुआ, असली नेता भइले भकुआ।
जेकरा भीरी कुक्कुर नइखन, ओकरा मारि गइल बा ठकुआ।
अब चुनाव दंगल में कुक्कुर, देखी पीटत बाड़े ताली।
जे पुरजोर गिरावे रोटा, ओकरे मुँह पर दौड़े लाली!
भोंकत कुक्कुर का मुँह में सब लोग गिरावत बाटे रोटी।
डंडा खात रहे जे घर-घर ओकर लाल भइल अब गोटी।
जे ना रहे घाट ना घर के ऊ दौड़ल रॉकेट का ऊपर।
चाटत रहे जूठ पत्तल जे ऊ चाभत रस गुल्ला डटकर।
विदया विनय आजु सब छूछा चानी काटत बाड़े कुत्ता।
कइसन युग ई आइल बाटे लागल बा विचार में लुक्का।

—कटया, गोपालगंज

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

छोट कथा

गोहार

●रजनी कान्त 'राकेश'

न्दिवासा में पार से गइयन के हारि चराउर में आइल रही सँ। गांव ऊपर माथ मारे वाला बाबू बेमिसाल सिंह के खेत में लहलहात मकई देखि के, भुखाइल गइयन का पेट के अगि आउर धनकि गइल।

हरिअर-हरिअर आल्हर पनखी आँ डांट फटाक् फटाक् अवे पर टूटि-टूटि, कचाक्-कचाक् दांत पर दबाए लागल। फेर ओइसन रसगर, अमृत के खान मला कइसे छोड़ल जा सकत रहे। अंडे-पोठी सम टूटि परल रहे ओह लूटि में। चर-चर के आबाज सगरो अंत्रजे लागल।

अतने में बाबू साहेब के टंडइल लउरि भांजत चरवाहन का सात पुहुत से नाता जोरत आ उन्हन के उद्धार करत लपकल लउकल। फेर का मजाल कि अहीर के अदना छोकरा चरवाहा लोग ओहिजा थमि जाय। देखते मातर धांय-धांय नदी में कूदि गइले सँ आ टंडइल के पहुंचत-पहुंचत में ओह पार अरार प पैंतरा भांजे लगलन सँ।

"ऐ ढीक, लुच्चा, चोरी आ सीना जोरी दूनों! तू लोग के ई मजाल कि हमरा के कउँचाव आ बिराव अच्छा सरऊ, अब एगहू गाई लवटि गइलि त बिल्लर सिंह हमार नांव ना।'

एने गाइ छुटि के सभ सोपह कइले जात रही सँ। बिल्लर बेलगावत-बेलगावत परेशान हो गइल। एने से खेदे त ओने जासँ आ ओने से खेदे त एने आवसँ बाकिर छोड़े के नांवे ना ल सँ। चरत चरत सँब सम अघा गइली त बिल्लरा एक-एक कइके सम गइयन के मचान में बान्हे लागल, बाकिर एगो-दूगो होखसँ तब त! ऊ त कम से कम सइ गो के हारि रहे।

अतने में ओह पार से 'ही-ही, ही-ही' के आवाज आवे लागल आ गाइन में भगदड़ मचि गइल। फेर का रहे मचान सहित उखारत-पखारत लेले देले बांय-बांय चिचियात सभ नदी का ओरि भागि चलली सँ। घेरत-घेरत जब परले हो गइल त बिल्लरा खीसी बिखिया गइल आ उन्हन के पीठ सटाक्-सटाक् रुआ लेखा धूने लागल।

जबले ओकरा होस आवो गाइ नदी पार क गइल रही सँ।

बहुत दिन बाद आजु एक बेरि फेरु अपना भूखि-पियास के चिन्ता-फिकिर छोड़ि के चरवाहन के गोल चिक्का खेले में मसगूल रहे काहें कि उन्हन के घेरि के गाइन के हारि चैन से पगुरावति रहे, रम्हाति रहे। आजु केतना दिन बाद भर चारा जे भेंटाइल रहे।

—गण्डक नहर अवर प्रमण्डल
तुरकवलिया, मोतिहारी

चारो तरफ पैदा कर नफरत दहेज के

●चौधरी कन्हैया प्र0 सिंह

सर से टलल हा आज मुसीबत दहेज के !
फिर से पड़े उठावे ना जहमत दहेज के !!

कोंढ़ी बहुत, बहार के आंगन ना जा सकल।
असमय रहे रुला गइल किल्लत दहेज के !!

अइसन बहल बयार कि दिवार गिर गइल।
हंस-हंस के मन लुभा रहल आदत दहेज के!

पनही नसीब पांव के जेकरा ना हो सकल।
मांगत रहे ऊ शान से दौलत दहेज के !!

अइसन जहर हवा में घुलल रहे 'बशर'
आन्हर बहीर बना गइल सोहरत दहेज के !

इलम हुनर जगत के मुरखाब हो गइल।
चारो तरफ पैदा कर नफरत दहेज के !!

—टिकरी, गया, बिहार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

With The Best
Compliments
Of

General Electrical Works

MILL AREA, SAKCHI
JAMSHEDPUR-831001

With Best Compliments Of :

JAMSHEDPUR MOTOR ACCESSORIES STORES

Post Box No. 31, Main Road, Bistupur, Jamshedpur-8 3 1 0 0 1

FOR YOUR REQUIREMENTS OF GENUINE TATA DIESEL SPARE PARTS
LOCAS TV SPARE PARTS, BATTERIES, ESSO PRODUTS
AND OTHER ACCESSORIES.

Phone : 3 7 8 1 Gram : PARIKHS

With the best compliments from :

BIHAR GENERAL AGENCY

BISTUPUR MARKET
JAMSHEDPUR-831001

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

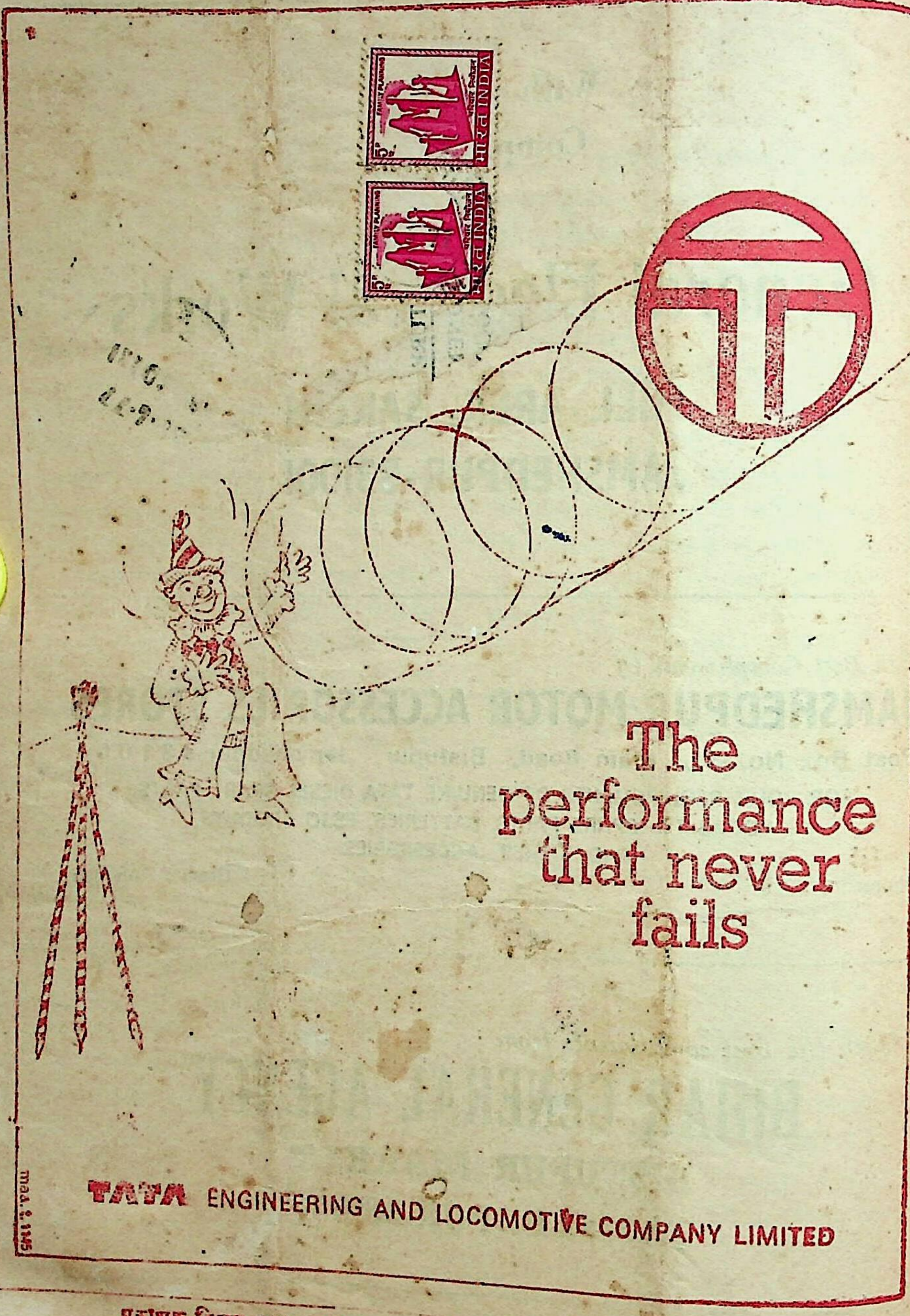

प्रकाशक विनय कुमार भारद्वाज, मुद्रक [illegible] जमशेदपुर।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ललकार

भोजपुरी मासिक पत्र

बरिस — २ | अगस्त-अक्तूबर १९७३ | अंक-११, १३

सम्पादक–डा० बच्चन पाठक 'सलिल'

प्रकाशक–विजय कुमार भारद्वाज

अध्यक्ष–राम बचन तिवारी

सरायकेला अनुमंडल भोजपुरी समाज

कार्यालय:- १४१/२-२ रोड नं० १३ आदित्यपुर-१

जमशेदपुर, सिंहभूम [बिहार]

एक अंक के ५० पइसा

साल भर के—६-०० | जीवन भर के १०१-०० | एह अङ्क के एक रुपया

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

With compliments

from :

HOTEL NATRAJ
JAMSHEDPUR-1.

भोजपुरी समाज आ ललकार

के

हमार हार्दिक शुभकामना

एस. डी. सिंह
एण्ड
कम्पनी
कन्ट्राक्टर्स, जमशेदपुर

भोजपुरी समाज आ ललकार

के

हमार हार्दिक शुभकामना

मैनेजर खान एण्ड संस
कन्ट्राक्टर्स, घातकीडीह

जमशेदपुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आपन बात

डा० सर जार्ज ग्रियर्सन के मुताबिक "भारत में सभ्यता के प्रचार करे वाला दूगो जाति बा। एगो बंगाली दूसरा भोजपुरिया। बंगाली अपना कलम से जवन काम कइले, भोजपुरिया अपना लाठी से एह काम

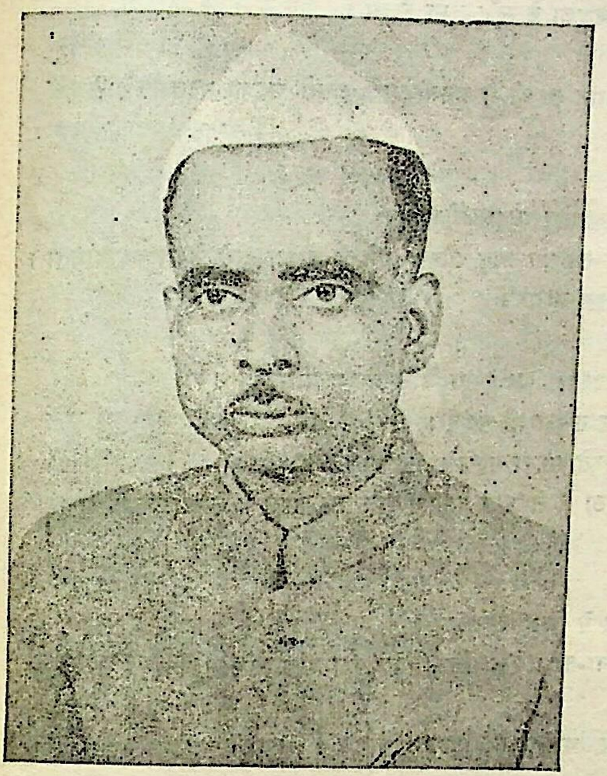

में सफलता प्राप्त कइले"। भोजपुरी लोगन में राष्ट्रीय भावना आउर देश प्रेम सबसे अधिका हो ला। भोजपुरिया जवान आजादी के लड़ाई से लेके आज तक जब-जब देश के दरकार पड़ल अगिला लाइन में रहले। आजो सेना-फौज, पुलिस आउर सुरक्षा काम में भोजपुरिया जवान सगरो आगे ही बाड़े।

लेकिन सरकार आउर नेता लोग भोजपुरियन के सही मांग पर आज ख्याल ना कइले। जवन उचित आउर बहुत दिन से पेंडिंग बा। आज ललकार के ललकार बा :—भोजपुरी भाई लोग अपना मांग खातिर सरकार पर दबाव देव। सरकार के झुकाओ। तब मांग मिली। राज नेता आउर भाषा विद् लोगन के सहयोग के कामना बा। (१) साहित्य अकादमी भोज-पुरी भाषा को मान्यता दे (२) संविधान द्वारा अष्टम् सूचि में भोजपुरी जोड़ल जाय (३) लोक सेवा आयोगन के परीक्षा में भोजपुरी के ऐक्षिक विषय रखल जाय (४) भोजपुरी विश्वविद्यालय के स्थापना कइल जाय आउर बिहार-उत्तर प्रदेश के विश्वविद्यालय में एम० ए० तक भोजपुरी के पढ़ाई कइल जाय (५) त्रिभाषा सूत्र के मुताबिक प्राइमरी स्तर से भोजपुरी के पढ़ाई जइल जाथ (६) भोजपुरी क्षेत्र में रेडियो स्टेशन के स्थापना कइल जाय। वर्त्तमान पटना, वाराणसी गोरखपुर से भोजपुरी प्रसारण में समय के वृद्धि कइल जाय। (७) भोजपुरी साहित्यकारन के सरकार अनुदान देहल जाय अपने समन के सहयोग के आभारी बानी। जय भोजपुरी।

अपने

रामवचन तिवारी

अध्यक्ष

सरायकेला अनुमंडल भोजपुरी समाज

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एगो पा-भर कथा

अनबूझ

—हिमांशु रंजन

बगइचा में आम के डाढ़ी पर एको लइकी बइठल रहे। एगो लइका जाने केने से आइल आ गँवे से चढ़ के ओकरा से सट के बइठ गइल। लइकी ओठ बिजुका के मुँह घुमा लेलस।

—आखिर बात का ह ?

—आखिर इ चाल कइसन ह कि कवनो जबान लइकी से अनसोहातो कवनो लइका सटल फिरे ?

—बाकिर लइको त जवान बा ?

—होई।

—आ ऊ तींके तरे जानता जे लइकी काहे खातिर आइल बीआ।

लइकी नाक-भौं सिकोड़ लेलस। गुरसुसा के तकलस जानू फौरन जाने के चाहत होखे जे ऊ का जानता।

—लइका के जाने ऊ लइकी साग खोंटे आइल बीआ।

—मियाँ बुझले पियाज।

—अाछा, ओ लइकी के भइस काल्हे बिआइल। ऊ फेन्सा ले के आइल बीआ।

—हुँह। लइकी भितरइले मुसकाइल। फेर गंभीर हो गइल।

लइका थोड़े देर मुड़ी खजुअवलस। फेर जुरते अगरा गइल।

—ओ हो फजीरे ऊ लइकी दोकानी से मीठा ले ले जात रहुए। गुलगुला चोरा के ले आइल बीआ।

—ऊहूँ।

—तब ?

लइकी दाँते अँगुरी काटत रहे। बड़ी जोर से खिलखिलइलस।

—ठीक, केना के बजका ले............ना-ना। ऊ अँढ़ऊल के फूल वाला रूमाल बना के ले आइल बीआ। ओकरा एक-ब-एक इयाद परल।

—वाह रे लाल बुझक्कड़। लइकी हाथ चमका के रिगावे लागल। लइका सठिया गइल। फेर लिलार सिकोड़ के लाज दाब देलस।

—तब त, साफ बात बा—पेआर करे आइल बीआ।

लइकी झप से ओकरा गरदन में आपन दूनू बाँह डाल देलस। तनी मुसकइलस। लइका गच्छ हो गइल। फेर ऊ ऊपरे से ढाह देलस।

—बस......?...??.......??? लइकी अगिया गइल रहे.........लुच्चा ! डोम ! बदमाश ! मुँह देख, मुँह ! ......ऐनक ना होखे त ठहरे इनार बा, झाँक ले !

लइकी डाढ़ी से लचक गइल आ गरियावत गाँव कियोर बढ़ गइल। खीसी तलमलाता पसेना से लदफद। चिनगारी फेंकत।

लइका के कवनो खास चोट ना आइल रहे। बाकिर अपमान से गर के धूक ले सूख गइल रहे। ओकरा मन में आइल जे ऊ ओही इनार में डूब के मर जाव। ऊ मुरियाइले उठलस।

बाकिर ओकर एगो बगली भारी रहे। लाल अँढ़ऊल के फूल वाला रूमाल झाँकत रहे। घिंचलस, ह ओमे से गुलगुला, बजका आ एगो फेन्सा के पुड़िया गिरल। लगले ओकर हाथ दोसरका बगली पर गइल। ओमे मुट्ठी भर ताजा बूँट के फुँलगा धइल रहे।

शंकर भवन, दहियावाँ
छपरा (बिहार)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी सेवी संसार :—

डा० राम विचार पाण्डेय

पाण्डेय जी के जन्म सन् १९०० ई० में बलिया जिला में भइल रहे। एह घरी जतना भोजपुरी-साहित्यकार लोग जीयत बा, ओह में इहाँ के सम से जेठ बानीं, बाकिर देखि के केहू साठ से अधिक के ना कहि सकेला।

पाण्डेय जी के अतना सतमेझरा पढ़ाई दुनिया में बुझला अउरु केहू के ना होई। इहाँ के एम० ए० (हिन्दी) नागपुर विश्व विद्यालय, एल० एल० बी० (गोरखपुर विश्वविद्यालय), त्रिपगत (कलकत्ता), आयुर्वेद मार्तण्ड (काशी पण्डित सभा), एल० ए० एम० एस० (कलकत्ता) आ एम० बी० बी० एस० (बिहार) के पदवी आ डिग्री सभ से विभूषित बानीं।

'साठा त पाठा' के कहावत चरितार्थ करत पाण्डेय जी ६९ (उनहत्तर) बरिस के उमिर में डाक्टरी (एम० बी० बी० एस०) दरभंगा मेडिकल कालेज से पास कइनीं। ई दुनिया में रेकार्ड बा कि अतना ढेर उमिर में केहू डाक्टरी पास नइखे कइले। एकरा पहिले इंगलैंड के डाक्टर सैम्पशन के रेकार्ड रहल हा जे ६५ (पैंसठ) बरिस में कइले रहले। डाक्टरी छोड़ि के बाकी सभ पढ़ाई अपना स्वाध्याय से भइल हटे।

ईहाँ के १९४२ में भारत-छोड़ो आन्दोलन में खूब सक्रिय भाग लीहनी।

भोजपुरी में 'जीवन-गीत', 'आसा', 'बिनिया-बिछिया' (तीनों काव्य) आ 'शहीद मंगल पाण्डेय' (नाटक) चार गो पुस्तक प्रकाशित हो चुकल बा। जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य परिषद् सन् १९७१ में अभिनन्दन कईलस।

पाण्डेय जी के जीवन भोजपुरीमय हटे। लाट साहेब (राज्यपाल) लोगनि से भीं ईहाँ के भोजपुरिये में बतियावेनी।

हमार मनौती बा कि काली माई डाक्टर साहेब के कम से कम एक सौ बरिस के उमिर देसु। मातृभाषा भोजपुरी के इहाँ से अभी ढेर आसरा बा।

डाक्टर साहब के वर्त्तमान पता
स्टेशन रोड, बलिया (उत्तर प्रदेश)

'ललकार'

'भोजपुरी जनपद' में 'भोजपुरी' भेंकरत, कायर कपूतनि के कोटि धिरकार बा।
चारो ओर फइलल 'अंजोर' बा 'अंजोरिया' के, आँख मूंदि लिहलें से लागत अन्हार बा॥
'श्रद्धानन्द' 'माटी के गमक' देख 'टटका' बा, झाँकत 'बिहान' अब होत 'भिनसार' बा।
बा ना ई 'सनेस' के 'लुकार' हिजड़नि बदे, जेकरा में लहू, ओकरे के 'ललकार बा॥

श्रद्धानन्द पाण्डेय
पो० - बोकारो थर्मल ८२९१०७
जिला गिरीडीह (बिहार)

'दुपहरिया' पढ़ीं पढ़ाईं

भोजपुरी परिषद भाटपार रानी, जिला देवरिया, उत्तर प्रदेश, के मंत्री श्री कुबेर नाथ मिश्र "विचित्र" के सम्पादन में "दुपहरिया" प्रकाशित होखे जा रहलि बा। भोजपुरी के प्रेमी बड़का सबके आशीर्वाद आ अवरी सबके सहयोग चाहीं।

—सम्पादक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पुस्तक समीक्षा

पुरइन—(भोजपुरी-कविता संग्रह)—कवि :- श्री शारदानन्द प्रसाद, बी० काम, डिप-इन-एड, प्रकाशक-ग्रन्थरत्नम २ ईस्ट गार्डीनर रोड, पटना-१, पृष्ट संख्या ४८, दाम दू रुपया।

एह संग्रह में शारदानन्दजी के २८ कवितन के संग्रह बा।

बानगी के तौर पर—परेला सुरतिया इयाद, सावन भदइग्रा के रतिया अन्हरिया, मन में बसन्त समाइल, कवना बिदेसवा से उड़ि-उड़ि आवे, सुतल सनेहिया जगावे मिनुसहरा, आधि रनिया कुहूके कोइलिया, दुलम भइल आँख के लीन, ए नयना के बयना केहूना बूझे, इ त मध के छाता ह चाट, सखिआ धीरे-धीरे बहुआ उतार, लावेली काकी बझावेली काकी बाड़ी एगो मरदवा के दूगो मेहरी वगैरह कविता एक से बढ़ के एक बा। ई संग्रह, भोजपुरी कविता संग्रह के एगो कड़ी कहा सकेला। नया कबिअन में शारदानन्द जी के उच्च स्थान बा। सुन्दर छपाई जिल्द बढ़िया बा।

(२) चकोह (भोजपुरी कविता सगह) कवि:—श्री श्रद्धानन्द पाण्डेय, बी० एम० सो०, एम० ए० (द्वय) बी० एल०, रिसर्च-स्कालर, प्रकाशक:—रचना प्रकाशन, बलिया (उत्तर प्रदेश), पृष्ट सख्या-४८, कविता संख्या ३३, दाम एक रुपया।

प० राम बचन तिवारी

PHONE : 3329 GRAM : SONTHALIA

With Best Compliments :

Ramrichhpal Chothmal

4 DAIGONAL ROAD, BISTUPUR

Jamshedpur. (Tatanagar S. E Rly)

दिवाली के शुभकामनाएँ

मुफतलाल ग्रूप के

अधिकृत बिक्रेता

★
★

टेक्सटाइल कारपोरेशन

मेन रोड, जमशेदपुर

WITH BEST COMPLIMENTS :

★
★★
★★★
★★

SODA FOUNTAIN

BISTUPUR JAMSHEDPUR

IT IS OUR SPECIALITIES
FOR . SUPER CHINESE FOOD AND
DELICIOUS INDIAN DISHES
WITH BAR SERVICES

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी भासा : मान्यता के कुछ सवाल

—कृष्णा नन्द कृष्ण

मैथिली के साहित्य अकादमी द्वारा मान्यता मिलला के बाद से हमरा मन में विचारन के लहर उठत गिरत रहेला। आखिर भोजपुरी के साथे ई सौतेला व्यवहार काहे ? आखिर भोजपुरी भाषा में कवन कमी बा जेकरा चलते एकर उपेक्षा आज ले हो रहल बा। हमरा नजर में एकर एगो साफ कारण बा कि हिन्दी के विद्वानन के नजर में भोजपुरी हिन्दी के एगो बोली के रूप में जानल मानल गइल। दोसर ई कि सब जगह भोजपुरी खातिर 'पूरबी' के प्रयोग हिन्दी के विद्वान लोग जान बूझ के कइल। केहू ई कहे के ना चाहल कि भोजपुरी एगो अलग स्वतंत्र भासा ह। ई हिन्दी के उप बोली ना ह। ई शायद हिन्दी विद्वानन के पूर्वाग्रह पीड़ित भइला से भइल। दोसर कारण कुछ लोग ई बतावल कि भोजपुरी के कवनो साहित्य नइखे एह से एकरा के भासा के दरजा दिहल ठीक नइखे। एही सब के चलते भोजपुरी के आज तकले मान्यता ना मिलल।

अइसे भासा विज्ञान के विद्वानन के अनुसार भासा ओकरे के कहल जाला जेकरा जरिय समाज के लोग अपना मन के भाव आ विचार के अदला बदली एक दोसरा से लिख के भा बोल के करेला। एकरा अनुसार भोजपुरी भासा के देखल जाव त ई साफे बुझाये लागत बा कि भोजपुरी के साथे अन्याय हो रहल बा। काहे कि भोजपुरी के प्रयोग लोगन के बीच में विचारन के अदला बदली सातवीं सदी से पहिले से होखे लागल रहे जेकर स्पष्ट प्रमाण सिद्ध संतन के साहित्य में मिलेला। जेकरा के लोग हिन्दी के प्राचीन रूप मानल। आ भोजपुरी के लोग उपेक्षा कइल।

सिद्ध संतन के गीत आ दोहन के बारे में हिन्दी के विद्वान डॉ० राम खेलावन पांडेय 'हिन्दी साहित्य का नया इतिहास' के ६३वां पेज पर लिखले बाड़न— "चर्यागीतियों का भाषा के कतिपय प्रयोग भोजपुरी में अब तक प्रचलित हैं जिनमें—भइलि, गइलि पति-आइ, कइसे बोलई आदि उल्लेख्य हैं।" ओही तरह से स्व० आचार्य शिवपूजन सहाय जी 'हिन्दी साहित्य और बिहार' के प्रस्तावन में लिखले बानी—"आठवीं से तेरहवीं शती तक के समय में कुछ विद्वानों के मतानुसार एक मात्र 'चौरंगीपा' ही गद्यकार दृष्टिगत होते है, जिनकी 'प्राण संकली' नामक गद्य रचना पिण्डी के जैन ग्रंथ मण्डार में सुरक्षित है। उनके गद्य में भोजपुरी भाषा की झलक मिलती है।"— ऊपर के विद्वानन के विचार गंगा में गोता लगा के देखला पर साफ बुझाता कि भोजपुरी के लिखित रूप अउर भाषा के साथ साथ उपलब्ध बा, जवना के कुछ लोग मगही, मैथिली, बंगला आ कुछ लोग हिन्दी के प्राचीन रूप मानल।

भोजपुरी कवनो खास जिला भा स्थान विशेष के बोली नाह बल्कि ई बिहार आ उत्तर प्रदेश के चउदह जिला आ भारत के बाहर नेपाल, मॉरिसस, ब्रिटिस गायना अउर फीजी द्वीप में बसे वाला लोगन के भाषा ह। एह में लोक साहित्य के भंडार अतना भरल-पूरल बा जतना दोसरा भासा में ना होखी। इहे ना एह भासा के आपन मुहावरा, कहावत आ शब्दन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के अभिव्यक्ति के अतना जोरदार असर बा कि ओकर उपेक्षा ना कइल जा सके। एह सब के बाद भी भोजपुरी के मान्यता ना देल एकदम अनुचित बा।

भोजपुरी के साहित्य के भाषा ना माने के पहिला कारण विद्वान लोग बतावेला लिखित साहित्य के अभाव, जे बिलकुल गलत बा। भोजपुरी के साहित्य त सिद्ध संतन के साहित्य के साथे साथे उपलब्ध बा। आजु काल्ह जतना तेजी से भोजपुरी में साहित्य रचल जा रहल बा ओतना तेजी से शायद कवनो भाषा में ना भइल होखी।

साहित्य के कवनो अईसन विधा नइखे बांचल जवना उपर भोजपुरी लेखकन के कलम ना चलल होखे। जे लोग बिना पढ़ले-लिखले ई कह देला कि भोजपुरी मे पढ़े लायक किताबे नइखे। ओह लोग के हम कहल चाहत बानी कि उ लोग तनी आपन आंख खोलि के देख सा भोजपुरी में कहानी, कविता, नाटक, उपन्यास, स्वगत छाया नाट्य एक पात्र कला नाटक, एकांकी, संस्मरण, यात्रा संस्मरण, रिपोर्ताज खंड काव्य, महाकाव्य, प्रवंध काव्य निवंध आ आलोचनात्मक ग्रंथ के काफी किताव निकल चुकल बाड़ी स। किताबन के अध्ययन से साफ पता चलत बा कि कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास त अतना बढ़िया बढ़िया लिखा चुकल बा आ लिखात बा जवना के कवनो भषा के किताबन के साथे रखल जा सकेला।

कुछ लोग के नजर में दोसर कारण बा लिखित व्याकरण के अभाव। हम एह से भी सहमत नइखीं। पहिला बात त ई बा कि कवनो भासा के व्याकरण पहिले ना बने पहिले साहित्य के रचना होला। व्याकरण त साहित्य के पिछलगुआ ह। साहित्य के पाछे-पाछे व्याकरण अपने बनत जाला। अइसे भोजपुरी के लिखित व्याकरण भी बा, जवना में श्री रास बिहारी राय शर्मा आ डा० उदय नारायण तिवारी के भोजपुरी भाषा आ साहित्य के दूसरका खंड में भोजपुरी के पूरा व्याकरण बा।

जब भोजपुरी सब तरह से समर्थ हो के साहित्य अकादमी के सामवे अपना मान्यता खातिर गइल। त लोगन के विश्वासे ना होखे कि भोजपुरी अतना जल्दी अतना समर्थ कइसे हो गइल। बाकी अब लोग कर का सकत रहन। तब भोजपुरी के बिचाराधीन राखल गइल।

विचाराधीन रखला का बाट षड़यत्र रचाये लागल। हिन्दी के हिमायती विद्वान डॉ० धीरेन्द्र वर्मा एगो लम्बा चौड़ा लेख लिखन जवन धर्मयुग में छपल। ओह लेख में वर्मा जी आपन विचार देलीं कि क्षेत्रीय भाषा के मान्यता दे दे के हिन्दी के कमजोर बनावल ठीक नइखे। एह से हिन्दी के प्रचार प्रसार पर काफी असर पड़ी। जवन एकदम गलत बा। भोजपुरी के मान्यता मिलला से हिन्दी के कवनो घाटा नइखे बल्कि हिन्दी के भंडार भरवे करी।

अध्ययन कइला से साफे झलकत बा कि भोजपुरी एगो अलग स्वतंत्र भासा बा। एकर आपन मजिगर साहित्य संस्कृति आ रीति-रेवाज बा। एह सब बात के ध्यान में रख के साहित्य अकादमी के विचार करे के चाहीं आ न्याय करे के चाहीं। कई एक साल से भोजपुरी चन्द्रमा के अकादमी रूपी राहु ग्रसत बा, एह साल भी ग्रस ले लस अगिला साल के तइयारी कर रहल बा, अइसन अबकी ना होखे के चाहीं। हम भोजपुरी के सेवक लोग आ भोजपुर प्रदेश में जनम लेवे वाला भाई लोग से ई निहोरा करत बानी जे जहवाँ होखे ओहिजे से भोजपुरी के प्रचार प्रसार के कोसिस करे।

लोक स्वास्थ्य अवर प्रमण्डल
पानी टंकी, डालटेनगंज।

★ भोजपुरी के बढ़ती खातिर ललकार पढ़ीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी

गज़ल

हम हीत देखि लेली, हम मीत देखि लेलीं
अपना सङ्‌े करम के अनरीत देखि लेलीं
सभ कुछ भइल, रहल ना मन के मुराद बाकी
हम हार देखि लेलीं, हम जीत देखि लेलीं
अब हो गइल सहाउर दुइए घरी में देहिया
हम धाम देखि लेलीं, हम सीत देखि लेलीं
हमरा भिरी बखानी अब का सवाद केहू
हम मीठ देखि लेलीं, हम तींत देखि लेलीं
सुख - दुख कबो बुझाइल अधिका ना कम जगत में
के दीत देखि लेलीं, के लीत देखि लेलीं
चुपचाप जे कहाइल ऊना कबो सुनवली
अबले इहाँ गवाइल जे पीत देखि लेलीं
अरज हमार सुननिहार इहाँ केहू ना
तरज हमार बुझनिहार इहाँ केहू ना
डगर - डगर में अनेरे हम छिछिआईला
गरज हमार पुछनिहार इहाँ केहू ना
नजर से ना मिले नजर जहाँ हम जाईला
नगर में नेह रखनिहार इहाँ केहू ना
जहर के घोंट क़ंठ में दबा के राखीला
मरम के चोट लखनिहार इहाँ केहू ना
लहर उठल करे करेज में त बोली ला
कहल हमार सहनिहार इहाँ के हूना
सरद-गरम के बीच कइसे काँपी-हाँकीला
रहनि हमार कहनिहार इहाँ केहू ना
जहँवाँ बूड़ल सभे ऊ किनारा मिलल
केहू बूझल कहाँ जे इसारा मिलल

★ "ललकार" के ग्राहक बनीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रहितों कहिए ना गिरि के भइल चकनाचूर
थाम्हि ले ले बा अइसन सहारा मिलल

कबहूँ निकसे ना पावल बदरिया से चान
आजु अचके में चमकत सितारा मिलल

अइली सभ दिन सराहत इहे आपन भाग
ना अङारा के हमरा फुहारा मिलल

भलहीं जोहल करे केहू गुदरी में लाल
जोति हीरा के हमरा अन्हारा मिलल

अब ना बाकी रहल एको जिनिगी के साध
ई नजरिया के निभरम नजारा मिलल

अविनाश चन्द्र विद्यार्थी
शिवाजी पथ, यारपुर
पटना-१

भोजपुर के धरती गावेले

—शारदानन्द प्रसाद

भोजपुर के नेव बहुत पुरान हृडा विहार के रोहतास, भोजपुर, छपरा, सिवान, चम्पारन, राँची, पलामू, वैशाली, पटना, उत्तर प्रदेश के बनारस, गाजीपुर, आजमगढ़, बलिया, गोरखपुर, बस्ती, मिर्जापुर, देउरिया आ जौनपुर के क्षेत्र भोजपुर कहाला। एह क्षेत्र में भोजपुरी बोलेवाला के संख्या घाट-बाढ़ आठ करोड़ बाटे। एकरा अलावे बम्बई के अन्धेरी आ जगेश्वरी नाव के असथान में भोजपुरी बोले वाला लोग भइया के नांव से परसिध बा। आसाम आ बंगाल में भोजपुरी बोलेवाला लाखन लोग बा। भारत के बाहर मारिसस, फिजी, दखिन अफ्रिका केनिया नेपाल, युगण्डा, वर्मा, सिंगापुर, ब्रिटिश गाइना वगैरह देसन में भी भोजपुरिया भाई लोग आपन संस्कृति आ साहित्य के अलख जगवले बा।

भोजपुर के सगरी धरती काव्य में सउनाइल बा। जेकर काव्य सुन के आ गा के भोजपुरिया आपन दुख थोड़े देर खातिर भुला जाला आ मस्ती में झूमे लागेला। कोइलरी के कूक आ पपिहरा के हूक विरहिन के करेजा काढ़ ले ला। सनेही के बाट जोहत जोहत बरसात आ गइल। चारू ओर पानिये पानी लउकता। विरहिन के सक होता कि ओकर सनेही एह बाढ़-बूढ़ा में कहीं हेरा त ना गइल? विरह के मार भोजपुरी साहित्य में कमाल कइले बा —

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बटिया जोहिले हम तोर रे रजवा, बटिया जोहिले हम तोर।
लवका लउके बिजुली चमके, घटा छावे घनघोर।
नदी — नाला सभ भरि गइले, पियवा हेरइले कवना ओर॥
रे रजवा, बटिया जोहिले हम तोर। बटिया जोहिले····
आम के डाढ़ी बोले कोइलया, बनवा में बोलेला मोर।
पापी पपिहरा पिया - पिया बोले, धड़केला छतिया मोर॥
रे रजवा बटिया जोहिले हम तोर। बटिया जोहिले ····

दोसर एगो नमूना देखीं। विद्यापतिजी के "पिया मोरे बालक मैं तरूणी रे" से कवना माने में कम बा ? तनि बेसिये परी। एगो त गवना ना भइल। दोसरे सैंया नादान बा। मन के दसा आउर संकठ में पर जाता। विरहिन सोचे लागतिया 'ससुरा ना जाइबा कुछ दिन ले आउर, नइहरे में रहब। बाबूजी के चुपे - चुपे हजाम भेज के उनके नइहरे में बोलवा लेब। आपन ककना बेंच के एगो दुधार गाय कीनब आ ओकर दुध पिया के उनुके जवान बना लेब :—

गवना - गवना सुनत रहीं, गवना नाही भइले
आरे माई नइहर में रहबो, ससुरा में पियवा बा नादान
आरे माई ····
बाबूजी का चोरिये - चोरिये पतिया पेठइबो
आरे माई, हाजमा से लेबो बुलवाई
आरे माई ····
ससुरा में पिया बा नादान। आरे माई ····
हाथ के कंगनवा बेचबो, किनवो धेनु गइया
आरे भाई नइहर में रहबो, पियबा के बनाइबो जवान
आरे माई नइहर में रहबो ससुरा मैं पियवा बा नादान
आरेमाई ····

जबाना से आँख चोरा के परकीया अपना मिलनुआ से मिले चाहतिया। मिलनुआ चूरी बेचे के काम करता। देखीं, ऊ कइसे आपन पता बतावतिया :—

चूरीहरवा, चूरीहरवा, चूरीहरवा, तनी हमरा घरे अइह चूरीहरवा
पटना से चूरी लइह, छपरा से हरवा, चूरीहरवा चूरीहरवा चूरीहरवा
तनी हमरा घरे अइह चूरीहरवा फूस के पलानी बाटे बाँस के चंवरवा
असली निसानी बाटे पकवा इनरवा चूरीहरवा चूरीहरवा चूरीहरवा
तनि हमरा घरे अइह चूरीहरवा चूरीहरवा चूरीहरवा चूरीहरवा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पूत-भतार, धी-दामाद के मन-कामना आदिकाल सेचलल आवता। एकरा खातिर कठिन से कठिन व्रत त्योहार आ पूजा-पाठ कइल जाला। एगो मेहरारू के देखी, गंगा जी से कई गो बरदान एक ही साथ मांगते बिया।

"अब जिनिगी करीं ना अपार, गंगा मइया जिनिगी।
समुरा में माँगिलें अन्न-धन-सोनवा, नइहर सहोदर जेठ भाई॥
गंगा मइया जिनिगी......
अब जिनिगी करीं ना अपार, गंगा मइया जिनिगी
सभवा बइठन के पुरूखव माँगिले, जनम-जनम एहवात।
गंगा मइया जिनिगी......
अब जिनिगी करीं ना अपार, गंगा मइया जिनिगी।
गेनवा खेलन के बेटा माँगिले गोड़वा दाबन के पतोह॥
गंगा मइया जिनिगी......
अब जिनिगी करीं ना अपार, गंगा मइया जिनिगी।
रूनुकी झुनुकी हम बेटी माँगिलें, घोढ़वा चढ़न के दामाद॥
गंगा मइया जिनिगी......
अब जिनिगी करी ना अपार, गंगा मइया जिनिगी॥

ननद-भउजाई के जोड़ी देख के केतना जने करेजा पर हाथ रख लेले। ननद अभी बारी उमिर के बिया। जबाना के रंग नइखे पहचानत। बाकी भउजाई दुनिया के सम खट्ट मीठ के अनुभव कइले बिया एह से ऊ ननद के माना करतिया कि बाहर मत निकल। ननद-भउजाई में से एक जानी साँवर, आ दोसर जानी गोर बाड़ी।

"घरवा से चलली ननद-भउजइया, जुलुम दूनू जोड़ी।
रे साँवर-गोरिया, जुलुम दूनू जोड़ी॥ रे साँवर०......
भउजी के सोभेला लालीं-लाली टीका, ननद जी के रोड़ी।
रे साँवर-गोरिया, जुलुम दूनू जोड़ी॥ रे साँवर०......
बेरी-बेरी बरजीं, बरजियो ना माने, ननद मोरी भोरी।
रे साँवर गोरिया, जुलुम दूनू जोड़ी। रे साँवर०......

जिनिगी के संझलोका भी काव्य से खाली नइखे। एगो दादी के पराती सुनी। आखीरी घरी में मंदोदरीं, रावन के समुझावतिया कि हमरा सुभ लच्छन नइखे बुझात। तू चनन काठ के डोली बनाव। तूं कहार बन आ हम लोकनी बनतानी। आव सीता जी के अजोधेया चोंहपा दिहल जा। रावन के नाश नजदीक बा।

★ ललकार में विज्ञापन देहल लक्ष्मी के बोलावल बा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ई बात ओकरा दिमाग में नइखे आवत। मंदोदरी से कहता, तू काहे डेरा तारू ? कुम्भकरन लेखा भाई, मेघनाद अइसन बेटा जेकरा बा ऊ कइसे हार सकेला ?

"सूतल रहलीं सपन एक देखिलें, सपना में देखों अजगुत
अमरित फल के बाग बिधंसे, राम लखन के दूत
पिया हो चरन गह सिया राम के
आज पवन नाहीं अंगना बहारे, मेघ भरे नाही पानी
लछिमी सरोसती धान कूटे, झंखे मदोदर रानी
पिया हो चरन गह सिया राम के
लंका अस कोट, समुद्र अस खाड़ी, कुम्भ करन अस भाई
मेघनाथ अस बेटा जेकरा, काहे तिरिया गइलू डेराई
पिया हो चरन गह सिया राम के
सरजू का तीरे अवध नगरी, बीर लखन अस भांई
हलिवन्त जइसन सेवक जेकरा, छन ही में लंका ढढ़िआई
पिया हो चरन गह सियाराम के।
चनन काठ के डोलिया गढ़ावहू, हीरा - लाल लगाई
तूहीं कहरिया, हमहीं लोकनियाँ, जानकी अवध पहुंचाई
पिया हो चरन गह सि राम के।

भोजपुरी भाषा आ साहित्य के सुधराई एह लोक गीतन में झलकता, जवना में अनमोल भाव भरल बा। कवनो मोका अइसन नइखे जे पर एकर झलक ना मिलत होखे। सोहर, मुड़न के गीत, जनेव के गीत, गंगाजी के गीत, छठ्ठ के गीत, जाँतसारी मइया के गीत, बहुरा पीड़िया के गीत, सोहनी रोपनी के गीत, बिआह-गवना के गीत, सांझा पराती, भजन-प्रभाती, अल्हा, बिरहा, जोगिराके अनेकन गीत बाड़ेसन जवन जिनिगी के कवनो कोर के छोड़ले नइखन सन। सब के बिटोर के जदी बिद्वान पारखी लोगन का सोझा परोस दिहल जा त ऊ लोग जरूर आघा जाई। एमें कवनो दू बात नइखे।

गाँधी स्मारक विद्यामंदिर उच्च विद्यालय
पचरूखी, सीवान

★ रोजगार बढ़ावे खातीर ललकार में विज्ञापन दीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गीता

(श्री मद्भगवद्गीता का भोजपुरी रूपान्तर)

राम सेवक 'विकल'

प्रथमोध्यायः

धृतराष्ट्र उवाच—

"कुरुक्षेत्र की धर्मभूमि में पाण्डव - कौरव पुत्र हमार।
करे लड़ाई खातिर, संजय का कइलसन सकह बिचार ?" ॥१॥

संजय उवाच—

"दुर्योधन पाण्डव वीरन के जमघट जब देखलन तइयार।
द्रोणाचार्य से तब ऊ पूछलन, गुरु जी, का गति होइ हमार ? ॥ २॥
राउर शिष्य धृष्टदुम्न के, आजु तैयार भइल दलबल।
तनि चलि के रउवाँ अब देखीं, अपनी आँखिन से हल चल ॥ ३ ॥
ए सेना में सब बड़ बड़ अव, महारथी जुटि आइलबा।
अर्जुन, भीम, विराट, सात्यकी द्रुपद बीर सब आइल बा ॥४॥
धृष्टकेतु, काशी के राजा, पुरुजित, चेकितान बरियार।
कुन्ती भोज, शैव, बलधारी युद्ध करे खातिर तइयार ॥५॥
लाल सुमद्रा के अभिमन्यु, बलि युध मनु उत्तमौजा वीर।
द्रुपदी के पाँचों बेटा सब पाण्डव-दल में बा रणधीर ॥६॥
हमरा बीरन के देवता जी, सुनीं आपु दया कइके
सेना के सेना पति के, हम नांव गिनाइँ नमन करके ॥७॥
हे गुरु जी ! एक आप, भीष्म जी, करण, कृपाचारी बलवान।
अश्वसथामा, विकरण बलधारी, सोमदत्त के पुत्र महान ॥८॥
अवरी बीर तेयार युद्ध में हमरा खातिर प्रान बिसार।
रण कौशल में चतुर लड़ाकू अस्त्र शस्त्र लेके तइयार ॥९॥
भीष्म पितामह के आश्रय में, हमके अब नाहीं भय बा !
अवर भीष्म की सेना पर, गुरुजी हमार निश्चित जयवा ॥१०॥
अपना - अपना मोर्चा पर होइके तेयार भिड़ि जाईं जाँ।
रउवाँ मिलि - जुलि के गुरु जी कौरवराज बचाईं जाँ ॥११॥
दुर्योधन के बारि सूनि के कौरव दल के बीर महान।
गरजि सिंह की नियर भीष्म जी फुँकलन शंख तुरत मैदान ॥१२॥
तब रणभेरी बाजे लागल, बाजल मृदङ्ग नगाड़ा ढोल।
शंख गोमुखीं बाजे लागल, गूँजे गगन बीच जय बोल ॥१३॥
सूघर धवर बछेड़ा घोड़ा बंधल रहल अइसन रथ पर।
चढ़ि के कृष्ण, संग अर्जुन के फूँकलन शंख तुरत रथ पर ॥१४॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यदु बंशी श्री कृष्ण जी फूँलकन पांचजन्य शंख आपन।
अर्जुन देवदत्त के फुँकलति, पौण्ड्र शंख भीम आपन ॥१५॥
कुन्ती जी के पुत्र युधिष्ठिर फुँकलन शंख अनन्त विजय।
शंख सुघोष नकुल जी बजवलन, मणि पुष्पक सहदेव अभय ॥१६॥
काशी राज, धनुर्धारी, योधा शिखण्डि, धृतदुम्न महान।
राजा अजय, विराट, सात्यकी, सब पाण्डव दल के बलवान ॥१७॥
द्रुपद राज, द्रुपदी के बेटा, अभिमन्यु विक्रम बरियार।
युद्ध भूमि में शंख बजवलनि अलग अलग होके तइयार ॥१८॥
गूँजि उठल तब शब्द भूमि में, गरजन पहुँचि गइल आकास।
कौरव दल के वीरन के फाटल छाती मन भइल उदास ॥१९॥
सेना डटल लड़ाई खातिर कौरव दल के बीर महान।
देखलनि पाण्डव बीरन के सब शस्त्र चलावे के मैदान ॥२०॥
समर बीच अर्जुन जी बोललन श्री कृष्ण से धनुष चढ़ाव।
"हे अच्युतजी, रथ के रोकों दूनों दल के बीच अड़ाय ॥२१॥
देखीं अब हम करे लड़ाई, के मैदान में आइल बा।
लड़े के बा केकरा केकरा से केकरा गरब समाइल बा ॥२२
देखबि हम ए युद्ध भूमि में जूझे वाला के के बा।
मूरख दुर्योधन के बचा के प्रिय चाहे वाले के बा ॥२३॥

संजय उवाच—

अर्जुन के अइसन कहला पर हृषीकेश श्री कृष्ण महान।
दूनो सेना बीच रोकि रथ कहलन अर्जुन से भगवान ॥२४॥
"द्रोणाचार्य आ भीष्म पितामह, सब राजन के देख बीर।
मिलि जुलि युद्ध करे खातिर जे आइल बा बनि के रणधीर ॥२५॥
जब देखलन अर्जुन जी उहवाँ गुरु, मामा, भाई सब बा।
बाबा, नाती, चचा, भतीजा बेटा संगी अपन सब बा ॥२६॥
दूनो दल में अपने घर के सबके देखि के तब पारथ।
चिन्तित होइ दया मन में ले अच्युत से पूछलन भारत ॥२७॥

अर्जुन उवाच—

"देखत बानी अपने लोगन के जे लड़े के बा तइयार।
बाकिर शिथिल शरीर भइ गइल मुँह झुराए लगल हमार ॥२८॥
एतने नाहीं श्री कृष्ण जी, अपने जन के देखि के आज।
काँपत बाटे देह युद्ध में रोम खड़ा बा, लागे लाज ॥२९॥
गिरत जात गाण्डीव हाथ से जीभ जरत बाटे हमरो।
खड़ा न हो जाता हमसे अब, अकुलाइल मन बा हमरो ॥३०॥
हे केशव जी, अब सब उल्टा लच्छनि हम देखत बानीं।
अपना जन के मारि युद्ध में भला न कुछ बूझत बानी ॥३१॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हम ना चाहत बानीं जीत, न चाहत बानीं राज आ सुख।
का होइ राज भोग जीवन में अपने जन पर दे के दुख ॥३२॥
राज भोग आ सुख, हम सब कुछ चाहींला जेकरा खातिर।
उहे युद्ध में प्राण मोह तजि आइल आज लड़े खातिर ॥३३॥
बेटा, बाप, गुरु आ बाबा, मामा, ससुर अवर शाला।
नाती, सम्बन्धी, हे केशव! ईहे सभे लड़े वाला ॥३४॥
ए सभके ना मारल चाहत बानीं हे मधुसूदन हम।
तिनों लोक के राज लेइके, बतलाई, का कराबि हम ॥३५॥
अत्याचारी कौरव दल के मारि प्रीति हम का पाइवे।
कवनो यश ना मिलि हैं हमके, उल्टे पापी बनि जाइबि ॥ ३६ ॥
एही से आपन भाई कौरव गन के कइसे मारी।
अपने जन के मारि सुखी हम कइसे होइबि बनवारी ॥३७॥
लोभ से मन भर भ्रष्ट भइल, इन्हीं का कुछून लउकत बा।
कुल के छय से का होई आ मित्र द्रोह ना सूझत बा ॥३८॥
जानि-सूनि के आज पाप से सब भाईन के बचाई जाँ।
कुल के क्षय से दोष जानि के आपन धरम बचाई जाँ ॥३९॥
कुल के क्षय भइला से केशव, धरम पुरान खतम होई।
धर्म नष्ट जब हो जाई तब कुल के पाप दवा देई ॥४०॥
पाप ढेर जब बढ़ि जाई तब कुल नारी भ्रष्टा होई है।
नारी के दूषित भइला से कुल में सब सकर अइहें ॥४१॥
संकर लइका कुल के घाती कुल के नरक में ले जाला।
कुल के पितर पितामह लोगो जल पियला से गिर जाला ॥४२॥
संकर कुल घातिन के दोष से जाति धर्म कुल धर्म पुरान।
नष्ट होइ जाला हे केशव, संकर सब पापन के खान ॥४३॥
जे आदमी के धर्म अवर कुल ए दुनिया में गिर जाला।
हम त सुनले हईं जनार्दन, वास नरक में हो जाला ॥४४॥
हाय, कृष्ण! हम अइसन पाप करीलां ईह कइसन बात?
राजपाट सुख भोगे खातिर, अपने जन पर दे उतपात ॥४५॥
युद्ध भूमि में कौरव दल जा शस्त्रहीन हमके हति देइ।
उन्हें पुण्य हमरा के होई, जेबन सुधर सरग गति लेइ ॥४६॥

संजय उवाच—

अइसन कहि के अर्जुन जी, बइठलन जाइ रथ पर चुपचाप।
धनुष बान के फेंकि शोक में, कहलन युद्ध बहुत बड़ पाप ॥४७॥

रामसेवक विकल, प्राचार्य
छोटानागपुर कालेज
हल्दीपोखर, सिंहभूम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाबा हरीराम

कुबेरनाथ मिश्र "विचित्र" मंत्री भोजपुरी परिषद्, भाटपाररानी, देवरिया, उ० प्र०

आपन भारत बहुत विशवासी देश हउवे। इहाँ बसे वाला मरद-मेहरारू सभे देई-देबता के पूजा करेला लोग जवना से उनकी मन के मुराद पूरा हो जाला।

पच्छिम बिहार में भैरवा टीसन छोटकी रेलवे लाइन के नामी टीसन हउवे। एह टीसन से कुछ दूर पूरब एगो मन्दिर बनल बा। ऊहे नू बाबा हरीराम के धाम ह। बड़ी दूरि दूरि के लोग बाबा के दरसन करे बदे आ दूध से नहवावे बदे आवेला आ ओकरो एवज में मनकमना पूरन के असिरवाद लेके जाला लोग। जब आँखी देखीं त काहें साखी पूछीं। हमरो भाई–बो बाबा के मनौती मनले रहली। उनका बेटा ना होत रहे। ए भाई! एक घूँची दूध से बाबा हरीराम के नहवौला के फल ई मीलल कि ऊ असों "हेले हेले बबुआ कुइंई में ढेबुआ" खेलावत बाड़ी। बाबा से उनुका इतना सनेह हो गइल कि ऊ अपनी लइकवा के नाव 'हरीराम' राखि दिहले बाड़ी।

धन्नि बाने बाबा हरीराम, जेकरी दुआरी रोज रोज गीति-मांगर होत रहेला आ दूध केहू का चाय बनावे के नइखे मयस्सर होत, उनुका 'हर हर गंगा रोजो होता। पुरनवाँसी केत मदिर में भगत-भगतिन के खूब न जुटान होला। मूंणनि, जनेव सतनारायन कथा, तिरलोकी नाथ कथा, किरतन, भजन, बामन-भोजन आ अवरी ना जाने कवन कवन काम ओइजा होला।

बाबा हरीराम की धाम पर चइत-राम-नउमी के बड़ा भारी मेला लागेला आ पनरहिया ले जमले रहि जाला। बेल (सिरिफल) लोहा, लकड़ी, मिठाई, बहंी-चिउरा, तुरन्ता सतुआ, बिसाती, बरतन की दोकानि से मेला ठकचि उठेला। सरकस, नाटक, चरखी, अजायब घर की कारन एतना भीरि होले कि इन्तजाम करते थाना पुलिस आ स्वय सेवक लोगन की नाक पर दम चढ़ि जाला।

मंदिर में पइठे खातिर पूरब के फाटक बा आ निकले खातिर पच्छिम के। ईहाँ जेतना पन्डा लोग जुटेला ओकरी दुन्ना गुण्डा लोग जुटेला बाकिर दारोगा-पुलिस की डन्डा की डरे एक्को जने के चोंच ना लहेला।

भिचछू-भिखारी के पाँति राह की दूनू ओर देखते बनेला। "दे दे राम दिलादे राम" के धुनि-सुनि के पथलो के करेजा पघिलि जाला। हँ त ए भाई! का मजाल जे के भूखा-दूखा के कटोरा खाली रहि जाउ। साँझि बेरा भिच्छा के मोटरी बिना दू आदिमी की उठवले ना ऊठेले।

मदिर की पूरुब जमुना भगत के एगो पोखरा बाटे जवना के चारू घाट पक्का बनल बा। बिचो बिच्च में खम्हा गाड़ल बा। ओहू पर बाबा के मूरति बनावल बा। पोखरा के पानी जमुना-जल अइसन हरिहर बा। पानी का भीतर सींढ़ी पर खूब बिछिलो बा। पहिले पहिल जब हम नहाए गइलीं कि बिछिलाइए त गइलीं। कइसोनू बाबा हरीराम बँचा लिहले नाहीं त मच्छ-गुल्लरि हो गइल रहितीं।

बाबा के धाम की सटले दक्खिन एगो कालेज खुलि गइल बा। ओकरी कुछ दूर दक्खिन 'कुष्ट आश्रम' बा जवना के इन्तजाम बाबा राघव दास के चेला श्री जगदीश 'दीन' जी की हाथ में बा। मंदिर बाकी पूरुब एगो "तेलिनियाँ के पूल" रहल ह जवन अब भरही की मागि से पक्का बनि गइल बा। धन्नि बाटे ई नबकी नहर जवन शहर के शोभा बढ़ाई आ गिरहत के भागि जगाई बाकिर अबहिन त एइभे जेकर खेत परि जाता ऊहे जानता कि नहर का कहाले। कहाँ से ई आवेले आ कहाँ जाले, हमरा एसे का मतलब? बाकिर ई बाबा के रोज-रोज चरन पखारी, चरनोदक पाई आ आपन परलोक बनाई, ई जरूर तनि जाने वाली बात बा। भरही आ नहर के सौतिया डाह से बाबा के नगर अबअउरी रोसायन रही।

भेड़ा के लड़ाई, सिरिफल के कोराई, बामन के खवाई आ चइता के गवाई जवना भाई का देखे के मन होई ऊ अगिली चइत राम नउमी की मेला में मउजाई की संगे २ जरूरे चलि आई। दूध से बाबा के नहवाई आ पूत खेलाई।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ई कइसन दुनिया के साज !

बीत गइल जिनिगी के दिन केतने छनपरछन आज
अवगत ना हो सकलीं ई कइसन दुनिया के साज ?

स्वारथ का गंधक में सउँसे सउनाइल संवसार
जब तक ले मतलब, सभई बा, तब तक ले यार !

अब के दो के लूटि लीहल सभका अधरन के हास
खुसी सिर धुने बेचैनी में बइठलि मरघट के पास

छल आ परपंचन के रेंगति बा नागिन हर ओर
के बा हित, दुसमन के पहचानल सचहूँ बा घोर

पी इरिसा के माहुर बेहोस भइल सउँसे बातास
लागत दम घूटे बा केहूँ कइसे ली साँस

रामवृक्ष राय 'विधुर'

मन उबिआइल !

—आचार्य महेन्द्र शास्त्री

बाबा, तोर नगरी रस चोर गगरी
याद ओकर ना तनिको भुलाइल !
हमरा नारहे माई दादी लरिकइयें में हो गइल सादी
जब होस भइल बड़ा रोसभइल हम बुढ़वा का रहबी किनाइल
बुढ़वा रहबेंकइल अधमूअल ऊ बेदम यम के छूअल
कैसे सन्तान हो कैसे कुछ मान हो ? चिता तबहीं ओकर सजाइल
हमरा आ गइल मुअना जबानी अब का कहीं आपन कहानी ?
एको ना रक्षक सभ बा भक्षक जीते जीयत गीध मड़राइल
हरधरिये लोग बसलबा अपना कवनो ना बल वा
संसा पगपग बा नाव डगमग बा एह दुनिया से मन ऊबियाइल

रतनपुरा 'तरवारा' जि० सिवान

★ भोजपुरी पत्रिका पढ़ीं, दोसरो के पढ़ाईं ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

With compliments

from :—

NANJI GOVINDJI
&
SONS
BISTUPUR, Jamshedpur-1

PHONE :- 3777

When visiting

"GREATEST STEEL CITY OF INDIA"

STAY at

TISCO HOTEL

COMFORT AT ITS BEST

GRAM :- TISCO hotel Jamshedpur

PHONE-3850

भोजपुरी समाज
एवं
ललकार को
हमारी शुभ कामनाएं

के. पी. सिंह
माइनिंग एवं सिविल कन्ट्राक्टर्स
शफीगंज, जुगसलाई
जमशेदपुर -६

With
compliments
from:

R. J. SINGH & SONS
ENGINEERS & CONTRACTORS
JAMSHEDPUR - 1

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

With compliments

from :

D. P. BODHANWALA

TRANSPORT CONTRACTORS

JAMSHEDPUR-1

With the best compliments

from :

SALIGRAM KALURAM

AUTHORISED DEALER :—

Hindusthan Lever & Comission Agents

BISTUPUR MARKET, JAMSHEDPUR-1

विजय कुमार भारद्वाज द्वारा प्रकाशित एवं समता प्रेस, कालीस्थान रोड, जुगसलाई द्वारा मुद्रित ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी संसार

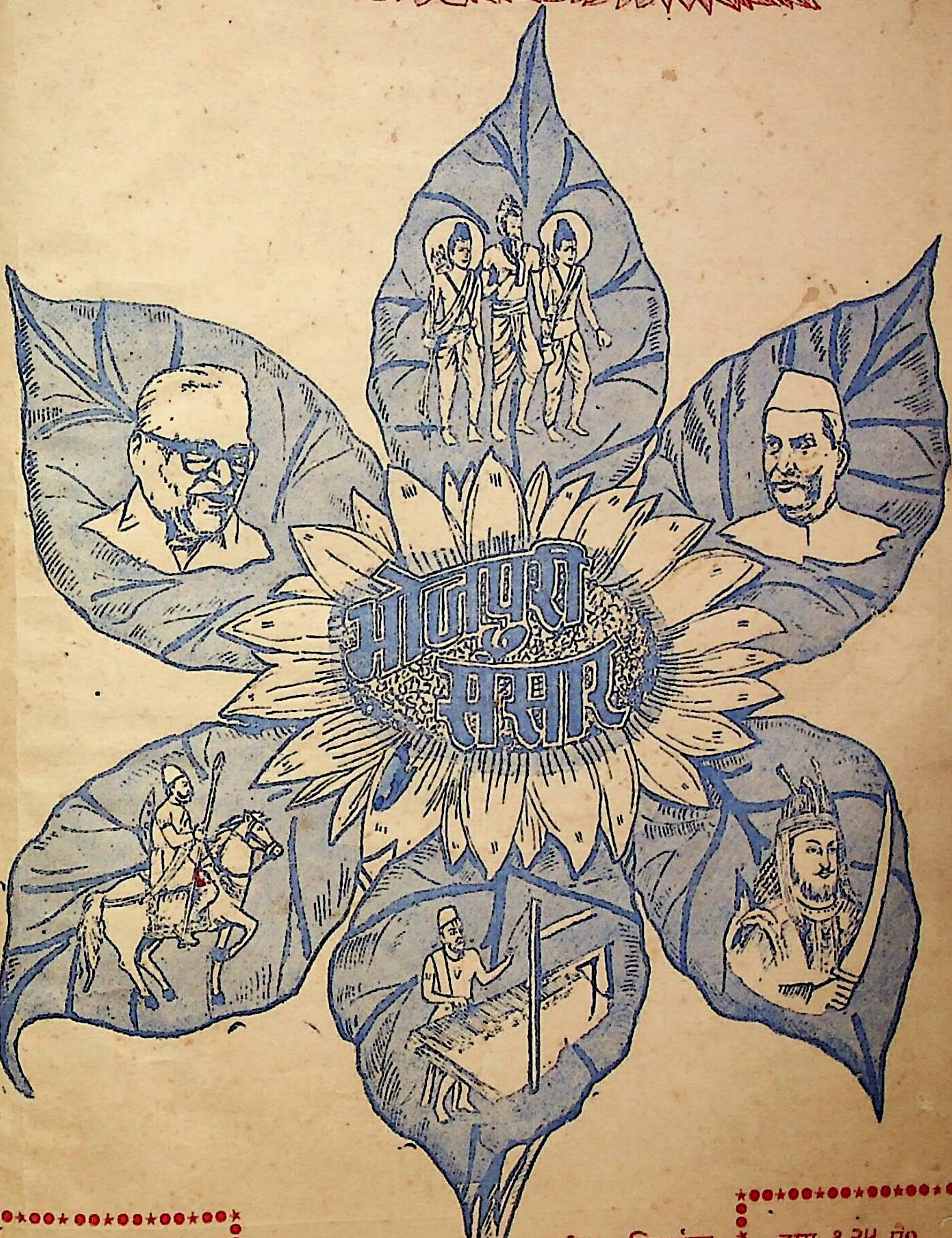

सितम्बर, १९७७

सम्पादक : माधव पाण्डेय निर्मल

दाम १.२५ पै०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी भाषा, साहित्य, समाज और संस्कृति
के विकास में लगे मासिक **भोजपुरी संसार**
को हमारी हार्दिक **शुभकामनाएँ** ।

मेसर्स रणबीर सिंह एण्ड सन्स

ई\३१३, सोनारी,

जमशेदपुर

दूरभाष—५६४३.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी - भोजपुरिहा हिन्दी - हिन्दुस्तानी जय - जयकार ।
अमरित - धार बहावे जग - जीवन में भोजपुरी संसार ॥

मासिक

भोजपुरी संसार

साल—१ जमशेदपुर :: सितम्बर, १९७७ अंक—२

सलाहकार सम्पादक :

रसिक बिहारी ओझा निर्भीक

○ ○ ○

सम्पादक :

माधव पाण्डेय निर्मल

○ ○

कार्यालय :

जय शिव बुक एजेंसी,
साकची, जमशेदपुर - ८३१००१

○

मुद्रक :

प्रभा आर्ट प्रेस, गोलमुरी,
जमशेदपुर - ८३१००३

निवेदन—

रचनाकार भाई लोगन से निहोरा बा कि पत्रिका के विषय-वस्तु आ स्तर के मोताबिक हर विधा के रचना पन्ना के एक तरफ साफ-साफ लिखके भेजे के कृपा करीं आ जादे से जादे सालाना गाँहक बनाईं ।

★ "भोजपुरी संसार" के उद्देश्य ★

१. भोजपुरी भाषा में हो रहल साहित्य-रचना के प्रकाशन आ देश-दुनिया में प्रचार-प्रसार ।
२. डूबत भोजपुरी - संस्कृति के छानके बँचावल जिआवल आ बरिआर बनाके उजागर कइल ।
३. भोजपुरी भाषा मे एकरूपता लाके सर्वमान्य रुप निखारे के प्रयास ।
४. नया-पुरान लेखक-कवि के रचना छापके प्रकाश में ले आवल आ उनका के एगो नीमन माध्यम देल ।
५. भोजपुरी के लोक साहित्य के मूए से बँचावल आ ओकर भंडार के रखवारी ।
६. देश-विदेश के रचनाकारन खातिर एगो साहित्यिक मंच बनावल ।
७. भोजपुरी के डूबत-मूअत बेजोड़ शब्दन के छानल-जिआवल आ प्रयोग करत-करत उजागर कइल ।
८. राजनीति से अलग रहके भोजपुरी भाषी आ प्रेमी लोग के बीच भयवधी आ हितारो बढ़ावल ।
९. भोजपुरी भाषा आ साहित्य के जरिये राष्ट्रभाषा हिन्दी के सेवा आ विकास में योगदान ।
१०. भोजपुरी क्षेत्रन के नया-नया छिपल प्रतिभा के प्रकाश में ले आवल आ बढ़ावा देल ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

:: विषय-सूची ::

		पन्ना
O कविता गीत :		
१. टिटहिरी आ बादल	रामदेव द्विवेदी अलमस्त	५
२. गीत	विजेन्द्र अनिल	६
३. हँसता सबेरा	जनार्दन पाण्डेय विप्र	७
४. दोहा	रामवृक्ष राय विधुर	७
५. गीत	गंगा प्रसाद अरुण	७
O कथा - कहानी :		
१. दहेज के घूस	अतुल मोहन प्रसाद	९
२. एह घरी के पतोह	पुष्पा कुमारी	१०
३. सरबत	शुकदेव सिंह स्नेही	११
४. तीन घसियारा [नाटक]	मधुकर सिंह	१४
O हास्य व्यंग्य :		
१. कान के महिमा	डा० सत्यदेव ओझा	१९
२. नन्हकी कविता	जगदीश सहाय "असीम"	२१
३. चुटकी	"	२२
४. लक्ष्मी वन्दना	बिक्रमा सिंह	२३
५. हँसी के गलगोवा	गपोड़ी दास	२४
O निबंध :		
१. करम-फल के सिद्धान्त	नगीना सिंह विकल	२५
२. अकेले ना चलीं बाट, झारिके बइठीं खाट !	डा० शिव मंगल राय	२७
O लोक-मंच :		
१. भोजपुरी लोक गीतन के जादू	जगदीश ओझा सुन्दर	२९
२. मेहररूई लोकगीत (सोहर)	आशा कुमारी	३०
३. झुनझुन बेटी	परमेश्वर दूबे शाहाबादी	३१
O परब-त्योहार :		
१. भादो महीना	सुशीला देवी	३२
२. रमजान शरीफ	डा० एस० एन० रहमान	३३
O लइकन के फुलवारी :		
१. घुघुआमाना	माधव पाण्डेय निर्मल	३४
२. दाई-बिलाई	आलोक कुमार	३५
३. बाँटि-चोटि के खायेके चाहीं	रसिक बिहारी ओझा निर्भीक, एम०ए० (रिसर्च स्कॉलर)	३५
४. खेल कवित्त	मनोकामना सिंह अजय	३६
५. गपबाजी	अभय कुमार सिंह	३६
O चिट्ठी-पत्री :		३७

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आपन मन

भोजपुरी में एगो नीमन पत्रिका प्रकाशित करेके हमार पोसल सपना आ ढोंढ़ी के भीतर कुल-बुलात ललसा "भोजपुरी संसार" के पहिला अंक के साथ पिछला महीना में पूरन हो गइल, बाकी ई अनजान लमहर राह प उठेवाला पहिलके डेग ह ! धूहा बहुत दूर बा, कतना मील के पथल गाड़त छूए क बा ओकरा के। ई काम बिना अपने सभे के साथ, सहजोग आ आशीर्वाद के ना होई। ई तबे हो सकेला जब भोजपुरी भाषी आ नेहीं लोग एह गँहिड़ झील में आपन सनेह के अमरित के एक-एक बूँद डाली आ भरके उपिला जाय तक डालत जाई। साफ़ बात बा कि एह झील से पटवन होई भोजपुरी के बगिया के आ फूल खिली साहित्य के, जवना के सुगन्धी से साँस-साँस गमक उठी।

'भोजपुरी संसार' प्रकाशित करेके सूचना पसरावे के बाद ढेर देरी हो गइल एकरा के निकाले में। एह से बहुत भाई आ नेही लोग के बिसवास हिले लागल रहे। अइसन होखल जायजे रहे, बाकी का क़इल जाई ? अतहत बड़ जग-उपनेत के तइयारी में समय लगवे करेला। एहमें इहो एगो कारन रहे कि हम पर-परिवार आ नौकरी-चकरी वाला अकसरूहा आदमी हईं। देरी हो गइल, जवना खातिर हम माफी चाहत बानीं। साहित्यकार भाई आ सुधी पाठक लोग त जानते बा कि आजकाल्ह के समय में पत्रिका निकालल, आ ओहू में भोजपुरी के, कतना दुरुह काम बा।

सैकड़न विद्वान साहित्यकारन के त्याग, तपस्या आ सिरिजन के बलबूता प भोजपुरी के भाषाई आ साहित्यिक रुप तेजी से निखर रहल बा। ई शुभ लछन बा। एह भाषा के भविष्य में सबकर बिसवास भी जाग गइल बा। छिटफुट पत्र-पत्रिका आ सुधर-निमनाह आ गम्हीर किताबन के प्रकाशनो धकाधक होता। एह में आउर तेजी आवे के चाहीं। एने का ओर आरा से निकलेवाली पत्रिका 'कलश', पटना के 'भोजपुरी समाचार' आ बदलल कलेवर के साथ जमशेदपुर के 'लुकार' देखेके सुजोग मिलल ह। किताबन में कृष्णानन्द कृष्णजी के "भोजपुरी कहानी विकास आ परम्परा", सुरेश मिश्र "मुरेश" जी के 'भगजोगनीं', पाण्डेय चन्द्र विनोद जी के 'हम कुन्ती ना हईं' आ पाण्डेय कपिल जी के 'फुलसुंघी' देखे-पढ़ेके सोहाग मिलल ह। ई सब देख-पढ़के मन के कली खिलखिला उठल बिया।

भोजपुरी साहित्य के ठोस सेवा करे आ एकर भडार भरे में लौहनगरी जमशेदपुर के ऐतिहासिक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्थान बा। जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य परिषद के बीसहन पुस्तक, 'लुकार' आ मासिक 'ललकार' के पिछला चार-पाँच साल से प्रकाशन एह बात के सबूत बा। 'भोजपुरी संसार' के प्रकाशन के बारे में कतना भाईलोग हमरा से सवाल कइलन कि 'ललकार' निकलते बा त एकर कवन काम रहे। हमार जवाब रहल बा कि भोजपुरी में एक हजार पत्रिका निकलसन तब हमरा संतोष होई। हरेक पत्र-पत्रिकन के आपन आपन 'रोल' बा, बाकी मनसा एके बा कि भोजपुरी के सेवा होखो। हमार बड़का भाई श्रीराम बचन तिवारी आ डा० बच्चन पाठक सलिल 'ललकार' के जरिए जवन सेवा कइल आ कर रहल बा लोग ऊ इतिहास के एगो पन्ना बन गइल बा। 'भोजपुरी संसार' के साथे हमरा एके ललसा बा कि ई स्तर में दमगर, सूरत में देखनगू आ हरेक तबका के पाठकन तक पहुँचे में आसान होके निकलत रहो, आउर अगिला पाँच साल में कम से कम पचास हजार प्रति छपे लागो।

हमरा पूरा मालूम त नइखे, बाकी बुझाता कि भोजपुरी के कवनो पत्र-पत्रिका विदेशन के प्रवासी भोजपुरिहा भाई-बहिन के पास नइखीसन पहुँचत। एह कमी के पूरा करे में भी 'भोजपुरी संसार' के पुरहर प्रयास रही। खुशी आ संतोष बा कि एह में सब जगह से उछाह आ सहजोग मिल रहल बा। भाई रसिक बिहारी ओझा निर्भीक जी के नेक सलाह आ सहजोग त मिलते बा, मित्र मण्डली भी एह काम में हमार हिम्मत बढ़ा रहल बा। दिनेश्वर सिंह दिनेश के ठोस - व्यवहारिक सलाह, परमेश्वर दुबे शाहाबादी जी के ठोस सहजोग, बलराम प्रसाद श्रीवास्तवजी आ आर० के० वर्मा जी के प्रेरणा, हवड़ा-कलकत्ता वासी मोतीलाल साव जी, कुशेश्वर सिंह जी, डा० शिवमंगल राय जी आ जगदीश प्रसाद जी के सनेह भरल सहजोग सब मिल रहल बा— केकर-केकर धरीं नाँव…………….। प्रभा आर्ट प्रेस, गोलमुरी, जमशेदपुर के पूरा मित्र-मण्डली के उत्साह भरल सहजोग दिल खोल के मिल रहल बा। हम सबके आभारी बानी।

विद्वान रचनाकार, पाठक आ भोजपुरी के नेही-प्रेमी भाई-बहिन से निहोरा बा कि पत्रिका के बारे में आपन बिचार, सलाह आ हरेक विधा के नीमन से नीमन रचना भेजके हमरा के सहजोग करीं। एकर प्रचार-प्रसार तेजी से होखो आ 'पाँच साल में पचास हजार' वाला धूहा छुआ जाव एह में दिल खोलके मदद करीं सभे। एही निवेदन के साथ 'भोजपुरी संसार' के दोसरका फूल रउरा हाँथ में जा रहल बा।

॥ जय भारती ॥

निर्मल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

टिटहिरी आ बादल

● रामदेव द्विवेदी 'अलमस्त'

कहिया से ई बात कहाला—
टिटही से बादल रुक जाला ?

एक समय में पड़ल अकाल
भूखे लोग भइल कंगाल
केहू केहू के ना पूछे
लड़िका पत्तल चटले छूँछे !

ओह साल ना पानी बरसल
बुनो बुनी बिन धरती तरसल
हहरल धरती परती भइल
जिया - जनावर मर मर गइल ।

मुअल आदमी सरगे गइले
देवलोग से बिनती कइले—
“ जल्दी बरसऽ इन्दर पानी
जरल धरतिया अब ना मानी !”

चित्रगुप्त के इन्नर बुलवले
मुर्दा लोके खबर सुनवले
“ जल्दी साहेब, करीं हिसाब
जा के कुछ दिलवाईं आब
नातऽ इज्जत अब ना बाँची
लंकाकांड सरग में माँची !”

चित्रगुप्त बादल से कहले—
“ चली काम ना अइसे रहले
जा ए बादल बरसऽ पानी
जरल धरतिया अब ना मानीं !”

उनहत-उनहत बादल आइल
उमरत-हुमरत बादल आइल
आपन बिगुल बजावत आइल
करिया रुप सजावत आइल !

उमड़ल पूरुब से ऊ बादल
उनहल पच्छिम से ढल के दल
बात टिटहिरी का ई खटकल
रहे गाँछ प ऊहो अँटकल !—

“ बादर गिरके भुइयाँ आईं
हमर सुनर पाँखे लसराई
उज्जर धप-धप हमर पाँख
ठहरेला केहू के आँख !!”

ऊ बादल के रोके गइली
दूनूं टँगरी ऊपर कइली
चमकल बिजुली तुरत चमाचम
झमकल बदरी तुरत झमाझम
गिरल टिटहिरी जल में बहल
दूनूं टंगरी उपरे रहल !

तहिया से ई बात कहाला—
टिटही से बादल रुक जाला ?

———०———

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

॥ गीत ॥

● विजेन्द्र अनिल

एक

हो गइल विहान, जाग गइल जहान
कवले सुते के भइया हमनी के बोलऽ
आपन चदरिया तान ?

राति के पखेरुन के भागल बरतिया
कुच-कुच अन्हरिया के बिसरल सुरतिया
खोलींजा आँखि, पाँखि लउकत बा सुरुज
छान्ही प छितराइल घाम ।

पेंड़न प खोंता में चहके चिरइया
सारी में, देखऽ रंभालीस गइया ।
पिंजड़ा के सुगना जगावत बा कबे से
कहि-कहि के 'अतमा राम'—

देखऽ बधारी में सरसो फुलाइल
पेड़न के डेहुँगिन में मोती गंथाइल
देखि रुप धरती के बेर-बेर कुहुंकेले
करिया कोइलिया नादान !
हो गइल विहान……

कवले सुते के भइया हमनी के बोलऽ
आपन चदरिया तान ?

●●

दू

केकर ह ई देश अउर के काटत बड़ुए चानी ?
केकर जोतल, केकर बोअल
के काटत बा खेत ?
केकर माई पुआ पकावे
केकर चीकन पेट ?
के मरि-मरि सोना उपजावे, के बनि जाला दानी ?
केकर ह ई देश, अउर के काटत बड़ुए चानी ?
ताजमहल केकर सिरजल ह
केकर ह ई ताज ?
केकर ह ई माल-खजाना
करत आजु के राज ?
पाँकी-काँदो में के बइठल, के सेवे रजधानी ?
केकर ह ई देश, अउर के काटत बड़ुए चानी ?
केकरा खून पसेना से
लउकत बड़ुए हरियाली ?
के सीमा पे खून बहावे
केकरा मुँह प लाली ?
के अमरित के घड़ा बनावे, के पीयेला पानी ?
केकर ह ई देश, अउर के काटत बड़ुए चानी ?

●●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

:: हँसता सवेरा ::

जनार्दन पाण्डेय 'विप्र'

रात बीत गइल हो माझी
खोल नाव छोड़ के डेरा ।
डूब गइल सब नभ के तारा,
लउकत वा अब साफ किनारा,
भाग रहल बा पाँख झार के
जग से घोर अन्धेरा ।
सुनाता अब चिरइन के बानी,
शिथिल भइल बा नदी के पानी,
धीरे धीरे मदन पवन पर,
करता नींद बसेरा ।
पूरुब निकलल आशा के लाली,
देलस भोर उमग के थाली,
सूरुज त बहुत दूर दिखाता
अंजोर हो गइल हंसल सबेरा ।

—:)(:—

ः॥ः दोहा ः॥ः

रामवृक्ष राय 'विधुर'

शरद् आगमन भुँइ मगन, सरिता-जल जस फेनु ।
अतर बास भींजल पवन, पंथ साफ़, ना रेनु ॥
मधुर मृदु पग-पायल स्वन, करिख बसन तन डाल ।
आवति श्यामल बरन तन, रइनि डाल तम-काल ॥
सुजस लागि करु जतन मन, अपजस मरन समान ।
चरितहीन नरके करत, निन्दा सकल जहान ॥
कबहूँ देत न साथ जग, कुकुर - चूहा - चोर ।
जेहि डालत झेलत दुख, इनिकर अवगुन भोर ॥
मोह न तन करवट फिरत, लुका जात तन काट ।
मोर पीर सुख तोर धनि, नीच प्रकृति घर-खाट ॥
मंगल मंगल रटत जग, मंगल के नु प्रयास ।
बे प्रयास मंगल कहाँ, मंगल बसत प्रयास ॥
एक सुभाव नु सकल जन, जबकि बसत इकठौर ।
ससि सीतल, तातल सुरुज, नभ दूनन के दौर ॥

—:)(:—

—॥ गीत ॥—

गंगा प्रसाद 'अरुण'

झर रहल बा ठूँठ तरु के सूख पीअर पात
अइसे मत बह पुरवा ।
जुग नयन से हो रहल बा लोर के बरसात
अइसे मत बह पुरवा ।
माथ धर धरती प काहे आज रोवे रातरानी
सूम-अस बेवहार आइल आज पावस महादानी
सून मन के देहरी पर दरद के बरियात
अइसे मत बह पुरवा ।

के अपरिचित बन लुटावे याद के मधुगंध ढेरी
कवन लोभी बनल जोगी कर रहल बा प्रातफेरी
जे लुटावल साँझ ओकर कहाँ कइसन प्रात
अइसे मत बह पुरवा ।
खूँट में बान्हल गइल बा नेह के अनुबंध काहे ?
झाँक के उफनत नयन में के हिया के थाह चाहे ?
हो गइल बा तेज भीतर भाव के उत्पात
अइसे मत बह पुरवा ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी भाषा की प्रमुख मासिक पत्रिका

भोजपुरी संसार

को

हार्दिक शुभकामना !

जगदीश प्रसाद

जगबन्धन राम — द्वारका प्रसाद

७७, कैलाश बोस स्ट्रीट, कलकत्ता - ६

" भोजपुरी संसार " को हार्दिक शुभकामनाएँ !

खंडेलवाल कैरिंग कॉरपोरेशन

साकची, बसन्त टॉकीज के पीछे ।

प्रधान कार्यालय : १६ - ताराचन्द दत्त स्ट्रीट, कलकत्ता - १

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

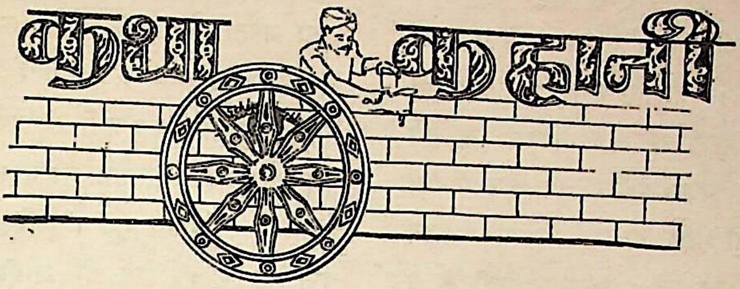

दहेज के घूस

● अतुल मोहन प्रसाद

"अरे रेखा देख त, बाबूजी बुझाता आगइल बानी।" किवाड़ के सिकड़ी पिटला के आवाज सुन, रेखा के माई मालती बोलली।

" आवत बानी।" कहि के रेखा किवाड़ी खोले चल देली।

धमसल आ उदास चेहरा लेले रेखा के बाबूजी घर में घुसलन।

"काहे आजु बड़ा उदास बानी ? हम कबे से आसरा जोहत रहीं, आफिस के बेरा बीतला कतना देर हो गइल। कहाँ रह गइल रहीं ?" मालती पूछली।

"देख अतना सवाल एके बेर मत पूछ ! मिजाज ठीक नइखे। मन अनसाइल बा।"

"केकर खिस आइ के एहिजा उतारे लगनी। बुझात बा कि साहेब के डाँट आजु मिलल बा भा चुनाव-उनाव होई आ हारि के आवत बानी।" मालती तनी मुसका के कहली।

"तोहरा त चौबीसों घंटा मजाके सूझत रहेला। हम आजु आफिस से निकलला के बाद रमेश के इहाँ चल गइनी हाँ। आज पी० एफ० के रुपिया मंजूर हो गइल हा त सोचनी कि काहे ना एनियें से सादी के दिन तय करत जाईं, अब रेखा के अधिक दिन नइखे राखे के। जवान बेटी घर में रहे त बाप के कतना चिंता होला ई त तू जानते बाड़ू।"

रमेश के नाँव आबते मालती शांत होके बात सुने लगली, उनका अब बुझा गइल रहे कि गड़बड़ी रमेश के घरे ही भइल बा। ई बात सोचते उनका चेहरा के रंग बदल गइल। रुपिया मिलला के सुनली त चेहरा के रंगत तनी सा अपना जगह के ओर खिसकल।

"हँ त आगे का भइल, दिन ठीक हो गइल ?" मालती अब अपना ना रोक सकली।

"सब मिला के रुपिया के जोगाड़ त हो गइल हा। रमेश के इहाँ गइला के बाद ओकर बाबूजी ठीक से बइठइलहन, बातो शुरु भइल। ओरहन मिले लागल। "राउर त अतना दिन से पते ना लागल। पुरान जान-पहचान बा ऐही से हम रुकल बानी, कतना जगे से आदमी रमेश खातिर आवतारे। हम टारत जात बानी।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"नाहीं अब देर ना होई, हमु आजु दिन रखे खातिर आइल बानी।" हम कहनी।

"ठीक बा। बाकिर बात रउरा से त छह महीना पहिले भइल रहे। घबड़ाई मत हम अउर अधिका ना मांगब बाकिर अब दहेज में बड़ा धड़-पकड़ सुरु हो गइल बा। का जाने कवन पुलिस में कह आइल बाटे। अब दरोगाजी के दू हजार घूस देबे के पड़ी, एकरो खातिर तैयारी कई लेब। रउरे खातिर देरी भइल बा, ऐसे रउरे देबे के पड़ी। हम पूछ लिहल ठीक समझनी हा। अइसे दोसर देबे के तइयार बा लोग।"

"ठीक बा हम कालु बताइब। कहि के चलि अइनी हा। सरकार जतना कानून बनावत त्रिया जनता के सुविधा खातिर ऊ ओतने ओकरा खातिर जटिल बीच के लोग करि देतबा। पहिले त दहेज प काम चल जात रहे अब दहेज के संगे-संगे घूसों देबे के समस्या आ गइल। ई त हम सपनो में ना सोचले रही।" रेखा के बाबू कहि चुपा गइलन। घर में खामोशी छा गइल। मालती के धियान ओ घरी टूटल जबकि कड़ाही में के डालल तरकारी जरे लागल रहे। खिसिआ के उठली आ तरकारी में पानी डाल देली सोचली आजु रुपिया रहित त ऐहि तरी रमेश के बाबू के झोरी पानीये लेखा डाल देती।

एह घरी के पतोह

पुष्पा कुमारी

कार्तिक का महीना रहे। गाँव के सब लोग गंगा नेहाय जात रहे। एक हाथ में लोटा आ दोसरा हाथ में एगो मोटरी में सतुआ आउर चिउड़ा बान्ह के चल देले रहे लोग।

एतने में मोती के माई रामदेयाल के घरे अइली आ कहली— "ए सखी, गंगा नेहाय ना चलबू? सभे जात बा।"

"ना सखी, हम ना जायेभ, कपार दुखाता।"

"तू ना जइबू त हम हूँ ना जायभ।"

"ना, तू चल जा, हम कइसे जाईं, जीव ठीक नइखे; आ हम चल जायभ त बबुआ के के देखी? तू त हमार घर के हाल जनबे करेलू।"

रामदेयाल के माई के उहे एगो लइका रहलन। बड़ी लाड़-दुलार से पढ़इले-लिखइले रहली। उनका मन में इहे इच्छा रहे कि हमार बबुआ पढ़-लिख के अफसर बनस। मैट्रिक में रहलन त बिआह हो गइल। अब त कारखाना में काम करेले। लेकिन पतोह त उनका लायक ना मिलली। सास के त कुछ बुझते ना रहली। अपने राज रहे, तनी-तनी बात में लड़ जास। बुढ़िया के कौनो दिन गोड़ ना दबावस। रामदेयाल के माई के एकर बड़ा दुःख रहे।

[बाकी १३ पन्ना प]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स र ब त

शुकदेव सिंह "स्नेही"

रामफल चाचा के छूआ-छूत के रोग अइसन जकड़ले रहे कि बुझाये जे छुटले ना छूटी । ढेर लोग समझा बुझा के हार गइल कि छूआ-छूत कवनो चीज ना ह । ई मन के मइल ह । बाकी चाचा पर केकरो बात के परभाव ना परल, परो भी त कइसे, उनका त बनरमूठ लेखा धरा गइल रहे, जे छुटले भी ना छूटत रहे । चाचा के देश-दुनिया से कवनो मतलब ना रहे । ईहाँ तक कि चाचा परिवारो से अलगे एगो झोपड़ी बनाके ओहो में अमनिया बनावस अवरु बाल-भोग लगाके पावस ।

गाँव भर के पंचलोग समझा-बुझा के थाक गइले । आपस में मिल-जुल के ओरिया ल लोग । रामफल चाचा राजी हो गइलन कि जे कहीं अपने सभे से सब मंजूरे बा । बाकिर उनकर लइका ढोंढ़वा केकरो बात प राजी ना भइल । आखिर में हार-पाछ के रामफल चाचा बाँट-बखरा के ममिला ससराँव कचहरी मे दाखिल कर देले । अंडा-पोठी तक सबके मुदाले बनवले, इहाँ तक कि लाचारी में रामफल चाचा के उपर भी केस लदाइल ! रामफल चाचा के मन में अक-बक में पर गइल । ढोंढ़वा बुढ़ारी में जवन-जवन ना करम करा देवे । एहिजे ओरिया दिहित त कइसन निमन रहे । हम बाहर में कहाँ-कहाँ डोरिआइल फिरब । अब हाकिम के सामनहीं भरले गंगा में हमरा से जिअते माछी लिलवाई । जे होई से होई बाकिर हम आपन अकिन में बाटा ना नू लाईब । रामटहल हमार एक लाद के जामल छोट भाई ह । सब में ओकर आधा हक बा । धन-माल खातिर हम आपन लोक-परलोक ना बिगाड़ब ।

तारीख प चले के तइयारी भइल । सांझिये राहता में खाये-पीये खातिर गेंठरी में बान्ह दिआइल । ढोंढ़वा आपन बाप रामफल के खूब समझवलस कि काल्ह तारीख पर चलेके बा । कनी मत कटइह । हमनी के भोरहीं उठ के सब भाई पैदलहीं चल दिहब जा । पहर भर दिन चढ़ते-चढ़त ससराँव पहुंच जाइब जा । रउरा सकराहे मुँहलुकाने में उठके निमन से हमनियों के खाय-पीये के समान घोड़ी पर लादके ओही पर बइठके चल आइब । हमनी के कचहरी के हाता में नीम के फेंड़ तर बइठल रहब जा ।

रामफल चाचा मुँहलुकाने में उठले । भोरा-झाकर, गेंठरी-मोटरी, जबन रहे सब के सरिअवले । घोड़ी पर लाद के ओही पर बइठ गइले । कोस-दूकोस गइल होइहन कि देखत वाड़े कि घोड़ी खूब जोर से हफर-हफर हाँफ रहल बिया ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रामफल चाचा ओकर हाँफल देखके मन में बड़ा दुखित भइले कि इहो बेचारी अनबोलता जीव हिय। एक त बेचारी अपने गाभिन बिया, पेट में बाचा हइस। ओकरा उपर भारी गेंठरी-मोटरी हो गइल बा, ताह पर हमहूँ बइठले बानी। चाचा के अकिले काम ना करे कि अइसना हालत में का करस का ना। मन में उनका उकित जागल कि हमहूँ उतर जाईं आ थोरे दूर भुइयें - भुइयें एकरे साथे चलीं, बाकिर उनकर एको डेग चलेके हियावे ना करत रहे। आखिर में सोचले कि एक काम करीं कि जवन गेंठरी-मोटरी बा ओकरा के एके में बान्ह दिहीं अवरु सब अपना माथा पर धरके बइठ जाईं। कम-से कम थोरको भार तक हलुका होबइस। बस सब मोटरी एगो दोहर में बान्हके अपना माथा पर धरके घोड़ी पर बइठ गइले अवरु राहता धरके चल दिहले। राह भर के लोग देख-देख के चाचा के अकिल पर हँसते-हँसते लोट-पोट हो गइल।

पहर भर दिन चढ़ गइल। चाचा के पियासे कंठ सुखाये लागल, ओठ पर फेफरी पर गइल। मुँह तींता हो गइल। परान लोछियाये लागल, बुझाये कि परान अब छुटी की तब। चाचा से अब छनो भर बरदास कइल दुरलभ रहे। चाचा सोचले कि खरमेटाई कर लिहीं तब आगे बढ़ीं तबो कचहरी लागे के बेरा ले कचहरी में हाजिर हो जाइब। मन में ई बात सोंचते रहन कि एगो बनियां के दोकान लउकल, जहवां बड़ा फरछिन जगहा रहे। इनरा में लाठकूड़ी लगावल रहे। चाचा सोचले कि थोरे देर सुस्ता लिहीं, गरमइले पानी ना पीयेके ना त करेजा धर लिही। घोड़ी भी सुस्ता जाई आ तब तक हमहूँ मुँह-हाथ धो के खरमेटाई कर लेब। ई सोंचके घोड़ी पर से उतर गइले। बेचारे झोरा में हाथ लगवले कि लोटा निकालके पानी ले आईं। झोरा में हाथ जाते मन सन देना हो गइल। अब का होई, लोटा त घरहीं छूट गइल। अब करस त का करस! आखिर में कूँड़ी के खूब निमन से माटी लगा-लगाके मलले। मुँह-हाथ धोके भर ढींढ़ पानी पी लिहले। दोकानदार से पाव भर चीनी किनलन ऊपर से दू पइसा के सऊँफ अवरु गोल-मिरिच भी लिहले आ बइठल—बइठल सब चीनी फांक लिहले। ऊपर से मुँह में सऊँफ अवरु गोल-मिरिच चबा गइले। मन में सोचले कि चीनिया पेट में ओसहीं मत बइठ जाय। ई सोंच के देह के पूरा आगे-पीछे, जोर-जोर से हिलावे लगलन कि चीनियाँ सऊँफिया अवरु गोलमिरिचिया निमन से एके में घोरा के सरबत बन जाय। बस देह के हिलावे लगले। ओतना जोर-जोर से देह हिलावे लगले कि दोकानदार देखके पूरा घबड़ा गइल। बाप रे बाप! ई बुढ़वा के कवन बेमारी उपटल कि अतना जोर - जोर से देह दोम रहल बा। चीनियाँ में कवनो जहर-माहुर त ना मिल गइल जवनाके चलते अइसन करत होखे। अगर इहाँ मर जाई त बड़ा बखेड़ा खड़ा हो जाई। जबाबे देते-देते हम हरान हो जाइब—जवावे ना जूरी। मन में साहजी सोचले कि आगे-पीछे जवन होई तवन होइबे करी, एह घरी दोकान बन्द करके टकस जाईं। उदास मन करके हड़बड़इले दोकान बढ़ावे लगले।

चाचा दोकानदार के उदासल मन अवरु

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हड़बड़इले दोकान बढ़ावल देखके पुछले कि साव जी तखनी से हँस-हँस के दोकान चलावत रहीं, छने भर में अइसन कवन विपत पर गइल कि मन उदास करके दोकान बन्द करत बानी। जवन चेहरा गुलाब अइसन खिलल रहे, तवन मुरझाके झवाइन हो गइल। बुझात बा कि अब रोअनी कि तब। माथा पर कवन विपत के पहाड़ टूट के गिर परल? एकर का मरम बा? दोकानदार चाचा पर सुखले बिगड़के कहलस कि महाराज अबरु पुछते बानी कि का बात बा? हम तोहरा से पुछत बानीं कि तोहरा मरहीं के रहे त कवनो दोसरा जगहा मरत। हमरे दुआरी पर जान देवे के बा। चाचा हँसते-हँसते कहले कि बचवा अनेरे नू घबड़ाइल बाड़, हमरा कवनो बेमारी नइखें भइल। ना जहरे-माहुर खइले बानी। पनियाँ पीके चीनियाँ फकनी हाँ ओकरे के मिलावे खातिर देहिया के जोर-जोर हिलावत बानी कि पेटवा में चीनियाँ बइठ मत जाव। नीमन से घोरा के सरबत बन जाव। चाचा के बात सुनके दोकानदार हँसते-हँसते लोट-पोट हो गइल। फिर आपन दोकान पसार दिहलस।

रामफल चाचा सब सामान लाद-पाथ के कचहरी के राहता धइलन। कचहरी के हतो में ना घुसे पवलन कि देखत बाड़े कि उनकर लइका ढोढ़वा बासी भात के अँरुअइला लेखा मुँह लटकवले फिरल आवत बा। पुछला पर जवाब दिहलस कि देशमें कवनो बड़हन खुशी के बात हो गइल बा, एही से आज कचहरो बन्द बा। सब सवांग पावे घरे फिर अइले जा।

★ ★

[पन्ना १० से आगे......]

गंगा नेहाके जब मोती के माई घरे पहुँचली त फेर सखी से मिले गइली— "सखी कइसन तबियत बा।"

"ठीक बा।"

"तू काहे गंगा नेहाये ना गइलू? हमरा रह-रह के तोहार इयाद आवत रहे।"

एतना कहते रामदेयाल के माई रोये लगली। "का कहीं सखी, तू त हमार हाल जनबे करेलू, साँप-छुछुनर के हाल बा। सबेरे कहनी कि तनी सतुआ-चिउड़ा के मोटरी बान्ह दे। एतने में त ओकरा आग फूंक देलस। धवर-धवर लइका के पीटे लागल आ जब डँटनी त मुँह फुला के चमेली के माई के लगे बइठ गइल। उनका से कहे लागल कि हमार बबुआ के देखनीहार केहू बा? खाय बनावत रहनी त बबुआ हरान कइले रहे। के खेलवनिहार बा जे खेलावो। एतना सुनके बड़ा दुःख भइल, बाकी का करीं? सब पेट में लगावे के पड़ेला।"

"का कहीं सखी, एह घरीके पतोह सब अइसने होखत बाड़ीसन। दुनिया में त आग लागल बा।"

"आछा त अब चलीं, घर के काम देखीं"— कहत घर के रास्ता लेली।

—×—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तीन घसियारा

[भोजपुरी नाटक]

मधुकर सिंह

पात्र :

१. मरद
२. मेहरारु
३. भुनेसर

[रंगमंच प गाढ़ अन्हार बा। मंच के पाछे से धीरे-धीरे मरद मेहरारु के मिलल जुलल गीत के सुर सुनाता—

जाग हो ऽ ऽ ऽ··· ·····
जाग रे भइया········
जाग रे, बहिना जाग ऽ ऽ ऽ·········

तले मंच प अन्हार के भीतर से प्रकाश फैलता। सबसे पहिले बाया ओर एगो मेहरारु लउकतिआ। फेरू दहिने कावर एगो मरद उलटा दिशा में बइठल बा। दूनो घसगढ़ा हवेंस आ ओकनी के घास के एगो मोटरी बा। अइसन लागता, जइसे ओकनी के आपुस में कवनो बतकही नइखे आ ढेर देर से चुप बाड़े स। जमीन में दरार पड़ गइल बा आउर चारो ओर गम्हीर सनाटा पड़ल बा।]

मरद— ए······ !

मेहरारु— का ह ?

मरद— फजीर होखे लागल।

मेहरारु— केने कावर ?

मरद— पूरुब मे।

मेहरारु— पूरुब में त काल्हो भइल रहे। हरमेश त ओनही कावर होला। हमनी के तकदीरे फूटल बा। घाम हाल दे निकस जाला। भरपेट घासो गढ़े के टाइम ना मिले।

मरद— अब कतुना घास चाहीं रे ?

मेहरारु— अतुना कमाई बा, तबो त पेट नइखे भरत।

मरद— सुखार में घास महंगा विकाला। बाकिर पता ना काहे, हमनी के घास कबहूँ महंगा ना बिकाइल।

मेहरारु— कुछ पता चलल, मालिक हमनी के निकाल काहे देलन हाँ ?

मरद— चोप्प ! हवो के कान होला।

मेहरारु— परबतिया के भइया, हमनी अतुना कमजोर काहे बानी स ?

मरद— परमात्मा जानस।

मेहरारु— जवन बात परमात्मा जानताट, उ बात हमनी का काहे नइखीं जानत ?

मरद— हमरा का मालूम बा ?

मेहरारु— मलकिनी कहेली जे उनका त सबे कुछ मालूम रहेला।

मरद— केकरा मालूम रहेला रे ? (खिसिया के ताकता)

मेहरारु— परमात्मा के, आउर केकरा ?

मरद— हम त भाई मेहनत करीला। तबो घास नइखे बिकात।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मेहरारु— सांचे कहल । (उ खुरपी पटक के उदास हो जातिआ ।)

मरद— खिसिया गइलू का ?

मेहरारु— (रोवतिआ) आजो घास ना बिकाई त खाएके का ?

[एक मिनट ले भारी सनाटा]

मरद— परमेसरवो भउजी कबो रोवेले का ? उ त साफे कहले जे केक़र मतारी सांढ बिआइल बा जे हमरा सवांग के जिन्दे जरादी । उ जबाना गइल कि जब चहलीं भेड़-बकरी लेखा कतर के फेंक देलीं ।

मेहरारू— हम लवट के अब गाँव में ना ढुकब ।

मरद— कहाँ जइब ?

मेहरारू— धरती के दरार में अमा जाइब । बस, जिनगी से छुटो । ना कबो भूख लागी, ना कबो रोआई बरी ।

मरद—परमेसरवो भउजी त गजबे मेहरारू बिआ नू ?

मेहरारू—ई सभे के मालूम बा जे अलख मलिकार के गोजी आ बनूक के गोली कबो बांव ना जाए । परमेसर भइया भाग के जइहें कहवाँ ? मलिकार उनका के बहिरावे खातिर सरग-पताल एक क दिहें । कहीं उनुका ई पता चल गइल कि परमेसरबो दिन-दहाड़े अइसन बात कहत चल ताड़ी त मलिकार सोभे लूट लिहें । जवानी में अइंठल कुल माटी में मिल जाइ ।

मरद—का बक ताड़िस रे ? जदी परमेसरवो भउजी के जवानी जुलुमी बा त अलखो बाबू के बहिन के जवानी कम नइखे । परमेसर गउरा का लगे ना गइल रहस, गउरे परमेसर का लगे आइल रही । आधा रात खा, खरिहान में सबके समनहीं । बुझलू नू ?

मेहरारु—ई त दुनियादारी ह, परबतिया के भइया कि मलिकार लोग कुछुओ कर सकेला । आज त चमरटोली के खैरियत नइखे ।

मरद—का मतलब ? (डरे खुरपी छोड़ देता)

मेहरारु—मलिकार आज आपन बचन पूरा करिहें ।

मरद—परबतिया के भउजी । तनी ओहनू कावर ताक ? ई लपट कइसन ह ? सूरुज त अतुना लाल कबहूँ ना रहल हा । किरिन फूटता कि आपन गाँव में आग लागल बा ?

मेहरारु—चमरटोलिए में आग लागल होई । चल, जल्दी चलीं जा । (ठाढ़ हो जातिआ)

मरद—घर मे रखले का बा ? जरे ना दे रे !

मेहरारु—(बइठके) बाकिर ई आग लागल कइसे ?

मरद—हमनी का त एक पहर रतिए से बधारी चल आइला स । हमनी के का पाता बा ?

मेहरारु—ठीके बात बा, परबतिया के भइया । कवन बाप-दादा के जमीन-जायदाद धइल बा जे चिन्ता कइल जाव । आग बोताइ त खर-पात बटोर के फेनु उठा लेबे के । ह नू ?

मरद—हमनी टोला के मउगिन के बड़ चाल खराब । चिलम पीके एने-ओने रख देली स । खर-पात के घर हमनी के नू बा ? आग जल्दी पकड़ लेला ।

मेहराऱू—तूहूँ त कबो-कबो बीड़ी पिअत रहेल ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मरद—अरे पइसे कबो ना रहे रे परबतिया के भउजी। परमात्मा कसम, मने-मने हतुना साध भोर। गइली स। अब हम का करीं रे ?

[दूनो घरी-घरी उठके गाँव का ओर ताकताड़न स आ डेराके पीछे लवट जाताड़न स।]

मेहरारू—अगलगी हमनी किहाँ कवनो नाया बात थोड़े बा ?

मरद—बाकिर ई आग दूर ले लागल होई। लपट टाँठे भइल जाता।

मेहरारू—भिनसहरा भइल आवता।

मरद—सूरूज का सामने आग के कवनो मतलब बा ? काहे कि सुनीला जे सूरूज में आपन अगिन हांला।

मेहरारू—तूहूँ कइसन-कइसन बतकही करत रहेल ? सूरूज महाराज त भगवान होखेलन—परमात्मा। (दूनो हाथ पूरूब कावर जोड़ लेतिआ। तोहरो गती परमेसरे लेखा बरम्हा किहाँ से लिखाके आइल बा।

मरद—कइसे रे ? परमेसर के चालचलन प कवन मतारी के लाल अंगुरी उठा दी ? गउरा त परमेसर के भाग चले खातिर कहते रह गइली। बाकिर परमेसरे नकार देस कि हमार बिआह भ गइल वा। घर में एगो मेहरारु बिआ। गउरा के त आपन हवेली आ धन के घमण्ड रहल हा। हमार परमेसर त दूध नीयर पवित्तर बाड़न।

मेहरारु—तूं नइख जानत, मलिकार लोग जेकरा के चहीहे, ओकरे के फँसा दिहें।

मरद—परवतिया के भउजी। भरोसी के बेटी के खिस्सा त मालूम बा नू ? सरेआम अलख मलिकार उठाके अपना हवेली प ले गइलन आ आठ दिन ले रखले रह गइलन। लोग पूछे त भरोसी काका झूठ बोल देस जे बेटी कुछ दिन खातिर ममहर गइल बिआ। इहे अलख बाबू आज तिल के ताड़ ठाढ़ कइले बाड़न। केकरो बेटी-बहिन उठाके चल दिहें। ई कुल देखेवाला केहू नइखे ? गउरा खुदे परमेसर का पीछे-पीछे लागल चलताड़ी। ई सब बात संउसे गाँव के मालूम बा। अलख बाबू आज एकराके इजत के सवाल बनवले बाड़न, लेकिन परमेसर त साहस के सुरुआत क दिहले कि डेराके झूठ कबो बरदास ना ना करब। परमेसरबो भउजी त इहाँ ले कहलस कि अगर ई बात सांचो ह त हमरा कवनो तकलीफ नइखे।

मेहरारु—अइसन मुँहफट लेखा बोल जन। बुझल कि ना ?

मरद—सब मलिकार चाहे ई ममिला होखे, चाहे जमीन के ममिला होखे, कुल जाना एके लेखा बाड़न। हमनीं के गाँव त छोड़हीं के परी ?

मेहरारु—हमनी घसगढ़िया में जी जाइब। बाजू में अतुना ताकत बा।

मरद—ताकत त बा, बाकिर जमीन, खेत, बधार कुल्ह त ओहनिए लोगन के बा। ऊ घास गढ़े से मनाही कर देस भा हरमेसे खातिर भगा देस तब ?

मेहरारु—तब ! .... चुपचाप रह। जबले सांस आ जान बा तबले ले बरदास कर।

मरद—(खीस में) मू गइल ठीक नइखे का ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(मेहरारु चुप्पी साध लेतिआ)

मरद—बोल ना, चुप काहे बाड़िस ?

(मेहरारु रोवतिआ)

मरद—ईहे त नखड़ा खराब ह । पट-पट रोवे-काहे लागलू !

मेहरारु—हम अब कइसे जिअब हो परबतिया के भइया ?

मरद—ईहे कुल्ह त सोंचे के बा कि परमेसरवो भउजी के हिआव ले के जिअवजा कि हैजा-पिलेग में मू जाइब जा ?

मेहरारु—जिअत रहे के मन बा, परबतिया के भइया ।

मरद—तब रोवत काहे वाड़ू ?

मेहरारु—का करीं ? कतहूँ कवनो सहारा नइखे लउक्त ।

मरद—अतुना बड़का सूरुज हमनी के पीठ प उगल आवता । कवनो सहारा काहे नइखे ?

मेहरारु—आज हमनी का शहर से तुरन्ते लवटे के ।

मरद—दिन अछइते घास कवन कीनी ?

मेहरारु—रामलाल एकवाल तोहार इआर नू ह ?

मरद—इआर त हइले ह, बाकिर ओकर घोड़े बेराम हइस ।

मेहरारु—हमनी के तकदीर में कतुना कारिख वा हो ?

मरद—आरे तकदीर-फकदीर कुछो ना ह रे । हमनी का भेड़ो-बकरियों से कमजोर हई ।

मेहरारु—ईहे बाते बा ।

[एक मिनट खातिर दूनो का बीच चुप्पी । फेर दूनो उठके गाँव का ओर ताकताड़न स ।]

मरद—अब त लपट अवरी टांठ भइल जाता ।

मेहरारु—हमनिए के टोला बुझाता जे जरि के राख भ गइल ।

मरद—गाँव में चले के तवे कुछ पाता चली कि कुछ लोग जरके अचके मरलो बाकि कुल्ह इदिमी बांच गइल बा ।

मेहरारु—ठीके कहताड़ । एहिजा से का पाता चली !

मरद—अभी गाँव में घुसल ठीक नइखे ।

मेहरारु—रामलाल कइसन आदमी ह ?

मरद—(खुशी में) बड़ बढ़िया । हमार इआर नू ह ।

मेहरारु—मलिकार नीयर काठ ना नू ह ?

मरद—धुत ! अरे इदिमी, ह इदिमी । मलिकार नीयर काठ थोड़े ह ? उहो त हमनिए लेखा गरीब बा ।

मेहरारु—परबतिया के भइया । हमनी का रोज घास गांवे के बधार में गढ़े के । शहर में बेंच देवे के आ रामलाल किहाँ रहेके ।

मरद—कबो-कबो वड़ बढ़िया बात बोललू ए हमार रानी । (आपन मेहरारु के हाथ पकड़ लेल)

मेहरारू—धत ! हमरा के रानी-वानी कहके कऊंचाव जन । हमरा इ कुल्ह आछा ना लागे ।

मरद—हेने आव ना ?

मेहरारू—काहे खातिर ?

मरद—जब परमेसर भा परमेसरवो प खतरा बा त एह हालत में गाँव छोड़ल ठीक नइखे ।

मेहरारू—हम त एको पल खातिर एह गाँव में ना रहब । अलख मलिकार सगरो से खराब इदिमी हवन । एकदिन खरिहान

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में हमरो से खराब-खराब बात कहत रहन।

मरद—कब रे ?

मेहरारु—तहरा के गरिआवत मुअना कहे लागल कि अइसन परि के त हवेली में रहे के चाहत रहे। उ तोरा के कइसे फंसवलस।

मरद—तब तू का कहलू ?

मेहरारु—हम कहलीं कि हमार उनका संगे विआह भइल बा। उहे हमार सवांग हवन—परमात्मा हवन।

मरद—तब..... ......?

मेहरारु—फेन उ ठठाके हँसे लागल।

मरद—तू कवो हमरा के कुछो बतवलू ना ?

मेहरारु—बताइए के का करतीं ? तू मलिकार के का बिगाड़ सकेल ?

मरद—उ तहरा साथे कुछ कइलन त ना नू ?

मेहरारु—ना।

मरद—कुछ छिपाव जन समझलू ? अलख बावू के कवनो वार खाली ना जाय।

मेहरारु—फेनु हम जलदी-जलदी गाँवे का ओर लवट अइलीं।

(मरद चुपचाप असमान का ओर ताकता)

मेहरारू—हमरा से रूस गइल नू !

मरद—ना रे, सोचतानी ई पपिया के नास कइसे होई।

मेहरारू—जवाना वदली तवे इ कुल्ह हो सकेला। ई काम बाड़ा कठिन बा।

मरद—हमरा खोपड़ी में त कछुओ घुसत नइखे।

मेहरारू—एही से त कहतानी कि गाँव छोड़ दीं जा।

मरद—ठीके कह ताड़ू। इहाँ रखले का बा ?

हमनी शहरे में रहे के। बाकिर शहर......

मेहरारू—आज रामलाल के सब कुछ साफ-साफ बता देवे के कि गाँव में कमजोर लोगन खातिर कवनो जगहा नइखे।

मरद—सुनीला, अब शहरो अइसन नइखे रह गइल। गाँव के कुल्ह मलिकार लोग शहर में बड़का-बड़का मकान उठवले जाता। दूनो कावर इनके सुराज, हे परवतिया के भउजी। अलखो बावू के एगो हवेली शहर में बा।

मेहरारू—तब त बेचारा रामलालो चैन से ना रहत होखी।

मरद—ओहू बेचारा के कएगो आफत वा। हम-निए के जवार-पथार के कवनो जाना हवन। पहिले उ रामेलाल के मकान में एक ओर किराया प पाँच रोपेआ में घर लिहलन कि कचहरी में मुकदिमा लड़े खातिर रोज-रोज गाँवे से आवे में बाड़ा खरचा बा। गते-गते इ रामलाल के गरीबी से फैदा उठवलें आ रामलाल के आपन करजखोर वना लेलन। अब रामलाल से कहलन, कि घर खाली कर। सब घर हमार ह।

मेहरारू—बाप रे ! ई कइसन जुलुम बा हो। ओहिजो मलिकार लो चहुंप गइलें ?

मरद—कहवाँ नइखे लोग ?

मेहरारू—हामा-सुमा खातिर कवनो जगह नइखे नू ?

मरद—पहिले रामलाल से बतिआवे द। उहे रहता बताई।

मेहरारू—इहो बात ठीके कहताड़ू। (गाँव का ओर ताक के) आग बोतात बा।

मरद—कइसे मालूम ?

[बाकी अगिला अंक में]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कान के महिमा

● डा० सत्यदेव ओझा

तुलसीदास जी अपना रामायण का शुरुए में भगवान से राजा पृथु के हजार कान मांगे के चरचा कइले बानी जवना से उहाँ का भगवान के गुणगान हीक भर सुनि सकीं। लेकिन आजु त दुइए गो कान हमनी के निहाल कइले बा। कारण ई बा जे हमनीका कृष्ण भक्त हो गइल बानीं। कृष्ण माने करिया, चाहे दुर्गुन देखे के प्रेमी हो गइल बानी। ई कृष्ण भक्ति खाली दर्शने में नइखें, हमनी कीहाँ नवधा भक्ति में सुने आ कीर्तनो के निठाह भूमिका बा। अगर दूनो कान से भरिपेट परनिंदा सुने के मिले त हमनीके मिजाज प्रसन्न हो जाला, परनिंदा रस के स्थान नौ रस में रहे के चाहीं, भलहीं कौनो दोसरा रस के हटा देवे के परो। अपना देश में ई रस एह घरी रसराज हो रहल बा। सबेर से सांझ तक हमनीका एह रस के पान करत बानी जा, कहल जा सकेला जे ई हमनी के राष्ट्रीय रस बा। अतना जोर कवना रस में बा कि कहहूँवाला जुड़ा जाई आ सुनहूँवाला ? समय कइसे गुजर गइल एकर पतो ना लागे। चाहीं त एह रस में अठजाम रचाईं, अखंड कीर्त्तन करीं, जे-जे शामिल होखे, ओकरा के अक्षय पुण्य के भागी बनाईं। ई सब बिना कुछ खरच-बरच कइले सुलभ बा। गाँधीओ जी के तीनों बानर आपन हाथ अपना कान, मुँह आ आँखि पर से उठा देले बाड़े स। ऊ सोचता रेस जे भारत में रहिके जे बुरा ना देखल, बुरा ना बोलल आ बुरा ना सुनल ओकरा के धिरकार। ओकरा त इग्लैंड में जनम लेवे के चाहीं, जहँवा केहू का बारे में केहू बेमतलब दिलचस्पी ना लेवे। हमनीका अपना एह राष्ट्रीय गुण के अतना विकसित कइले बानी जा जे दुनिया में हमनीका स्थान सबसे ऊँच हो गइल बा। एकरा खातिर कौनो पंचसाला योजना बनवला के जरुरत ना परल। ई अपने आप जुग जुग से फरत फूलत आइल बा।

एह मानव जात में चुगलखोर लोग के एगो अलग जात होला, जवन 'कानाश्रयी' होला। ई लोग जेकर कान खाली देखेला, ओकरे मे सटि जाला आ ओकरा में अमरित चुआके तिरपित कर देला। निमन-निमन सघतियन में मतभेद पैदा कराके जिनिगी भर के दोस्ती के चूर - चूर कर देला आ ई लोग दूनो ओर के हीत बनल रहेला। दू आदमी के मुंडे-मुंड जुटावे में ई लोग का कवनो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देरी ना लागे । ई लोग के कायदा भी बड़ा सरल होला । जेकरा कान में अमरित चुआवे के होई ओकरा मित्र के निंदा आ ओकर प्रशंसा करी लोग आ कवनो कटाह बात गते कहि दी लोग । फेनु मौका निकालि के जल्दिय ओकरा मित्र कीहाँ पहुंचि जाई आ उलटि के ओकर प्रशंसा आ एह मित्र के निन्दा कइ आई, एगो कटाह बात ओकरो कान में सुना आई लोग । ओकरा बाद त जवन आगि लागी आ जवन महाभारत मची कि का कहे के । लेकिन ई लोग चुपचाप बर तर ठाढ होइ के सुनी लोग सब तरह से अनजान आ निर्दोष बनिके ।

एह कान का बल पर बड़का-बड़का लड़ाई लड़ल जाता आ कान का मोर्चा पर जवन देश जतने सफल होला, ओकर विजय ओतने निश्चित रहेला । रेडियो एकर सबसे बड़का साधन ह । दुनिया का कवनो कोना में लड़ाई छिड़ो, ओकर भूमिका कान के मोर्चा पर तैयार कइल जा ला, महिनवन्ह पहिले से दोसरा देश के साँच-झूठ शिकायत आ दोष के वर्णन शुरु होला, आकाशवाणी आवे लागेला आ लोग के कान खड़ा हो जाता । एह तरीका से कान सबसे पहिले आपन काम करेला । दूनो देश अपना कान पर भट दे विश्वास करि लेला, आ ओकर जनता अपना कान के भरोसा कइके मानसिक रुप से तइयार हो जाला । ओकरा बाद देशवासी लोग के हाथ-पाँव भी सक्रिय होखे लागेला । दिमाग का सारा ताकत एकरा समाधान में लागेला आ आगे सब योजना रचे लागेला ।

नेता लोग भी कान के फायदा कम ना उठावसु, चुनाव सभा के व्याख्यान सुनीं त एकर स्पष्ट प्रमाण मिली, जब ऊ लोग आपन सुमधुर भाषण से जनता जनार्दन के 'कर्णपूजा' करे लागेला. तवना घरी एह धरती पर छछात सुख-सुविधा के सरग उतारि देला । ओह घरी नु बेकारी रहे, नु गरीबी । गरीबी हटि जाला आ बेकारी के समस्या चुटकी बजावत दूर हो जाला । जनता भगवान के दीहल वरदान अपना दूनो कान पर भरोसा कइके अपना घर जाले पूरा गद्‌गद आ निश्चिन्त ! कौनो-कौनो नेता त इहो कहेले कि अगर हम कवनो गलती करीं त जनता हमार कान अँइठो । जनता का एकरा से बढ़िके अउर का चाहीं । दूनो दल खुश ! अतना बड़ गारंटी काने नू दे रहल बाड़े स ।

अब चलीं पढ़ाई का मोर्चा पर ! शिक्षक लोग के जीविका काने पर निर्भर करेला । केहू सुनेवाला ना रही त ऊ लोग केकरा के सुनाई ? छात्र लोग का कान चाहीं, हालाँकि आजकाल्ह के छात्र गुरुजी के बात एगो कान से सुनिके दोसरा से निकालि के गुरुजी के करजा से तुरते छूटि जाले । जवना छात्र लोग पर गुरुभक्त आरुणि के तनिको छाप बा, ऊलोग त गुरुजी के बात से बोरियत के आनन्द लेला आ आपन दूनो कान गुरुजी के वचनामृत पीये खातिर सऊँप देला । गुरुजी भगवान से विनती करेले जे अइसने कनगर छात्र हमरा के जनम-जनमले मिलस ।

अफसर पुरान में भी काने के महिमा बा। कौनो अफसर में आपन परमोसन चाहत होई त उनका काने के सहारा लेवे के परी । उनकर प्रशंसा करीं आ उनका सहयोगी अफसर लोग के निंदा, त देखीं अफ़सर महोदय कइसे गुब्बारा नियन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

फूलत जात बाड़े। जब ऊ पूरा फूलि जासु आ उड़े-उड़े करे लागसु त मोका निकालि के अपना अरज-गरज के छोट-मोट चर्चा उनका कान में डालि दीं आ निश्चिंत रहीं, एक-ना-एक दिन कान का माध्यम से गइल ई चर्चा उनका हृदय में प्रवेश करी।

कतना गिनाईं! बनिया-व्यापारी एह कान के बदौलत बइठले माल चाभेला लोग। अपना गाँहक का कान में उनकर बचनामृत जब ढुकेला त खराबो चीज निमन लउके लागेला। घरऊ मोर्चा पर भी आपन रंग देखावे से ई कान बाज ना आवे। जवन धर्मपत्नी भा पत्नी एकर गुर जानेली, उनकर गलती सही पतिदेव सहजे घोंटि जाले। पतिदेव का कान में उनुका प्रशंसा के दू-चार बूंद बचनामृत के डालीं, जब ऊ फूलि जासु त हलुके से सिनेमा के प्रस्ताव करीं, बनारसी साड़ी खरीदे के चर्चा करीं आ तनी ढेर फूलल बुझासु त अपना कनफूले के बात कहीं। ई बात कान के महिमा बुझे में माहिर घरनी पर निर्भर करता। जे जतने मरमी बा, ओकर ओतने बड़ प्रस्ताव सहजे मना जाला। एह कर्णाभ्यास के हथियार जवना घरनी के जतने तेज होई उनुकर पतिदेव उनका आगा ओतने जलदी आपन हथियार डाल दीहें।

जबसे ई सब बात हमरा ध्यान में आइल हम कान के आन्हर भक्त हो गइल बानी। हमरा ई विश्वास हो गइल बा कि दुनिया में सफलता के निनानवे फीसदी कारण ई काने बा। एह कर्ण भगवान के पुजारी के कौनो दुःख ना होई। ई पुजारी अपना एह पूजा से एह लोक भा परलोक के साधि लेले आ दुनिया में आपन नाँव कर जाले।

※ ※ ※

नन्हकी कविता

जगदीश सहाय "असीम"

समाजवाद

तनिका - सा दूध, पानी ढेर - सा मिलाईं!
सभका के मिली, समाजवाद आई!!

प्रजातंत्र

वोट का जमाना में जवन इन्दरासन रहे
नेताजी का जीतते ऊ हो गइल मसान।
फेरु ऊ जमाना आई, फेरु अइहें परी लोगिन,
नेताजी जीतीहें, ई ह भेड़ियाधसान॥

उद्घाटन

एगो मुरघटिया
बनके तइयार बा उद्घाटन खातिर
दरकार बा
कवनो नेता-मंत्री के
जे हिम्मत कइके मर सकस
कि समारोह सफलतापूर्वक
मना लिहल जाव।

गरीबी हटाओ

गरीबी के छोड़के गरीबन के धोवे।
कुरसी का असरा में एने ओने - टोवे।
राँड़ का संगे-संगे कुँवरिओ रोवे॥

—×—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चुटकी

● जगदीश सहाय "असीम"

मनसुख लाल इंटरव्यु के तइयारी करत रहले। एगो अनुभवी हेडक्लर्क उन्हुका के सभ गुर बता देहले।

इन्टरव्यु के जवाब-सवाल :

"मि० लाल, रउरा नोकरी चाहीं ?"

"जी सर !"

"रउरा झूठ बोले त ना आवे ?"

"जी ना, बाकी जल्दिए सीख लेब...... !"

मनसुख लाल के बहाली हो गइल।

⁂

एक दिन अपना अधिकारी से आपन बड़वरगी करत रहले— "सर, हम ओइसन कर्मचारी ना हईं कि जाए का बेरा हड़बड़ी में कवनो कागज एने, कवनो ओने फेंक के चल जाईं कि दोस का दिन खोजहीं में घन्टा भर जिआन हो जाव......... ।"

—"हूँ, ई त बहुत अच्छा बात बा, बाकी कइसे सरिआइला ?"

—"सर, हम पहिल्हीं सरिआ-सजाके ध दिहीला,.........कबो-कबो त आफिस छोड़े का पहिले डेड़-दू घंटा चुपचाप बइठे के पर जाला।"

⁂

पाँच बरिस नोकरी करत हो गइल, बाकि मनसुख लाल के तरक्की ना भइल। एही बीच उहाँ का बिआहो कइलीं। तब एक दिन अपना बॉस से कहलीं— "सर, अब त हमार प्रमोशन कर दिआव......"

"काहे ?" बॉस पूछले।

"सर, अब हमार शादी हो गइल, खरचा बहुते बढ़ गइल ...."

"मि० लाल,......" बॉस बीच में बोलले— "कार्यालय से बाहर के कवनो दुर्घटना खातिर कम्पनी जिम्मेवार नइखे।"

⁂

एकदिन मनसुख लाल एगारह बजे आफिस अइले। एक घंटा लेट देखके बॉस गरमइले— "लेट काहे भइल, मि० लाल ?" मनसुख लाल हाथ, गोड़ आ कपार के पट्टी देखाके कहले— "सर, हम ठीक दसे बजे आवत रहीं, बाकी छत से गिर गइलीं..... .. " आधा बात अबहीं मुँहे में रहे तबले बॉस झड़प उठले— "ह्वाट नान्सेंस ! राउर छत केतना ऊँच बा कि गिरे में एक घंटा लाग गइल ?"

⁂

बॉस ओह घरी बंगला बोले के अभ्यास करत रहले। मनसुख लाल एक दिन बतवले— "सर, मेसर्स त्रिपाठी एण्ड कं० से एगो आदमी आइल बा।"

बॉस कहले—"आसते बोलुन......"

(आवे के कह दीं)

तब मनसुख लाल उन्हुका कान भीरी मुँह सटाके गते-गते आपन बात दोहरिआ दिहले।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लक्ष्मी वन्दना

बिक्रमा सिंह

तोहके बन्दीं लक्ष्मी माई !

करुआ तेल खाँटी त नइखे,
शुद्ध घीव कहाँ से लाईं।
अबहीं तक बिजुली खाँटी बा,
ईहे दीया देखाईं।

तिलक - दहेज हमरा ना चाहीं,
आके पोंछ उठाईं।
शर्त इहे, फिल्मी बबुनी से,
शादी हमर लगाईं।

अपरेशन से बड़ा डेरानी,
सूई पर चकराईं।
दू लड़िका का हो गइला पर,
हिजड़ा हमें बनाईं।

देश हित ला एक मांग बा,
जल्दी सफल कराईं।
जयपुर के बा गड़ल खजाना,
ठीक - ठीक जगह बताईं।

एह जुग के बरदान हमें दे—
चमचा हमें बनाईं।
जेने पलरा भारी देखीं,
ओनहीं फिट हो जाईं।

जितला का हरदम आगे हम,
हारला पर पिछुआईं।
लूट पड़े तहवाँ टूटीं हम,
मार पड़े फुट जाईं।

हे विष्णु के अर्ध-अंगनी,
खनहन सोर्स भिड़ाईं।
कुछ दिन ला मंत्रीमंडल में—
हमरो के घुसिआईं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समय के फेर

मीठू मियाँ के आँख-कान बुढ़ारियो में ठीके रहे, बाकी साठ लंघला के बाद तनी-तनी धुधुंराह लउके लागल। एक दिन दउरी-दोकान आ किसिम-किसिम के आदमिन से ठकचल बाजार में भतुआ कीने गइले। दोकान प निहुरल एगो जवान से कहले— "बबुआ, तनी सरकके खाड़ा होख. हमरो तरकारी कीने के बा।" ओह जवान के महमंड में आग लाग गइल आ झट घूमके कहलस— "आरे बुढ़वा, तोरा लउकत नइखे ? लड़की के बबुआ कहत तोरा लाज नइखे लागत ?"

बेचारे मीठू मियाँ सकपकइले ओहिजा से आगे बढ़ गइले। एगो दोसर दोकान प जाके ठहरले त दोसर दुर्घटना हो गइल। ओहिजा ठाढ़ एगो अदिमी से कहले कि ए बाची, तनी घुँसुकके बइठ ना; हमहूँ तरकारी बीनी-बीछीं। अतना कहत भइल कि ऊ जवान उठल आ मियाँजी के धकियाके गिरा देलस। खीसी भूत ऊ कहे लागल— "अइसन आन्हर-भेभर खसूट कहाँ से बाजार में आ जाले स ? एकरा लउकत नइखे कि मरद के बाची कहता ?" मीठू मियाँ उठके धूर झारत कहले— "बबुआ एहमें ना तोहार गलती बा ना ओह बाचियो के रहे। ई फैसन जे ना करावे ! सब समय के फेर बा !

★ ★ ★

रेडियो के गवइया

कुलराखन सिंह के बिआह मे रूसला प एगो ट्रांजिस्टर रेडियो मिलल रहे। घरे लवटला प एक दिन संघतियन के बीच बजावे लगलन। विविध भारती से गाना-बजाना होत रहे। समय पूरा हो गइला प गाना बजाना बन्द हो गइल, बाकी कुलराखन के मन ना अघाइल रहे। खीस के मारे रेडियो उठाके पटक देले। तबले ओह में से निकलके बैटरी छितरा गइल।

कुलराखन सिंह सहज भाव से संघतियन से कहले— "देख लोग, सब गवइया-बजवइया भाग गइलन स, बाकी आपन ढोलकिया एहीमें छोड़ गइल बाड़े स।"

—— × ——

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निबंध

करम-फल के सिद्धान्त

● नगीना सिंह 'विकल'

गँवारे लोग में ना, पढ़ुओ लोग में करम-फल का विषय में गलतफहमी रहेला । आम तौर से बुरा आदमी के सुखी आ भला आदमी के दुखी देख के लोग का करम फल का संचाई में विसवास ना जमे । एकर वोजह एतने वा कि लोग का जिनिगी के ठीक-ठीक समुझ ना होखे । जनम से लेके मरन तकले जे जिनिगी होला, ओही के लोग जिनिगी मान लेला । परलोक के नाँव लोग लेतो रहेला, बाकिर ई कहाँ ऊ लोग बूझेला कि परलोक ह का, आ कुछ ह त वा कहाँ ?

एह लेखमें परलोक का वारे में विचार कइल विषय से बाहर गइल होई । ई बात जरुर बा कि परलोक के विवरण जान लिहला से अउरी साफ हो जाई । अगर ई बात ठीक से समुझ लीहल जाव कि जिनिगी एतना लमहर ह कि ओकरा बीच में जीव हजारन-लाखन वेर जनम लेला आ देह के तेयागेला त बात वहुत कुछ साफ हो जाई । वातो ह अइसने । मरेवाला चाहे मिटे वाला त देह ह जीअत रहे वाला ह जीव । जीव का ह, देह छूटला पर ऊ कहँवा कवना रुप में रहेला, फेर कइसे जनम लेला. एह सब बातन के जबाब तबे मिली, जब परलोक के विवरण सामने रखाई । अबहीं त सामने करम-फल के सिद्धान्त बा ।

करम के, भला-बुरा सब किसिम का करम के तीन भाग में बाँटल गइल बा । साँचल, भाग्य आ करनी— ई तीन करम के भाग ह । जेतना भी भला-बुरा करम केहू करेला, ओकरा जीव का भंडार में ऊ सब जमा होत रहेला । ओकरे के कहल जाला साँचल करम ।

एक आदमी का अपना भौतिक जिनिगी में ओह साँचल करम-भंडार से जेतना करमन के फल भोगे के मिलेला, ऊ भाग्य कहाला । बात अइसन ह कि एतना ना साँचल करम रहेला कि ओह सब के फल एके जिनिगी में ना भोगाई । जेतना भोगे के हूब होई, ओतने नू भंडार से मिली भोगे के ? वेसी मिल जाई त आदमी तुरते मरिए जाई, भोगी का ? कोढ़ो, दमा के रोगी, भिखार वोगेरह सड़क का किनारे माघ के रात काट लेला । ऊहे दमा चाहे दोसरो कवनो कठिन रोग अमीरो का होला जे अपना महल में सब सुविधा का बीच भोगत रहेला । ओह अमीर का सड़क का किनारे रात काटे के परे त टें बोल जइहें, भोगिहें का ? ओह भिखार का सब सुविधा का साथे ओह अमीर के महल मिल जाव त उहो का भोगी ? कुछे दिन भला-चंगा हो जाई । त एतना मानहीं के परी कि ओह भिखार का ओह अमीर से कई गुना वेसी प्रबल जीवनी शक्ति मिलल बा । केहू का भाग्य

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में भोगे के जवन मिलेला, ओकरा ओही का मोताबिक भोग लेबे के शक्तियो मिलेला। अइसन विधना के विधान बा।

जवन करम आदमी करत चलेला, ऊ ह करनी। ऊ सब साँचल करम-भंडार में जमा होत चलेला। कवना करम के फल कब चाहे कवना जिनिगी में भाग्यफल बनके आई, ई ना कहल जा सके। एतना जरुर कहल जाई कि कवनो एक जिनिगी का सब करमन के फल ओही जिनिगी में ना मिले। मिली जरुर, कब मिली से अन्हार में बा। जीव हरमेशा प्रगतिशील ह। साधारण नियम त इहे ह, बाकिर अपवाद भी होला। जे आदमी देखे में बहुत पापी बा, अपना पिछिलका जिनिगी में ऊ अउरी बड़का पापी होई। जीव प्रगतिशील ना रहित त ओकर कबो छुटकारा ना होइत।

अपना हर जिनिगी में आदमी अपना साँचल करमन में से भोगे खातिर आछा करमन का बनिस्पत बुरा करमन के प्रारब्ध लेके आवेला। एक-बात ई। दोसर बात कि आदमी अपना पिछिलका जिनिगी का बनिस्पत एह जिनिगी में बेसी आछा करम भंडार में जमा करेला। एह तरह से हर आदमी का सञ्चित भंडार में बुरा करम घटत चलेला आ भला करम बढ़त चलेला। जब प्रारब्ध भोगत-भोगत जीव का भंडार में बुरा करम भोगे खातिर ना रहि जाई, तब जीव के आवाजाही से छुटकारा मिल जाई। एह हालत में जीव का भंडार में सिरिफ आछा करम रहि जाई। एह से ऊ आध्यात्मिक लोक में आनन्द-मगन रहि के उहवें से धरम आ सचाई का डगर चले वाला लोग के परभावित करत रही—अपना शक्तिसे। एक समय अइसनो आई कि ओकरो अइसन करमन के फल मिली। का मिली? इहे मिली कि ऊ ब्रह्म में समा जाई।

विषय के ठीक गेयान खातिर एगो मोटा-मोटी हिसाब नीचे दीहल जात बा :—

मान लीहल जाव कि एक जीव का साँचल भंडार में १०० करम बा, जवना में ६० बुरा बा आ ४० भला बा। ऊ जीव जनम लेहलस। एह जिनिगी १० बुरा कइलस आ २० भला। अब साँचल भंडार में ७० बुरा हो गइल आ ६० भला हो गइल। एतना त ऊ बुरा भला कमाई कइलस। भोगलस २० बुरा के फल आ १० आछा के फल। काट-छाँट के ओकर बुरा-भला के भंडार ५० आ ५० के हो गइल। जीव प्रगति कइलस। अइसने आगे हिसाब क के बात बूझल जा सकेला।

खुदी को कर बुलन्द इतना कि हर ईमान के पहले
खुदा बन्दे से पूछे कि बता तेरी रजा क्या है?

—डा० इकबाल

चमकजा खुद तलातल में अन्हरिया एह तरह भागे
कि सूरुज पूछस तोहरा से उगीं त हम कहाँ उगीं?

—'निर्मल'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अकेले ना चलीं बाट, झारिके बइठीं खाट !

● डा० शिव मंगल राय

'अकेले ना चलीं बाट, झारिके बइठीं खाट'— भोजपुरी क एगो कहाउति ह । एके उहे लोग कहे-सुनेला, जे भोजपुर क रहेवाला हऽ । [बाकी एह बाति क खियाल जरुर राखब जे एह 'भोजपुर' के मतलब आजु क 'भोजपुर जिला' नाहीं हऽ । एमें बिहार क (पहिले क) शाहाबाद, सारण, चम्पारन, राँची, जसपुर स्टेट, पलामू, मुजफ्फरपुर आ यू० पी० क बलिया, गाजीपुर, बनारस, मिर्जापुर आजमगढ़, देवरिया आ वस्ती क जिला शामिल हउवँ सऽ ।] ई कहाउति बूढ़-पुरनियाँ लोग तब कहेला, जब केहू लइका चाहे जवान का कहीं जायेके होला । ओ लोग का ई कहला क मतलब रहेला कि जायेवाला अदिमी भरिसक केहू न केहू अदिमी के संगे जरुर ले ले । बाकी ओह लोग का ए कहला क जाये वाला पर आजु-कालि कवनो खास असर नाहीं होखे । उलटे, ओकरा ए बाति प मन हीं मन हँसी छुटे लागेले । काहें कि आजु का भोजपुरी क ऊ हालति नइखे जेवना हालति में जायेवाला का लाचार होके केहू ना केहू के आपन संगी बनावहीं के परे । पता नाहीं जे ई कहाउति कबले चललि चलि आवति हऽ । हम त अपना छोटका बाबा से एके सुनलीं, जब तीसरा दरजा में पढ़त रहलीं । ओ घरी हम उनका से पूछलीं त नाहीं कि ऊ ए कहाउति के केकरा से सुनले रहलन । बाकी हमार अन्दाज बा कि ऊहो अपना ले केहू बड़े-बूढ़ से सुनले रहल होइहें । हमके जनाता कि ई बाति पहिले पहिले केहू ओह घरी कहले होई जब गाँव बहुत दूर-दूर बसल रहल होइहें सऽ । उन्हनीं क आबादी बहुत कम रहलि होई । हो सकेला जे ई कहाउति हजारो-डेढ़ हजार बरिस ले ढेर पुरानि होखे, काहें कि आजुले बारह-तेरह हजार बरिस पहिले जब राजा हर्ष राज करत रहलन, चीन क एगो यात्री हुएन सांग भारत आइल रहलन । ऊ ओह-ओह जगहिन के देखल चाहत रहलन, जहाँ जहाँ गौतम बुद्ध उपदेश देले रहलन आ जहाँ-जहाँ संघाराम बनल रहलन स । ऊ अइसन करबो कइलन । बनारस का पंजरा सारन थ से जब पूरुब चललन त आजु का सैदपुर, औंड़िहार, गाजीपुर, गउसपुर, बलिया, नरायनपुर, बक्सर आ भरौली होत बैशाली राज क ओर चलि गइलन । स्थानन क ई कुलि नाँव ऊ अपना किताबि में नइखन लिखले । बाकी उनका चलला, ठहरला आ देखलि जगहनि का बेवरा पढ़िके कनिंघम साहब (पुरातत्व विभाग क पहिला डाइरेक्टर जनरल), एच० आ० नेविल साहब (गाजीपुर गजेटियर, जिल्द २९ क लेखक) आ कृष्णानन्द राय (गाजीपुर का संस्मरण के लिखेवाला) अइसने हिसाब लगवले बाड़न । हुएन सांग का किताबि (हुएन सांग का भारत भ्रमण : इण्डियन प्रेस) के पढ़ला से जनाला कि ओहू घरी (सातवीं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शती में) भोजपुर में जंगले ढेर रहे। बक्सर का का चारु ओर बहुत दूर-दूर ले फइलल बन एतना घन आ खतरनाक रहे कि ओमें जाये क केहू क हिम्मति नाहीं परे। ओमें अइसन-अइसन राछसो रहत रहलन स जे अदिमिन के देखते मारि के खा घालसन। अदिमि कुल्हि ओही जगहिन पर रहत रहलन जहाँ क जिकिर हुएन सांग अपना किताबि में कइले बाड़न। हो सकेला जे कुछु छोट-छोट गाँव अड़रियो रहल होखन स जहवाँ ऊ गइल ना होखसु आ चाहे उन्हनीं के जनले ना होखसु। चाहे जेवन कुछु होखो, एतना त जरुरे बा जे अगर अउरी गाँव रहलो होइहें स त बहुत कमें आ ऊहो छोट-छोट आ बहुत दूर-दूर बसल रहल होइहन स। भोजपुर क ई हालि त रहे तब, जब हुएन सांग आइल रहलन।

नेविल साहब अपना गजेटियर में बीरपुर, कुड़ेसर, बारा आ करीमुद्दीनोपुर क जिकिर कइले बाड़न। ईहो लिखले बाड़न कि मान्धाता दिल्ली-अजमेर का राजा पृथ्वीराज का खानदान में भइलन। जब ऊ कोढ़ी हो गइलन त बहुत दवा-दारु करवइलन, आराम नाहीं मिलल त तिरथन में निकललन। जगरनाथ जी गइलन आ जब ओहिजो आराम नाहीं भेटाइल त बनारस चललन। गउसपुर का पंजरा पहुँचलन त गाँव क बहरी एगो पोखरा पर ठहरि गइलन। ओमें नहाते उनके आराम बुझा गइल। बस अब का। ऊ रोज-रोज ओमें नहाए लगलन। कुछु दिन का बाद ठीक हो गइलन। ओहिजें किला बनववलन आ आपन लाव-लसकर लेके रहे लगलन। उनका एगो जवान भतीजा रहे, मनचला। एक दिन एगो बूढ़ि विधवा मियाँइनि अपना बहुत सुघ्घर आ जवान लइकी के लेके कहीं जाति रहे। मान्धाता क भतीजा ओ बुढ़िया से ओ लइकी के छीन के किला में राखि लिहलसि। ऊ बुढ़िया दिल्ली का सुल्तान मुहम्मद तुगलक से जा कहलसि आ तुगलक का हुकुम पर सइयद मसूद मान्धाता पर हमला कइलन। किला के जितलन आ मान्धाता के कतल कर दिहलन। उनकर भतीजा भागि गइल आ दू बेर किला के वापिस लेवे क कोशिश कइलसि, बाकी ओकर भाग साथ नाहीं दिहलसि। ऊ आजु का गाजीपुर शहरि कीहें मरा गइल। सैयद मसूद क बड़ा नाँव भइल। ऊ एही जीति का इयादि में ओहिजा शहरि क नेईं डलवलन। उनके हाल ही क 'मालिक-उस-सादात गाजी' क खिताब मिलल रहल। ऐही से उनहीं का नाँव पर ओ नगर क नाँव गाजीपुर धराइल। ई काम १३३० ई० में भइल।

अब एही से सोची जा जे अवहीं ओहू घरी तक भोजपुर क का दशा रहालि होई! एतने नाहीं, अबहीं ओहू का करीब पाँच सौ बरिस बाद माने आजु ले एक सौ साठ बरिस पहिलें तक आजु का गाजीपुर-बलिया बनारसे जिला में रहे। १८१७ ई० में पहिले-पहिल गाजीपुर शहरि में कलक्टर आ जज क दफ्तर आईल। हँ, जौनपुर क मुसलमानों राजन का समय में तरक्की जरुर भइल रहे। एह कुलि बातिन से आप अन्दाज लगाईं, जे पहिले का अदिमिन के कहीं आवे-जावे में केतना तकलीफि आ खतरा रहल होई।

[बाकी अगिला अंक में]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी लोक गीतन के जादू ।

● जगदीश ओझा सुन्दर

साँच पूछल जाय त हमनी के मातृभाषा भोजपुरिये हवे। महतारी का दूध संगे अमरित बनिके जवन कंठ से पेट में उतरे, खून बनिके रगरग में समा जाय ओकरा के जिनिगी से कइसे अलग कइल जा सकेला ? लइका का जनम लेते सोहर के मधुर गीत टोल-परोस के मन में हुलास भरिके बेजनले बता देला जे बबुआ के जनम हो गइल। बबुआ के नीनि बोलावे खातिर जब महतारी लोरी गाइके नेवता देले त हो ना सके जे लइका के आँखि ढँपि ना जाई। 'आ-उरे निनिया निनर वन से, टाटी गोनर पटना से', 'चाना-मामा आरे आव, पारे आव, नदिया किनारे आव', आदि लोरी ना जाने कब से बबुअन के नीनि बाँटत आवत बाड़ीस। एही तरे संझा-पराती के गीत, निराई-कटाई के गीत, बेटी-बेटा के बिआह-शादी के गीत अलगा-अलगा मौसम के अलगा-अलगा गीत। अलगा-अलगा काम के अलगा-अलगा गीत, जइसे जांता पर जंतसार के गीत, सूते का बेरि बिरह गीत। कहेके मतलब जे भोजपुरी भाषा के लोक गीति हर-एक भोजपुरी का जिनिगी में दूध आ पानी नियर समाइल बा।

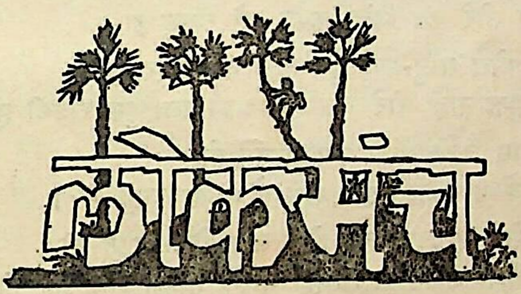

लोक गीतन का अछरि-अछरि में हजारन बरिसन के जवन संस्कार समाइल बा ओकर विश्लेषण होखे, खोज होखे त जिनिगी के अनेक पहलू के दरसन हो सकेला, जवन एहतरे जाहिर नइखे। जो भोजपुरी लोकगीतन के मोकाबिला बंगला लोक गीत आ ब्रज लोक गीत से कइल जाई त ई कबहूँ पीछे ना रही। भोजपुरी के ई जादू जानिये के जतना सन्त अपना मत के एह क्षेत्र में प्रचार कइले, भोजपुरिये के माध्यम अपनवले। भोजपुरी के गुरु-महिमा के एगो गीत देखीं—

सूतल रहलीं हम निनिया में हो, गुरु दिहले जगाइ,
गुरु के चरन दृग-आंजन हो, लिहलीं नयन लगाइ,
जनम-जनम केरा पातक हो छिनही में बिनसाइ।

कतना सरल, कतना सुबोध; ना कवनो टिपनी करेके ना अरथ समुझावे के! एहीतरे बेटी के विदाई के समय जवन गीत गावल जाले ऊ त सुनेबालन के करेजा फारि देला—एतना दरद एह गीतन में समाइल बा जवना के मोकाबिला कहीं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मेहररूई लोक गीत

(सोहर)

आशा कुमारी

कथी के ई गढ़ल घरिलवा, कथी के रे डोरी नू हो,
ए ललना केई सखी पनियाँ के जाली त केई सखी मिलीजुली हो ।

सोनवाँ के गढ़ल घरिलवा रेशम रे डोरी नू हो,
ए ललना यशोदा जी पनियाँ के जाली त पाँचो सखी मिलीजुली हो ।

कोई सखी हाथ मुंह धोये कोई सखी जल भरे हो,
ए ललना कोई सखी घाट निहारे त तिरिया एक रोअली हो ।

ना इहाँ नाव ना बेड़ी नाहीं इहाँ केंवट हो,
ए ललना कवना विधि उतरब पार तिरिया के समुझाइब हो ।

अंग के वस्त्र कछड़वा त सब सखी मिलीजुली हो,
ए ललना छाती धरिला उठुंघाइ जमुना दोहे पार भइली हो ।

किया तोरे सासु ननद दुख नइहर दूर बसे हो,
ए देवकी किया तोरे कंत विदेश कवन दुखे रोअलू हो ।

नाहीं मोरा सासु-ननद दुख नाहीं नइहर दूर हो,
ए बहिना नाहीं मोरे कंत विदेश कोशिला दुख रोअलीं हो ।

सात बालक राम दिहले सातो कंस मरलस हो,
ए बहिना आठवें गरभ अवतार त सेहो के भरोसा नाहीं हो ।

चुप होख ए देवकी चुप होख जनि रोअ-मर तू हो,
ए बहिना आपन बालक हम मारबि तोहरा जिआइबि हो ।

भोजपुरी लोकगीतन के जादू······

ना लउके जइसे—'डोलिया के बाँस धई बाबा रोवे, बेटी अब पराया भइली हो एहीतरे एगो विरहिन के मुंह से निकलल पीरा के बानगीलीं

पिया-पिया रटत पियर भइली देहिया ।
लोगवा कहेला पिण्ड रोग
गउवाँ के मनई मरमियो ना जाने
भइलीं गवनवाँ के जोग ।

अइसन-अइसन उदाहरन हजारन देल जा सकेला। जिनिगी का हर अवसर के हर पक्ष के जवना के पढ़िके, सुनिके आ गुनिके केहू अदिमी चाहे कवनो भाषा के होखे भोजपुरी के लोक गीतन के जादू से इनकार ना कइ सके । भोजपुरिहा लोगन के ई कर्तव्य बा, धरम बा जे एह लोक गीतन के आजु काल्हि का पछिमी तूफान में ऊड़े ना दे आ सिनेमा का अथाह सागर में बूड़े ना दे ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

झुनझुन बेटी

प्रस्तोता : परमेश्वर दुबे शाहाबादी

एगो बाबाजी रहन। ऊ दूइये बेकत रहन। ओह लोग के कवनो संतान ना रहे। एह से बड़ी दुःखी रहत रहे लोग। एकदिन बाबाजी ब एगो मैना कीन के पोस लेली। ओकरा गोड़ में घुंघुर बान्हि देली। जब ऊ घर में फुदुके त घंटिया टुन-टुन बाजे त बाबाजी ब कहसु—बाह रे हमार झुन-झुन बेटी, बाह रे हमार झुनझुन बेटी! ऊ ओकरे के अपना बेटी अस प्यार दुलार करत रही।

एगो राजा के कुँअर रोज उन्हुके दुआर पढ़े पढ़े खातिर स्कूल जात रहे। आवत-जात दूनो बेरा ऊ बाबाजी के घर में घंटी के टुन्-टुन् आ बाबाजी ब के "बाह रे हमार झुनझुन बेटी, बाह रे हमार झुनझुन बेटी सुनसु। एक दिन ऊ अपना मन में बिचार कइले कि चाहे जे होखे हम ब्राह्मणी के एह झुनझुन बेटी से बिआह करबि। ऊ घरे गइलें आ अपना बाप से कहलें कि ब्राह्मणी के झुनझुन बेटी से हमार बिआह करदीं ना त हम आपन जान दे देबि। राजा कहलें कि ई कवन बड़ बात बा कि तू जान देब। हम अभी ब्राह्मण किहाँ आदमी भेजतानी। राजा ब्राह्मण किहाँ आदमी भेजलें आ ब्राह्मण खुशी-खुशी उन्हुकर बात मानि लेलें। बिआह के दिन तय हो गइल। बड़ा धूम-धाम से बारात आइल आ शादी-बिआह भइल। दोसरा दिन ब्राह्मणी अपना झुनझुन बेटी के खुब सजा-सँवार के पिंजड़ा में कके डोली में बइठा देली। बरिआत बिदाई भइल। कहाँर पालकी लेके चल देले स आ जात-जात दुपहरिया में डोली एगो घनघोर जंगल में राखि के एगो फेंड़ा त आराम करे लगले स।

ओहीं जंगल में शिवजी आ गउरा पार्वती जी घूमत-घूमत चलल आवत रहे लोग। पार्वती जी शिव जी से कहली कि हम कनेयां देखबि। शिवजी कहलें कि ई झमेला छोड़ आगे चलीं जा बाकी पार्वती जी ना मनलीं। ऊ जाके डोली में देखलीं त मैना पिंजड़ा में बइठलि रहे। अब पार्वती जी कहे लगली कि ई कनेयां भला जेकरा घर में जाई ओकरा प कइसन बीती? एकरा के राजकुमारी बना दीं। शिवजी कहलन कि इहे नू मेहरारु के जात कहाला छोड़ अइसन त होते रहेला। बाकी पार्वती जी ना मनली। तब शिवजी मैना के खूब सुन्नर बारह बरिस के कन्या बना देलें आ राजा के कुँअर ओकरा जवरे सुख से रहे लगलें।

(ई लोककथा पं० गणेश चौबे, बंगरी से मिलल)

—×—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भादो महीना

भादो महीना में परब-त्योहार के भरमार रहेला । ई महीना हिन्दू धरम माने वाला लोगन के परबे त्योहार के महीना ह । एहमें कतना किसिम के परब, बरत आ धरम-करम के विधान बा, बाकी कुछ खास-खास परवन के बारे में संक्षेप में नीचे देल जा रहल बा :—

अठिमी :— अठिमी संस्कृत के अष्टमी के भोज-पुरी रुप ह, जेकरा के जन्माष्टमी भी कहल जाला । तारीख ५ सितम्बर के गिरहत आ ६ तारीख के वैष्णव लोगन के अठिमी परता । श्रीकृष्णजी के जनम एही दिन भइल रहे । अइसन बुझाता कि कंस रुप राछ्स के मारके धरम के रक्षा करे खातिर जब कृष्णजी अवतार लेबे लगले त भगत लोग दिन भर भूखे एहसे रहले कि माई देवकी के पीर मत होखो । एहीसे लोग भूखे रहके भाव भक्ति के साथ जागरन करके आधा रात ले भजन-कीर्त्तन करत रहला आ ठीक आधा रात के जनम हो गइला प सोहर-कीर्त्तन गा-बजा के भगत लोग पारन करला । अठिमी के बहुत बड़ महातम बा ।

विश्वकर्मा पूजा :— विश्वकर्मा पूजा एह साल १७ सितम्बर के परता । एकर महत्व खाली कल-कारखाना में होला, जहाँ बड़ी धूम-धाम से पूजा आ उत्सव मनावल जाला । ई पूजा विज्ञान आ प्राविधि के आदि देवता विश्वकर्मा जी के ह ।

तीज :— तीज औरत लोगिन के बहुत बड़ परब होला । ई तीज हरि तालिका बरत भी कहाला । तारीख १६ सितम्बर के तीज परता । एहमें बिना अन्न-पानी खइले-पिअले औरत लोग उपवास रहली आ सांझ खानी शिव-पार्वती के कथा सुनली । ई हे बरत कइला से पार्वती जी के शिवजी से विआह भइल रहे । एही से अपना पति के जिनिगी आ आपन सोहाग खातिर तीज कइल जाला ।

गणेश चौथ :— मंगल आ विद्या खातिर गणेश जी पूजा चौथ के दिन पढ़ुआ लोग करला । एह पूजा के दखिन भारत के लोग जादे बड़हन पैमाना प करला ।

रिख पंचमी :— एह परब के भी बड़हन महातम मानल गइल बा । एह बरत के कइला से पाप के नाश होला । ई बरत तारीख १७ के परता ।

करमा - धरमा :— एकादशी के दिन करमा -

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धरमा बरत कइल जाला । पूरा उपवास करके सांझ खानी कुश के जर के पूजा कइल जाला । ई परब भाई के मंगल खातिर औरत लोग करला । करमा-धरमा २३ तारीख के परता । ई परब तनी दोसर। रुप में छोटानागपुर के आदिवासी लोगन में धूमधाम से मनावल जाला ।

अनत :— अनन्त चतुर्दशी के भोजपुरी में अनत कहल जाला । ई बरत मरद मेहरारु आ लइका-लइकी सभे करला । एहमें उपवास रहके सांझी के दूध-पानी में अनत फल खोजल जाला । एकरा में समन्दर के महके अमरित खोजे वाली भावना छिपल बा । अनत एह महीना में २६ तारीख के परता ।

● सुशीला देवी

—— x ——

रमजान शरीफ

रमजान मुसलमान लोग के सबसे बड़हन परब ह, जवन कि एही महीना में परल बा । ई मजहब के खेयाल से मन के पबितर करेके परब मानल जाला । एहमें हरेक सेहतवाला (रोगी आ बच्चा के छोड़ के) मुसलमान के ३० दिन तक रोजा राखल जरुरी होला । रोजा के माने अरबी में 'सोम' होला, जेकर मतलब ह अशोभनीय काम से रुकना भा बचना । ई परब मुसलमान लोगन के सब परबन से ऊँच आ महान होला, काहे से कि पैगम्बर मुहम्मद सलअम के एही समय में मनुष्यता के अकेला आ पूरा पवितर रास्ता कोरान के रुप में मिलल रहे । नीमन से रोजा रखला प आदमी के मन से खराब बिचार के नाश हो जाला । रमजान के दौरान छोट-मोट खराबियन खातिर सदकाये फित्रा के विधान कइल गइल बा । ई एक तरहसे दान के विधान ह, जे कि उपयुक्त लोगन के ही देल जाला ।

एक किसिम से देखल जाय त एक महीना तक पूरा उपवास कइला से सेहतो बनावे में मदद मिलला आ पेट के शुद्धी हो जाला । एही से रमजान मुसलमान लोगन खातिर वरदान ह । रमजान एह महीना में १५ तारीख के चांद दरशन के बाद पूरा मानल जाई । चांद के दरशन करके पूरा उछाह आ उमंग से जवन त्योहार मनावल जाला ऊ ईद चाहे ईद-उल-फितर कहल जाला ।

● डॉ० एस० एन० रहमान

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

घुघुआमाना

● माधव पाण्डेय निर्मल

घुघुआमाना, उपजे धाना — नई भीती उठली,
पुरानी भीती गिरली — सम्हरिहे बुढ़िया ।

छेरियाइल बबुआ ना माने, गोड़ हिलावे माई,
ओठ बिचुका के रोये-काने कतनो लोरी गाईं,
घोलट-पोलट के तेल अबटाता काजर-टीका लगाइ,
उछिल-उछिल के गिरल चाहे चटनी भले चटाईं,

झुझुना बाजल, चिरई फुर्र-फुर्र—अब उपाय कुछ बा ना । घुघुआ···

लाल गाल प लाल फूल के लाल गुलाल झरत बा,
चुप भइला प टुकटुक ताके, हँसे दुलार भरत बा,
रोअ भा चुपे रह हो बबुआ चूमा प चूमा लिआईं,
अझुराव सटिआवल लटिया फ़िर लेहब सझुराइ,

याद दिलावे चूमचूमके अइहें तोहरो नाना । घुघुआ······

नन्हकी खटिया प ढेंकिया घरे के ई सूतल बा,
साफ रहे गँड़तर पहिले से अब एह प मूतल बा,
खड़ा ताक में माई बीया बबुआ तुरुते उठी,
सपना टूटी लीही जम्हाई खुल जाई ई मुट्ठी,

गोतिनी देबे ग़ारी, देवो, ननदी मारे ताना । घुघुआ······

अझुराइल सपना टूटल लगले ओठवा बिचुकावे,
झनकल बीना खटिया-बाधी लगले रोये-गावे,
के बूझत बा गीत ई हउवे कि सपना के उत्तर ह,
माई पिआवे दूध घुमावे, ठोके हइहे चूत्तर ह,

पँवरे बदरी, दोल्हापाँती खेले चाँद मनमाना । घुघुआ······

लाल किरिनियाँ गाल चूम खोही में गइल लुकाये,
अलकतरा में रात नेहाइल बबुआ के डेरवावे,
नजर कहीं लागल त नइखे दीआ से ओईं छाता,
टेम्ही धइल चाहे हाथ से एने गीत गवाता,

जरी नजरिया एह आगी में बइठ-बइठ सिरहाना । घुघुआ······

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दाई–बिलाई

एगो दाई रहली, एगो बिलाई रहली । दाई-बिलाई कोंहड़ा रोपली । दाई के फ़रल, बिलाई के ना । एक दिन बिलाई के कोंहड़ा के तरकारी खायके मन कइलस । बिलाई दाई के घरे गइली आ कहली— "ए दाई, कोंहड़ा देबू ?" दाई कहली—"कइसे ले जइबू ?" "लोंघड़ा-पोंघड़ाके ।"

"कटबू कइसे ?" "खरे - हँसुए ।"
"पकइबू कइसे ?" "खुदुर - बुदुर ।"
"खइबू कइसे ?" "गुबुर - गुबुर ।"
"सुतबू कहवाँ ?" "चूल्ही में ।"
"ओढ़बू का ?" "सूप ।"
देख बिलाई के रुप !!

***

रामजी - रामजी हँसुआ द
ऊ हँसुआ काहेला
खरही कटावेला
ऊ खरही काहेला
बंगला छवावेला
ऊ बंगला काहेला
भउजी के लावेला
ऊ भउजी काहेला
लाल-लाल बबुआ देवेला
ऊ बबुआ काहेला
गुल्ली डंडा खेलेला
गुल्ली डंडा टूट गइल
लाल बबुआ रुस गइल ।

—०—

आलोक कुमार

बाँटि-चोटि के खायेके चाहीं !

[कथा]

रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक'
एम० ए०, रिसर्च स्कॉलर

एगो लइका रहे । ओकरा दूगो मुँह रहे । एगो आगे आ एगो पीछे । हाथ दुइये गो रहे आ पेट एके गो ।

एक दिन आगेवाला मुँहवा केरा खात रहे त पीछेवाला मुँहवा कहलस कि ए भाई, एक काटा हमरो के द । त आगेवाला मुँहवा कहलस कि बड़ा नू छछलोल बाड़ ! तोहरा के ना देबि । फेनु एक दिन आगेवाला मुँहवा खात रहे जिलेबी, त पीछेवाला मुँहवा कहलस कि ए भइया, तनी हमरो के चिखाव ना । त आगेवाला मुँहवा कहलस कि जाके तनी शीशा में आपन मुँह ना देखि आउ । हमनी के पेटवा त एके बा । हम खाईं चाहे तें खो पेटवा त दूनो के भरता । तोहरा के ना देबि । फेनु एक दिन आगेवाला मुँहवा चीभत रहे ऊखि, त पीछेवाला मुँहवा कहलस कि काहे हमराके छछनावत बाड़ । हमरा जीभि से पानी चूअता । एक गुल्ली हमरो के चभाव ना । त आगेवाला मुँहवा कहलस कि आपन दाँतवा पजाल त चीभीह । एह प पीछेवाला मुँहवा के बड़ा इरिखा लाग गइल । बस एक दिन दिराखा प जहर रखल रहे । उहे गबसे खालेलस । पेट त दूनो जाना के एके रहे । उहे दूनो जाना मर गइले ।

एहसे दोसराके तरसावे के ना चाहीं । बाँटि-चोटि के खायेके चाहीं आ ना त दोसरा के नजर लागि जाला ।

——%——

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खेल कवित्त

प्रस्तोता — मनोकामना सिंह 'अजय'

चल दोस्त बाग में, मेवा खिलाइब ।
मेवा के डार टूट गइल, चदर बिछाइब ।
चदर के खूंट फाट गइल, दरजी बोलाइब ।
दरजी के सूई टूट गइल, लोहार बोलाइब ।
लोहार के हथौड़ा टूट गइल, घोड़ा दउड़ाइब ।
घोड़ा के पैर टूट गइल, हरदी छुपवाइब ।
जइसे हरदी के ना कबो छूटे रंग ।
ओइसे छूटे ना कबो तोहार - हमार संग ।

—×—

अटकन मटकन— दही चटाकन !
बड़ फूले, बड़इला फूले ।
सावन में करइला फूले ।
नेउरा गइल चोरी,
धर कान ममोरी !

—×—

ताड़ काटूं, तड़कुल काटूं,
काटूं रे बड़खाजा ।
ड्योढ़ी प के हाथी, ठमक चले राजा ।

—×—

ओका बोका— तीन तरोका ।
लउआ लाठी— चन्दन काठी ।
चन्दन के नाम का ?
इजयी बिजई
घोंघवा पुचुक ।

:×: गपबाजी :×:

अभय कुमार सिंह

सब लइकन के भीड़ लागल रहे । एतने में खदेरना आइल । आवते आपन बहादुरी हाँके लागल— "जान तार लोगन, हम आवत रहनी हँ त रास्ता में एगो बाघ भेंटा गइल ह । हम त डरनी हँ ना । एक लोटा पानी ओकरा देह पर फेंक देनी हँ आ बाघ भाग गइल ह । हम चल अइनी हँ । अतने में गोबर्धन बोलता कि हँ भाई तू ठीक कहतारे हमरो ऊ बाघ भेंटाइल रहल ह । हम ओकरा पीठ प हाथ रखनी हँ त ओकर पीठ भींजल रहल । खदेरना झेंप गइल आ सब लइका ठठाके हँस देलनसन ।

× × ×

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

['भोजपुरी संसार' के एह अंक से चिट्ठी-पत्री नाँव से ई स्तम्भ शुरु हो रहल बा। कवनो पत्र-पत्रिका के बारे में पाठकन के बिचार, सलाह आ सुझाव खातिर ई स्तम्भ जरुरी होला। 'भोजपुरी संसार' के पहिलका अंक के भोजपुरी जगत में भरपूर स्वागत भइल बा। ई बात दर्जनन चिट्ठी-पत्रिन के जरिये मालुम हो रहल बा। स्थान के सीमा के भीतर सबके सब चिठियन के एहिजा छापल सम्भव नइखे, तबो कुछ के कुछ अंश एहिजा देल जाता। बाकी चिठियन के प्रकाशन अगिला अंक में कइल जाई। सब चिट्ठीपत्री से प्रेरणा, उछाह आ बल मिल रहल बा, हम सबकर आभारी बानी।] —सं०

"भोजपुरी संसार" के पहिला अंक मिलल। धन्यवाद। सुन्दर आ रुचिगर सामग्री, बढ़िया कागज पर साफ टाइप में छपल देख के मन में बड़ा खुसी भइल। तरह-तरह के सामग्रिअन के रउरा अच्छा जुटाव कइले बानी, लेकिन साहित्यिक निबंध के कमी लागल। राउर भाषा नीति के जानकारी संपादकीय टिप्पणी से मिलल। ई बात ठीके बा कि जबले भोजपुरी के कवनो सर्वसम्मत रुप नइखे सामने आवत तबले हरेक क्षेत्र का लेखकन का अपना क्षेत्र का भोजपुरी में रचना देवे के हक बा लेकिन कुछ मोटा-मोटी बातन पर त संपादक का धेआन दे के ओह मोताबिक भाषा में सुधार करिये देबे के चाहीं।

* पं० गणेश चौबे, बंगरी, चंपारण

मैं देखता हूँ कि "भोजपुरी संसार" एक सर्वांगीण पत्रिका है, जिसे घर-बाहर आबालबृद्धबनिता पढ़ सकते हैं। कारण कि इसमें उन सब को ध्यान में रख कर सामग्री का संचयन किया गया है। मतलब, सभी तरह के पाठकों के लिये इसमें सामग्री है। इस ख्याल से यह अपने ढंग की अकेली, अनुपम पत्रिका निकली है। इस आर्थिक अकाल के युग में यह अपनी सत्ता अक्षुण रखे यही भगवान से प्रार्थना है।

* प्रो० डा० शिवनाथ, रतनपल्ली, शान्तिनिकेतन

"भोजपुरी संसार" देर से आइल, बाकिर दुरुस्त आइल. बड़ा नीक केतना बधाई दी! सब कुछ बिनल-बाछल, चकाचक साजल!!

* विश्वरंजन एम० ए० छपरा

प्रिय भाई निर्मल जी, १८-८-७७ के "भोजपुरी संसार" मिलल। सुन्दर अंक निकलला खातिर पुरहर बधाई आ धन्यवाद। "भोजपुरी संसार' अपना में ऊ सबकुछ समेटी जे भोजपुरी संस्कृति के मूल तत्व वाड़न स।

* अविनाश चन्द्र विद्यार्थी, पटना

"भोजपुरी संसार" मिलल। जुड़ा गइली। 'देर आए दुरुस्त आए' के नेकनीयत के सबूत रउरा दे दिहली। सचहुँ के रउरा अपना संकल्प आ टेक का मोताबिक नीमन, नीक, दमगर, दबीज आ देखनगू पत्रिका प्रकाशित कइले बानी। हार्दिक अभिनन्दन, साधुवाद सकारीं।

* अनिल कुमार आंजनेय, उजियार, बलिया

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'भोजपुरी संसार' के प्रवेशांक मिलल। देख के बड़ा खुशी भइल। रचना, छपाई-सफ़ाई हर रुप में अंक सुघर बा। बधाई। सम्पादक निर्मलजी के मेहनत के पत्रिका के हर पन्ना मूक बखान करता। एह समय अव्यावसायिक पत्रिका निकालल, तवनो पर भोजपुरी में तलवार के धार पर चलला से कम साहस के काम नइखे। एह खातिर हमार बधाई सकारीं सभे।

* अरुण मोहन भारवि, बक्सर

आजुए मिलल हा हाथ में 'भोजपुरी संसार'।
आदि-अन्त ले पढ़ि के पवलीं सगरो मुद-संचार॥
सिघई के बुरबकाही आ, हँसी के गलगोपा।
अपने पाँड़े ढिमिला गइले, आ भूठ-साँच के भोंपा॥
चारों खूबे रसगर लागल, हँसल सभ सुनवइया।
कवना जरिए चन्दा जाई, पन्द्रह गो रुपइया।
गेट-अप पत्रा के नीमन बा, कागज बा मनमोही।
आवकपृष्ट के नामो सभ, साचो में सम्मोही॥
लेखको त सभ नामी बाड़े, जानल आ पहचानल।
पत्रा जरुरे नाम कमाई, ई बातो बा मानल॥

* सर्वेन्द्रपति त्रिपाठी, पटना

'निर्मल' कर से पवलीं जब से,
भोजपुरी संसार।
उपमा लागल सूरजमुखी के,
छव पतई कचनार।
साज-सँवार आ रचना देखिके,
मन अइसन अगराइल।
रकम-रकम के फूल के गजरा,
मालिन ले के आइल।
कविता गीत आ कथा-कहानी,
हास्य-व्यंग्य भरपूर बा
संस्मरण-निबंध आ लोक-मंच भी,
परव-त्योहार के लूर बा।
लइकन के फुलवारी में त,
अजबे आइल बहार बा।
सकल पदारथ से भरपूरल,
ई भोजपुरी संसार बा।
दिन दूना आ रात चौगुना,
पसरे एकर डाढ़-पतइया।
भोजपुरी संसार में फइले,
जे०पी० के बा इहे दुहइया।

* जे० पी० श्रीवास्तव, जमशेदपुर

भोजपुरी संसार के बारे में एक दम अलग से लिखे के परी, काहे कि ई एगो अइसन पत्रिका सामने आइल जवना के आंचलिक-या देशज भाषा में प्रकाशित होखे वाली पत्रिकन के साथे कवनो मिलान नइखे, बलुक हिन्दी के जवन स्तरीय पत्रिका बाड़ीस ओहनो के कतार में राखल जा सकेले। हर हाल में— मतलब, कवनो नजर से पत्रिका आपन पहचान कायम कर रहल बिया आ ओह सब पत्रिका आ सम्पादक-संचालक के कुछ हद तक अचंभित करत बिया जे अपना के एक छोट दायरा में बान्हे के कोशिश कइल या गुट परस्ती के गंध फेंकल आ आजुओ फेंक रहल बा। भोजपुरी संसार के हमार हर संभव सहयोग समर्पित बा।

* कान्हजी सिंह तोमर, जमशेदपुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उपरक्का पन्ना के चित्र–परिचय

उपरका पन्ना के सूरुजमुखी फूल प्रतीक बा भोजपुरी संसार के आसमान में उगल सूरुज देखके अगराइल मन से खिलखिला के हँसला के। भोजपुरी के अमर सपूत छव गो महापुरुष— कबीर दास, कुँवरसिंह, शेरशाह, राजेन्द्र बाबू, विश्वामित्र आ डा० शिवसागर रामगुलाम के रेखाचित्र फूल के पतइन प उभरल बा। छवो भोजपुरिहा लालन के जीवन-पराग के सुगन्धो से धरती के कन-कन गमगमाइल बा: ई लोग जन-जन के दुलरुआ आ इतिहास बनावे-वाला रहल बाड़न।

चित्र के भावभूमि प 'भोजपुरी संसार' बिहार, उत्तर प्रदेश आ संसार के समेट के चल रहल बा। दर्शन-धर्म-समाज (विश्वामित्र, कबीरदास), बीरता-राष्ट्रीयता (कुँवर सिंह, शेरशाह), ज्ञान-विज्ञान-राजनीति-समाज सेवा (राजेन्द्र बाबू, डा० रामगुलाम) दुनियाँ के इतिहास में बेजोड़ आ अमर बा सभे। एह चित्र आ भीतर के साज-सज्जा के चित्रकार बाड़न भोजपुरी प्रेमी, बाकी तेलगुभाषी, श्री जी० रघुनाथम्।

"भोजपुरी संसार" के बिक्री आ विज्ञापन दर

सालाना चन्दा : १५ रोपेया :: छवमाही चन्दा : ८ रोपेया :: एक अंक : १.२५ पै०

★ ★ ★

★ ★

विज्ञापन

चौथा मुख-पृष्ठ	—	३००/-	बीच के पूरा पन्ना	—	१५०/-
दूसरका कवर-पृष्ठ	—	२००/-	आधा पन्ना	—	१००/-
तीसरका कवर-पृष्ठ	—	२००/-	एक तिहाई पन्ना	—	६०/-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust Funding IKS-MoE Grant-2

Postal Registration No. JS

भोजपुरी संसार

को

हमारी

हार्दिक शुभ कामनाएँ

शिव प्रसाद साव

घुसड़ी, हावड़ा

Cover Printed at : Universal Art Press, Sakchi, Jamshedpur Phone : 5566

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection